सत्साहित्य-प्रकाशन

रूस में छियालीस दिन

--रूस की यात्रा का रोचक और ज्ञानवर्द्धक सचित्र वृत्तान्त--

यशपाल जैन

१९६०
सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय,
मन्त्री, सस्ता साहित्य मडल,
नई दिल्ली-१

पहली बार १९६०
पुस्तकालय-सस्करण
मूल्य तीन रुपये

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस,
दिल्ली

उन सदाशयी भाई-बहनों को

जिनके

सद्भाव और सहयोग से

यह प्रवास

इतना सुखद और स्मरणीय बना।

—यशपाल जैन

प्रकाशकीय

हिन्दी मे यात्रा-साहित्य का वडा अभाव रहा है। जितनी पुस्तकें अबतक निकली है, उनमे निस्सदेह कुछ उच्चकोटि की है, लेकिन ऐसी पुस्तकें वहुत थोडी है, जिन्हे पढकर पाठक अनुभव करे कि घर-बैठे उन्होने स्वय यात्रा कर ली।

इस कमी को ध्यान मे रखकर 'मण्डल' ने कई यात्रा-पुस्तकें निकाली है। ये सभी पुस्तके उन व्यक्तियो द्वारा लिखी गई है, जिन्होने स्वय यात्रा की है। इस कारण स्वाभाविक रूप से उनके विवरण ज्ञान-वर्द्धक होने के साथ-साथ वडे ही सजीव, रोचक तथा निजी अनुभूतियो से युक्त वन पडे है। उनके पढने मे पाठको को कहानी-उपन्यास-जैसा आनद आता है।

हमारे यात्रा-साहित्य मे वैचित्र्य खूब रक्खा गया है। 'जय अमरनाथ!' मे पाठक काश्मीर और अमरनाथ की यात्रा करते है तो 'हिमालय की गोद मे' गगोत्री-यमुनोत्री की, 'लद्दाख-यात्रा की डायरी' मे लद्दाख के दुर्गम प्रदेश की सैर करते है तो 'उत्तराखण्ड के पथ पर' मे वदरी-केदार की तीर्थ-यात्रा का आनद लेते है।

अन्य देशो की यात्रा पर भी 'मण्डल' ने कुछ पुस्तके निकाली है। 'जापान की सैर' मे पाठक सूर्योदय के देश का प्रवास करते है और 'दुनिया की सैर अस्सी दिन मे' उन्हे कई देशो मे घुमा देती है।

हमे हर्ष है कि रूस के प्रवास पर यह पुस्तक पाठको के हाथो मे पहुच रही है। रूस ससार के उन देशो मे से है, जिनकी जानकारी पाने के लिए सभी रुचियो के पाठक लालायित रहते है। प्रस्तुत पुस्तक मे पाठको को एक शक्तिशाली देश को विभिन्न पहलुओ से देखने का अवसर मिलेगा। लेखक ने स्वय वहा की यात्रा करके उसके कई नगरो मे वहुत-सा समय व्यतीत किया और अपने निवास-काल मे उन्होने काफी घूमकर वहा के दर्शनीय स्थल, वहा की भौतिक प्रगति, वहा का लोक-जीवन आदि-आदि को नजदीक से देखने का प्रयास किया। उनके अनुभव एक ओर पाठको को वहुत-सी ज्ञातव्य वातो से परिचित कराते है तो दूसरी ओर वे अनेक घटनाओ एव सस्मरणो के द्वारा पाठको को रोचक, मनोरजक तथा भावपूर्ण सामग्री प्रदान करते है।

हमे आशा है कि यह पुस्तक एक रोचक प्रवास-वृत्तान्त के साथ-साथ ससार के एक वडे देश के अध्ययन मे सहायक होगी। इस कृति की व्यापक उपयोगिता को देखते यह भी विश्वास होता है कि अन्य भाषाओ मे इसके अनुवाद होगे।

विदेश-यात्रा-सवधी लेखक की दूसरी पुस्तक 'यूरोप की परिक्रमा' भी पाठको को जल्दी सुलभ हो, ऐसा प्रयत्न है।

इस पुस्तक को पाठको के लिए अधिक रुचिकर वनाने की दृष्टि से इसमे अनेक चित्र दिये गए है। मूल्य भी कम रक्खा गया है।

—मत्री

दो शब्द

रूस तथा यूरोप के अन्य देशो मे घूमकर स्वदेश लौटने पर मैने एक लेख-माला लिखी थी, जो दैनिक 'नवभारत टाइम्स' के दिल्ली तथा बबई सस्करणो के रवि-वासरीय अको मे धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुई थी। उसमे सारे प्रवास का क्रमबद्ध वर्णन आ गया था। पाठको को वे लेख बहुत अच्छे लगे और उन्होने आग्रह किया कि उनका पुस्तकाकार प्रकाशन होना चाहिए। यह पुस्तक उसी आग्रह का परिणाम है।

जिस समय यह प्रवास-वर्णन लिखा गया था, उस समय पत्र मे स्थान की मर्यादा के कारण मुझे बहुत-से रोचक तथा महत्वपूर्ण विवरण अनिच्छा-पूर्वक छोड देने पडे थे। इस पुस्तक मे उन्हे पूरा कर दिया गया है। कुछ नये अध्याय भी जोड दिये गए है। इस प्रकार इस पुस्तक मे अब बहुत-सी ऐसा सामग्री का समावेश हो गया है, जो पहले लेखो मे नही आई थी।

अपने प्रवास मे मै रूस को सम्मिलित करके दस देशो में गया था। लेख-माला मे सारे देशो का हाल आ गया था। चूकि रूस मे मै सबसे अधिक रहा था, इसलिए स्वाभाविक रूप से आधी के लगभग सामग्री उसी देश से सबधित थी। मित्रो ने सलाह दी कि उस सामग्री को एक अलग पुस्तक मे देना अधिक अच्छा होगा। उससे एक तो पुस्तक का आकार सुविधाजनक और मूल्य कम रहेगा; दूसरे, सामग्री के बीच ठीक सतुलन हो जायगा, यानी पाठको को यह नही लगेगा कि एक देश के बारे मे तो इतना अधिक लिखा गया है, अन्य देशो के बारे मे थोडा। मुझे उनकी राय उचित लगी। फलत मैने सारी सामग्री को दो भागो मे बाट दिया। पहली पुस्तक पाठको के हाथो मे पहुच रही है। शेष देशो की यात्रा का वृत्तान्त उन्हे दूसरी पुस्तक 'यूरोप की परिक्रमा' मे पढने को मिलेगा।

इस पुस्तक के विषय मे मै क्या कहू ! मै चाहता हू कि पाठक इसे पढे और स्वय निर्णय करें कि यह कैसी बन पडी है। फिर भी पृष्ठभूमि के रूप मे दो शब्द कह देना आवश्यक है। अन्य देशो की भाति रूस मे मुझे घूमने तथा विभिन्न क्षेत्रो के लोगो से मिलने-जुलने की पूरी सुविधा रही और रूसी भाई-बहनो तथा उन भारतीय

मित्रो के सहयोग से, जो वहा बहुत दिनो से रह रहे है, मुझे बहुत-कुछ असली रूप मे देखने का अवसर मिला। जो देखा, उसीको मैंने दिखाने का प्रयास किया है। हो सकता है कि पाठको को लगे कि मैने जितना प्रकाश उजले पक्ष पर डाला है, उतना दूसरे पहलू पर नही। यदि ऐसा है तो इसके पीछे मेरे पक्षपात का हाथ हो सकता है। मै मानता हू कि हम सबको, विशेषकर भ्रमणार्थियो को, ऐसी मनोभूमिका रखनी चाहिए कि जहा भी कोई अच्छी चीज हो, उसे देखलें और उत्साहपूर्वक दूसरो को दिखा दें, लेकिन यदि बुराई सामने आवे तो ईमानदारी के नाते उसे देख तो ले, किन्तु उसके प्रदर्शन मे उतनी उदार दृष्टि न रक्खे।

ससार के प्रत्येक देश में अच्छाइया और बुराइया दोनो है और कोई भी देश, उसकी विचार-धारा कुछ भी हो, आदर्श स्थिति तक नही पहुचा है। वस्तुत हम सब अपूर्ण है। ऐसी दशा में हमारा प्रयत्न होना चाहिए कि कमजोरियो को देखते हुए भी हम पारस्परिक सद्भाव बढाने पर जोर दें।

मुझे विश्वास है कि यदि पाठक इस बुनियादी बात को ध्यान मे रखकर पुस्तक को पढेंगे तो उसके साथ अधिक न्याय कर सकेंगे। इसमें कोई सदेह नही कि रूस आज ससार के शक्तिशाली राष्ट्रो में से है। कुछ ही वर्षों में उसने अपनी नीव को कितना मजबूत बना लिया है और विभिन्न क्षेत्रो में कितनी प्रगति कर ली है, यह वास्तव मे सराहनीय और प्रेरणादायक है। विज्ञान के क्षेत्र में तो उसकी उपलब्धिया बेजोड है। विचार-धारा और कार्य-पद्धति की मर्यादाए होते हुए भी वह अन्य देशो के निकट पहुचने और उन्हे अपने पास लाने के लिए सचेष्ट है।

जहातक उसकी कमियो का सबध है, वे किसीसे छिपी नही है। सच बात यह है कि वहा के शासक और वहा की जनता स्वय उन्हे जानते है और उन्हें दूर करने के लिए कुछ हद तक प्रयत्न भी कर रहे है।

ऐसे शक्तिशाली राष्ट्र को ठीक से समझने मे यह पुस्तक सहायक हो सकी तो मुझे प्रसन्नता होगी।

इस पुस्तक की तैयारी मे और उसे मौजूदा रूप देने मे जिन बधुओ ने मेरा हाथ बटाया है, उन्हे शब्दो द्वारा धन्यवाद देना धृष्टता होगी।

७/८, दरियागज,
दिल्ली।
१ फरवरी १९६०

यशपाल जैन

विषय-सूची

रूस में छियालीस दिन

: १ :

यात्रा की योजना और प्रस्थान

विधना का विधान बडा विचित्र है! आदमी सोचता कुछ है, हो कुछ और ही जाता है। चीन जाने की मेरी बहुत दिनो से इच्छा थी। उसके लिए उत्सुक भी था, लेकिन स्वप्न मे भी कल्पना न की थी कि बैठे-बिठाए अकस्मात रूस और यूरोप के अन्य देश घूमने का सुयोग जुट जायगा। एक दिन रात को जब सोने जा रहा था, अचानक मेरे एक स्नेही मित्र का फोन आया, "रूस चलोगे? आप चलो तो मै भी चलू।" मैने समझा कि बात मजाक मे हो रही है और मजाक मे ही मैने उसे टाल देने की कोशिश की। लेकिन अगले दिन सवेरे ही उनका फिर फोन आया तो मैने गभीरता से सोचा। उनके इस आग्रह ने कि मै जाऊगा तभी वह जायगे, मेरे मन पर जोर डाला। उनके साथ के प्रलोभन ने भी मुझे सोचने के लिए उत्साहित किया। अततोगत्वा जाने की बात तय हो गई। निश्चय हो जाने के उपरात पासपोर्ट के लिए भाग-दौड की गई और वह समय पर मिल गया। अन्य चीजो की भी व्यवस्था हो गई। ऐसा प्रतीत होता है, मानो इस सारी योजना के पीछे कोई अदृश्य शक्ति कार्य कर रही थी। उसीने मित्र द्वारा जाने की प्रेरणा दिलवाई और उसीने आवश्यक चीजो की व्यवस्था भी करा दी।

जाने की पूरी तैयारी हो जाने पर अचानक एक नई परिस्थिति पैदा हो गई। मित्र अस्वस्थ हो गए और कुछ समय द्विविधा मे रहने के बाद विवश होकर उन्हे अपना कार्यक्रम स्थगित कर देना पडा। पर उन्होने आग्रह किया कि मै जरूर जाऊ। मै तो उनका साथ मिलने के लालच मे तैयार हुआ था। अकेले कहा जाऊगा? मेरा मन उखड गया। पर मित्र ने बहुत जोर डाला। कुटुम्बी-जनो और साथियो ने भी बार-बार कहा। नतीजा यह हुआ कि मुझे अकेले ही जाने को बाध्य होना पडा। विमान मे स्थान की सुविधा के कारण ७ अगस्त का दिन प्रस्थान के लिए तय हुआ।

पाठक जानते है कि अपने देश से बाहर जाने के लिए भारत-सरकार से पास-

पोर्ट प्राप्त करना होता है और जिन देशो मे जाना हो, उन देशो का वीसा भी लेना होता है। मुझे रूस जाना था, इसलिए दिल्ली-स्थित सोवियत दूतावास से रूस का वीसा लिया। बीच मे थोडी देर काबुल रुकना था, इसलिए अफगान दूतावास से वहा का वीसा लिया। पासपोर्ट और वीसा के अतिरिक्त दो और चीजें जरूरी होती हैं, जिनके बिना सामान्यतया कोई भी व्यक्ति विदेश नहीं जा सकता। एक तो स्वास्थ्य का प्रमाण-पत्र और दूसरा, आयकर की सफाई का प्रमाण-पत्र। ये दोनो मैंने पहले ही ले लिये थे।

६ अगस्त की शाम को जरूरी सामान खरीदा। इस बीच लोगो मे मेरे जाने की खबर फैल गई। नाते-रिश्तेदार और मिलनेवाले आने लगे। सोचा था कि सामान ठीक करके जल्दी ही सो जाऊगा, क्योकि विमान सवेरे ७ बजे छूटता था और मुझे कम-से-कम एक घटे पहले सफदरजग हवाई अड्डे पर पहुच जाना था। लेकिन लोगो से बातचीत करने और सामान जमाने मे रात का १ बज गया। बिस्तर पर लेटा, पर नीद नही आई। तरह-तरह के विचार मन मे उठते रहे। अपने देश मे मैं काफी घूमा हू, अनेक बार विमान से भी सफर किया है, इसलिए यात्रा-सबधी तो कोई परेशानी न थी, पर बार-बार ध्यान आता था कि परदेश जा रहा हू और अकेला हू। बहुत-सी असभावित बातें दिमाग मे उठती थी। विचारो के उस भवर मे रात के शेष घटे पलको पर निकल गये। तीन बजे उठ बैठा। रात को जो तैयारी बाकी रह गई थी, वह निबटाई, तैयार हुआ और ५॥ बजे कुटुम्बी-जनो के साथ हवाई अड्डे के लिए रवाना हो गया।

सफदरजग हवाई अड्डे पर पहुचने पर पासपोर्ट, वीसा, स्वास्थ्य और आय-कर के प्रमाण-पत्र जाचे गये, सामान देखा गया कि कही कोई चुगी की या गैर-कानूनी चीज तो साथ नही जा रही है। सरकार ने यह भी पाबदी लगा रखी थी कि काबुल के लिए ५०) और अन्य देशो के लिए २७०) मे अधिक बिना सरकार की पूर्व अनुमति प्राप्त किये नही ले जाये जा सकते। अब तो ये राशिया और भी घटा दी गई हैं। २७०) की जगह केवल ७५) ले जाये जा सकते हैं। इसकी कडाई से देखभाल होती है। इन सबकी जाच-पडताल के लिए पुलिस तथा चुगी-विभागो मे जाना पडा, जो हवाई अड्डे पर ही है। सामान तुला, एक फार्म भरना पडा, जिसमे अन्य बातो के साथ-साथ पूरे सामान का आनुमानिक मूल्य घोषित करना पडा। घडी, कैमरा, फाउटेनपेन आदि की जानकारी देनी पडी।

इन सब औपचारिक विधियो से छुट्टी पाई तबतक जहाज के छूटने का समय हो चुका था। घोषणा हुई कि काबुल जानेवाले यात्री अमुक विमान मे जाकर बैठे। मैने परिवार के लोगो, मित्रो तथा साथियो से विदा ली और भारी मन से दूसरे यात्रियो के साथ विमान की ओर बढ गया।

विमान मे घुसते ही देखता क्या हू कि हम चार-पाच यात्रियों के लिए चार-पाच सीटे छोडकर शेष सब सीटे सामान से अटी पडी है। सामान भी मामूली नही, लकडी की बडी-बडी पेटिया और बडे-बडे पैकिट। यह सब नज्जारा देखकर बडा अजीब-सा लगा, हँसी भी आई। विमान आर्याना अफगान एयर लाइन्स का था, जो अफगान सरकार की एक कपनी है। मैने विनोद मे विमान के परिचारक (स्टुअर्ड) से पूछा, "क्यो भाई, यह मुसाफिरो को ले जानेवाला जहाज है या सामान ढोने का?" अफगानी युवक ने कोई जवाब नही दिया। वह या तो मेरी बात समझ नही पाया, या जवाब देने को उसके पास कुछ था नही।

मै चुपचाप एक ऐसी सीट पर जा बैठा, जहा से विदा देने के लिए आये लोगो को देख सकता था। मेरे बराबर की सीट पर एक बगाली भाई आ बैठे।

यात्रियो के अदर आते ही विमान का द्वार बद हो गया और इजन की घड-घडाहट शुरू हो गई, जो उत्तरोत्तर बढती गई। विमान ने हलचल की, धरती पर चला, फिर आगे जाकर रुक गया। अत मे ७ बजकर १० मिनट पर वह गन्तव्य स्थान की ओर उड चला। ऊपर जाकर जब वह सम-भाव और सम-गति से उडने लगा तो हम लोगों ने कमर से पेटिया खोल दी। ये पेटिया कुर्सी के साथ लगी रहती है। जब विमान ऊपर उठता है या नीचे उतरता है अथवा जब मौसम खराब होता है, उस समय यात्रियो के सीट पर से उछलने की आशका रहती है। इसलिए चालक के कक्ष के बाहर बिजली के अक्षरो मे सूचना दे दी जाती है—पेटिया बाध लीजिये। जब जरूरत नही रहती तब वह सूचना हट जाती है। पेटियो के खुलने पर हम लोग आपस मे बाते करने लगे।

मैने पास बैठे बगाली युवक से उसका परिचय पूछा तो उसने बताया कि वह कलकत्ता से आ रहा है और वहा के बगला पत्र 'लोक सेवक' का प्रतिनिधि होकर मास्को जा रहा है। यह सुनकर मुझे बडा अच्छा लगा। सोचा, चलो, एक से दो हुए। शेष यात्रियो का तो काबुल तक का ही साथ था।

मारा पहला पडाव था अमृतसर। ६ बजे वहा पहुच गये। वहा का हवाई

अड्डा काफी वडा और अच्छा है। विमान के रुकते ही हमे नाश्ता कराने के लिए खाने के कमरे मे ले गये। दूसरे यात्रियो की भाति मेरे सामने जव सामिष चीजे आई तो मैने यह कहकर खाने से इन्कार कर दिया कि मै तो शाकाहारी हू। वगाली-भाई खाने लगे। हवाई अड्डे के अधिकारी ने मेरे लिए फौरन पूडिया और साग मगवाया और मेरे सामने परोसवाते हुए विनोद मे मुस्कराकर वोले, "आप गोश्त नही खाते तभी आपके चेहरे पर सात्विकता दीख पडती है।"

मै इसका कुछ जवाव दू कि उससे पहले ही वगालीवावू तेज हो गये। वोले, "क्या मतलव है आपका ? क्या आप यह कहना चाहते है कि मै गोश्त खाता हू तो मेरे चेहरे पर असात्विकता है ?"

आवेश में कही गई उस वात को सुनकर अधिकारी वेचारे सकपका गये। वात उन्होने मजाक मे कही थी, किसीपर आक्षेप करने का उनका तनिक भी इरादा न था। सभलने पर उन्होंने सफाई मे कुछ कहा, पर वगालीभाई भला क्यो सुनने लगे! खाते-खाते वहुत देर तक वडवडाते रहे।

इस घटना ने मेरा माथा ठनका दिया। अभी तो यात्रा का आरभ ही था। मैंने सोचा कि इन हजरत का अभी से यह हाल है तो आगे चलकर जाने क्या होगा!

चालीस मिनट तक रुककर विमान आगे वढा। कुछ दूर जाने पर एक यात्री ने वताया कि अव हम पाकिस्तान पर उड रहे है और कुछ ही मिनटो मे लाहौर आ रहा है। हमारे देखते-देखते रावी नदी आई, फिर लाहौर आया, अनतर मुलतान, डेरा इस्माइलखा और सिन्धु नद। कोई डेढ घटे तक हम लोग पश्चिमी पाकिस्तान पर उडते रहे।

जहाज आमतौर पर ८-८॥ हजार फुट की ऊचाई पर जा रहा था। अन्य कपनियो के जहाजो मे चालक एक कागज पर यात्रियो को सूचना देता रहता है कि जहाज इतनी ऊचाई पर है, उसकी रफ्तार यह है और उसके दाये-वाये अमुक नगर, अमुक पर्वत अथवा अमुक नदी इतने समय पर आवेंगे। पर इस आर्याना जहाज मे ऐसी कोई सुविधा नहीं थी। परिचारक से जव-तव पूछना पडता था कि अव हम कहा है। गुसलखाना वहुत ही गदा था। अमृतसर पर मैंने कह दिया था कि सफाई करा दें, पर किसीने उस ओर ध्यान न दिया। सभी हवाई कम्पनिया स्वच्छता का वडा ध्यान रखती है, पर जाते समय और आते समय भी इस कपनी का अनुभव कुछ अजीव-सा रहा।

आगे चलकर जब सुलेमान पर्वत-मालाए आई तो विमान १२-१३ हजार फुट की ऊचाई पर चला गया। नीचे पर्वत, ऊपर रुई के फाये जैसे बादल, विमान उनके भी ऊपर। अबतक मैदान देखने मे आये थे। उनपर कही-कही हरे-भरे वृक्ष, छोटे-छोटे घर, नदियो की पतली-सी धाराए, आदि को देखकर ऐसा लगता था, मानो धरती पर किसी ने कोई चित्र अकित कर दिया हो। पर्वतो के आने पर दृश्य बदल गया। कोहरे तथा बादलो के मेल से जो दृश्य बना, वह बडा ही विचित्र था। उसे शब्दो मे व्यक्त करना कठिन है। आगे चलकर 'तख्ते-सुलेमान' आया। यह सुलेमान पर्वत की बहुत ही ऊची चोटी है और जब विमान उसे पार कर लेता है तो माना जाता है कि 'तख्ते-सुलेमान' जीत लिया। बात यह है कि एक तो यहा विमान को बहुत ऊचाई पर उडना पडता है, दूसरे सवेरे ९-१० बजे के बाद वहापर इतना घना कोहरा और बादल-से हो जाते है कि कुछ दीखता ही नही। चालक को बडी सावधानी से यह स्थान पार करना पडता है। कभी-कभी तो मौसम की खराबी से जहाज को वापस ले जाना पडता है।

पहाड पार करते समय, ऊचाई के कारण, यात्रियो को असुविधा न हो, इसलिए विमान या तो 'प्रैशराइज्ड' होते है या उनमे आक्सीजन की व्यवस्था होती है। लेकिन इस विमान मे वैसी कोई सहूलियत नही थी। हा, एक व्यवस्था थी और वह थी जहाज को गर्म करने की। जब हम लोग सुलेमान को पार कर रहे थे, हीटर खोल दिया गया। नतीजा यह हुआ कि तेज लू-सी चलने लगी और गर्मी के मारे सिर फटने लगा। स्टुअर्ड से कहकर बडी मुश्किल से उसकी तेजी कम कराई। तब कही जान-में-जान आई।

'तख्ते-सुलेमान' फतह कर लेने के बाद मौसम मे परिवर्तन हो गया। धुध और बादल बहुत-कुछ साफ हो गये और नीचे पर्वत-मालाए दीख पडने लगी। पहाडो के बीच मे यत्र-तत्र बसी हुई बस्तिया, बहती हुई नदिया और नदियो के किनारे की हरियाली बडी अच्छी लगती थी। शुरू मे पहाडो पर काफी पेड दिखाई दिये, लेकिन आगे चलकर ऐसा लगने लगा, मानो पहाड मिट्टी या राख के हो। उनपर पेडो का नामो-निशान भी नही था। फिर भी उन रूखे-सूखे पहाडो की अपनी महिमा थी। ऊपर आकाश मे थोडे-बहुत मेघ-खण्ड विचरण कर रहे थे। इससे वृक्ष-विहीन पर्वतो को एक अनोखा आकर्षण प्राप्त हो गया था।

विज्ञान ने कैसा करिश्मा कर दिखाया है! आसमान मे जब बादल होते है

तो विमान प्राय बादलो के ऊपर चला जाता है। उस समय नीचे सफेद सागर जैसा लहराता दीखता है। ऊपर निगाह जाती है तो नीला निरभ्र आकाश दिखाई देता है और उसमे पूर्ण प्रखरता के साथ चमकता हुआ सूर्य। विना स्वय देखे ऐसे अद्भुत दृश्य की कल्पना करना कठिन है।

बलूचिस्तान के कुछ भाग पर से उडने के पश्चात विमान कुछ नीचे आया और किसी नगर पर उसने चक्कर लगाया। पूछने से मालूम हुआ कि काबुल आ गया। हमारी घडी के हिसाब से उस समय दो बजे थे। वहा की घडी मे एक बजा था यानी, भारत से वहा का समय एक घटा पीछे है।

काबुल का हवाई अड्डा कच्चा है। जब कोई विमान उतरता है तो धूल का तूफान-सा आ जाता है। कई देशो के जहाज यहा आते-जाते है। आर्याना कम्पनी के जहाज भी कई देशो को जाते रहते है, फिर भी यहा का अड्डा बडी गई-बीती हालत मे है। उसे ठीक करने के लिए कुछ योजनाए बनाई गई है, पर देखना है कि उसका भाग्य कब फिरता है।

विमान के रुकने पर हम लोग उतरे और सबसे पहले चुगी के दफ्तर मे पहुचे। थोडी देर राह देखने पर हमारा सामान भी आ गया। चुगी-विभाग के अधिकारियो ने उसे खुलवाकर देखा। पासपोर्ट तथा अफगान वीसे की जाच हुई। एक सज्जन विना वीसा के आ गये थे। उनके साथ अधिकारियो की काफी झिक-झिक हुई, पर अन्त मे विवश होकर उन्हे अनुमति देनी पडी।

दिल्ली मे किसीने बताया था कि काबुल पहुचते ही मास्को जानेवाला विमान मिल जायगा। लेकिन जब पता लगाया तो मालूम हुआ कि वह ९ अगस्त को, यानी तीसरे दिन सवेरे मिलेगा। हमे मास्को पहुचने की बडी जल्दी थी। पर हो क्या सकता था। मन मारकर रह गये और हवाई अड्डे की बस मे सामान रखकर तीन बजते-बजते 'काबुल होटल' जा पहुचे।

अक्सर यात्रियो को इसी होटल मे ठहराया जाता है। उसकी दुमजिला इमारत अच्छी-खासी है। काफी बडी, देखने मे साफ-सुथरी। बगालीभाई के और मेरे लिए ऊपर की मजिल के एक ही कमरे मे ठहरने की व्यवस्था की गई। कमरा औसत आकार का था, न बडा, न छोटा। थोडी देर के बाद एक सिख और उसीमे आ गए। बडे तपाक से मिले। बहुत खुले दिल के आदमी लगे। मैने सोचा, अच्छा हुआ, साथ-साथ घूमने मे मजा आवेगा।

: २ :

काबुल में

कमरे मे सामान रखकर नीचे भोजन करने गये तो एक मजेदार घटना हो गई। भोजनालय मे मेज पर बैठकर मैंने बैरे को अपने लिए निरामिष और बगालीभाई के लिए सामिष खाना लाने को कहा। थोडी देर मे खाना आया तो दोनो के लिए शाकाहारी। देखते ही बगाली-भाई ने त्यौरी चढाकर कहा, "मुझे तो मीट(मास) चाहिए। तुमने किस तरह आर्डर दिया ? (बैरे से) देखो, हमारे लिए मीट लायगा, मीट। समझा ? (फिर मुझे सबोधन करके) आगे से तुम अपने लिए खाना मगायगा, हम अपने लिए मगायगा।" मैने मजाक मे कहा, "भाईमेरे, मुह क्यो चढाते हो ! तुम्हे तो दोहरा फायदा हो गया। शाकाहारी खाने का भी आनद लोगे। मास तो उडाओगे ही।"

असल मे यह मुसीबत इसलिए हुई कि होटल के बैरे या तो पश्तो जानते थे, या फारसी। दो-एक को टूटी-फूटी अग्रेजी आती थी। इसीसे उन्हे बात समझाने और उनकी बात समझने मे दिक्कत होती थी।

खा-पीकर हम लोगो ने थोडी देर विश्राम किया। फिर घूमने निकले। मौसम अच्छा था। छ हजार फुट की ऊचाई पर बसे होने पर भी नगर मे सर्दी अधिक न थी, बल्कि दिन मे तो कुछ गर्मी ही मालूम हुई। लोगो ने बताया कि असली मजा तो यहा जाड़ो मे आता है। कडाके की ठड पडती है। चारो ओर बर्फ जम जाती है। अफगानिस्तान मे एक कहावत है कि वहा के निवासी सोने के बिना रह सकते है, बर्फ के बिना नही। इसका मतलब यह है कि उन्हे बहुत-सा पानी बर्फ के पिघलने से प्राप्त होता है। इसलिए कुछ महीनो मे अच्छी फसल के लिए उन्हे बर्फ पर निर्भर करना पडता है।

काबुल अफगानिस्तान की राजधानी है। बड़ा नगर है, बस्ती दूर-दूर तक फैली है, लेकिन देखने मे वह एक देहाती कस्बे जैसा लगता है। सूखे पहाडो पर से

दिनभर धूल उडती रहती है और कभी-कभी तो ऐसा बवडर आता है कि खुले रास्ते पर चलना मुश्किल हो जाता है। मकानो, बाजारो तथा लोगो के रहन-सहन और कपडे-लत्ते आदि को देखकर ऐसा नहीं लगता कि हम किसी देश की राजधानी मे हैं। शहर का कुछ भाग पुराना है, कुछ नया बसा है। नई बस्ती को 'शोरे नो' यानी नया शहर कहते हैं। उसमे पुरानी बस्ती की अपेक्षा हरियाली अधिक है और मकान भी बडे और अच्छी बनावट के हैं। पुरानी बस्ती बहुत घिरी हुई है। लेकिन नगर का तेजी से विकास हो रहा है। नई सडके बन रही है, पुरानी चौडी की जा रही हैं। नये घर बन रहे हैं, बिजली-पानी की समुचित व्यवस्था की जा रही है।

लोगो ने बताया कि रूस और भारत दोनो ही प्रयत्नशील हैं कि वहा की गरीबी और गुरबत दूर हो और वहा के निवासियो के रहन-सहन का मानदड ऊचा हो। वहा के पर्वतो मे खनिज पदार्थ पर्याप्त मात्रा मे विद्यमान हैं। फल भी खूब होते हैं। अन्य देशो का माल वहा बहुत बडे परिमाण मे आता है। सूती और ऊनी वस्त्रो का अच्छा उत्पादन होता है। फिर भी वहा बेहद गरीबी है। जगह-जगह भिखारी पीछा करते हैं। पार्वत्य प्रदेशो मे गरीबी के साथ-साथ गदगी का गठबधन अक्सर देखने मे आता है। काबुल इसका अपवाद नहीं है। वहा अधिकाश लोग बडे ही गदे हैं। काबुल नदी कुछ महीनो को छोडकर शेष महीनो मे सूखी पडी रहती है। जहा-तहा जो पानी रह जाता है, उसका किस प्रकार उपयोग होता है, देखकर तबीयत घबराती है।

इतना होने पर भी लोगो का स्वास्थ्य बडा अच्छा है। ऊचा कद, शरीर हृष्ट-पुष्ट। बच्चो और युवको को अग्रेजी कपडे पहना दीजिये, फिर यह पता चलाना कठिन हो जायगा कि वे अफगानी हैं। इतने सुन्दर हैं वे! उनका रूप-रग बडा ही आकर्षक है।

काबुल की आबादी लगभग दो लाख है, जिसमें पाच हजार के करीब हिन्दू हैं। उनमे से बहुत-से वहा छोटे-बडे धन्धे करते हैं, पर उन्हे वे सुविधाए प्राप्त नहीं है, जो वहा के बाशिन्दो को हैं। बडी अजीब-सी बात है कि पुश्तो से रहनेवाले बाहर के लोगों को वहा के नागरिको के अधिकार प्राप्त न हो, वे अपने घर न बनवा सकें, अपनी मोटर न रख सकें!

हम लोग सबमे पहले शोरे नो, यानी नई बस्ती में घूमने गये, बाद मे काची की बस्ती देखी। वह काबुल नदी के किनारे बसी है और दूसरे भागो की बनि-

स्वत अधिक साफ-सुथरी है। वहा का बाजार काफी वडा है।

फल काबुल मे खूब मिलते हैं और वहुत ही सस्ते। अगूर आठ-दस आने सेर, किशमिश रुपये सेर। खूवानी, आडू आदि भी वहुतायत से बाजार मे आते है। वहा का सरदा तो दूर-दूर तक मशहूर है। साग-भाजी मे अन्य चीजो के साथ टमाटरो की अच्छी पैदावार होती है। दुकान-दुकान पर उनके ढेर लगे दिखाई देते हैं।

शहर मे घूमते समय अनेक विदेशी लोग दिखाई दिये। पूछने पर पता चला कि उनमे से कुछ तो पर्यटक है, कुछ वही के रहनेवाले। पिछडा हुआ होने पर भी काबुल व्यापार की दृष्टि से अपना महत्व रखता है। इसी प्रलोभन से खिच-कर वहुत-से देशो के लोग वहा आते रहते है।

यात्रियो की सुविधा के लिए होटल मे 'पश्तानी तिजारती बैंक' है। वहा से हमने कुछ रुपये भुनाकर अफगानी ले लिये। अफगानिस्तान का सिक्का 'अफगानी' कहलाता है। एक रुपये मे वैंक ने तो शायद नौ अफगानी दिये, पर परिचित दुकान-दार दस दे देते है। नोट २,५,१०, २० और ५० के होते है। सिक्के 'पूल' कहलाते है। आजकल ५० तथा २५ के सिक्के मिलते है। ५० का सिक्का 'नीम अफगानी' यानी अफगानी का आधा, कहलाता है।

अफगानिस्तान की भाषा मुख्यत पश्तो और फारसी है, लेकिन वहा के स्कूलो मे फ्रेंच, अमरीकी तथा रूसी भाषाए भी पढाई जाती है। अन्य भाषाओ की अपेक्षा फ्रेंच पर अधिक जोर दिया जाता है।

शहर मे पाच सिनेमाघर है, जिनमे अक्सर हिन्दी की फिल्मे दिखाई जाती है। कई दुकानो पर हमने हिन्दी के गीतो के रिकार्ड वजते सुने। अग्रेजी का प्रचलन वहुत कम है। बडे-से-बडे अधिकारी तथा शिक्षित लोग भी गलत और टूटी-फूटी अग्रेजी वोलते थे। उच्चारण भी उनके शुद्ध नही होते। एक कालेज के प्रोफेसर कही रास्ते मे मिल गये। उनके अग्रेजी के उच्चारण पर हँसी रोकना मुश्किल हो गया।

काबुल मे एक विश्वविद्यालय है और चार कालेज—वगजनी, हवीविया, निजात और इस्तकलाल। वहा की सारी फैकल्टिया, साइस फैकल्टी आदि-आदि, यूनिवर्सिटी कहलाती है। इस प्रकार सुनने मे ऐसा मालूम होता है, मानो वहा यूनिवर्सिटियो की भरमार है।

पर्दे का चलन वहा खूब है। शहर मे सभी धर्मों की स्त्रिया बुर्का ओढकर

निकलती है। दुकानो पर सामान खरीदती है तब भी उनके मुह ढके रहते हैं। बडा अजीब लगता है जब बुर्का ओढे स्त्री खूब जोर-जोर से दुकानदार से बातें करती है और चीजो के दामो के लिए झगडती है।

शाम तक हम लोग शहर मे चक्कर लगाते रहे। सात-आठ बजे लौटे, भोजन किया और फिर निकल गये। होटल से कुछ दूर पर एक बडी-सी इमारत थी। उसके सामने हम यह सोचकर रुक गये कि कोई उधर आवे तो उसके बारे मे पूछ-ताछ करें। इतने मे दो व्यक्ति आये। वर्दी से अदाज हुआ कि वे पुलिस के अधिकारी है। उनसे कुछ पूछने के लिए हम जरा आगे बढे और मुह खोला कि उन्होने धारा-प्रवाह पश्तो मे जाने क्या-क्या कहना शुरू कर दिया। हम कुछ भी नही समझ पाये, लेकिन उनके हाव-भाव तथा सकेतो से अनुमान हुआ कि वे जानना चाहते है कि हम कौन है और इतनी रात गये वहा क्या कर रहे है। उन्हें समझाने के लिए पहले तो हमने उर्दू मिली हिन्दी बोली, फिर अग्रेजी का सहारा लिया, पर वे कुछ न समझे। तब लाचार होकर हमने वहा से जाना चाहा, लेकिन जाय तो जाय कैसे? उनकी बातो का सिलसिला खत्म हो तब न! काफी देर हो गई। हम लोग बडे पशोपेश मे पडे। इतने मे हठात एक सज्जन आये, जो हिन्दी जानते थे। पुलिस-अधिकारियो से हमे उलझा देखकर वह हमारे पास आये। उन्होने बताया कि वह दिल्ली-निवासी है और बरसो से वहा रहते है। उन्होने दुभाषिये का काम किया। उन्होने कहा कि वह बडी इमारत शाही महल है और वहा हमारा यो घूमना उचित नहीं है। उन सज्जन ने पुलिस-अधिकारियो को समझा-बुझाकर शात किया। तब कही छुट्टी मिली। अच्छा हुआ कि हमारा पिण्ड छूट गया, अन्यथा पता नहीं, क्या होता। आज के जमाने मे भी वहा के कानून-कायदे अपने ढग के निराले है।

रात काफी हो गई थी। होटल लौटे और सो गये। अगले दिन सवेरे जल्दी उठकर तैयार हुए और एक टैक्सी लेकर पगमान देखने गये। सयोग से साथ मे क्लेरा मर्सर नाम की एक कैनेडियन महिला भी हो गईं, जो उसी होटल मे ठहरी थी। पगमान काबुल से १५-१६ किलोमीटर पर बडा ही सुन्दर स्थान है। वहा के लोग कहते है कि जिस प्रकार काश्मीर मे गुलमर्ग है, उसी प्रकार काबुल मे पगमान है। पर जो बात गुलमर्ग मे है, वह वहा कहा! फिर भी पिकनिक की दृष्टि से वह बडी अच्छी जगह है। वहा अमानुल्ला की सुन्दर कोठी है और उसके पास ही उसके

भाई की। और भी इमारते है। तन्दुरुस्ती के लिहाज से वह बढ़िया जगह मानी जाती है। पानी बहुत ही स्वास्थ्यवर्द्धक है। इसलिए पैसेवालो ने वहा अपनी-अपनी कोठिया बना ली है। सबसे ऊची जगह पर जो कोठी है, वह वोलोवो कहलाती है। चिनार और चर्मास के पेडो की वहा बहुतायत है और उन्हीके कारण उस स्थान की शोभा है।

लौटते मे हम 'तपी पगमान' गये जहा बादशाह का बड़ा शानदार उद्यान है। उसमे फव्वारे चल रहे थे और नाना रगो के फूल खिले थे। अफगानिस्तान के वर्तमान बादशाह जाहिरशाह वहा आये हुए थे। उद्यान बहुत ही सुरुचिपूर्ण था, साफ-सुथरा। वह विशेष रूप से पसद आया।

लौटकर टैक्सीवाले का हिसाब किया तो उसने प्रति मील २॥ अफगानी मागा, जबकि तय दो अफगानी हुआ था। बात को खत्म करने के विचार से उसे २॥ के हिसाब से दे दिया। लेकिन इतने से उसे सतोष कहा होना था। बोला, "रुकने का एक घटे का और लाओ।" यह पहले ही तय हो गया था कि वह रुकने का कुछ नही लेगा। बडी झुझलाहट हुई। मैने कहा, "अब मै एक कौडी भी अधिक नही दूगा।" इसपर उसने सारे नोट और सिक्के धरती पर फैंक दिये और कमरे से बाहर जाने लगा। यह सब हुआ आर्याना के दफ्तर मे। वहा के बाबू ने ही वह टैक्सी तय की थी। झगडा उसीके सामने हुआ। बेचारे बाबू ने ड्राइवर को हरचद समझाने की कोशिश की, लेकिन ड्राइवर ने उसकी एक न सुनी। वह तो चाहता था कि हम अजनबियो से अधिक-से-अधिक पैसे निकलवा ले। बगालीभाई और कैनेडियन महिला वहा से पहले ही चले गये थे। मै भी चल दिया। ड्राइवर ने देखा कि उसके नाटक का अब कुछ नतीजा निकलनेवाला नही है तो झख मारकर आया और जमीन पर बिखरे अफगानी नोटो और सिक्को को बटोरकर ले गया।

दोपहर बाद दारुलअमान गये। वहा अमानुल्ला की विशाल कोठी है। बडी शानदार। अब उसमे कोई मत्रालय है। उसीके निकट सग्रहालय है। कोठी देखकर सग्रहालय गये। उसमे विभिन्न वस्तुओ का अद्वितीय सग्रह है। भगवान बुद्ध की मूर्तिया, काठ और सगमरमर के द्वार, पूर्वी अफगानिस्तान के हाडा स्थान से प्राप्त स्तूप का माडल, पोशाकें, चित्रकारी, बुखारा के पर्दे, शौतोरक की मूर्तिया आदि विशेष रूप से पसद आये। एक बडी असुविधा अनुभव हुई। वहा की सारी वस्तुओ के परिचय या तो पश्तो मे लिखे थे, या फ्रेंच मे। अग्रेजी मे बहुत कम थे।

हमे जो सज्जन सग्रहालय दिखा रहे थे, वे नये-नये आये थे और सारी चीजो से परिचित नही थे। फिर भी कुल मिलाकर सग्रहालय बहुत बढिया लगा।

इतिहास के पाठक बाबर के नाम से भली-भाति परिचित है। शहर से चार मील पर उसकी कब्र है। वह भी बडी शानदार जगह है।

अफगानिस्तान की उस राजधानी मे घूमते हुए मेरा ध्यान बार-बार अफगानिस्तान के प्राचीन इतिहास पर जाता था। भारत के साथ उसका कितना पुराना और निकट का सबध रहा है, आज भी है। ऐतिहासिक तथा भौगोलिक दोनो दृष्टियो से इस देश का महत्व है। एशिया का वह केन्द्र-स्थान है। उत्तर मे रूस है, पूर्व मे एक छोटा-सा भूखड उसे चीन के साथ जोड देता है। भारत और उसकी सीमा पर पख्तूनिस्तान है और पश्चिम मे फारस। मध्य एशिया से आर्य लोग खैबर तथा अन्य दर्रों के रास्ते इधर आकर विभिन्न स्थानो मे फैले थे। कितनी उथल-पुथल हुई है इस अफगानिस्तान मे! बहुत-से राजवश उठे और गिरे, बादशाह आये और गये, देश की तकदीर जाने किस-किस के हाथो मे खेलती रही! अब उसे विकास का अवसर मिला है। पर यह विकास तब स्थायी होगा और उसके लिए वरदान बनेगा, जबकि वहा के लोगो मे राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न होगी—वह चेतना, जो कि किसी भी देश की नीव को मजबूत बनाती है। अफगान शरीर से बडे ही तगडे है और बहादुरी मे तो उनका मुकाबला कम ही लोग कर सकते है। यदि उनके जीवन का सर्वांगीण विकास हो जाय तो उनके उस देश का, जिसे किसी जमाने मे 'आर्याना' (आर्यों का देश) की सज्ञा से विभूषित किया गया था, भाग्य बदलते देर नही लगेगी।

: ३ :

मास्को पहुंचा

रात को नींद नही आई। जलवायु के परिवर्तन से या धूल से गले मे खराश हो गई थी। सिर वडा भारी था। फिर भी जल्दी उठना पडा। ७ वजे जहाज छूटने-वाला था। हमे तैयार होकर ६ वजे हवाई अड्डे के लिए रवाना होने की सूचना थी। ५ वजे उठे। निवृत्त हुए। इतना वडा होटल होने पर भी स्नान के लिए गरम पानी एक भी दिन न मिला। ठडे पानी से ही काम चलाना पडा। हालाकि सर्दी अधिक नही थी, फिर भी नहाते समय कपकपी आ जाती थी।

तैयार होकर सामान नीचे भिजवाया। उसे उठाकर हवाई अड्डे की वस मे रखने के लिए ले जाने लगे तो होटलवालो ने कहा, "विल के पैसे लाओ।" दिल्ली की एजेसी ने जव टिकट की व्यवस्था की थी तो उसके अधिकारी ने कहा था कि अगर कावुल मे जहाज न मिलने से दो-एक दिन ठहरना पड़े तो खर्चा आर्यानावाले देगे। मुझे नही देना पडेगा। यही वात मैने होटलवालों से कही, लेकिन वे नही माने। समझाते-समझाते हार गया तो लाचार होकर आर्याना के दफ्तर मे गया। पास ही था। वहा जो आदमी मिला वह अग्रेजी नही जानता था। वस छूटने का समय हो रहा था। मैने झटपट सामान वस पर चढाया। होटलवाला वार-वार कहता था कि समान नही ले जाने दूगा। वह वस पर चढ आया। मैने वगालीवावू से कहा, "मै सामान लेकर जाता हू। तुम इन लोगो से निवटकर दूसरी वस से आओ। मै तवतक सामान की जाच करा लूगा।" वस रवाना हुई। हवाई अड्डे पर पहुचने के कुछ देर वाद वगालीवावू लौटे और वताया कि दोनो आदमियो के होटलवालो ने ६५) झटक लिये। मैने हवाई अड्डे के अधिकारी का ध्यान इस ओर खीचा तो उन्होने कहा, "अभी तो वटी जल्दी है। आप जव लौटकर आयेंगे तव देख लेगे।" यह तो वहलाने की वात थी। वाद मे भला क्या होना-जाना था!

सामने मैदान मे हमे ले जानेवाला विमान खडा था। उसके आगे के हिस्से

पर एक ओर को हसिया-हथौडा बना देखकर यह समझते देर न लगी कि वह रूसी विमान है। हसिया-हथौडा के पास ही रूसी भाषा मे 'एरोफ्लोट' लिखा था। उसीकी वगल मे आर्याना का जहाज खडा था। वाहर से ही दोनो यानो का अन्तर साफ दिखाई देता था।

हवाई अड्डे पर पहुचते ही मैंने चुगी-विभाग मे सामान की जाच करा ली थी। सामान विमान पर चढा दिया गया। घोषणा होने पर हम लोग भी एरोफ्लोट मे सवार हो गये। ठीक ७ वजे विमान तरमेज के लिए रवाना हुआ। सवेरे का सुहावना समय था। चारो ओर पर्वत मौन भाव से खडे चिंतन मे लीन जान पडते थे।

विमान वहुत ही अच्छा और साफ था। सीटें गुदगुदी थी और उनपर स्वच्छ कपडा लगा था। जरा-सा जोर लगाने पर वे इतनी फैल जाती थी कि आराम से लेटा जा सकता था। हर यात्री के लिए आक्सीजन लेने की व्यवस्था थी। परिचारिका वडी स्वस्थ और भली रूसी लडकी थी। शरीर से कुछ भारी होने पर भी काम मे वडी फुर्तीली थी। अग्रेजी मजे मे वोल लेती थी।

थोडी देर तक उडने के वाद विमान एकदम ऊपर उठने लगा। नीचे देखा तो मालूम हुआ कि पहाड शुरू हो रहे है। परिचारिका ने सवके पास जा-जाकर सकेत किया कि आक्सीजन मास्क पहन लो। जो स्वय नही पहन सके, या जिन्हे पहनने मे कठिनाई हुई उनकी उसने मदद कर दी। रूस और अफगानिस्तान के वीच हिन्दूकुश पर्वत-मालाए है। इस पर्वत के महत्व के कारण ही अनेक लेखको ने अफगानिस्तान को 'हिन्दूकुश की भूमि' कहा है। इस पर्वत-माला की लम्वाई कोई ३७५ मील है। पामीर से शुरू होकर वह वामियन दर्रे पर समाप्त होती है। उसकी कुछ चोटिया तो वहुत ही ऊची हैं। तिरिचमीर की ऊचाई २५४२६ फुट वताई जाती है। अनेक दर्रे हैं इन पहाडो मे। प्राचीनकाल मे वहुत-से आक्राता, व्यापारी तथा यात्री इन्ही दर्रों से होकर अफगानिस्तान तथा अन्य स्थानो मे आया-जाया करते थे। आज भी वहुत-सा व्यापार इन्ही दर्रों मे होकर होता है।

पर्वत-मालाओ के आरभ होने के कुछ ही मिनट वाद एक साथ विमान दाई ओर को घूमा। पूछने पर परिचारिका ने वताया कि सामने वहुत ऊची चोटी है, जिसे वचाने के लिए विमान ने दिशा वदली है। इधर के पहाड अधिकाशत सूखे थे। वादल होने के कारण दृश्य साफ दिखाई नही देते थे, लेकिन कही-कही वादल

छितर जाते थे तो ऐसा लगता था, मानो विमान पहाडो की चोटियो का स्पर्श करता हुआ उड रहा है। जगह-जगह पर वर्फ फैली हुई थी। हम लोग कोई १६-१७ हजार फुट की ऊचाई पर उड रहे थे।

कुछ दूर तक यही सिलसिला चला। पर विमान प्रेशराइज्ड तथा आरामदेह होने के कारण पता भी न चला कि हम लोग इतनी ऊचाई पर है। आगे चलकर जव कुछ निचाई पर आये तो परिचारिका के सकेत पर हमने आक्सीजन मास्क उतार दिये।

. विमान मे ज्यादातर रूसी यात्री थे। उनमे कावुल-स्थित सोवियत दूतावास के एक अधिकारी भी थे। वे कुछ-कुछ अग्रेजी वोल लेते थे। उनसे वाते होती रही। उन्होने रूस की कुछ जानकारी दी। वातचीत मे वगालीवावू ने उनसे कहा कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर रूस गये थे। उसपर वह अधिकारी वोले, "कौन रवीन्द्रनाथ ठाकुर ?" इस प्रश्न पर वगालीवावू तेज हो उठे। वोले, "आप अधिकारी आदमी होकर भी इतनी जानकारी नही रखता! रवीन्द्रवावू को कौन नही जानता!" वेचारे अधिकारी सहम गये।

करीव डेढ घटे तक पहाडो पर उडते रहे। वीच-वीच मे छोटी-वडी वस्तिया और नदिया आती थी तो दृश्य वदल जाता था। वस्तियो को देखकर मै सोचता था कि मानव की शक्ति कितनी अद्‌भुत है! इन दुर्गम पर्वतो मे से मार्ग निकालकर लोग कैसे-कैसे निर्जन स्थानो मे वस गये है और जाने किस प्रेरणा के सहारे हजारो वर्षो से उनका जीवन चल रहा है! प्रकृति उनकी कडी परीक्षा लेती है। जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए उन्हे वहुत ही परिश्रम करना पडता है। पर उनके दुर्दमनीय उत्साह को क्या कभी कोई भग कर पाया है ? जाने कितनी पीढिया गुजर चुकी है, जाने कितनी आगे गुजरेगी, पर प्रकृति-माता की गोद इन पर्वत-पुत्रो और पुत्रियो से सदा हरी-भरी वनी रहेगी।

८॥ वजे मे कुछ पहले परिचारिका ने वताया कि अव अफगानिस्तान की सरहद समाप्त हो रही है। एक ओर को पानी की पतली-सी धारा की ओर इशारा करके उसने कहा, "वह देखो आमू दरिया। उसकी आधी धारा अफगानिस्तान मे है, आधी रूस मे। इसीमे दोनो देशो की सीमा वनती है।" उसके इतना कहते-कहते विमान नदी के ऊपर पहुच गया।

अव हम रूस मे थे—उस देश मे, जिसकी भूमि 'लाल' कही जाती है। मेरी

आखें उस रग को देखने के लिए लालायित हो उठी। पर कहा थी लालिमा ? कहा था उस भूमि से अतर, जो एक क्षण पहले हमसे छूटी थी ! सारी भूमि एक-सी। सारे दृश्य एक-से। दरिया का पानी भी ठीक दूसरे दरियाओ का जैसा।

निमिष-मात्र मे ये विचार मन मे विजली की भाति कौध गये, लेकिन तभी विमान नीचे उतरने लगा। विचारो का ताता टूट गया।

ठीक साढे आठ वजे तरमेज पहुचे। वडा छोटा-सा हवाई अड्डा है तरमेज का। वस्ती भी अधिक नही है। मुश्किल से दो हजार की आवादी होगी। लेकिन सरहद पर होने के कारण उसका वडा महत्व है। यहा से उजविकिस्तान शुरू हो जाता है। रूस मे छोटे-वडे पन्द्रह राज्य है, जिनमे एक उजविकिस्तान है। ताशकन्द उसकी राजधानी है।

विमान के उतरने पर परिचारिका हमे एक कमरे मे ले गई, जहा हमारे पासपोर्ट, वीसा आदि देखे गये। फिर भोजन के कमरे मे गये। कावुल से चलते समय झगडे मे वक्त वरवाद हो जाने के कारण नाश्ता नही कर सके थे। भूख लगी थी। मेज पर वैठे तो देखा कि सारी आमिष वस्तुए सामने है। मेरे शाकाहारी चीजो की इच्छा व्यक्त करते ही थोडी देर मे टमाटर, आलू, डवल रोटी, मक्खन आदि मेज पर रख दिये गए। पानी की जगह जिजर मिला। नाश्ता करानेवाली वहन हम लोगो के लिए शराव लाई। वगालीवावू तथा दो रूसी भाइयो ने चढा ली। मेरे इन्कार करने पर दूतावास के अधिकारी के द्वारा उस वहन ने कहलवाया कि हम लोगो के स्वास्थ्य की कामना की दृष्टि से थोडी-सी पी लो। मैने कहा, "मैने अपने जीवन मे शराव कभी नही पी। पर आप चिन्ता न करें। मै एक गिलास जल के साथ आप सवके स्वास्थ्य की कामना करूगा।" इसके वाद हमारे अन्य तीन साथियो ने जहा शराव के पैग उठाकर और एक-दूसरे से टकराकर, रूस और भारत की मैत्री की कामना की, वहा मैने जिजर के गिलास से उनका साथ दिया। मैने अनुभव किया कि अगर किसीका अपना मन कमजोर न हो तो मास-मदिरा से मजे मे वचा जा सकता है और उसके विना काम वखूवी चल सकता है। नाश्ते मे चाय विना दूध के मिली, पर अच्छी थी।

तरमेज मे वडी गर्मी थी। नाश्ता करके मै पहले उठ आया और इधर-उधर चक्कर लगाने लगा। मेरी इच्छा थी कि वहा के कुछ चित्र लू। चित्र लेने आगे वढ़ा, तो वहा के कर्मचारी ने रोक दिया। वोला, "चित्र लेने की मनाही है।"

यहापर कई उजबेग स्त्री-पुरुष-बच्चे मिले। उनका रग अफगानियो से मिलता-जुलता था, शरीर भी वैसा ही पुष्ट था, पर पोशाक भिन्न थी। वे हमे घूर-घूरकर देखते थे, विशेषकर कुरते-धोती के मेरे लिवास को।

विमान मे सवार होने से पहले अग्रेजी जाननेवाले एक दुभाषिये युवक से बात होती रही। चर्चा मे गाधीजी का नाम आया तो उसने कहा, "गाधी महापुरुष थे।" मैने कहा, "हा, क्योकि उन्होने आदमी-आदमी के बीच कभी भेद नही किया। वह विश्व मे प्रेम और शाति चाहते थे और इसीके लिए उन्होने सारी जिदगी काम किया।"

उन सज्जन ने सहमति प्रकट करते हुए कहा, "आप ठीक कहते है। हम लोगो की भी उनके बारे मे यही राय है।"

जो विमान हमे यहा लाया था, वही ताशकद जा रहा था। इसलिए हम अपना सारा सामान उसीमे छोड गये थे। घोषणा होने पर विमान मे चढ आये। मैने देखा कि सबके पासपोर्ट वापस मिल गये, पर मेरा नही मिला। जब दरवाजा बद होने लगा तो मै अपनी सीट से उठकर परिचारिका के पास गया और पासपोर्ट के बारे मे पूछा। उसने कहा—घबराओ नही, अभी मिल जायगा। फिर भी मै खडा रहा। परिचारिका ने दरवाजा खोला। एक सज्जन ऊपर आये। उनके हाथ मे मेरा पासपोर्ट था। देकर चले गये।

९ ४० पर तरमेज से रवाना हुए। थोडी दूर तक मैदान पर उडे, फिर पहाड आ गये। काबुल से तरमेज तक का डेढ घटे का सफर मजे मे हुआ था। लेकिन इधर एयर पाकेट अधिक होने के कारण ज़हाज बार-बार नीचे-ऊपर होता था। इसमे कुछ परेशानी हुई। पर पार्वत्य दृश्यो का आनद लेते हुए कोई १२ बजे ताशकद जा पहुचे। उस समय वहा की घडी मे १ बजकर २० मिनट हुए थे। जहाज से उतरते ही अलीम नाम के एक उजबेग सज्जन तथा माशा नाम की बहन ने हमारा स्वागत किया, कुशल-क्षेम पूछी और हवाई अड्डे के मुसाफिरखाने मे ले गये। बातचीत मे उन्होने कहा कि जल्दी नही है। आप लोग आराम से भोजन कर ले। पौने तीन बजे हमारा विमान छूटेगा। तबतक आप चाहे तो खाना खाकर इधर-उधर घूम भी सकते है।

मुसाफिरखाने के भीतर भोजन का कमरा था। उसमे जाकर भोजन किया। राइसा नाम की बहन ने बड़े प्रेम और आत्मीयता से खाना खिलाया।

भोजन करके वाहर आये। यहा का हवाई अड्डा बहुत वडा और शानदार है। नगर की भाति यहा भी खूब हरियाली थी। उद्यान के वीच लेनिन की विशाल प्रतिमा है।

यहा के समय मे २ ४५ पर विमान चला। यहा से दूसरा विमान मिला, पर था वह भी एरोफ्लोट ही। सवेरे के चले-चले थक गये थे। विमान के रवाना होने पर हम लोग कुछ देर तक वात करते रहे। फिर झपकी आ गई।

६। वजे आशकावाद पहुचे। कच्चा हवाई अड्डा। धूल का अवार। पर अदर उतना ही शानदार। सामने फव्वारे चल रहे थे, जिसके ऊपर जाल पर अगूर की वेलें फैली थी और उनपर अगूर के गुच्छे लटक रहे थे। इधर-उधर वगीचो मे गेदा, सूरजमुखी, गुलाव आदि के फूल खिले थे। सदावहार अपनी वहार दिखा रही थी।

वहा से ७ २० पर चलकर ८ वजते-वजते फिर जरा आख लगी कि परिचारिका ने जगा दिया। वोली, "देखो, अब हमारा जहाज कैस्पियन सागर पर उड रहा है।" नीचे अनत जल राशि दिखाई दे रही थी। लेकिन यह क्या ? आशकावाद पर लगता था कि शाम होगई, पर अव सूरज आसमान मे तेजी से चमक रहा था। देखकर मध्याह्न का भ्रम होता था। मास्को के हिसाव से ६ वजकर १५ मिनट हुए थे। समय का यह भेद और परिवर्तन मेरी समझ मे नही आया।

६ ३० पर आस्त्रेखान पहुचे। वोल्गा के तट पर वसी यह विशाल नगरी तीन-सौ वरस पहले विदेशी व्यापार का महान् केन्द्र थी। रूस, भारत तथा एशिया के अन्य देशो के साथ यहा से व्यापार होता था। वहुत-से भारतीय वहा जाकर वस गये थे। उसका स्मरण दिलाने के लिए नगर की एक सडक आज भी इदिस्काया (भारतीय) कहलाती है। अठारहवी शताब्दी मे वहा राजनैतिक उपद्रव हुए, जिनके परिणाम-स्वरूप उन भारतीयो को छोडकर, जिनकी व्यापार आदि के कारण वहा की भूमि मे गहरी जडे जम गई थी, शेष सब भारतीय तितर-वितर हो गये। उन्नीसवी शती के मध्य तक एक भी भारतीय व्यापारी वहा नही रहा। उनके मदिरो के अवशेष आज भी मिलते है।

हमे वताया गया कि भोजन करके आगे वढ चलेंगे और रात को १२ वजे के करीव मास्को पहुच जायगे। लेकिन भोजन करने के वाद पता चला कि खतरे का सकेत मिला है, यानी आगे मौसम अच्छा नही है, रात यही वितानी होगी। आशका-वाद की अपेक्षा यहा का हवाई अड्डा कुछ वढ़िया है। यह देखकर वडा आश्चर्य

हुआ कि यहा तरबूज खूब मिलते है। उसे रूसी मे 'अरबूज' कहते है। गिलास मे जमा हुआ मीठा दही भी मिला। भोजन के कमरे मे फलो का बडा सुदर रगीन चित्र लगा था। बाहर बगीचे मे गुलाब के फूल खिले थे। रात वही के विश्रामालय मे बिताई। थके होने के कारण खूब जोर की नीद आई।

सवेरे ४ बजे उठा। उस समय वर्षा हो रही थी। बगालीबाबू और मै एक ही कमरे मे ठहरे थे। उठकर बाते करने लगे। तभी एक महिला ने दरवाजा खटखटाया और तैयार होने की सूचना दी। नाश्ता करके ६ २५ पर रवाना हुए।

आस्त्रेखान से कुछ पहले से ही वोल्गा नदी साथ हो गई थी। विमान अब उसी-के किनारे-किनारे चला। वोल्गा का इतना नाम सुन रक्खा था। हमारे देश मे जैसे गगा का मान है, वैसे ही रूस मे वोल्गा का है। विमान के उडान भरने के कुछ ही समय बाद मौसम साफ हो गया। बाल-रवि की सुनहरी किरणे वोल्गा की जल-धारा पर पडकर अलौकिक दृश्य उपस्थित करने लगी। देखकर हृदय अनिर्वचनीय आनन्द से भर उठा।

८ बजे स्टालिनग्राड के हवाई अड्डे पर उतरे। वोल्गा के तट पर बसे इस विशाल नगर का किसी समय बडा महत्व था। पर अब वह बहार नही रही। थोडे समय मे हम लोग नगर मे घूम तो सकते नही थे, पर जहाज ने, आगे बढने से पहले, पूरे नगर पर चक्कर लगाया तो उसे देखने का सुयोग मिल गया। यहा हमारा स्वागत करने-वाली वीरा नाम की रूसी लडकी ने बताया था कि तीन महीने से इधर बारिश न होने से बडी गर्मी थी। कल पानी पड जाने से आज मौसम अच्छा हो गया है।

८ ४० पर रवाना हुए। थोडा आगे बढते ही वोल्गा बिछुड गई। अब विमान सीधा मास्को जाकर रुकनेवाला था।

आखिर मास्को पहुचे। उस समय दोपहर के १२। बजे थे। हवाई अड्डा खूब सजा हुआ था और वहा अच्छी चहल-पहल थी। मास्को-विश्वविद्यालय की एक स्नातिका ने हम लोगो का अभिवादन किया और हमे एक कमरे मे ले गई। वहां पासपोर्ट, वीसा आदि देखे गये। बाद मे उस बहन ने रेस्ट्रा मे ले जाकर जलपान कराया। इस बीच ओस्तान्कीनो होटल मे हमारे ठहरने की व्यवस्था कर दी गई। कार आते-आते ३ बज गये। हवाई अड्डे से शहर लगभग २५ किलोमीटर था। कार आने पर उसमे हमारा सामान रखवाकर और हमे उसमे बिठाकर वह लड़की चली गई। हम लोग शहर की ओर रवाना हुए।

: ४ :

युवक-समारोह

शहर की ओर चले उस समय कुछ थकान-सी अनुभव हो रही थी। एक तो शायद इसलिए कि लबा सफर करके आये थे, दूसरे, यहा की भाषा न समझ पाने के कारण तबीयत मे बडी घुटन-सी होती थी। फिर भी इस बात का सतोष था कि मजिल पर सही-सलामत पहुच गये। हमे लेने के लिए एक रूसी युवक आया था, बडा ही स्वस्थ और सुदर। कार चलने पर आपस मे बाते करने लगे। वह अग्रेजी बोल लेता था, पर टूटी-फूटी। शब्दो के अभाव मे कभी-कभी वह अटक जाता था और बहुत ही बेबसी महसूस करता था। बातचीत मे मालूम हुआ कि वह इजीनियर है और युवक-समारोह मे स्वयसेवक के रूप मे काम कर रहा है। सुनकर आश्चर्य हुआ। हमारे यहा कोई भी ऊचा पदाधिकारी स्वयसेवक का या वैसा काम करना शान के खिलाफ समझता है, लेकिन उस युवक के लिए वह कार्य उतने ही गौरव का था, जितना इजीनियर का।

हवाई अड्डे से शहर का रास्ता साफ-सुथरा और मनोरम था। सडक के दोनो ओर हरे-भरे खेत थे। कही-कहीपर ऊचे-ऊचे वृक्ष। उनके बीच मे छोटी-छोटी बस्तिया। युवक ने बताया कि ये हमारे कलेक्टिव फार्म (सामूहिक खेत) है, जिनमे अनेक परिवार मिल-जुलकर रहते है और सगठित रूप से काम करके देश की आर्थिक बुनियाद को मजबूत करते है।

रास्ता बात-की-बात मे तय हो गया। बस्ती दीख पडने लगी। दूर एक इमारत की ओर इशारा करके युवक ने कहा, "देखिये, वह जो सबसे ऊची इमारत दीख रही है, वह हमारी मास्को यूनिवर्सिटी है। अब हम शहर मे प्रवेश कर रहे है।"

फिर कुछ देर चुप रहकर उसने पूछा, "मास्को आप पहले कभी आये है या यह आपकी प्रथम यात्रा है?"

मेरे यह कहने पर कि मै पहली बार इस देश मे आया हू, उसने रूसी मे ड्राइ-

वर मे कुछ कहा। फिर हमे वताया कि उसने ड्राइवर से अनुरोध किया है कि वह हमे शहर मे घुमाता हुआ ले चले। नगर मे जिधर से प्रवेश किया था, वह एक छोर था। ओस्तान्कीनो होटल, जहा हमारे ठहरने की व्यवस्था की गई थी, दूसरे छोर पर था, यानी कोई २५-३० किलोमीटर के फासले पर।

युवक-समारोह का अवसर होने के कारण सारा नगर वडे सुन्दर ढग से सजाया गया था। चारो ओर रग-विरगी झडिया और झडे लगाये थे। जगह-जगह पर आकर्षक चित्र थे, जिनमे शाति, मैत्री, श्रम-प्रतिष्ठा आदि के दृश्य दिखाये थे। दीवारो पर, मकानो की खिडकियो पर, दुकानो पर, कागज के श्वेत कपोत लगे थे। कपोत शाति का प्रतीक माना जाता है। शहर की साज-सज्जा देखते ही वनती थी। लोगो की भीड-की-भीड इधर-उधर आ-जा रही थी। उनके चेहरे पर उल्लास था। यह स्वाभाविक ही था। सभवत उनके जीवन मे पहला अवसर था, जवकि उनके नगर मे विश्व के १२६ देशो के लगभग ३३ हजार नर-नारी एकत्र हुए थे। युवक ने वडी आत्मीयता से युवक-समारोह का उल्लेख करते हुए कहा, "सचमुच हमारे राष्ट्र के लिए यह एक अभूतपूर्व अवसर है। हम शाति चाहते है, सवके साथ मैत्री की कामना करते है। ससार के कोने-कोने से आये हजारो स्त्री-पुरुषो के मुह से 'शाति और मैत्री' की आवाज निकलती है तो खुशी से हमारी छाती फूल उठती है।"

हम लोग शहर मे काफी देर तक चक्कर लगाते रहे। युवक खास-खास इमारतो, सडको तथा सस्थाओ के भवनो को दूर से ही वताता गया। घटे-पौन घटे मे उसने वहुत-से स्थानो के नामो से हमारा परिचय करा दिया।

५ वजे के लगभग हम ओस्तान्कीनो होटल पर पहुचे। यह होटल मास्को के विशेष होटलो मे से एक है। कई मजिल की उसकी इमारत है। अनेक देशो के प्रतिनिधि उसमे ठहरे हुए थे। वाहर दर्शको की भीड लगी थी। पूछने पर मालूम हुआ कि सारे भारतीय प्रतिनिधियो को उसी होटल मे ठहराया गया है। मास्को के सभी छोटे-वडे होटल अतिथियो से भरे हुए थे। कार का द्वार खोलते हुए युवक वोला, "आपके ठहरने की व्यवस्था यही की गई है। आप मेहरवानी करके मेरे साथ आइये।"

मैने कहा, "सामान ?"

उसने मुस्कराकर कहा, "उसकी चिंता न कीजिये। वह पीछे से आ जायगा।"

लिफ्ट से हम लोग चौथी मजिल पर पहुचे। वहा स्वागत-कक्ष मे हमे विठाकर वह युवक यह कहकर चला गया कि मै अभी आता हू। थोडी देर मे वह लौटा और हमे एक कमरे मे ले गया, जिसमे चार व्यक्ति पहले ही से ठहरे हुए थे। दो पलग उसमे और डलवा दिये गए। उसके वाद युवक जाकर हमारा सामान ले आया। हमने सोचा कि थोडी देर विश्राम कर लें, लेकिन उसका अवसर कहा था! दिल्ली तथा अन्य स्थानो के वहुत-से परिचित व्यक्ति मिल गये और वे देश के हाल-चाल पूछने लगे। उन्होंने बताया कि आज गोर्की पार्क मे एक विशेष कार्नीवल का आयोजन किया गया है।

हम लोगो ने हाथ-मुह धोकर कपडे वदले, नाश्ता किया, तवतक जाने का समय हो गया। होटल के वाहर वसें खडी थी। उनमे वैठकर जव हम रवाना हुए तो वाहर के दृश्य देखकर हृदय गद्गद् हो गया। लाखो उत्सुक वर-नारियो की भीड सडक के दोनो ओर वडे ही व्यवस्थित रूप मे खडी थी। उनके हाथो मे झडिया थी, जिन्हे ऊची कर-करके वे 'मीर' (शाति) और 'द्रुज़वा' (मैत्री) के नारे लगाते थे। 'हिंदी-रूसी भाई-भाई' के स्वर वार-वार उनके कठ से फूटकर वहा के वायुमडल मे गूजते थे। लोग जोश से पागल हो रहे थे। भीड इतनी अनुशासित थी कि देखकर आश्चर्य-मिश्रित हर्ष होता था। वास्तव मे विशाल जनसमुदाय की असीम भावनाओ की यह अभिव्यक्ति असामान्य थी और शायद वैसी ही अभिव्यक्ति से अभिभूत होकर मास्को से विदा लेते समय प० जवाहरलाल नेहरू कह उठे थे, "मै अपना हृदय यही छोडे जा रहा हू।"

आगे चलकर हम लोग वस से उतर पडे। पार्क अधिक दूर नही था। उतरते ही रूसी भाई-वहनो ने घेर लिया। वे कहते थे, "इदिस्की ?"—अर्थात्, क्या आप भारतीय हो ? और जव मै कहता 'हा' तो वे वडे प्यार और आत्मीयता से पेश आते थे। मनोरजन की दृष्टि से वहुत-से लोगो ने कृत्रिम चेहरे लगाकर ऐसी आकृतिया वना ली थी कि देखकर हँसी आती थी। एक रूसी वहन ने वगाली-भाई के चेहरे पर एक लम्वी नाक और मूछे लगा दी। अव वह हजरत दूसरे ही आदमी लगने लगे। जवतक हम वहा रहे, वह उस कृत्रिम नाक और मूछो को लगाये रहे और लोगो के मनोरजन के पात्र वने रहे।

पार्क मे वेहद भीड थी। विभिन्न देशो ने भाति-भाति की झांकिया सजाई थी। मनोरजन के साथ-साथ अलग-अलग देशो की सस्कृति की झाकी भी मिल रही थी।

घूमते-घूमते वहुत-से परिचित लोगो से मिलना हुआ। रूसी भाई-वहनो की भीड-की-भीड आकर हमे घेर लेती थी और 'हिंदी-रूसी भाई-भाई' के नारे लगाती थी। हमे भारतीय देखकर कुछ लोग वडे अजीव से स्वर मे गाते थे—"आवारा हू।" कई लोगो ने पूछा, "क्या आप राजकपूर के देश से आये हो ?" वार-वार जव यह प्रश्न किया गया तो मुझे वडा अटपटा-सा लगा। मैंने कहा, "नही, मैं गाधी के देश से आया हू, नेहरू के देश से आया हू।" वाद मे मालूम हुआ कि राजकपूर उन दिनो मास्को मे थे और उनके 'आवारा' चित्र का यह गाना वहा वडा लोक-प्रिय हो रहा था। हिंदी की फिल्मे भी वहा के सिनेमाघरो मे कभी-कभी दिखाई जाती है।

रूसी भाई-वहनो ने आगत अतिथियो के निकट सम्पर्क मे आने और उनके साथ मित्रता के सबध स्थापित करने का हृदय से प्रयत्न किया। उनकी यह भी इच्छा थी कि कोई भी मेहमान उनके देश की बुरी छाप लेकर न जाय। रूस के विभिन्न भागो से लाखो युवक और युवतिया मास्को आई थी। वे अपने अतिथियो को छोटी-वडी अनेक भेंटें देती थी, अपने हाथ से उनके वैज लगाती थी और चित्र आदि की भेंट द्वारा पारस्परिक स्थायी मैत्री की कामना करती थी। सारा वाता-वरण सद्भावना तथा प्रेम की स्निग्धता से भरा था।

एक चीज ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया। रूसी भाई-वहनो मे उन्मु-क्तता होते हुए भी उच्छृखलता नही थी। इसमे कोई सदेह नही कि उस अवसर पर रूसी भाई-वहनो ने अपना पार्ट वड़ी खूवी से अदा किया। आगत स्त्री-पुरुषो की अलग-अलग भाषाए थी, अलग-अलग रुचिया थी, अलग-अलग विश्वास थे, अलग-अलग रहन-सहन थे, अलग-अलग खान-पान थे। रूस के निवासियो ने वडी आत्मीयता से उनका आदर-सत्कार किया, उनकी सुविधा का ध्यान रखा, सभी भाषाओ के दुभाषियो की व्यवस्था की, लेकिन वडी लज्जा के साथ कहना पडता है कि वाहर से आये वहुत-से लोगो ने अपनी करतूतो से वहा के उज्ज्वल वायुमडल को विषाक्त करने का प्रयत्न किया। अनैतिकता की वात छोडिये, अनेक सज्जन मामूली लालच के सामने झुक गये। कपडो, जूतो आदि की वहा अच्छी कीमत उठ आती है। कई भाइयो ने अपने पुराने सूट, जूते, ओवरकोट तथा वहनो ने साडिया अच्छे-खासे मुनाफे से वेची। यहातक सुनने मे आया कि कुछ वहने अपने हाथ की काच की चूडिया तक वेच आईं। भेंट के रूप मे चीजो के आदान-प्रदान का औचित्य

हो सकता है, लेकिन पुरानी चीजो को,आर्थिक लाभ के लिए ऊचे दामो मे बेचना स्वार्थ-वुद्धि का परिचायक होने के साथ-साथ नितात अशोभनीय और अवाछ-नीय है।

युवक-समारोह का भीतरी उद्देश्य कुछ भी हो, उसका सगठन भी कैसा ही क्यो न हो, लेकिन इसमे शक नही कि उसके निमित्त ससार के कोने-कोने से हजारो नर-नारी एक जगह पर एकत्र हो जाते है और अल्पकाल के लिए ही सही, उनकी एक ही आशा, एक ही अभिलाषा होती है--विश्व के निवासियो मे मैत्री स्थापित हो।

समारोह २८ जुलाई से शुरू हुआ था। ११ अगस्त को समाप्त हुआ। इन दिनो मे अनेक सास्कृतिक कार्यक्रम, खेल-कूद, नृत्य-नाटक आदि रूस की ओर से ही नही, लगभग सभी देशो की ओर से हुए और उसका स्मरण वहा के लोग वहुत समय तक वडे प्रेम से करते रहे। भारतीय नृत्य तो वहा के निवासियो को वहुत ही पसद आया।

पार्क कुत्तूरे (गोर्की पार्क) सास्कृतिक प्रदर्शनो की स्थायी जगह है। इतने देशो के लोगो का स्वागत कर वह जैसे धन्य हो उठा! वहीपर भोजन की व्यवस्था थी। रूसी साथियो के आग्रह पर हम लोगो ने खाना खाया और घूमते-घामते होटल लौटे। उस समय रात के २ वजे थे।

अगला दिन समारोह का अतिम दिन था। वडी शान के साथ विशाल लेनिन स्टेडियम मे उसकी कार्रवाही हुई। उसमे सोवियत सघ के प्रमुख राजनेता श्री ख्रुश्चेव तथा श्री वुल्गानिन भी सम्मिलित हुए। अनेक सास्कृतिक प्रदर्शन किये गए। उनमे कुछ तो वास्तव मे वडे ही आकर्षक थे। चारो ओर से 'शाति' और 'मैत्री' के नारे लगे और वडी भावना के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

अगले दो-तीन दिन मे सारी भीड छट गई। लोग अपने-अपने देशो को चले गये। लेकिन मुझे तो वहा कुछ दिन रहकर उस भूमि को निकट से देखना था, जिसने टाल्स्टाय, गोर्की, तुर्गनेव, क्रोपॉटकिन, पुश्किन, डोस्टोवस्की प्रभृति कलाकारो को जन्म दिया था।

: ५ :

भारतीय स्वाधीनता दिवस-महोत्सव

युवक-समारोह मे भाग लेने आये अधिकाश प्रतिनिधियो के चले जाने से मास्को नगरी मे चहल-पहल बहुत कम हो गई, चारो ओर उदासी-सी छा गई। असल मे अधिवेशन के दिनो मे असामान्य प्रवृत्तिया रही थी, जिनकी तैयारिया महीनो पहले से करनी पडी थी। रूसी भाई-बहनो ने दिन-रात एक कर दिये थे। हजारो व्यक्तियो की व्यवस्था करना मामूली बात नही थी। बेचारे परिवाचको (दुभाषियो) को तो प्रतिनिधियो की टोलियो के साथ छाया की भाति रहना पडता था। वे थककर चूर हो गये थे और समारोह के समाप्त होते ही उनमे से बहुत-से विश्राम के लिए मास्को से बाहर किसी स्वास्थ्यप्रद स्थान पर चले गये।

मेरे सहृदय मित्र श्री सोमसुन्दरम्, जो पहले दिल्ली मे 'नवभारत टाइम्स' के सपादकीय विभाग मे काम करते थे और अब मास्को के 'विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह' मे अनुवादक का कार्य करते है, होटल मे मेरा सामान उठवाकर ले गये और डा० वीरेन्द्रकुमार शुक्ल के यहा ठहरने की व्यवस्था कर दी। शुक्लजी पहले सागर विश्व-विद्यालय मे प्राध्यापक थे, अब उक्त प्रकाशन-गृह मे अनुवाद का काम करते है। उनके घर के पास बन्धुवर मेवालाल जायसवाल थे, जो मास्को रेडियो के कर्मचारी है।

इनके अतिरिक्त और भी कई भारतीय मित्रो से भेट हुई। उनमे सर्वश्री भीष्म साहनी, गोपेश, राधेश्याम, डा० खन्ना, मदनलाल 'मधु', नकवी, शकर गौड आदि से बडी घनिष्ठता हो गई। मोहिनी राव तो पहले से ही परिचित थी। सोमजी की पत्नी सी० रगीना से, जो एक बहुत ही सुसस्कृत रूसी महिला है, मास्को पहुचते ही परिचय हो गया था। भारतीय दूतावास के तत्कालीन भारतीय कौसलर श्री रत्नम् और उनकी पत्नी श्रीमती कमलाजी से भी बडी आत्मीयता हो गई। नतीजा यह कि मुझे एक क्षण को भी ऐसा नही लगा कि मै अपने देश से हजारो मील दूर हू।

भाई सोमसुन्दरम् ने बताया कि १५ अगस्त को भारतीय दूतावास मे

स्वाधीनता-दिवस समारोह मनाया जायगा और उन्होने आग्रह किया कि मै उसमे जरूर चलू । मेरे लिए तो यह वडे आनन्द की वात ही हो सकती थी । किसी दूसरे देश मे अपना राष्ट्रीय पर्व मनाने का यह मेरा पहला अवसर था ।

उस दिन सवेरे ८ वजे के लगभग भारतीय दूतावास मे हम पहुच गये और ८॥ वजते-वजते वहुत-से भारतीय भाई और वहने वहा इकट्ठे हो गये । लोकप्रिय कलाकार पृथ्वीराज कपूर तथा उनके सुपुत्र राजकपूर भी उपस्थित थे । कुल मिलाकर दो-ढाईसौ व्यक्ति रहे होगे । दूतावास के भवन पर भारतीय राजदूत श्री के० पी० एस० मेनन ने राष्ट्रपताका फहराई और अपने सक्षिप्त भाषण मे उस पर्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, "आज हम सव यहा इकट्ठे हुए है और अपने ध्वज के नीचे खडे है । यह सव हमारे देश के आजाद हो जाने के कारण ही सभव हुआ है । यदि भारत स्वतत्र न हुआ होता तो पता नही कि मै कहा होता और आप लोग कहा होते ।" उन्होने महान् स्वाधीनता-सघर्ष का उल्लेख किया और महात्मा गाधी तथा अन्य महापुरुषो के त्याग एव तपस्या का वडे हृदय-स्पर्शी ढग से स्मरण किया । अन्त मे राष्ट्रगान हुआ । तत्पश्चात् सव लोग दूतावास के प्रागण से भीतर हॉल मे चले गये, जहा शेष कार्य-क्रम पूरा होना था । वडे उल्लास और उमग का अवसर था वह । वम्वई के सुपरिचित गीतकार श्री प्रेम 'धवन' ने मधुर कण्ठ से गाया—

"झूम-झूमकर नाचो आज,
गाओ खुशी के गीत · "

तो सचमुच लोग झूम उठे । गीत वहुत ही भावपूर्ण था । उनके वाद ए० आई० सी० सी० के एक युवक प्रतिनिधि ने एक गीत सुनाया । पृथ्वीराज ने अपने एक नाटक का दृश्य उपस्थित किया । वह कुशल अभिनेता तो है ही । ऐसा समा वाधा कि लोग मत्रमुग्ध-से उनके अभिनय को देखते रहे, उनके स्वर और भावनाओ के उतार-चढाव से प्रभावित होते रहे । जव दृश्य समाप्त हुआ तो उनसे आग्रह किया गया कि एक और दृश्य का अभिनय करे । उन्होंने उस अनुरोध को स्वीकार कर एक दृश्य और दिखाया । वडी दिलचस्पी के साथ लोगो ने उसे देखा । दोनो दृश्य भारत की स्वतत्रता से सवधित थे । पिता के वाद पुत्र की वारी आई । चारो ओर से आवाज उठी—" 'मेरा जूता है जापानी' सुनाओ ।" मुस्कराते राजकपूर आये और वडी मस्ती से झूमते हुए उन्होंने फरमायशी गाना सुनाया । लोग हाथ से ताल देते रहे । वडा आनद आया । वधुवर 'गोपेश' ने दो कविताए सुनाईं । दोनो ही रुचिकर लगी ।

सुविख्यात अभिनेता डेविड ने रवीन्द्र ठाकुर की सत्यकाम-जाबालि के प्रसग पर आधारित अग्रेजी कविता सुनाई । डेविड का अभिनय-कौशल मिल जाने से उसका आकर्षण कई गुना बढ गया। उर्दू-कवि अन्सारी की रचना ने भी अच्छी छाप डाली।

इस अवसर पर स्वल्प जलपान की व्यवस्था की गई थी। राजदूत श्री मेनन बराबर उपस्थित रहे। श्री रतनम् तथा उनकी पत्नी ने उत्सव को सरस और सफल बनाने का प्रयत्न किया।

एक बडा विचित्र अनुभव इस अवसर पर हुआ। मास्को के विदेशी प्रकाशन-गृह, मास्को रेडियो तथा अन्य सस्थाओ मे बहुत-से भारतीय भाई-बहने काम करते है। उनकी इच्छा थी कि वे एक ऐसी स्थायी सस्था का निर्माण करे, जिसके अन्तर्गत समय-समय पर सार्वजनिक रूप से सास्कृतिक एव साहित्यिक समारोह किये जा सके। एक अस्थायी सस्था उन्होने बना भी ली, जिसका नाम उन्होने 'हिन्दुस्तानी समाज' रखा। उसके नियम-उपनियम बनाये गए और उसके उद्देश्यो का उल्लेख करते हुए स्पष्ट कर दिया गया कि उसकी प्रवृत्तिया केवल सास्कृतिक तथा साहित्यिक क्षेत्र तक सीमित रहेगी। सरकारी मान्यता के सबध मे रूसी अधिकारियो से बातचीत हो गई और तय हुआ कि स्वाधीनता-दिवस के पर्व पर, १५ अगस्त को, रूसी सरकार के शिक्षा-मत्री उसका विधिवत् उद्घाटन कर देंगे। निमत्रण-पत्र छप गये, लोगो को सूचनाए दे दी गईं। ऐन मौके पर रूसी सरकार की ओर से खबर मिली कि सस्था की स्थापना की अनुमति सरकारी तौर पर नही दी जा सकती। अधिकारियो का कहना था कि भारत की देखा-देखी अन्य देशो के लोग भी ऐसी सस्थाए खोलना चाहेगे। यह भी हो सकता है कि शुरू मे सस्था का उद्देश्य सास्कृतिक और साहित्यिक रहे, किन्तु सरकार से मान्यता मिल जाने पर यदि आगे चलकर अन्य प्रवृत्तिया भी चलाई गई तो उन्हे कैसे रोका जा सकेगा? शिक्षा-मंत्री ने इस आधार पर 'हिन्दुस्तानी समाज' का उद्घाटन करने से इन्कार कर दिया। भारतीय दूतावास के अधिकारियो ने रूसी अधिकारियो को समझाया कि जब इस बात की गारटी दी जाती है कि इस संस्था की प्रवृत्तिया एक विशेष क्षेत्र तक ही सीमित रखी जायगी तब उसमे आशकित होने या डर की बात क्या हो सकती है, लेकिन उन लोगो ने एक न सुनी। गैर-सरकारी रूप मे वैसे भारतीय विभिन्न अवसरो पर साहित्यिक समारोह कर सकते थे और करते भी रहते थे, लेकिन उनका विचार था कि सस्था की विधिवत् स्थापना हो जाने तथा उसे सरकारी मान्यता मिल

जाने से रूसी भाई-वहने, विशेपकर रूसी अधिकारी लोग भी, उन समारोहो मे खुलकर भाग ले सकेंगे और इस प्रकार दो देशो के साहित्यिक एव सास्कृतिक आदान प्रदान की नीव और सुदृढ होगी, पर उनकी यह इच्छा पूरी न हो सकी। यूरोप के अन्य देशो मे घूमने के वाद अक्तूवर के दूसरे सप्ताह मे जव मै फिर मास्को लौटा तव एक मीटिंग मे वह सवाल फिर आया और निश्चित हुआ कि एक वार फिर रूसी अधिकारियो से वात की जाय, पर वाद मे मुझे मालूम हुआ कि वह प्रयत्न भी निष्फल सिद्ध हुआ।

इस घटना का मेरे मन पर वडा अजीव असर हुआ। मैने देखा कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे रूसी सरकार और वहा के नागरिक वहुत ही आजाद है, उनमे किसी प्रकार का दवाव नही है, न डर, न आतक। लेकिन जहा राजनैतिक क्षेत्र का प्रश्न उठता है, वे लोग वडे ही चौकन्ने हो उठते है। इसका कारण शायद यह है कि दूध का जला छाछ को भी फूक-फूककर पीता है। द्वितीय महायुद्ध मे रूस चारो ओर से शत्रुओ से घिर गया और उसे जो कडवी घूटें पीनी पडी, वे किसीसे छिपी नही है और आजभी वे अपनेको निरापद अनुभव नही करते। इसलिए वे वहुत ही सावधान और चौकन्ने रहते है। अवतक उन्होंने अपने देश के दरवाजे वाहरी लोगो के लिए एकदम वद कर रखे थे। ये वर्ष उन्होने अपने देश के आर्थिक नव-निर्माण मे लगाये और आश्चर्यजनक फल-प्राप्ति की। वाद मे उन्होने अनुभव किया कि शेष दुनिया से अपनेको अलग रखने की नीनि सकीर्ण और विघातक नीति है। यदि उन्हें अपने आदर्शों का प्रचार और प्रसार करना है तो द्वार वद रखकर उसकी सिद्धि असभव है। फलत उन्होने अपना दरवाजा खोला, पर वहुत ही डरते-डरते। इसमे कोई सदेह नही कि नेहरूजी के मास्को-प्रवास ने और ख्रुश्चेव तथा वुल्गानिन के भारत-प्रवास ने पारस्परिक आदान-प्रदान के मार्ग को वहुत हद तक प्रशस्त कर दिया, फिर भी मानना होगा कि वहा के लोगो के दिलो से भय दूर नही हुआ है। आणविक शस्त्रास्त्रो की असाधारण प्रगति एव स्पूतनिक के चमत्कार के वावजूद वे वडी हैरानी अनुभव कर रहे है। वे विदेशियो को आने तो देते है, लेकिन उनपर और उनकी प्रवृत्तियो पर कडी निगरानी रखते है।

अव वहा भारतीय-रूसी मैत्री मघ की स्थापना हो गई है और उसे सरकारी मान्यता मिल गई है, लेकिन 'हिन्दुस्तानी समाज' स्यापित नही हो सका।

: ६ :

मास्को नगरी

युवक-समारोह के लिए मास्को नगरी का चुनाव निस्सदेह वडी दूरदर्शिता एव विवेक का परिचायक था। मास्को ससार के एक महान शक्तिशाली राष्ट्र की राजधानी होने के अतिरिक्त आकर्षण का केन्द्र इसलिए भी है कि विगत वीस-पच्चीस वर्ष मे उसने विभिन्न क्षेत्रो मे आश्चर्यजनक प्रगति की है। चूकि अवतक वह देश लौहावरण से घिरा हुआ था और हर किसीके लिए वहा जाना सभव नही था, इसलिए लोगो मे वडी उत्सुकता थी कि उस 'रहस्यमय' देश मे जाय और देखे कि क्या सचमुच वहा इतनी उन्नति हुई है, जितनी कि वताई जाती है, अथवा वह एक दल-विशेष का प्रचार-मात्र है। इस समारोह ने सहस्रो व्यक्तियो को न केवल वहा आने का अवसर दिया, अपितु वहा की वहुमुखी प्रगति को स्वय अपनी आखो से देखने की सुविधा भी प्रदान की।

पाठको को सभवत ज्ञात होगा कि पहले रूस की राजधानी पेट्रोग्राड थी, जिसे अव लेनिनग्राड कहते है। वडा पुराना नगर है वह, और ऐतिहासिक दृष्टि से वडा महत्वपूर्ण भी। लेकिन शासन के विचार से वह केन्द्रीय स्थल नही था। अत जव राज्य की वागडोर लेनिन के हाथ मे आई तो सरकार को वहा से उठाकर मार्च सन् १६१८ मे मास्को ले आया गया। उसके कोई चार साल वाद जव ३० दिसम्वर १६२२ को सोवियत सघ (यूनियन ऑव सोवियत सोशलिस्ट रिपव्लिक्स) की स्थापना हुई तो मास्को को अधिकृत रूप से उसकी राजधानी घोषित किया गया। आज मास्को की गणना सोवियत सघ के ही नही, ससार के वृहत्तम नगरो मे की जाती जाती है। राज्य का केन्द्रीय स्थल तो वह है ही। उसका क्षेत्र-फल ३३० वर्ग किलोमीटर अर्थात् १२७ ४ वर्गमील तथा आवादी सन् १६५६ की जनगणना के अनुसार लगभग ५० लाख है। इसमे उप-वस्तियो की जनसख्या शामिल नही है।

जर्मनी के रूस पर आक्रमण के समय मास्को ने बडी बहादुरी दिखाई। यों तो नाजियो को रूस की भूमि पर से बाहर खदेडने मे सारे राष्ट्र ने अपने प्रयत्न मे कोई कसर न उठा रक्खी, लेकिन सबसे अधिक भार पडा मास्को पर, जो कि राजधानी होने के कारण नाजियो के कठोरतम आक्रमण का लक्ष्य-बिन्दु थी। दिसम्बर १९४१ मे पराभूत होकर जब नाजी फौजें लौट गईं तब कही मास्को के निवासियो ने चैन की सास ली। मास्को की लडाई शत्रु से राष्ट्र को बचाने की दृष्टि से एक युग-परिवर्तनकारी घटना थी।

नाजियो के आक्रमण से देश की जो क्षति हुई, वह अपरिमित थी। नगर-के-नगर भूमिसात हो गये और अनुमान लगाया जाता है कि लगभग सवा दो करोड व्यक्ति लडाई मे मारे गये। इसका कारण यह था कि युद्ध के लिए रूस की तैयारी न थी और उसकी आख खुली तबतक शत्रु उसके द्वार पर पहुच चुका था।

युद्ध की समाप्ति पर रूस के कर्णधारो का ध्यान राष्ट्र की क्षतिपूर्ति तथा नव-निर्माण की ओर गया। सारे शहर को पानी पहुचाने, बढती आबादी के वास्ते घर बनवाने तथा यातायात की समुचित व्यवस्था करने आदि के लिए अनेक योजनाए पहले से ही चल रही थी, लेकिन युद्ध के दिनो मे उनकी गति शिथिल हो गई थी। लडाई से छुटकारा मिलते ही सारा देश पुन नव-निर्माण के काम मे लग गया। आज रूस के किसी भी नगर मे चले जाइये, आपको पता भी नही चलेगा कि यह वही नगर है, जो कभी ध्वस्त हो गया था। स्टालिनग्राड, लेनिनग्राड, मास्को, आदि सब अपने पुराने वैभव को प्राप्त हो गये है। इतना ही नही, उनका विकास बडी तेजी से हो रहा है।

लोगों का बौद्धिक स्तर ऊचा हो, साहित्य को प्रोत्साहन मिले तथा कला का सवर्द्धन हो, इसलिए वहा अच्छे-से अच्छे पुस्तकालय, प्रकाशन-गृह, सग्रहालय आदि है। वहा के लेनिन पुस्तकालय की गणना तो ससार के सबसे बडे पुस्तकालयो मे की जाती है।

अपनी पुस्तकें विदेशी भाषाओ मे तथा विदेशी भाषाओ की पुस्तकें अपनी भाषा मे प्रकाशित करने के लिए वहा जो काम हो रहा है, वह उल्लेखयोग्य है। रूसी तथा रूस की अन्य प्रमुख भाषाओ की सैकडो पुस्तकें विदेशी भाषाओ मे छपी है और विदेशी भाषाओ की रूसी भाषा मे। यह काम आज भी बडी लगन और तेजी से हो रहा है।

अपने नेताओ, साहित्यकारो, कलाकारो तथा अन्य विभूतियो का आदर करना रूसी खूब जानते है। उनकी स्मृति-रक्षा के लिए वे दिवगतो की एक-एक चीज सुरक्षित रखते है। आज मास्को मे १५० सग्रहालय (म्यूजियम) है। वहा की त्रेत्याकोव आर्ट गैलरी (कला-भवन) तो ससार-भर मे प्रसिद्ध है।

मनोरजन के लिए अकेले मास्को मे ३४ थियेटर, २०० के लगभग क्लब, थियेटर-भवन तथा ५६ स्थायी सिनेमाघर है। पार्को तथा उद्यानो की वहा भरमार है। छोटे-बडे बीसियो पार्क ६ हजार हेक्टर भूमि मे फैले हुए है। ५६ स्टेडियम है।

यातायात के साधन बहुत ही सुविधाजनक है। सारे शहर मे रेलो और सडको का जाल बिछा है। ट्रामे, बसें, टाली बसे और टैक्सिया रात के दो-तीन घटो को छोडकर बराबर चलती रहती है। जमीन के भीतर सुरग मे चलनेवाली रेलो का तो, जिन्हे मीत्रो कहते है, कहना ही क्या!

सार्वजनिक यातायात की समुचित व्यवस्था तथा सुविधा होने के कारण वहा लोगो को स्वय अपनी मोटर रखने की आवश्यकता अनुभव नही होती। वैसे वहा का आर्थिक सगठन भी कुछ इस ढग का है कि वैयक्तिक रूप मे मोटर का रखना असभव नही तो बहुत कठिन अवश्य है, पर आम तौर पर ट्राम, बसो, मीत्रो आदि की सुविधाजनक व्यवस्था होने के कारण अपनी कार का न होना लोगो को अखरता नही है।

मास्को विशाल नगरी है और वास्तव मे वह बडी सुन्दर है। मस्क्वा (मास्को) नदी लहराती हुई नगर मे होकर बहती है और सारे शहर को अपूर्व शोभा प्रदान करती है। बहुत-से बडे-बडे भवन और मकान उसीके तट पर बने हुए है। यह नदी ३१२ मील लम्बी है और कोलोमना नगर के निकट ओका नदी मे जाकर गिरती है। मास्को के भीतर उसकी लम्बाई २८ मील है। कही-कही तो वह ऐसा बल खाती है कि देखकर हृदय मुग्ध हो उठता है। असीम प्राकृतिक सौंदर्य-प्रदायिनी होने के साथ-साथ उसकी उपयोगिता भी कम नही है। नौकाओ तथा अग्निबोटो के द्वारा उसमे अच्छा यातायात होता है।

किसी भी देश की प्राथमिक आवश्यकता होती है खाना। रूस के शासको ने सर्वप्रथम अपने प्रयत्न उसी क्षेत्र मे केन्द्रित किये। पाठको को पता होगा कि नाजियो के आक्रमण के समय चारो ओर से शत्रुओ का घेरा पड जाने के कारण लाखो रूसी भूख से तडप-तडपकर मर गये थे, रूस का सारा आर्थिक सगठन एकदम छिन्न-भिन्न

हो गया था। आज हर आदमी को भरपेट भोजन और काम मिलता है। चीजो के दाम वहा बहुत बढे-चढे है, विशेषकर आराम और शृगार की चीजो के, लेकिन रोटी, जिसका सबध छोटे-बडे सबसे आता है, वहा काफी सस्ती है।

खाने के बाद दूसरा नम्बर आता है कपडे का। कपडा वहा बढिया किस्म का नही मिलता, फिर भी नगर की लगभग पचास लाख की आबादी मे वस्त्रहीन शायद ही कोई व्यक्ति मिले।

यही बात घरो के बारे मे है। नगरवासियो के रहने के लिए रात-दिन एक करके घर बनाये जा रहे है। बहुत-से घर बन चुके है। घरो के समूह को वहा 'दोम' कहते है और घर को 'क्वार्टर'। कई-कई मजिल के एक-एक दोम मे सैकडो 'क्वार्टर' होते है और आधुनिक सुविधाओ से परिपूर्ण, यानी हर क्वार्टर मे बिजली, ठण्डे-गरम पानी के नल, खाना पकाने के लिए गैस और ऊपर की मजिलो मे आने-जाने के लिए लिफ्ट। घरो को गर्म रखने की भी व्यवस्था है। कहने का तात्पर्य यह कि प्रत्येक नागरिक का वहा मूल्य है और उसकी कार्यक्षमता बनी रहे और बढती रहे, इसके लिए शासन पूरी तरह से सचेष्ट है।

भोजन, वस्त्र तथा मकान के बाद आती है शिक्षा और चिकित्सा। इन दोनो क्षेत्रो मे भी रूस काफी आगे बढा है। शिक्षा वहा अनिवार्य है और चिकित्सा की सुविधा सबके लिए समान रूप से उपलब्ध है।

जलवायु वहा का अच्छी है। गर्मी अधिक नही पडती। बारहो महीने वहा के नागरिक गर्म कपडे पहनते है। नवम्बर से लेकर मार्च तक के महीने वहा के लिए बडे कठिन होते है। उन दिनो कडाके की सर्दी पडती है। जनवरी मे तापमान शून्य से भी नीचे चला जाता है, सडको पर बर्फ बिछ जाती है, मार्ग अवरुद्ध हो जाते है। जलवायु की अनुकूलता तथा पौष्टिक भोजन मिलने के कारण वहा के लोग बडे स्वस्थ है। कुल मिलाकर सतुष्ट भी दिखाई देते है।

सच यह है कि उस देश मे जो भौतिक प्रगति हुई है, उसका श्रेय वहा के कोटि-कोटि निवासियो की अपने राष्ट्र के प्रति उत्कट भावना, कार्य-क्षमता तथा परिश्रम-शीलता को है। सबसे बडी बात यह है कि हर रूसी भाई-बहन को अपने राष्ट्र पर बडा गर्व है। वस्तुत किसी भी राष्ट्र को सरकार के गिने-चुने लोग नही बनाते, पैसा भी नही बनाता। उसे बनाते है उसके निवासी, उनका त्याग और उनका बलिदान।

: ७ :

मास्को के आकर्षण-केन्द्र

रूस मे मै सरकार का मेहमान नही था, इससे जहा एक ओर कुछ असुविधा हुई, वहा दूसरी ओर एक वडा लाभ भी हुआ । लाभ यह कि मै जहा कही जाना चाहता था, जा सकता था और जिस किसीसे मिलना चाहता था, मिल सकता था । नतीजा यह हुआ कि मुझे मास्को तथा उसके निवासियो को अच्छी तरह से देखने का अवसर मिला ।

क्रेमलिन

दर्शनीय स्थानो मे सबसे पहला नम्बर क्रेमलिन का आता है। जिस प्रकार दिल्ली मे हमारा ससद-भवन है, उसी प्रकार वहा क्रेमलिन है । अन्तर केवल इतना है कि क्रेमलिन वहा की राजसत्ता का केन्द्र होने के साथ-साथ एक मूल्यवान सग्रहालय भी है । क्रेमलिन के इतिहास से पता चलता है कि सन् ११४७ मे इसी स्थान पर मास्को नगरी की स्थापना हुई थी । सैनिक विशेषताओ के कारण इस जगह का चुनाव किया गया था । धीरे- धीरे उसका विकास होता गया । चूकि पडोस के मगोल-तातारो के उन दिनो भारी उपद्रव होते थे, इसलिए रूस के शासक प्रथम इवान ने सुरक्षा की दृष्टि से चारो ओर से इसकी मजबूती कराई । लेकिन इसे विशाल आकार और रूप मिला दमित्री इवानोविच के शासनकाल मे । पन्द्रहवी शताब्दी के अत मे उसके चारो ओर पत्थर की प्राचीर का निर्माण किया गया ।

क्रेमलिन भवन की ऊचाई लगभग २० मीटर है, लवाई १३ मीटर और क्षेत्र-फल १३८ मीटर । उसकी मीनारें और गुम्वज, उसके शिखरो का स्वर्ण-वर्ण तथा मास्को नदी के तट पर उसकी अवस्थिति, कुल मिलाकर वडा ही आकर्षक दृश्य उप-स्थिति करते है । क्रेमलिन मे २० मीनारे है, जिनमे सबसे विशाल है स्पासकाया मीनार । इसका निर्माण सन् १४९१ मे हुआ था । उसकी ऊचाई लगभग २२१ फुट है । सन् १९५१ मे उसमे एक घडी लगाई गई, जिसके घटे आज भी आधी रात के

समय मास्को रेडियो से सुने जाते हैं।

क्रेमलिन के महल वोल्शाई क्रेमल्योव्स्की का निर्माण १९वी शताब्दी मे हुआ। वह मस्क्वा (मास्को) नदी के सामने है। उसमे कई विशाल कक्ष हैं, जिसमे से एक मे सोवियत सघ की कम्यूनिस्ट पार्टी अपनी काग्रेसो के अधिवेशन किया करती है।

क्रेमलिन का सबमे महत्वपूर्ण विभाग वह है, जिसमे जार के समय की दुर्लभ तथा मूल्यवान वस्तुए सग्रहीत की गई है। यह भवन दुमजिला है और उसके अनेक कक्षो मे अस्त्रो से लेकर सोने-चादी एव हाथीदात की नाना प्रकार की चीजें सुरक्षित है। ऐतिहासिक वस्तुओ मे जार का मुकुट, राजसिहासन, ब्रिटेन की रानी एलिजावेथ द्वारा जार वोरिस गोदूनोव को भेंट मे दी गई गाडी आदि है। इतना विशाल और कीमती सग्रह अन्य देशो मे कम ही देखने मे आता है। इगलैड, पोलैड, डेनमार्क, हालैड, स्वीडन, आस्ट्रिया, जर्मनी, फास आदि देशो से जारो को जो उपहार मिले थे, वे सब इसी सग्रहालय मे है। आभूषणो तथा अन्य वस्तुओ के रूप मे मनो सोना-चादी होगा, हीरे-जवाहिरात का तो कहना ही क्या!

सग्रहालय के वाहर जार का विशाल घटा है, जिसका निर्माण सन् १७३५ मे हुआ था। उसका वजन २०० टन है, ऊचाई पौने छ मीटर से कुछ अधिक और व्यास ६ मीटर के लगभग। इस घटे से जरा आगे जार की तोपें रक्खी है।

क्रेमलिन के प्रागण मे तीन गिरजाघर है। पूर्व की ओर के व्लेगोवेशैन्स्की गिरजाघर का, जो कि स्थापत्य-कला का एक सुन्दर नमूना है, निर्माण पन्द्रहवी शताब्दी मे हुआ था। वाद मे आग लग जाने से उसकी बडी क्षति हुई, लेकिन सन् १५६४ मे वह पुन अपने पूर्ण वैभव को प्राप्त हो गया।

दूसरा गिरजा है आरकेंजिल्स्की, जो पन्द्रहवी शती के प्रारम्भ मे बना और जिसमे ड्यूको और ज़ारो की समाधिया हैं।

तीसरा गिरजा उस्पन्स्की क्रेमलिन के प्रागण के मध्य मे है। इसका निर्माण इटली के एक महान शिल्पी के द्वारा हुआ था। तीनो गिरजो मे यह सबसे मुख्य है। इसकी ऊचाई ३८ मीटर है, क्षेत्रफल ८४२ वर्ग मीटर। इस गिरजे मे जारों का राजतिलक होता था। आज उसमे कई राजनेताओ की समाधिया है।

ये तीनो ही गिरजे अब सग्रहालय के रूप मे परिणत हो गए है। उनकी कला, चित्रकारी तथा उनमे सग्रहीत वस्तुए देखकर पता चलता है कि रूस के निवासी कितने कला-प्रेमी है।

अठारहवी शताब्दी के मध्य मे दो और भवन क्रेमलिन मे जोड दिये गए। उनमे एक है शस्त्रागार, जिसकी दीवारो के सहारे-सहारे नेपोलियन की सेनाओ से छीनी गई तोपो की कतार लगी है। दूसरे भवन मे किसी जमाने मे रूसी सरकार का केन्द्र था। इसीमे लेनिन का अध्ययन-कक्ष है और इसीमे वह रहते थे। उनका अध्ययन-कक्ष आज भी ज्यो-का-त्यो सुरक्षित रक्खा गया है। शेप को सग्रहालय मे परिवर्तित कर दिया गया है। इसी भवन के ऊपर आज सोवियत सघ की राष्ट्र-पताका फहराती हुई दिखाई देती है।

क्रेमलिन रूसी इतिहास तथा सस्कृति की एक बहुमूल्य निधि है। रूस मे जितनी राजनैतिक उथल-पुथल हुई है और होती है, उनका वह मौन साक्षी है। उसका अपना अस्तित्व है। जाने कितने सत्ताधारी मच पर अपना-अपना पार्ट अदा करके चले गये, पर क्रेमलिन आज भी उसी शान से खडा है।

क्रेमलिन के सग्रहालय मे प्रवेश टिकट द्वारा होता है। पास भी मिल जाते है। दिन मे जबतक सग्रहालय खुला रहता है, दर्शको की भीड लगी रहती है। लोग टोलियो मे भीतर जाते है और टोलियो मे ही गाइड उन्हे सारी चीजे दिखाते है।

मुझे जिस टोली मे सम्मिलित किया गया, उसमे सब रूसी जाननेवाले व्यक्ति थे। गाइड रूसी मे समझाने लगा। मै रूसी नही जानता था। अत मैने गाइड का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। कोई पन्द्रह-बीस मिनट मे एक रूसी बहन आ गई, जो अग्रेजी जानती थी। उन्होने बडी अच्छी तरह से मुझे सारा सग्रहालय दिखाया। यदि पहले से सूचना दे दी जाय तो रूसी तथा अग्रेजी के अलावा अन्य भापाओ के गाइड भी मिल जाते है।

रेड स्क्वायर

क्रेमलिन से सटा हुआ रेड स्क्वायर (लाल चौक) मास्को के सर्वोत्तम मैदानों मे से है। उसकी विशालता का तो महत्व है ही, लेकिन उसे इतनी ख्याति उसकी ऐतिहासिक घटनाओ के कारण मिली है। सत्ता को अपने हाथ मे लेने के लिए सर्वहारा वर्ग का अन्तिम युद्ध सन् १६१७ मे इसी चौक मे हुआ था। उस युद्ध मे जिन्होने वीरगति पाई, उन शहीदो की समाधिया क्रेमलिन-प्राचीर के सहारे इसी चौक मे बनी हुई है। रूस के अनेक राजनेताओं तथा महापुरुषो की स्मृति भी उन्ही समाधियो के बीच सुरक्षित है।

सुबह-शाम और छुट्टी के दिन सैलानियो की भीड-की-भीड इस चौक मे इकट्ठी

हो जाती है। निहायत साफ-सुथरा और खुला स्थान है। पास मे ही कलकल-निनाद करती मास्को नदी वहती है।

१ मई और ७ नववर की ऐतिहासिक तिथियो के दिन इस चौक मे जव फौजी परेड होती है तो लाखो व्यक्ति इकट्ठे हो जाते हैं।

इस लाल चौक के साथ मास्को के विकास की कहानी जुडी हुई है। किसी जमाने मे यह व्यापार की विशाल मडी थी। नगर की प्रमुख सड़कें वही से निकलती थी। सोलहवी शताब्दी मे यह चौक क्रेमलिन की दीवार के सहारे एक गहरी खाई द्वारा पृथक कर दिया गया।

नगर मे जो भी राजनैतिक घटनाए होती थी, उनका सम्वन्ध क्रेमलिन से आता था और पार्श्व मे होने के कारण इस चौक पर भी उनका प्रभाव पडे विना नही रहता था। इसके अतिरिक्त जब कभी शत्रुओ का आक्रमण होता था, लोग क्रेमलिन की मजवूत दीवारो की आड लेकर इसी चौक मे अपनी रक्षा करते थे।

इस चौक मे अनेक व्यक्तियो को फांसी के तख्ते पर लटकाया गया। सन् १६७१ मे किसान-विद्रोह के नेता स्टीपान रेजिन को यही सूली पर चढाया गया। और भी कई व्यक्तियो के साथ ऐसा हुआ।

सन् १७१३-१४ मे जव राजधानी पीटर्सवर्ग चली गई तो इस चौक का भी भाग्य बदल गया। इसका महत्व घट गया। सन् १९१७ मे एक बार फ़िर इस चौक मे राजनैतिक तूफान आया। सर्वहारा-दल ने क्रेमलिन को अपने हाथ मे लेने के लिए जोरो का युद्ध किया और वह विजयी हुआ।

सन्त वसील का गिरजाघर

चौक मे खडे होकर जव दक्षिण की ओर निगाह जाती है तो सामने रूसी कला का वडा ही सुन्दर प्रतीक सत वसील का गिरजा दिखाई देता है। उसकी गुम्वदें आकृति मे एक-दूसरे से भिन्न हैं और कुल मिलाकर गिरजे की शोभा को कई गुना बढा देती हैं। कजान की विजय के उपलक्ष मे इस गिरजा का निर्माण सन् १५५०-५५ में हुआ था। चारसौ बरस बाद जाच करने पर पता चला कि उसकी मजवूती जैसी-की-तैसी वनी है। सन १९५४ मे उसकी मरम्मत कराई गई। उसके मूल रग ज्यो-के-त्यो करा दिये गए। आज उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है, मानो यह इमारत हाल ही मे वनी हो।

अव इस गिरजे को सग्रहालय वना दिया गया है। उसमे प्राचीन अस्त्र-शस्त्र

तथा कला की अनेक वस्तुए सचित है। ऊपर की मजिलो मे ईसा से संबधित बहुत-से सुदर चित्र हैं। यह गिरजा इतिहास-सग्रहालय से सबद्ध है।

गूम

चौक के पूर्व मे दो विशाल इमारतें हैं। एक मे सरकारी दफ्तर है, दूसरी मे रूस का सबसे बडा वस्तु-भडार गूम (Gum) है। गूम तीन शब्दो के प्रारम्भिक अक्षरो के योग से बना है—'जी' =गवर्नमेट,यू =यूनीवर्सल,एम =मैगजीन, अर्थात सब प्रकार की चीजो की सरकारी दूकान। यह दुकान क्या, अच्छा-खासा बाजार है। हमे अपनी जरूरत की चीजे खरीदने के लिए प्राय लम्बा-चौडा बाजार छानना पडता है। यहा सारी चीजे एक ही इमारत मे मिल जाती है। यह वस्तु-भडार कई मजिल का है। अलग-अलग विभागो मे बटे होने के कारण लोगो को सामान खरीदने मे असुविधा नही होती। वे जानते है कि अमुक चीज अमुक विभाग मे मिलेगी। लगभग चार हजार व्यक्ति उसमे काम करते हैं।

इतिहास-सग्रहालय

चौक के उत्तर मे एक वडे महत्व का सग्रहालय है। उसे हिस्ट्री म्यूजियम (इतिहास-सग्रहालय) कहते हैं। उसमे मूल्यवान पुस्तकों तथा पाडुलिपियों का विशाल सग्रह है। अनुसधान की दृष्टि से इस तथा ऐसे सग्रहालयो का निस्सदेह बडा मूल्य है।

वोल्शाई थियेटर

नगर के मध्य मे स्थित वोल्शाई थियेटर का भवन दर्शको का ध्यान बरबस अपनी ओर खीच लेता हैं। उसके आगे फव्वारे के निकट हर घडी आने-जानेवाले व्यक्तियो की भीड लगी रहती है। थियेटर-भवन के शीर्ष-भाग पर अश्वो की विशाल मूर्तिया वडी सुन्दर लगती है। इस भवन का निर्माण सन् १८२४ मे हुआ था। १८५३ मे आग लग जाने से वह नष्ट हो गया। १८५६ मे उसका पुन निर्माण हुआ। सुविख्यात कलाकारो तथा अभिनेताओ के वेले, ऑपेरा आदि इस थियेटर मे होते रहते है। हॉल काफी वडा है। दर्शको के वैठने के लिए हॉल मे तो व्यवस्था है ही, साथ ही कई मजिलो मे गोलाकार गैलरिया भी वनी हुई है। लगभग दो हजार व्यक्तियो के वैठने का स्थान है। इस थियेटर का मच बहुत ही विशाल है। उसकी लम्वाई २६ मीटर तथा गहराई २३॥ मीटर है। सैकडो अभिनेता मजे मे उसपर एक साथ अभिनय कर सकते है।

उन्नीसवी शताब्दी के मध्य से रूसी ऑपेरा और वेले के विकास मे इस वोल्शाई थियेटर का विशेष हाथ रहा है। अनेक लब्ध-प्रतिष्ठ सगीतज्ञ तथा नृत्य-विशारदो के सहयोग से इस सस्था ने रूसी वेले की ख्याति ससार के कोने-कोने तक पहुचा दी है। आज उसके पास सैकडो कलाकार है। उसके आर्केस्ट्रा मे २५० सगीतज्ञ काम करते है।

वैसे रूसी मच आज भी वहुत ही विकसित अवस्था मे है, फिर भी विशेषज्ञ लोग वरावर चिन्तन और प्रयास करते रहते है कि मच की साज-सज्जा किस प्रकार और अधिक प्रभावशाली हो, किस प्रकार विजली की रोशनी के परिवर्तन से दृश्यो को अधिक आकर्षक वनाया जा सके और किस प्रकार अभिनेताओ की पोशाको को सीधा-सादा रखकर दर्शको का मुख्य ध्यान खेल की कथावस्तु पर केन्द्रित किया जा सके। सोवियत सगीत तथा मच के अभ्युदय के लिए की गई सेवाओ के उपलक्ष मे सन् १९३७ मे इस सस्था को 'आर्डर ऑव लेनिन' के सम्मान से विभूषित किया गया था।

इस थियेटर का अपना सग्रहालय है, जिसकी स्थापना सन् १९२१ मे हुई थी। थियेटर के इतिहास तथा विकास के वारे मे सामग्री एकत्र करके उसके अध्ययन एव अनुसधान की सुविधा इस सग्रहालय द्वारा की जाती है। इस सस्था से 'सोवियत्स्की आर्टिस्ट' नामक समाचार-पत्र भी प्रकाशित होता है।

मेली थियेटर

वोल्शाई थियेटर के दाहिनी ओर मेली थियेटर है, जिसने अभिनय-कला को विकसित करने मे महत्वपूर्ण कार्य किया है। वाई ओर सेट्रल चिल्ड्रन्स थियेटर है, जो वच्चो मे वहुत ही लोकप्रिय है।

मास्को विश्वविद्यालय

मास्को विश्वविद्यालय मास्को के सवसे ऊचे तथा शानदार भवनो मे से है। लेनिन हिल पर उसका निर्माण १ सितम्वर १९५३ मे हुआ था। नगर के कोलाहल से परे यह विश्वविद्यालय वडे ही स्वास्थ्यकर स्थान तथा वायुमडल मे स्थित है। उसके सामने छोटे-छोटे जलाशय है। अनेक प्रपात तथा कृत्रिम कमल-पुष्प उन्हे स्थायी शोभा प्रदान करते है। हरियाली खूव है। विश्वविद्यालय का भवन ३२ मजिल का है। उसकी ऊचाई २४० मीटर है। ऊपर जाने के लिए लिफ्ट लगी है। शिक्षा के साथ-साथ छात्रो के निवास, व्यायाम, सास्कृतिक मनोरजन, सग्र-

हालय, आदि की व्यवस्था भी उसी इमारत के भीतर है। मास्को नदी के किनारे पर होने के कारण उसकी विशालता और भी शोभायुक्त हो उठती है। वैसे रूस मे ३६ विश्वविद्यालय और ७५० इस्टीट्यूट (जिनका दर्जा विश्वविद्यालय के बारबर ही होता है) है, लेकिन ससार के विश्व-विद्यालयो मे प्रमुख स्थान इस विश्वविद्यालय को ही प्राप्त है। उसमे १३ फैकल्टिया है। २३ हजार छात्र-छात्राए है। उसके पुस्तकालय मे १० लाख से अधिक पुस्तकें है और ३३ वाचनालय। भारतीय भाषाओ का भी एक विभाग है।

लावियो मे अनेक वैज्ञानिको, दार्शनिको तथा साहित्यकारो के चित्र लगे है। छात्रो के अपने थियेटर है, जो 'सस्कृति के गृह' (हाउस ऑव कल्चर) कहलाते है। विद्यार्थियो के लिए होस्टल है, जिनमे लगभग दस हजार छात्र-छात्राए रहते है। विश्वविद्यालय की सबसे ऊपरी मजिल मे सग्रहालय है। मै अट्ठाईसवी मजिल तक गया। वहा से मास्को नगरी का दृश्य बडा अच्छा लगता है।

इस विश्वविद्यालय के भवन और उसके चारो ओर के वायुमडल को देखकर पता चलता है कि उसकी कल्पना किसी दूरदर्शी व्यक्ति ने की थी और वह शिक्षा के वास्तविक महत्व को जानता था। शिक्षा का सबध हमारी उस पीढी के साथ आता है, जो आगे चलकर राष्ट्र के भार को अपने कन्धो पर उठाती है। इसलिए आवश्यक है कि शिक्षा की ओर सबसे अधिक ध्यान दिया जाया। इतना ही नही, उसकी व्यवस्था ऐसे स्थान पर और ऐसे वातावरण मे हो, जिसका नई पीढी के जीवन पर स्वस्थ प्रभाव पडे। मास्को विश्वविद्यालय मे इन विशेषताओ का पूरा ध्यान रखा गया है।

विश्वविद्यालय का नामकरण रूस के महान वैज्ञानिक ए० वी० लोमोनोसोव के नाम पर किया गया है। उसमे ५७ राष्ट्रो के छात्र-छात्राए पढते है।

मॉस-फिल्म-स्टूडियो

यही लेनिन हिल पर सोवियत सघ की फिल्म-निर्मात्री सस्था 'मॉस-फिल्म' है। जिन दिनो मै वहा था, 'परदेशी' चित्र का निर्माण हो रहा था। पाठक जानते है कि इस फिल्म के हिन्दी और रूसी सस्करण साथ-साथ तैयार हुए और दोनो मे भारतीय तथा रूसी अभिनेताओ ने कार्य किया।

लेनिन स्टेडियम

लेनिनहिल के सामने लेनिन सेट्रल स्टेडियम मास्को के सबसे बडे स्टेडियमो

मे से है। उसका निर्माण १९५६ मे हुआ था। उसमे लगभग सवा लाख व्यक्तियो के बैठने की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त निर्णायकों के बैठने, खिलाडियो के पोशाक बदलने तथा आकस्मिक चिकित्सा आदि के लिए कमरे हैं। दो रेस्त्रां, स्पोर्ट-म्यूजियम, रेडियो और टेलीविजन-स्टूडियो है। खेल-कूद के साथ-साथ जाडे के दिनो मे बर्फ पर स्केटिंग करने, हॉकी खेलने आदि की भी व्यवस्था है।

पार्क कुल्तूरे

मास्को के पार्कों मे पार्क कुल्तूरे (गोर्की पार्क) बडा आकर्षक है। रूस के महान साहित्यकार मैक्सिम गोर्की की स्मृति मे, उनकी प्रतिष्ठा के अनुरूप ही, उसे बनाया गया है। उसे 'पार्क कुल्तूरे' अर्थात् 'सास्कृतिक उद्यान' कहा जाता है। उसमे अनेक इमारते बनी हुई है, जिनमे प्रदर्शिनिया होती रहती है। वहा स्थायी रचमच है, जिनपर आएदिन खेल होते रहते है। शाम को वहा खूब भीड हो जाती है। विशेष अवसरो पर इस पार्क की शोभा देखते ही बनती है। भाति-भाति के फूल नगर के दूर-पास के स्थानों से अगणित नर-नारियो तथा बच्चो को खीच-कर अपने पास बुला लेते है।

पार्क मे प्रवेश टिकट द्वारा होता है। एक बार अन्दर जाने पर बाहर निकलने को मन नही होता। वहा देखने और सीखने को बहुत-कुछ है। जिन दिनो मैं उस नगर मे था, वहा एक विशाल कला-प्रदर्शिनी हो रही थी। दुनिया-भर के चित्र उसमे प्रदर्शित किये गये थे।

लेनिन लाइब्रेरी

मास्को के केन्द्रीय भाग मे लेनिन लाइब्रेरी है, जिसकी स्थापना सन् १८६२ मे हुई थी। विश्व की १६० भाषाओ की लगभग २ करोड पुस्तकें उसमे है। करीब १ लाख तो पुस्तकों के सूचीपत्र है। कई मजिल की इमारत है। एक विभाग मे रूसी भाषा के दुर्लभ ग्रथो तथा पाडुलिपियो का सग्रह है। उसे देखने पर पता चलता है कि सबसे पहली रूसी भाषा की पुस्तक सन् १५६४ मे छपी थी। अनेक विख्यात लेखको की पुस्तको के प्रथम सस्करण इस पुस्तकालय में सुरक्षित है। पुस्तकें पढने के लिए १८ हॉल है, जिनमें आरामदेह सीटो के अतिरिक्त प्रकाश आदि की भी समु-चित व्यवस्था है। एक साथ २५०० पाठक बैठकर पढ सकते हैं। हिंदी का सग्रह अद्य-तन (अपटूडेट) नही था, पर अधिकारी लोगो ने बताया कि वे उसके लिए प्रयत्नशील है। विभिन्न देशो से अनेक मासिक पत्र भी वहा जाते है।

: ८ :

लेनिन के प्रमुख स्मारक

जिस प्रकार हमारे देश मे गाधीजी का अथवा नेहरूजी का नाम आदर-भाव तथा आत्मीयता से लिया जाता है, उसी प्रकार वल्कि उससे भी अधिक श्रद्धा-भक्ति एव गौरव से रूस के निवासी लेनिन का नाम लेते है। सारे देश मे स्थान-स्थान पर लेनिन की मूर्तिया और चित्र लगे है और उनके नाम पर वहुत-सी सस्थाओ, सग्रहालयो, सामूहिक फार्मो, सडको आदि के नाम रखे गए है। रूस के वच्चे-वच्चे की जवान पर लेनिन का नाम है। वस्तुत आधुनिक रूस (सोवियत सघ) के निर्माण और अभ्युत्थान मे लेनिन की दूरदर्शिता, त्याग, निर्भीकता, परिश्रमशीलता का वहुत वडा हाथ है।

लेनिन की समाधि

वैसे तो सारा मास्को ही लेनिन के व्यक्तित्व की तथा उनकी उपलब्धियो की झाकी प्रस्तुत करता है, फिर भी तीन स्मारक ऐसे है, जिनकी छाप पर्यटक के मन पर पडे विना नही रहती। उनमे सवसे पहला स्थान है लेनिन की समाधि (मोसोलियम), जिसमे लेनिन का शव आज भी सुरक्षित है। मास्को का वह वडा ही महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। लाल चौक मे क्रेमलिन से सटे इस स्मारक के सामने हर घडी दो वन्दूकधारी प्रहरी खडे रहते है, चार अन्दर। जव गार्ड वदलता है तो सैकड़ो आदमी उसे देखने के लिए वहा आ जाते है। अन्दर जाने के लिए समय निश्चित है। उन घटो मे हजारो व्यक्तियो की एक-एक, दो-दो मील लम्वी भीड वडे ही व्यवस्थित रूप मे पक्तिवद्ध खडी हो जाती है। वहुतो की वारी नही आ पाती, लेकिन क्या मजाल कि कोई किसीको धकेलकर आगे जाने का प्रयत्न करे अथवा शोर मचावे !

समाधि काले, सुरमई और लाल पत्थरो से वनाई गई है। उसके निर्माता है ए० वी० शूसेव। समाधि वडी ही आडम्वरहीन है—न उसके ऊपर वडी-वडी गुम्वदे

है, न मीनारे। वाहर से देखने पर लगता है, जैसे कोई छोटा-सा सुन्दर और सुरुचिपूर्ण घर हो। एक छोटे-से दरवाजे से भीतर प्रवेश करके कुछ सीढिया उतरनी होती है, मानो किसी तहखाने मे जा रहे हो। फिर दाई ओर को मुडने पर वह शीशे का कक्ष आता है, जिसमे थोडे-से फासले पर पहले स्टालिन का फिर लेनिन का शव रक्खा है। दोनो लेटे हुए है, फौजी वर्दी मे। पैरो पर कम्वल पडे है। लगता है, गहरी नीद मे सो रहे हो। चेहरे की शात भाव-भगिमा तथा रग को देखकर सहज विश्वास नही होता कि वे निर्जीव है। मसाले की मदद से उन्हे इस अवस्था मे रक्खा गया है। इस समाधि पर न जाने कितने नर-नारी अवतक अपनी मौन श्रद्धाजलि अर्पित कर चुके है और आगे करते रहेगे। अनीश्वरवादी रूसियो की यह श्रद्धा-भक्ति कुछ आश्चर्यजनक-सी लगती है, पर इससे इतना स्पष्ट है कि वहा के लोगो मे कृतज्ञता की भावना खूब है।

लेनिन-सग्रहालय

मास्को मे लेनिन का दूसरा स्मारक है केन्द्रीय लेनिन-सग्रहालय। क्राति-चौक (रिवोल्यूशन स्क्वायर) मे यह सग्रहालय एक विशाल भवन मे अवस्थित है। इस भवन का निर्माण सन् १८९२ मे प्राचीन रूसी शैली के आधार पर हुआ था। सन् १९१७ तक उसका उपयोग अन्य कार्यों के लिए होता रहा, लेकिन सन् १९१७ की क्राति के समय वह बुर्जुआ-वर्गीय लोगो का शरण-स्थल बना। उसपर अधिकार करने के लिए जोरो की लडाई हुई। इस क्राति के कारण ही उस भवन के सामने के विशाल चौक का नाम 'क्राति-चौक' रखा गया है।

सग्रहालय-भवन दोमजिला है और उसमे १९ वडे-वडे हॉल है, जिनमे प्रदर्शित वस्तुओ को देखते-देखते रूस के इतिहास के अनेक पृष्ठ आखो के सामने खुल जाते है। लेनिन की जीवनी के साथ राजनैतिक तथा आर्थिक विकास की कहानी वहा की चीजे अपने-आप कह देती है। जारशाही के समय से लेकर सत्ता की वागडोर सर्वहारा वर्ग के हाथ मे आने तक रूस को किन-किन सघर्षो से गुजरना पडा, उसका इतिहास निस्सन्देह वडा ही रोमाचकारी है। लेनिन ऐसी शासन-व्यवस्था चाहते थे, जिसमे कोई भी किसीका शोषण करने की स्थिति मे न रहे। गाधीजी भी भारत मे ऐसे ही समाज की स्थापना करने के अभिलाषी थे, लेकिन दोनो के अन्तिम लक्ष्य एक होते हुए भी दोनो के साधनो मे वडा अन्तर था। गाधीजी ने कभी हिंसा का समर्थन अथवा आवाहन नही किया, लेकिन लेनिन ने अक्तूवर-

क्राति के समय हिंसा की छूट दे दी । जो हो, लेनिंन की छोटी से लेकर वडी-से-वडी सारी चीजे इस सग्रहालय मे सुरक्षित है । लेनिन का जीवन वडा सादा था और वह अपने देश के करोडो किसान-मजदूरो की भाति रहते थे । तिथि-क्रम से लेनिन की सारी जीवनी बचपन से लेकर अन्तिम समय तक चित्रो मे प्रस्तुत की गई है । लेनिन का जन्म कव और कहा हुआ, प्रारम्भिक तथा आगे की शिक्षा उन्होने किस प्रकार पाई,वह क्रातिकारी कैसे वने,अपने जीवन मे उन्हे कैसी-कैसी यातनाए सहन करनी पडी, निर्वासन तथा जेल के दिनो मे उनका समय किस तरह वीता, कैसे उन्होने क्रातिकारी प्रवृत्तियो का सचालन किया, किस तरह उन्होने रूसी सोशलिस्ट डेमोक्रेटिक लेवर पार्टी को सगठित करने का प्रयत्न किया, फिर अक्तूवर १९१७ की महान क्राति, सशस्त्र संघर्ष, पूजीपतियो तथा जमीदारो के शासन का उन्मूलन, गृह-युद्ध मे उनका साहस तथा शौर्य, बाधक तत्वो के साथ उनकी लडाई और अन्त मे भुखमरी तथा अभाव का मुकाबला, ये सव चित्र एकदम आखो के सामने घूम जाते है ।

शीशे की एक अलमारी मे लेनिन का ओवरकोट रक्खा है । देखने मे वह मामूली-सा लगता है, पर गाइड के वताने पर पता चलता है कि वह वडे ही ऐतिहासिक महत्व का है । सन् १९१८ मे लेनिन के जीवन का अन्त करने के लिए जो गोली चलाई गई थी, वह इसी ओवरकोट को वेधकर उनके शरीर मे प्रविष्ट हुई थी । गोली का निशान ओवरकोट पर वना हुआ है ।

लेनिन की गोर्की

लेनिन का तीसरा स्मारक है गोर्की मे, जो मास्को से लगभग ३३ किलोमीटर की दूरी पर है । अपने जीवन के अन्तिम छ वर्षो मे लेनिन वहीपर रहे थे । 'सोवियत लेखक सघ' ने वहा जाने के लिए कार तथा परिवाचिका की मेरे लिए व्यवस्था कर दी । गोर्की तक पक्की सडक है, साफ-सुथरी । रास्ता वडा ही मनोरम है । क्लोन, सस्ना, योल्का, रेवीना, ब्लू फर आदि के गगन-चुम्वी वृक्षो के वीच वह स्थान है, जहा लेनिन रहा करते थे । वह मकान पहले किसी जनरल का था, लेकिन जव लेनिन वहा गये तो सरकार ने उसका राष्ट्रीयकरण कर लिया । सन् १९१८ से १९२४ के वीच लेनिन ने अपना समय वही व्यतीत किया । केवल विशेष अवसरो पर वह मास्को आते-जाते रहते थे । गोली लगने पर वह सयोग से वच तो गये, किंतु उनका स्वास्थ्य विगड गया और डाक्टरो ने उन्हे पूर्ण विश्राम करने की सलाह दी । मास्को

मे कोलाहल तथा कामकाज से उन्हे विश्राम मिल सकना सम्भव नही था, अत यह स्थान पसन्द किया गया। पास मे 'गोर्की' नामक ग्राम है। उसके किसान-मजदूरो के वीच रूस का वह नेता वडे सन्तोष के साथ रहा। उनके मकान मे विजली थी, पर गाव मे नही थी। अत ग्रामवासियो ने विजली की माग की तो ऐसी योजना वनाई गई, जिससे राष्ट्रभर के गावो को विजली मिल जाय। वह योजना पूरी हुई और आज देशभर मे विजली उपलब्ध है।

लेनिन जिस स्थान पर रहे, वहा तीन मकान है। उत्तर-दक्षिण के दो मकान वहुत छोटे है, वीच का कुछ वडा है। प्रारम्भ मे लेनिन दक्षिण के मकान मे रहे। उसमे उन्होने कई महत्वपूर्ण लेख लिखे, जिनकी पाडुलिपिया आज भी जैसी-की-तैसी रक्खी हुई है। लेनिन रूसी के अतिरिक्त अग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, इटालियन आदि भाषाओ को पढ-लिख सकते थे, वोल सकते थे। ग्रीक और पोलिश पढ सकते थे, लिख नही सकते थे।

मकान के नीचे के भाग मे वह स्वय रहते थे। ऊपर के हिस्से मे उनका परिवार रहता था। उनकी पत्नी क्रुप्सकाया के निवास के कमरे भी वडे छोटे-छोटे है। तीनों मकानो के सामने एक उद्यान है, जिसमे लेनिन की एक विशाल मूर्ति पुष्पो के वीच खडी है। छोटे मकान मे सर्दी अधिक थी। दूसरे, उसमे फोन की सुविधा नही थी। शासन के काम से प्राय अधिकारियो के साथ सम्पर्क स्थापित रखने की आवश्यकता पडती थी। अत उन्हे विवश होकर सन् १६२० मे वीच के वडे मकान में आना पडा।

इन दोनो मकानो के वीच एक वीथिका है, जिसपर लेनिन टहला करते थे। इसी वीथिका पर वह मडप है, जहा जाकर वह वेंच पर बैठ जाते थे और गोर्की ग्राम, उसके खेत और पहरा नदी आदि के दृश्य देखते थे। वृक्षों के वढ जाने से अव वे दृश्य दिखाई नही देते, पर वहा खडे होकर इस वात की याद आये बिना नही रहती कि लेनिन ने अपने देश और भूमि के साथ अन्तिम समय तक सजीव सम्पर्क वनाये रखने की चेष्टा की।

इस वीथिका से सटी चेरी की वगिया है, जिसे कपडे की मिल के मजदूरो ने उन्हे दिया था। वहीं एक छोटा-सा टेनिस कोर्ट है।

वडे मकान के एक कमरे मे लेनिन के कई महत्वपूर्ण पत्र सग्रहीत है, जो उन्होने विभिन्न स्थानो के कम्यूनिस्टो को लिखे थे। उन पत्रो मे एक पत्र अग्रेजी का है,

जिसे देखने से पता चलता है कि लेनिन की लिखावट कितनी सुन्दर थी और वह अंग्रेजी कितनी शुद्ध और अच्छी लिखते थे। यह पत्र अगस्त १९२१ मे थामस वैल नामक सज्जन को लिखा गया था।

११ वी काग्रेस अतिम काग्रेस थी, जिसमे लेनिन ने आखिरी वार भाग लिया। उसके वाद वह वहुत ही अस्वस्थ हो गये। सन् १९२२ के दिनो मे कुटुम्बीजनो तथा राष्ट्र के विशिष्ट व्यक्तियो के साथ लिये गए उनके कुछ चित्र वडे भावपूर्ण है। सन् १९१९ मे उन्होने लाल सेना के समक्ष जो भाषण दिया था, उसका रिकार्ड हमे सुनाया गया। एक सामान्य अपरिचित मजदूर का वह पत्र भी वडा हृदयस्पर्शी लगा, जिसमे उसने लिखा था, "मै आपको कुछ कपडा भेट करना चाहता हू। उससे आप अपने पहनने के लिए पोशाक वनवाले।" उसका आभार मानते हुए वडी नम्रतापूर्वक लेनिन ने वह कपडा लेने से इन्कार कर दिया था। उन्होने लिखा था कि अपनी निजी आवश्यकता की पूर्ति के लिए वह कोई भेट स्वीकार नही कर सकते।

२० नवम्वर १९२२ को लेनिन ने अतिम भाषण दिया। अनन्तर उन्होने वोल-कर पाच लेख लिखवाये। स्थान-स्थान से उन्हे विभिन्न वस्तुओ की जो भेटे मिली, उनमे वह गाडी भी है, जो इगलैड के एक किसान ने सन् १९२२ मे उन्हे भेजी थी। लेनिन का स्वास्थ्य कुछ-कुछ ठीक हो जाने से वह गाडी काम मे नही आ सकी। इसके अतिरिक्त उनका कोट, कमीज, जूते, वन्दूक आदि सव चीजे ज्यो-की-त्यो रखी है।

भोजन के कमरे मे लेनिन की कुर्सी मेज के सहारे केन्द्र मे रखी है। दाये-वाये अन्य लोग वैठते थे। लेनिन अपनी कुर्सी पर वैठते हुए विनोद मे कहा करते थे, "मै इस समुदाय का अध्यक्ष हू।"

एक कमरे मे लेनिन की छोटी-सी लाइब्रेरी है, जिसमे अन्य पुस्तको के वीच कुछ पुस्तके तुर्गनेव तथा शेक्सपियर की है। कुछ सदर्भ ग्रथ है। आखिरी दिनो मे वह गोर्की की 'माई यूनीवर्सिटीज' (मेरे विश्वविद्यालय) पुस्तक पढ रहे थे। वह उनकी वडी प्रिय कृति थी।

२१ जनवरी १९२४ को सायकाल ६ वजकर ५० मिनट पर लेनिन का देहान्त हुआ। चारो ओर शोक छा गया। सारे नगरो मे शोक प्रदर्शित किया गया। उस समय के अनेक चित्र वहा लगे हुए है। मास्को, लेनिनग्राड, कीव आदि नगरो मे शोकविह्वल भीड को देखकर पता चलता है कि लेनिन कितने लोक-प्रिय थे। अन्य

चित्रो के बीच एक चित्र वडा ही मार्मिक है। उसमे दिखाया गया है कि मास्को के लाल चौक मे उनका शव रक्खा है। सिर के निकट उनकी शोकाकुल पत्नी क्रुप्सकाया खडी है। उनकी करुणाजनक ग्राकृति हृदय को विचलित कर देती है। लेनिन के शव पर मजदूरो ने जो मालाए अर्पित की थी, वे भी रखी हुई है।

लेनिन की एक-एक चीज़ को रूस के निवासियो ने वडी सावधानी से सभाल कर रक्खा है। लेनिन को गये पैंतीस वर्ष के लगभग हो चुके है, लेकिन उनके निवास तथा उनकी वस्तुग्रो को देखकर ऐसा प्रतीत होता है, मानो वह कही गये है ग्रौर शीघ्र ही लौट ग्रानेवाले है। सग्रहालय के निकट ही एक रेस्ट्रा है, जिसमे खाने-पीने की सव चीजे मिल जाती है। उस ऐतिहासिक स्थल को देखने के लिए लोग बरावर ग्राते-जाते रहते है। मै जिस समय वहा पहुचा, किसी स्कूल के बच्चो की टोली ग्राई हुई थी। हमारी परिचायिका ने कहा, "ऐसी टोलिया यहा प्राय ग्राती रहती है। इसका कारण यह है कि हमारे यहा की शिक्षा मे किताबी पढाई के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान पर विशेष जोर दिया जाता है।"

: ९ :

तीन विशेष संग्रहालय

मास्को मे यो तो बीसियो सग्रहालय है, किन्तु उनमे कुछ ऐसे है, जिन्हे कोई भी साहित्य, इतिहास तथा कला-प्रेमी पर्यटक विना देखे नही रह सकता ।

गोर्की-सग्रहालय

पाठक जानते है कि रूस के महान लेखको मे मैक्सिम गोर्की का अपना स्थान है। उन्होने अपनी रचनाओ से न केवल रूसी साहित्य को समृद्ध किया है, अपितु विश्व के साहित्य को भी अपनी विशेष देन दी है। अत यह स्वाभाविक ही है कि रूस मे स्थान-स्थान पर उनकी स्मृति को सुरक्षित रखने के लिए स्मारक हो। मास्को मे उनका वडा विशाल सग्रहालय है। 'सोवियत लेखक सघ' के कार्यालय से कुछ ही गज के फासले पर उसका भवन है, जिसके प्रागण मे गोर्की की विशाल मूर्ति है, अधेड उम्र की। उसे देखते हुए मै परिवाचिका के साथ अदर पहुचा। सग्र-हालय वहुत ही साफ-सुथरा था । जव उसकी वस्तुए देखी तो उस कलाकार के जीवन के विषय मे वहुत सी नई वाते मालूम हुई ।

भवन मे सवसे पहले उन पुस्तको का सग्रह है, जिन्हे गोर्की ने पढा था। इस सग्रह मे तुर्गनेव, पुश्किन आदि रूसी साहित्यकारो की भी कृतिया है।

गोर्की की सुन्दर हस्तलिपि को देखते हुए दर्शक एक छोटी-सी मेज के सामने पहुचते है। उन्हे लगता है कि आखिर इस मामूली-सी मेज मे क्या विशेषता है, जो उसे इस विशाल सग्रह के वीच स्थान दिया गया है ? पर नही यह वह ऐतिहासिक मेज है, जिसपर गोर्की ने अपनी सवसे पहली कहानी 'मकार छिद्रा' आज मे ६६ वर्ष पूर्व लिखी थी और जो 'कावकाज' नामक पत्र के १२ सितम्वर १८९२ के अक मे छपी थी।

गोर्की एक गरीव घर मे पैदा हुए थे और वह अपने अनुभव से जानते थे कि सम्पन्न वर्ग किस प्रकार दीन-हीनो का दमन तथा शोषण करता है। अत. युवक

गोर्की का हृदय समाज के मौजूदा ढाचे को जड-मूल से वदलने के लिए विद्रोह कर उठा। अपने जीवन के विश्वविद्यालय मे शिक्षा ग्रहण करके गोर्की घर से निकल पडे। अपने देश के कोने-कोने की धूल उन्होने छानी। एक नक्शे मे वताया गया है कि अदम्य उत्साह से, विना क्लान्ति अनुभव किये, उन्होने रूस के किन-किन स्थानो की यात्रा की और कहा-कहा के लोगो को पत्र लिखे। उनके जीवन-चरित की पाडुलिपि के कुछ पृष्ठ स्मरण दिलाते है कि उन्होने अपने जीवन को कितनी सादगी के साथ व्यतीत किया था।

लेखक के रूप मे विज्ञापित होने के वाद सन् १८९६ से १९०१ के वीच उन्होने जिस मेज पर लेखन-कार्य किया था, वह भी वहा सुरक्षित है। इतना ही नही, उनका कोट, टोप, छडी आदि भी रक्खी है, जिनका प्रयोग उन्होने युवाकाल मे किया था। उनकी पत्नी वोलशीना अपूर्व सुन्दरी थी। उनके विवाह के पूर्व का चित्र दर्शको को सहज ही लुभा लेता है। उनके पार्श्व मे गोर्की की अनेक कहा-निया चित्रित की गई है। गोर्की की ख्याति इतनी फैली कि प्रत्यक्ष परिचय न होते हुए भी लेनिन ने ७ अक्तूवर १८९७ को 'नावयसमोवा' नामक पत्र मे उनके वारे मे लिखा।

अनेक लेखक गोर्की की मित्र-मडली मे थे। चेखव, टाल्स्टाय आदि के साथ के उनके चित्र उस लेखक-विरादरी का स्मरण कराते है। एक मेज पर गोर्की की कैंची, पेंसिले, कलम-दवात, छिपकली की शक्ल का तथा दो अन्य पेपरवेट, सोख्ता, लिखने का कागज, चश्मा, उसका घर आदि रखे हैं। चित्रो मे कई चित्र वडे ही ऐतिहासिक महत्व के है। एक मे गोर्की अपने वच्चे को कधे पर विठाये हुए है। उसके नीचे लिखा है—'गोर्की और उनकी सर्वोत्तम कृति।' सवसे हृदयस्पर्शी चित्र उनका वह है, जिसमे क्राति के पश्चात 'पार्क कुल्तूरे' मे वह मच पर खडे भाषण दे रहे है। वेशुमार भीड इधर-उधर खडी उनकी ओर देख रही है। एक और चित्र दर्शको का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता हैं। उसमे मेज के सहारे लेनिन, गोर्की और उनकी पत्नी वैठे सगीत सुन रहे है।

गोर्की की रचनाओ का अनेक विदेशी भाषाओ मे अनुवाद हुआ है। एक विभाग मे इन सव अनुवाद-ग्रथो को सग्रहीत किया गया है। भारतीय भाषाओ में हिंदी, उर्दू तथा मराठी आदि की पुस्तके है। उसके निकट ही एक ओर को गोर्की के वारे मे अनेक महापुरुषो के उद्गार दिये गए हैं। लेनिन, रोम्या रोला तथा प्रेमचन्द के

वाक्य वडे भावपूर्ण है। गोर्की के विषय मे विभिन्न देशो मे जो साहित्य निकला है, वह भी वहा उपलब्ध है।

कुछ चीज़े ऐसी भी है, जिनके साथ वडी कटु स्मृतिया जुडी हुई है, जैसे काकेशस के उस मकान का चित्र, जिसमे सन् १८६८ मे उन्हे वदी वनाकर रखा गया था, निजनी नोवगोरोड (अव गोर्की) का वह स्थान, जिसमे सन् १६०१ मे वह वद रहे थे और अत मे पीटर्सवर्ग (अव लेनिनग्राड) का सत पीटर और पाल का किला, जिसमे सन् १६०५ मे उन्हे जार के अत्याचारो के विरुद्ध आवाज उठाने के कारण वदी जीवन व्यतीत करना पडा था।

गोर्की को वच्चो से वडा प्रेम था। वच्चो के साथ के अनेक उनके चित्र इस सग्रहालय मे है।

वड़ा विशाल सग्रह है वह। उसे देखकर गोर्की के समूचे जीवन की तस्वीर आखो के सामने आ जाती है। उसके सचालक वडे ही भद्र व्यक्ति थे। मैं वहा से चलने लगा तो उन्होने गोर्की के कई चित्र मुझे भेट किये।

क्रांति का संग्रहालय

यह सग्रहालय रूस के इतिहास से सवधित है—उस इतिहास से जो वर्तमान सोवियत सघ का जनक माना जाता है। अक्तूवर १६१७ की क्राति से लेकर अव-तक की सभी प्रमुख घटनाओ की जानकारी इस सग्रहालय की वस्तुओ को देखकर हो जाती है। मेरे साथ नीना सिनीज़ना नामक परिवाचिका थी। उसने वडी अच्छी तरह से पूरा सग्रहालय दिखाया और वताया कि रूसी क्राति को किन-किन अवस्थाओ से होकर गुजरना पडा। जारकालीन कई चित्र तो वडे ही भयकर है। उनमे दिखाया गया है कि लोगो की उभरती हुई चेतना को दवाने के लिए जार ने कितने अत्याचार किये, लेकिन उन्ही चित्रो मे यह भी दिखाई देता है कि किस साहस से लोगो ने उन अत्याचारो का मुकावला किया।

इस सग्रहालय मे उन उपहारो का भी सग्रह है, जो विभिन्न देशो से प्राप्त हुए थे। अधिकाश उपहार किसान-मजदूरो के है। क्राति के सफल होने के उल्लास मे उन्होने विभिन्न वस्तुए अपने नेताओ को भेजी थी। कुछ उपहार भारत के भी है।

क्राति की घटनाओ से सवधित होने के कारण इस सग्रहालय का नाम 'म्यूजे रिवोल्यूत्से' रक्खा गया है। 'म्यूजे' रूसी मे सग्रहालय को कहते है। 'रिवोल्यूत्से' का अर्थ है क्राति, अर्थात् 'क्राति का सग्रहालय।'

अपने इतिहास का किस प्रकार प्रभावशाली ढग से देशवासियो को परिचय कराया जा सकता है, इसका यह सग्रहालय सुन्दर नमूना है। अनेक वच्चे सग्रहालय की वस्तुओ को वडे ध्यान से देख और समझ रहे थे। रूस के अधिकारियो का प्रयत्न रहता है कि उनके वच्चे अपने देश के इतिहास को जाने और उनमे उस राष्ट्रीयता और राष्ट्र-प्रेम का उदय हो, जिसकी वुनियाद पर देश आगे वढते है, ऊपर उठते है।

प्राच्य सग्रहालय

जैसा कि नाम से स्पष्ट है, यह सग्रहालय पूर्वी देशो की वस्तुओ से सवधित है। इस सग्रहालय की स्थापना सन् १६१८ मे हुई थी। उसमे दो खड है। नीचे के खड मे चीन की कला-सवधी अनेक वस्तुए हैं—प्राचीन एव अर्वाचीन कला की। प्राचीन कला मे ईसा के दो हजार वर्ष तक की वस्तुए है। पत्थर, धातु तथा लकडी की ऐसी-ऐसी कला-कृतिया है कि उन्हे देखकर वडा आनद होता है। वोधिसत्व की कई मूर्तिया है। रेशम पर चित्रकारी तथा कढाई चीनी कलाविदो की अपनी विशेषता है। उसके कई उत्कृष्ट नमूने इस सग्रहालय मे मिलते है। किसी अज्ञात कलाकार द्वारा पक्षियो तथा पुष्पो का चित्र वडा सुन्दर है। एक लम्वा चित्र चूयिग नामक कलाकार का है, जिसमे एक वडी विचित्र कहानी चित्रित की गई है। एक कलाकार अपनी पत्नी को त्याग देता है। कुछ समय पश्चात वह रेशम पर किसी स्त्री की अद्भुत कारीगरी को देखकर उसपर मुग्ध हो जाता है। खोजने पर पता चलता है कि वह स्त्री उसीकी पत्नी है तो वह उसे पुन स्वीकार कर लेता है। यून शोपिंग द्वारा रेशम पर चित्रित पुष्प कला की दृष्टि से वेजोड है। उन्हे देखकर ऐसा जान पडता है, मानो वे असली हो। उनके रग वडे ही प्यारे है। लाख के फूलदान, डिव्वी, रकाविया आदि की कला विशेष रूप से सराहनीय है। उनकी वारीकी को देखकर विस्मय हाता है।

एक अल्मारी मे तिव्वत के अनेक देवी-देवताओ की धातु की मूर्तिया है। एक वहुत वडे रेशम के टुकडे पर, जिसकी लम्वाई ३० मीटर है, एक अफसर की कहानी दी हुई है। यह अफसर पहले वहुत गरीव था, वाद मे गवर्नर वना। एक अल्मारी मे १२ प्याले रखे है। जवतक कोई वतावे नही तवतक अनुमान करना कठिन है कि उनपर प्रत्येक मास के प्रतीक वने हुए है, फूल और कविताओ के रूप मे।

आधुनिक चीन के विभाग मे पत्थर, चादी, धातु आदि की सुन्दर वस्तुए है। तश्तरी, फूलदान आदि की कारीगरी देखते वनती है। कीसिंग द्वारा पेड की जड से वनाया 'परीक्षाओ का देव' कलाकार की सूझ तथा श्रम का द्योतक है। एक वृद्ध

की नृत्य करती हुई मूर्ति वडी जानदार है। वास चीन के कलाकारो को वहुत प्रिय होते है। वासो द्वारा निर्मित अनेक वस्तुओ मे 'वेणु-कुज मे नौ कलाकार' अच्छी कृति है। हाथी-दात का पैंगोडा उगलियो की कुशलता की ओर इगित करता है। ची बेशी कलाविद के 'उलकाव और चट्टान' तथा 'उलकाव चीड वृक्ष पर' काली स्याही से थोडी-से-थोडी रेखाओ द्वारा वडे ही भावपूर्ण चित्र वनाने की कला के अनुकरणीय नमूने है। एक चित्र मे एक वहुत ही शिक्षाप्रद कहानी चित्रित है। एक व्यक्ति गधे पर सवार कही जा रहा है। वह आगे एक दूसरे आदमी को घोडे पर चढा देखकर अफसोस करता है कि उसके पास घोडा नही है। तभी उसकी निगाह पीछे एक गाडी को खीचते आदमी पर जाती है, जिसके पास गधा भी नही। इससे उसे वोध होता है। चीन की आधुनिक युगीन चित्रकारी वडी आकर्षक है, विशेषकर रेशम पर की हुई।

दूसरे खड मे सबसे पहले कोरिया की कुछ वस्तुए प्रदर्शित की गई है, साथ ही मगोलिया की भी। उसके बाद भारतीय विभाग है, जिसमे अजता-एलोरा के कुछ चित्र तथा दक्षिण एव उडीसा मे बनी काष्ठ, चादी तथा सीग की चीजे है। यह सग्रह जितना समृद्ध होना चाहिए था, नही है, खासकर अन्य देशो की तुलना मे। जापान की भी वहुत-सी चीजे वहा रक्खी-हुई है।

अन्त मे सोवियत के विभिन्न सघो की वस्तुओ का विभाग है। उसमे उजविकिस्तान का सग्रह विशेष आकर्षक है। कालीन और उनकी कला तो अद्भुत है। इस सग्रहालय के संचालक थे श्री राइविनकिग जो उस समय वहा उपस्थित नही थे। भारतीय विभाग के अध्यक्ष श्री साइमन ट्यूलायेव ने वडे प्रेम से अपना विभाग दिखाया। उनसे मालूम हुआ कि वह भारत भी हो गये है। उन्होने सग्रहालय से सवधित एक एल्वम मुझे भेट मे दी।

इस सग्रहालय को देखकर पता चलता है कि रूस के लोगो की रुचि केवल अपने देश की कला तक ही सीमित नही है, वल्कि वे अन्य देशो की कला का भी आदर करते है। पूर्वी देशो की कला पर तो वे जैसे मुग्ध है।

: १० :

त्रेत्याकोव आर्ट गैलरी

ओस्तान्कीनो होटल मे जितने दिन रहा, प्राय देखा करता था कि कोई-न-कोई रूसी चित्रकार वहा उपस्थित है और वडे मनोयोग से कभी किसीका तो कभी किसीका चित्र अकित करने मे सलग्न है। वाद मे होटल से भाई वीरेन्द्र-कुमार शुक्ल के घर आ जाने पर एक दिन एक रूसी महिला चित्रकार ने मेरा चित्र वनाने की इच्छा प्रकट की और मेरे राजी हो जाने पर उन्होने तीन घटे मे अच्छा-खासा रगीन चित्र तैयार कर दिया। शहर मे जहा कही जाता था, दीवारो पर छोटे-वडे रगीन चित्र टगे देखता था। इसपर से मुझे लगा कि भौतिक प्रगति मे वेहद जुटे होने पर भी रूस के निवासी कला की ओर से विमुख नही है। वाद मे मास्को की त्रेत्याकोव आर्ट गैलरी (कला-भवन) को देखकर मेरी यह धारणा और भी पुष्ट हो गई। अपनी विदेश-यात्रा मे मैने रोम, पेरिस, लदन, वर्लिन, कोपेनहेगन आदि नगरो के कलाभवन विशेष रूप से देखे, लेकिन जो विशालता, जो विविधता तथा रगो की जो सुन्दर योजना मुझे मास्को की इस आर्ट गैलरी मे दिखाई दी, वह पेरिस के कला-भवन लूव्र को छोडकर अन्यत्र कही भी दृष्टिगोचर नही हुई। ऐसा प्रतीत होता था, मानो रूस के कलाविद अपने युग की उपलब्धियो, आशाओ, आकाक्षाओ तथा सुख-दुख की अनुभूतियो को तूलिका के माध्यम से अमरत्व प्रदान करने के लिए लालायित हो। गैलरी मे प्रवेश टिकट से होता है, फिर भी सवेरे से शाम तक दर्शको का वहा ताता लगा रहता है। इतनी भीड मैने पेरिस के कला-भवन के अलावा और कही नही देखी।

गैलरी देखते समय ओरियटल इन्स्टीट्यूट की तमारा नाम की एक सुशिक्षित रूसी वहन मेरे साथ थी। वह हिंदी और अग्रेजी की जानकार होने के साथ-साथ वडी कला-प्रेमी भी थी। उस विशाल आर्ट गैलरी के चित्रो को वारीकी से देखने मे मुझे कई दिन लग जाते, लेकिन इस कला-पारखी वहन के होने से थोडे ही समय

मे वहुत-कुछ देखने का अवसर मिल गया। उन्होने उसके सभी विशेष चित्र मुझे कुछ ही घटो मे दिखा दिये।

यह कला-भवन लव्रूशिस्की लेन मे है। मास्को के पैवेल त्रेत्याकोव नामक एक उद्योगपति ने, जो कला के अनन्य प्रेमी थे, रूस के विशेष चित्रो का सग्रह करना प्रारभ किया। वाद मे उन्होने अनुभव किया कि एक राष्ट्रीय कला-भवन की स्थापना होनी चाहिए। यह विशाल कला-संग्रह इन्ही त्रेत्याकोव महोदय की विचार-शीलता तथा दूरदर्शिता का परिणाम है। तीस वर्ष तक चित्र-सग्रह करने के उपरान्त अपने भाई सर्गी से मिली रूसी मूर्तियो को भी उन्होने उसमे सम्मिलित करके उस निधि को सन् १८६२ मे सार्वजनिक रूप दे दिया। वस्तुत कला-भवन की स्थापना उसी समय हुई मानी जानी चाहिए। सन् १९१८ मे जव उसका राष्ट्रीयकरण हुआ, उस समय उसमे चार हजार से अधिक चित्र आदि थे। अव तो उनकी सख्या पचास हजार से भी ऊपर हो गई है।

कला-भवन मे ११ वी शताब्दी से लेकर अवतक की कला के उत्कृष्ट नमूने तो देखने को मिले ही है, रूस के इतिहास की प्रमुख धाराओ का भी परिचय हो जाता है। सामन्तशाही काल से लगाकर आधुनिक समाजवादी सोवियत सघ के जीवन मे जो उथल-पुथल हुई है, उसकी वड़ी ही सजीव झाकी इस सग्रह मे मिलती है। छोटे-छोटे इकरगे रेखा-चित्रो से लेकर विशाल आकार के वहुरगी चित्र इस ढग से सजाये गए है कि तिथि-क्रम से रूसी इतिहास पर अच्छा प्रकाश पड जाता है। रूस मे वीसियो उच्च कोटि के कलाकार हुए है, जिनमे पेरोव, एवाजोव्स्की, शिश्किन, वास्नेत्सोव, क्रेम्स्को, रेपिन, सुरीकोव, लेवितन, सेरोव, ग्रेकोव, क्रिपयान्स्की, आदि के नाम वहुत ही लोकप्रिय है। इन तथा अन्य अनेक कलाकारो की एक-से-एक वढ-कर सहस्रो कला-निधिया दर्शको का मन मोह लेती है।

गैलरी के कई कक्षो मे हजरत ईसा तथा प्राचीन धर्म-कथाओ से सवधित चित्र है। उन्हे देखकर आश्चर्य होता है कि द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे सर्वोपरि स्थान देनेवाले व्यक्तियो ने धर्म को इतना महत्व कैसे दिया है। इसका कारण शायद यह है कि कला के लिए कुछ भी वर्जित नही है और कला जीवन को काट-छाटकर अथवा वाटकर नही देखती। उसके लिए ससार की प्रत्येक वस्तु स्पृहणीय है। यह देखकर भी कम आश्चर्य नही होता कि सारे कला-भवन मे नग्नता का प्रदर्शन करता हुआ एक भी चित्र नही है। उसकी अधिकाश कृतिया

जीवन की यथार्थता को लेकर है। क्रिपयान्की द्वारा निर्मित पुश्किन के चित्र के विषय मे तो यहातक कहा जाता है कि जब पुश्किन ने उसे देखा तो आश्चर्यचकित होकर बोले, "इस चित्र को देखकर तो ऐसा लगता है मानो मै अपने चित्र के सामने नही आइने के सामने खडा हू।" पर किसी कलाकार की तूलिका ने एक भी चित्र ऐसा नही बनाया, जिसे देखकर दर्शको को मुह फेर लेना पडे। यथार्थ पर दृष्टि केन्द्रित रखकर भी कलाकारो ने वासनोत्तेजक विषयो को अपनी कूची का लक्ष्य नही बनाया। सामन्तशाही युग के वैभव को कुछ चित्रकारो ने अकित किया है तो कुछने युद्ध की विभीषिका को प्रदर्शित किया है, कुछने सर्वहारा वर्ग के सुख-दु ख को चित्रात्मकता प्रदान की है। इवेनोव का 'कमिंग ऑव क्राइस्ट' (हजरत ईसा का आगमन), जिसके बनाने मे बीस वर्ष लगे, अपनी विशालता तथा मानव-आकृतियो की भावप्रवणता के लिए मन मे सदा के लिए बस जाता है। इसी प्रकार एक बदी का चित्र भूले नहीं भूलता। उसके परिवार के लोग—स्त्री और बच्चे, जेल मे उससे मिलने आये है। छोटा बालक कुतूहल के साथ पिता की बेडी पर हाथ रक्खे हुए है। बदी की बेबसी और कुटुम्बी-जनो की व्याकुलता दिल को हिला देती है। ऐसा ही एक और हृदयस्पर्शी चित्र है श्मशान-भूमि मे अपने इकलौते बेटे की समाधि के सम्मुख मौन भाव से खडे वृद्ध माता-पिता का। देखकर ऐसा जान पडता है, मानो अपना ही कोई आत्मीय जन उस समाधि के भीतर चिर-निद्रा मे लीन हो। बदी लोगो का साइबेरिया जाना, बेमेल विवाह, अश्वारोही सुन्दरी, जिसके पास एक बालिका तथा एक कुत्ता खडा है, पति के वियोग मे शोकमग्न स्त्री, पिता द्वारा पुत्र की हत्या आदि-आदि सैकडो चित्र है, जो पग-पग पर दर्शको को आगे बढने से रोक देते है।

डास्टोवस्की, टाल्स्टाय, गोर्की, पुश्किन, क्रोपाटकिन, तुर्गनेव आदि महान रूसी साहित्यकारो के चित्र उस सग्रह मे न होते, यह कैसे सभव था? टाल्स्टाय का एक चित्र तो बडा ही भावपूर्ण है। निर्जन स्थान मे एक पेड के नीचे टाल्स्टाय अकेले, बिल्कुल अकेले, धरती पर लेटे कुछ पढ रहे है।

प्राकृतिक दृश्यो के चित्र भी बडे आकर्षक है। नदी, सागर, वन, वन्य पशु-पक्षी, पुष्प आदि चित्रकारो की निगाह से बच जाते तो शायद प्रकृति उन्हे क्षमा न करती। रूस की भूमि वास्तव मे प्रकृतिदेवी की बडी लाडली भूमि है और उसका प्रत्यक्ष प्रमाण इस सग्रहालय के अनेक चित्र देते है। प्रकृति के चित्रण मे रगो को खुली छूट नही दे दी गई है, बल्कि असाधारण सयम रक्खा गया है।

रूस के अलावा अन्य देशो के चित्रो को भी वहा आदर के साथ स्थान दिया गया है। अनेक प्राचीन एव अर्वाचीन फ्रासीसी, इटालियन, अग्रेज, अमरीकी आदि कलाविदो के चित्र वहा सग्रहीत किये गए है। एक कक्ष मे भारतीय जीवन से सबधित बहुत-से चित्र है। उनके चित्रकार है वेरेशागोन, जो उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे दो वर्ष भारत मे रहे थे। भारतीय मुखाकृति को सही-सही बनाने मे विदेशी कलाकार प्राय चूक कर जाते है, लेकिन वेरेशागोन की पकड निस्सदेह सराहनीय है।

चित्रकला एव मूर्ति-कला का अन्यान्योश्रित सबध है। अत स्वाभाविक रूप से इस सग्रहालय के विभिन्न कक्षो मे अनेक मूर्तिया सुरक्षित है। कई मूर्तिया तो बहुत ही सजीव है, मानो अभी बोल उठेंगी।

प्रत्येक कक्ष के अन्दर बेचे तथा कुर्सिया पडी है, जिनपर बैठकर थोडी देर दर्शक विश्राम ही नही करते, अपितु अपनी पसन्द के चित्रो को भी एकाग्रतापूर्वक देखने की सुविधा पा लेते है। दर्शको मे बच्चो से लेकर युवा-वृद्ध सभी आते है। जिस रुचि से वे उस सग्रह को देखते है, उससे पता चलता है कि वहा के लोगो मे कला के लिए प्रेम है और वे उसकी बारीकियो तथा उत्कृष्टता को समझते है।

यह कला-केन्द्र चित्रो तथा मूर्त्तियो का बृहत् सग्रह तो है ही, कला के सम्वर्द्धन का भी केन्द्र है। उसके द्वारा अन्वेषण-कार्य का भी सचालन होता है। बहुत-से चित्रो से, जो वहा प्रदर्शित नही किये गए है. समय समय पर प्रदर्शिनिया आयोजित की जाती है। दूर-दूर से कलाकारो तथा कला-प्रेमियो की यात्राओ और कला-सबधी भाषणो की व्यवस्था की जाती है। कला-भवन के अधिकारी प्रयत्न करते है कि रूसी कला से जन-सामान्य का अधिक-से-अधिक परिचय करावे और कला के क्षेत्र मे उगनेवाली प्रतिभा को हर तरह की सुविधाए प्रदान करे। चित्रो का पुनरुद्धार करने के लिए वहा समुचित प्रबध है। साथ ही रूसी कला पर पुस्तको का एक विस्तृत पुस्तकालय भी है।

मास्को मे छोटे-बडे कई कला-भवन है, लेकिन इस त्रेत्याकोव आर्ट गैलरी की लोकप्रियता निराली है। प्रति वर्ष लगभग दस लाख दर्शक उसे देखने आते है। सारे भवन मे सफाई गजब की रहती है। सभी कक्षो मे लकडी का चिकना फर्श है, जो पालिश से हर घडी चमकता रहता है। यदि सावधानी न रखी जाय तो फिसलने का डर रहता है। एक साथ सैकडो दर्शक आते है, पर क्या मजाल कि किसी प्रकार का शोरगुल हो। टोलिया बनाकर गाइड दर्शको को वह सग्रह दिखाते है, लेकिन यदि

कोई अकेले देखना चाहे तो वैसा कर सकता है। हा, एक बात है। प्रत्येक चित्र पर शीर्षक, कलाकार का नाम और बनाने की तिथि रूसी भाषा मे दिये हुए है। यदि कोई रूसी भाषा नही जानता तो उसका काम बिना परिवाचक के नही चल सकता। परिवाचक अथवा गाइड इसलिए भी आवश्यक है कि यदि कोई सरसरी तौर पर भी गैलरी को देखना चाहे तो कम-से-कम एक सप्ताह चाहिए। उतने पर भी बिना मार्गदर्शक के कुछ प्रमुख चित्र छूट सकते है। गाइडो को पता रहता है। इससे वे खास-खास चित्रो को अवश्य दिखा देते है।

हम कला के विशेषज्ञ नही है, इसलिए गैलरी के चित्रो के गुण-दोषो की विवेचना करना हमारे लिए बडा कठिन है, किन्तु इतना हम अवश्य कह सकते है कि रूस के प्राचीन एव अर्वाचीन जीवन का बडा ही यथार्थ चित्रण वहा मिल जाता है। छोटे-छोटे चित्रो मे सूक्ष्मातिसूक्ष्म वस्तुओ को दिखाना उतना ही कठिन है, जितना विशाल चित्रो मे आकृतियो का सही अनुपात रखना। इन दोनो ही दृष्टियो से यह सग्रह बडा सम्पन्न है।

एक बात हमे खटकी। प्राचीन कला-कृतियो के पीछे जिस उच्चकोटि की प्रतिभा के दर्शन होते है, वह अर्वाचीन चित्रो के पीछे दिखाई नही देती। ऐसा प्रतीत होता है, मानो आज का कलाकार लोक-जीवन की समस्याओ से इतना बधा है कि उनकी अभिव्यक्ति उसके लिए मुख्य हो गई है, कला-पक्ष गौण हो गया है। शायद इसीसे उसके चित्रो मे वह उभार और निखार नही है, जो प्राचीन चित्रो मे है। फिर भी कुल मिलाकर सग्रह बडा ही सुन्दर एव दर्शनीय है।

: ११ :

यास्नाया पोलियाना की तीर्थ-यात्रा

हमारे देश मे जिन विदेशी ग्रन्थकारो को असाधारण मान और लोकप्रियता प्राप्त हुई है, उनमे रूस के महान् कलाकार लियो टाल्स्टाय का नाम अग्रणी है। भारत की शायद ही कोई ऐसी भाषा हो, जिसमे उनकी रचनाओ के अनुवाद न हुए हो। कुछ भाषाओ मे तो उनकी एक-एक रचना के कई-कई अनुवाद हुए है। पाठको को सभवत ज्ञात होगा कि इस कलाविद की दो कहानियो (१ 'हाऊ मच लैण्ड डज ए मैन नीड'—आदमी को कितनी ज़मीन चाहिए और २. 'इवान, दी फूल'—मूरखराज) से गाधीजी इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होने स्वय उनका गुजराती मे रूपान्तर किया और हजारो पाठको तक उन्हे पहुचाया। गाधीजी ने लिखा है कि जिन पुरुषो का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पडा था, उनमे एक टाल्स्टाय थे। वह अपनी 'इडियन ओपीनियन' पत्रिका बराबर टाल्स्टाय को भेजते रहे और टाल्स्टाय उसे नियमित रूप से ध्यानपूर्वक पढते रहे।

वैसे तो विश्व-साहित्य मे ही टाल्स्टाय का ऊचा, बहुत ऊचा, स्थान है, लेकिन भारत मे तो उनके प्रति असीम आत्मीयता है। इसका कारण यह है कि अपनी कृतियो मे उन्होने जिन सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया है, वे भारतीय सिद्धान्तो के बहुत ही निकट है। इतना ही नही, उन सिद्धान्तो के अनुकूल वह अपना जीवन व्यतीत करने का भी निरतर प्रयत्न करते रहे। सादगी और नीति-निष्ठा, प्रेम और बधुत्व, अपरिग्रह और समानता, ये उनके जीवन और साहित्य के सार-तत्व कहे जा सकते है और इसी कारण हमारे देश मे टाल्स्टाय को 'महर्षि' की सज्ञा से विभूषित किया गया है।

यह निश्चय ही अद्भुत सयोग था कि टाल्स्टाय और गाधीजी समकालीन थे। गाधीजी की दक्षिण अफ्रीका की प्रवृत्तियो मे टाल्स्टाय की गहरी अभिरुचि थी और टाल्स्टाय के सिद्धान्तो और उनके जीवन के प्रयोगो के प्रति गाधीजी का बडा ही

आकर्षण था। कहने की आवश्यकता नही कि दोनो महापुरुषो के वीच कुछ पत्र-व्यवहार भी हुआ जो आज भी सुरक्षित है।

टाल्स्टाय का समूचा साहित्य—निवन्ध, कहानिया, उपन्यास—कला की दृष्टि से तो उत्कृष्ट है ही, अपनी नैतिक भूमिका के कारण वह और भी मूल्यवान् वन गया है।

इस महान् लेखक के लिए मेरे हृदय मे वर्षों से वडा अनुराग रहा है। अत यह स्वाभाविक था कि अपने रूस-प्रवास मे मै उनकी जन्मभूमि यास्नाया पोलियाना के दर्शन करता और उनकी समाधि पर अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता। मास्को पहुचते ही मैने 'सोवियत लेखक सघ' के अधिकारियो से कह दिया था कि मै यास्नाया पोलियाना की यात्रा अवश्य करूगा और उन्होने उसकी व्यवस्था कर दी। हम पाच व्यक्ति मास्को से कार द्वारा रवाना हुए। तीन थे चीनी लेखक—वू (नाटककार), चू ज़े फू (कहानी-लेखक), अलेमाज़ तुर्गोन (कवि), चौथी हमारी परिचाचिका मार्कोवा स्वेतलाना और पाचवा मैं। चीनी लेखको मे केवल एक अग्रेज़ी वोल लेते थे, सो भी टूटी-फूटी। मार्कोवा चीनी और अग्रेजी वहुत अच्छी तरह जानती थी, रूसी तो उसकी मातृभाषा थी ही।

यास्नाया पोलियाना मास्को से कोई दोसौ किलोमीटर है। यह सोचकर कि शाम को लौटने मे वहुत देर न हो जाय, हम लोगो ने वडे तडके प्रस्थान किया। रास्ता वडा ही साफ-सुथरा और सुन्दर था। दोनो ओर दूर-दूर तक विरियोज़ा तथा येल के ऊचे सघन वृक्ष मार्ग को आकर्षक और यात्रा को सुखद वना रहे थे। लगभग सौ किलोमीटर तक मास्को जिले मे चलते रहे, अनतर सरपोखोव कस्वा और ओका नदी को पार करने पर तुला जिला प्रारभ हो गया। तुला शहर मे समोवार का वहुत वडा कारखाना है। वहा एक कहावत है—"डू नॉट गो टू तुला विद यौर ओन समोवार।"—अर्थात् अपनी समोवार लेकर तुला न जाओ। यह कहावत हमारी 'उल्टे वास वरेली को' के समानान्तर मानी जा सकती है।

मैने मार्कोवा से कहा, "इन चीनी कवि से कहो कि कुछ सुनावें।" मार्कोवा ने अलेमाज़ तुर्गोन से मेरी ओर से आग्रह किया तो उन्होने एक छोटी-सी कविता सुनाई। उसका भाव यह था कि युद्ध चल रहा है, सव लोग वडे हैरान हैं। इतने मे किसी कवि को समाचार मिलता है कि उसका देश, उसकी मातृभूमि, विजयी हो गई है। इससे वह वहुत ही प्रफुल्लित होता है।

तुर्गोव चीनी में सुनाते जाते थे, मार्कोवा अंग्रेजी मे अनुवाद करती जाती थी। हो सकता है, मूल भाषा मे शब्दो का लालित्य रहा हो, पर मुझे तो वह कविता बड़ी सामान्य-सी लगी। मैंने मार्कोवा से कहा, "अब तुम कुछ सुनाओ।" उसने पहले तो मीरोश्व्स्की नामक प्राचीन रूसी कवि की 'शाक्यमुनि' रूसी कविता सुनाई, अनतर सीमोनोव नामक आधुनिक कवि की। दोनो बुद्ध से सबधित थी। दूसरी कविता की कथा यह थी कि तीन यात्री कही जाते है। रास्ते मे भटक जाते है। उन्हे भूख व्याकुल करती है। अत मे उन्हे एक बौद्ध विहार मिलता है। उसमे बुद्ध की मूर्ति है, जिसके सिर पर एक मूल्यवान पत्थर लगा है। वे तीनो उस पत्थर को लेना चाहते है। वहा का सरक्षक उन्हे रोकता है। यात्री निराश होकर आगे बढ जाते है। पर बुद्ध उस पत्थर को लेकर उनके पास आते है और कहते है, "लो, यह लो। यह तुम्हारे ही लिए तो है।" कविता बड़ी ही भावपूर्ण थी। अच्छी लगी।

जैसे-जैसे आगे बढ़ते गये, रास्ते का सौंदर्य और भी निखरता गया। हरे-भरे वृक्षो के बीच सामूहिक खेतो की बस्तिया बड़ी सुहावनी लगती थी। लगभग ११ बजे घने वृक्षो की अमराई के निकट हमारी कार रुकी। मार्कोवा ने कहा, "अब हम यास्नाया पोलियाना के पास आ गये है। आइये, कुछ खा-पी ले।" आकाश मेघाच्छन्न था। तेज़ हवा चल रही थी। मार्कोवा साथ मे जो खाना लाई थी, उसे खा-पीकर आगे बढे। कुछ ही कदम जाने पर एक फाटक मिला, जो बद था। कार की आवाज सुनकर एक आदमी आया और उसने फाटक खोल दिया। मार्कोवा बोली, "अब हम शीघ्र ही टाल्स्टाय एस्टेट मे प्रवेश करनेवाले है।"

मैं कुछ सोचने लगा, इतने मे कार एक इमारत के सामने जाकर खड़ी हो गई। हम लोगो के उतरते-उतरते एक रूसी सज्जन आ गये। उनका नाम था निकोलाई पूजिन, जो टाल्स्टाय के घर के संरक्षक थे। बड़े भले और भोले। वह हमें अन्दर ले गये। चलते-चलते बोले, "यह स्थान बड़ा पवित्र और स्मरणीय है। अपने जीवन के ८२ वर्षों में से टाल्स्टाय ने ६० वर्ष यहीपर व्यतीत किये थे। यहीपर उनका जन्म हुआ और यहीपर उनकी समाधि है। इसी मकान मे उन्होंने छोटी बड़ी पुस्तकों की रचना की, जिनमे 'वार एण्ड पीस,' 'अन्ना करेनिना' आदि को सब जानते है। सारा मकान ठीक वैसी ही हालत में रखा गया है, जैसा कि टाल्स्टाय के जीवन-काल मे था।"

पूजिन अंग्रेजी नही जानते थे। वह रूसी में बोलते थे और मार्कोवा अंग्रेजी मे

मुझे और चीनी मे चीनी लेखको को समझाती जाती थी । वात करते-करते हम टाल्स्टाय के मकान मे प्रविष्ट हुए । नीचे की मज़िल के सवसे पहले कमरे मे टाल्स्टाय का पुस्तकालय था, जिसमे २८ अलमारियो मे विविध विषयो तथा भाषाओ की लगभग २२ हजार पुस्तकें थी। टाल्स्टाय खूब पढते थे। इतना ही नही, जिन पुस्तको को पढते थे, उनके नोट्स भी तैयार करते थे । रूसी के अतिरिक्त वह १३ अन्य भाषाए जानते थे ।

पुस्तकालय से कुछ सीढिया चढकर उनकी वैठक मे पहुचे । वही उनके भोजन का भी कमरा था । उसमे मेज पर रकाविया आदि ठीक पहले की तरह रक्खी है, एक ओर को पियानो । टाल्स्टाय के कुछ चित्र भी है । पूज़िन ने वताया कि टाल्स्टाय प्रतिदिन ७॥ वजे सोकर उठते थे और अपना कमरा स्वय साफ करके घूमने चले जाते थे । लौटकर कॉफी पीते थे और डाक देखते थे,फिर १॥ वजे तक वरावर काम करते थे । २ वजे भोजन करते थे । वह शाकाहारी थे और उन्होने ऐसी व्यवस्था कर दी थी कि मेज़ के एक ओर निरामिष-भोजी वैठें, दूसरी ओर मासाहारी । भोजन के पश्चात् वह आसपास के स्थानो के गरीव किसानो और मजदूरो से, जो वहा आ जाते थे, वातें करते थे, उनकी समस्याए सुलझाते थे । शाम को कोनेवाली मेज के सहारे सोफे तथा कुर्सियो पर परिवार के सब लोग वैठ जाते थे और पास्तरनक नामक कलाकार उनका चित्र वनाते थे । महिलाए उस समय कढाई करती रहती थीं और टाल्स्टाय कुछ पढकर सुनाते रहते थे ।

घर की अधिकाश चीजें टाल्स्टाय को अपने पूर्वजो से मिली थी । वहुत थोडी चीजे खरीदी गईं और वे भी सस्ती-से-सस्ती । टाल्स्टाय कहा करते थे कि हमे वहुत ज़रूरी हो, वे ही चीजे रखनी चाहिए और अपने ऊपर कम-से-कम खर्च करना चाहिए । सामने की दीवार पर पाच चित्र टगे है, रूस के सुप्रसिद्ध कलाकारो के वनाये हुए । उनमे दो टाल्स्टाय के है, एक-एक उनकी पुत्री मरिया तथा ततियाना के और एक उनकी पत्नी सोफिया का । टाल्स्टाय सगीत के वडे प्रेमी थे । दो पियानो उसी कमरे मे रक्खे है । दूसरी दीवार पर सलीव पर टगे ईसा का वडा ही प्रभावोत्पादक चित्र है । वाद मे टाल्स्टाय के नाना और वावा तथा केन्द्र मे दादी के पिता का चित्र है । सामने के दायें कोने में एक ग्रामोफोन रक्खा है ।

उसके आगे का कमरा छोटा वैठकखाना है । टाल्स्टाय की मूर्त्तियो, फर्नीचर तथा चित्रो के वीच एक वडा ही आकर्षक चित्र टगा है, जिसमे टाल्स्टाय वहुत

ही गभीर मुद्रा मे लिखने मे व्यस्त है। इसी कमरे मे सोफिया अपने स्वामी की रचनाओ की साफ कापी तैयार किया करती थी। टाल्स्टाय के स्वय के वनाये कई चित्र भी इस कमरे मे टगे हैं। वडे-वडे सगीतज्ञ, साहित्यकार तथा अन्य महापुरुष यही आकर टाल्स्टाय से मिलते थे। सुविख्यात रूसी लेखक तुर्गनेव ने यही बैठकर उन्हे अपनी 'सौग ऑव दी ट्राइम्फेट लव' (विजयी प्रेम का गीत) रचना सुनाई थी।

इसके पश्चात् आता है टाल्स्टाय का निजी कमरा। पूज़िन ने वडी भावना के साथ कहा, "यह कमरा हमारे लिए वडा पवित्र है। हमारे लिए गाधी का नाम भी वडा पवित्र है। टाल्स्टाय गाधी के वडे प्रशसक थे और गाधी टाल्स्टाय के। दोनो ही महापुरुष थे और दोनो के ही जीवन के उद्देश्य और सिद्धान्त एक थे।" कमरे की छोटी-सी अलमारी मे अन्य पुस्तको के वीच एक पुस्तक है—'एम०के० गाधी—एन इडियन पेट्रियट इन साउथ अफ्रीका', लेखक है जोज़ेफ जे डोक। इस पुस्तक का टाल्स्टाय ने कितनी वारीकी से अध्ययन किया था, इसका अदाज़ जगह-जगह पर पेंसिल से लगाये उनके निशानो से किया जा सकता है।

एक ओर को टाल्स्टाय की पढने-लिखने की मेज है, वडी मामूली-सी। पास ही एक तख्ते पर कुछ पुस्तके रक्खी हुई है। अपने जीवन के अतिम आठ वर्षों मे टालस्टाय इसी कमरे मे बैठकर पढते-लिखते थे। अन्तिम समय मे वह डास्टोवस्की का 'व्रदर क्रैमेज़ोव' पढ रहे थे। इसी मेज पर वैठकर उन्होने 'वार एण्ड पीस,' 'अन्ना करीनीना' तथा वहुत-सी कहानिया और पत्र लिखे थे। अलमारी की पुस्तको मे व्रुक गाउज़ डिक्शनरी की कई जिल्दे रक्खी है और वाइविल तथा कुरान की एक-एक प्रति भी।

कमरे मे वहुत-से चित्र लगे हैं। एक मेज़ पर लैंप रक्खा है। एक ओर को कुछ और पुस्तकें है, जिनमे डिकिन्स आदि विदेशी लेखको की कृतियो के अतिरिक्त कुछ दार्शनिक तथा धार्मिक ग्रथ भी है।

उसके वाद टाल्स्टाय का शयनागार है, जिसमे एक पलग पडा है। पलग के पास अलमारी पर मोमवत्ती, दियासलाई, शीशी तथा कुछ अन्य चीजे रक्खी हैं। एक मेज़ पर हाथ धोने के लिए सावुन, वर्तन, सुराही, तौलिया आदि। उसीके निकट कुछ छडिया, एक चावुक और तीन-चार कुर्सिया। ततियाना, सोफिया, और टाल्स्टाय के डाक्टर मकविस्की के चित्र हैं।

आगे का सोफिया का कमरा मालकिन के स्वभाव के अनुरूप वैभव से परिपूर्ण

है। काफी सामान है उसमे। एक पलग पडा है, जिसपर ७५ वर्ष की अवस्था मे सोफिया ने, सन् १६१६ मे, इस ससार से विदा ली थी। पूजिन ने वताया कि सोफिया को इस वात का परम सतोष था कि उसका अपना घर है। उसके १३ वच्चे हुए। मृत्यु के समय तक वह दादी-परदादी हो चुकी थी, उसके २८ नाती-पोते तथा एक पडपोता था। पलग से सटी मेज पर कुछ कितावें रक्खी है और टोकरी मे कढाई का सामान। एक ओर की दीवार पर हाथ मे वाइविल लिये ईसा का चित्र है।

वरावर के कमरे मे टाल्स्टाय के सेक्रेटरी निकोलाई गूसिफ रहा करते थे। वह अभी जीवित है और मास्को मे रहकर टाल्स्टाय की विस्तृत जीवनी तैयार कर रहे है। टाल्स्टाय इसी कमरे मे अपनी डाक देखते थे। उसके पार्श्व के कमरे मे एक छोटा-सा पुस्तकालय है।

नीचे की मजिल के जिस कमरे मे हम सवसे पहले गये थे, वह वडे महत्व का है। उसका उपयोग कई प्रकार से होते-होते अत मे वह अध्ययन-कक्ष वना। उसी कमरे मे टाल्स्टाय को 'वार एण्ड पीस' लिखने की प्रेरणा हुई। यहीपर उन्होने अपनी रचनाओ के ५५६ पात्रो की कल्पना की। एक चित्र मे वह आरामकुर्सी पर अधलेटे विचार-मग्न दिखाई देते है। इसी कमरे के एक भाग मे टाल्स्टाय के डाक्टर मकविस्की सो रहे थे, जवकि २८ अक्तूवर १६१० को, सवेरे ४ वजकर १० मिनट पर टाल्स्टाय ने चुपके से आकर उन्हे जगाया और उनके साथ गृह-त्याग कर दिया, कभी न लौटने के लिए। कडाके का जाडा पड रहा था। निविड अधकार मे घोडा-गाडी को तैयार कराकर वह चल पडे और ७ किलोमीटर पर शोकीनो स्टेशन पर पहुचे। वहा से रेल मे अज्ञात दिशा मे चल पडे। उनकी वृद्ध काया शीत को और यात्रा के श्रम को सहन न कर सकी। कोई २०० किलोमीटर चलने पर उनकी तवीयत विगड गई, निमोनिया हो गया। डाक्टर ने विवश होकर उन्हे अस्तापोवो नामक छोटे-से स्टेशन पर उतार लिया। वही स्टेशन-मास्टर के यहा ७ नवम्वर १६१० को इस मनीषी का देहान्त हो गया। उनकी स्मृति मे अव उस स्टेशन का नाम 'लियो टाल्स्टाय' हो गया है। मृत्यु के समय परिवार के लोग मौजूद थे, वहुत-से मित्र उपस्थित थे। सव टाल्स्टाय से मिल सकते थे, लेकिन सोफिया नही, क्योकि उससे न वनने के कारण ही तो उन्होने घर छोडा था। आखिर सोफिया का जी न माना और जव वह अन्दर गई, टाल्स्टाय अन्तिम सास ले रहे थे।

इस कमरे के बराबर के कमरे की चर्चा टाल्स्टाय ने अपने 'अन्ना करीनीना' उपन्यास मे की है। इसी कमरे मे उन्होने 'माई कन्फैशन' लिखा। तुर्गनेव, गोर्की आदि लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार इसी कमरे मे ठहरे। अस्तापोवो मे लाने के बाद टाल्स्टाय का शव इसी कमरे मे एक मेज़ पर रखा गया। हज़ारो नर-नारी पक्तिबद्ध होकर एक द्वार से अन्दर आये और अपने महान् कलाकार के दर्शन करके बाहर चले गये।

टाल्स्टाय ने अपने जीवन-काल मे समाधि के लिए स्थान का निर्देश कर दिया था और यह भी आदेश दे दिया था कि उनकी समाधि पर कोई स्मारक न बनाया जाय।

घर देखने के बाद हम लोग बाहर आये तो पेडो के बीच की जगह की ओर सकेत करते हुए पूज़िन ने बताया कि यहा वह मकान था, जिसमे टालस्टाय का जन्म हुआ था। पुराना होने से वह मकान टूट गया और उसका सामान नये मकान के बनाने मे काम आ गया। कुछ ही कदम पर वह स्कूल देखा, जो टाल्स्टाय ने यास्नाया पोलियाना गाव के किसानो के बच्चो को पढाने के लिए खोला था और उनके लिए बहुत-सा साहित्य तैयार किया था। अब वहा सग्रहालय है।

घर से कोई दो फर्लांग पर घने वन के बीच टाल्स्टाय की समाधि है, नितान्त निर्जन स्थान पर। वहा जाने के लिए मार्ग बडा मनोरम है। दोनो ओर ऊचे-ऊचे पेड है।

समाधि पर पहुचे तो उसकी सादगी और पवित्रता को देखकर श्रद्धा से सिर झुक गया। इधर-उधर से मिट्टी समेटकर छ फुट लम्बी समाधि बना दी गई है। उसके इर्द-गिर्द बिरियोजा के नौ पेड है, पाच बडे और चार छोटे। पेड़ो की बाडी है। समाधि पर कुछ फूल रक्खे थे। शायद किसीने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की होगी। समाधि के दर्शन करते समय मुझे टाल्स्टाय की 'आदमी को कितनी जमीन चाहिए?' कहानी याद आ गई। उसमे उन्होने बताया है कि मनुष्य जीवनभर इतनी आपा-धापी करता है, पर अन्त मे छ फुट, केवल छ फुट भूमि, उसके काम आती है। जिसने अपनी समस्त रचनाओ मे अपरिग्रह की महिमा गाई, वह मृत्यु के बाद भी किसी वैभवशाली स्मारक का समर्थन कैसे कर सकता था!

आस्ट्रिया के सुविख्यात लेखक स्टीफन ज्विग ने यहा की यात्रा करके अपने आत्म-चरित (वर्ल्ड ऑव यस्टरडे) मे उनका बडा ही यथार्थ चित्रण किया है। वह लिखते है

"इस समाधि पर न कोई चिह्न है, न कोई नाम, और उस महापुरुष की कब्र वैसी ही बनी हुई है, जैसी किसी आवारे फक्कड की हो या किसी अज्ञात सिपाही की। कोई भी आदमी वहा विना रोक-टोक के पहुच सकता है। यहा कोई चौकी-पहरा नही है, न कोई ताला-कुजी। मुक्त वायु उस समाधि पर मानो ईश्वरीय सदेश सुनाती है। वहा किसी भी प्रकार का शोरगुल नही है। कोई भी यात्री वहा से गुजर सकता है। उसे पता लगेगा तो केवल इतना ही कि वहा कोई मामूली रूसी आदमी रूसी मिट्टी मे गडा हुआ है। न तो नेपोलियन की कब्र को, न महाकवि गेटे की समाधि को और न वैस्ट-मिन्स्टर एवे के समाधि-स्थल को देखकर ऐसे भाव हृदय मे उठते है, जैसे टाल्स्टाय की इस समाधि के दर्शन करके—जो उस शात तपोवन मे विद्यमान है, जो स्वय मौन है, नामहीन, जो वायु का सन्देश सुनती है, पर जो स्वय न तो वोलती है, न कुछ सन्देश सुनाती है।"

पूज़िन ने वताया कि सन् १९४१ मे जव नाज़ी सेनाओ ने इस स्थान पर आक्रमण किया तो यहा के ११३ पेड काट डाले और अपने ५७ मृत अफसरो को यहीं-पर समाधिस्थ कर दिया। वाद मे उनके शव हटाये गए। उन्होने यह भी वताया कि नाज़ियो ने ४५ दिन तक टाल्स्टाय के घर को अपने कब्जे मे रक्खा, उसे अस्तवल वना दिया और कई कमरो मे आग लगा दी। वह तो अच्छा हुआ कि नाज़ी आक्रमण की सूचना पहले ही मिल गई थी, जिससे वहुत-सा सामान वहा से हटा दिया गया था। नाज़ियो के चले जाने के वाद सारे कमरे यथापूर्व कर दिये गए, सारा सामान ज्यो-का-त्यो रख दिया गया। फिर भी सौ-सवासौ चीजें जर्मन चुराकर ले ही गये।

सोफिया की समाधि उसके स्वामी के निकट नही है। पूज़िन ने वताया कि वह वहा से कोई २॥ किलोमीटर पर कोचेकोव्स्की स्थान पर है। वहीं टाल्स्टाय के माता-पिता की समाधिया है। टाल्स्टाय के परिवार मे अव उनकी एक पुत्री वची है एलेक्जैण्ड्रा, जो अमरीका मे रहती है। ततियाना अपनी क्षयग्रस्त लडकी का इलाज कराने इटली गई थी, वहीं मर गई। सर्गी का देहान्त सन् १९४७ मे मास्को मे हुआ। वह मास्को विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर था। इलिया का १९३३ मे अमरीका मे, लियव का १९४४ मे स्विट्जरलैड मे, आद्री का १९१६ मे पीट्रोग्राड मे और मिखायु का १९४४ मे मारोको मे। मरिया १९०६ मे टाल्स्टाय के सामने ही चली गई थी।

टाल्स्टाय का समूचा जीवन सघर्ष मे बीता । अपने सिद्धान्त के अनुसार वह गरीबी, सादगी और सचाई का जीवन जीना चाहते थे, लेकिन पारिवारिक उलझनें उन्हे दूसरे ही रास्ते पर चलने के लिए विवश करती थी। वह निरन्तर आतरिक तथा बाह्य परिस्थितियो से जूझते रहे। उनके सामने जीवन का आदर्श स्पष्ट था और उन्होने उसकी ओर बढने का बराबर उद्योग किया। अनेक कष्ट सहे, पर अपने विचारो पर दृढ रहे। गाधीजी ने २० सितम्बर सन् १९२८ के 'हिन्दी नवजीवन' मे लिखा था—"टाल्स्टाय की सादगी अद्भुत थी। बाह्य सादगी तो थी ही। वह अमीर-वर्ग के मनुष्य थे। इस ससार के सभी भोग उन्होने भोगे थे। धन-दौलत के विषय मे मनुष्य जितनी इच्छा रख सकता है, उतना उन्हे मिला था। फिर भी उन्होने भरी जवानी मे अपना ध्येय बदला। दुनिया के विविध रग देखने पर भी, उसके स्वाद चखने पर भी, जब उन्हे प्रतीत हुआ कि इसमे कुछ नही है तो उससे मुह मोड लिया और अन्त तक अपने विचारो पर पक्के रहे। इसीसे मैने एक जगह लिखा है कि टाल्स्टाय इस युग की सत्य की मूर्त्ति थे। उन्होने सत्य को जैसा माना, वैसा ही पालने का उग्र प्रयत्न किया। सत्य को छिपाने या कमजोर करने का प्रयत्न नही किया। लोगो को दु ख होगा या अच्छा लगेगा कि नही, इसका विचार किये बिना ही उन्हे जो वस्तु जैसी दिखाई दी, वैसी ही कह सुनाई।"

आगे चलकर वह फिर कहते है, "टाल्स्टाय अपने युग के लिए अहिंसा के बड़े भारी प्रवर्तक थे। अहिंसा के विषय मे परिश्रम के लिए जितना साहित्य टाल्स्टाय ने लिखा है, जहातक मै जानता हू, उतना हृदय-स्पर्शी साहित्य किसी दूसरे ने नही लिखा है—उससे भी आगे जाकर कहता हू कि अहिंसा का सूक्ष्म दर्शन जितना टाल्स्टाय ने किया था और उसका पालन करने का जितना प्रयत्न टाल्स्टाय ने किया था, उतना प्रयत्न करनेवाला आज हिन्दुस्तान मे कोई नही। ऐसे किसी आदमी को मै नही जानता।"

टाल्स्टाय की एक और विशेषता की ओर गाधीजी ने निर्देश किया है। वह लिखते है, "दूसरी एक अद्भुत वस्तु का विचार टाल्स्टाय ने लिखकर और अपने जीवन मे उसे ओत-प्रोत करके कराया है। वह वस्तु है 'ब्रैड लेबर'। जगत् मे जो असमानता दिखाई पडती है, दौलत और कगालियत नजर आती है, उसका कारण यह है कि हम अपने जीवन का कानून भूल गये है। यह कानून 'ब्रैड लेबर' है। गीता के तीसरे अध्याय के आधार पर मै उसे यज्ञ कहता हू। गीता ने कहा है कि बिना

यज्ञ किये जो खाता है, वह चोर है, पापी है। वही चीज़ टाल्स्टाय ने वतलाई है।
उन्होने कहा है, लोग परोपकार करने के लिए प्रयत्न करते है, उसके लिए पैसे खरचते है और लकाब लेते है, परन्तु ऐसा न करके थोडा-सा काम करे, अर्थात् दूसरो के कधो पर से नीचे उतर जाय तो बस यही काफी है।

"ऐसी वात नही है कि टाल्सटाय ने जो कहा, वह दूसरो ने नही कहा हो, परन्तु उनकी भाषा मे चमत्कार था, क्योकि जो कहा, उसका उन्होने पालन किया। गद्दी-तकियो पर बैठनेवाले, मजदूरी मे जुट गये, आठ घण्टे खेती का या दूसरी मज़दूरी का काम उन्होने किया। इससे यह न समझे कि उन्होने साहित्य का कुछ काम ही नही किया। जबसे उन्होने शरीर की मेहनत का काम शुरू किया तबसे उनका साहित्य अधिक सुशोभित हुआ। उन्होने अपनी पुस्तको मे जिसे सर्वोत्तम कहा है, वह है 'कला क्या है ?'—यह उन्होने इस काल की मज़दूरी मे से बचे समय मे लिखी थी। मज़दूरी से उनका शरीर घिसा नही और ऐसा उन्होने स्वय माना कि उनकी बुद्धि अधिक तेजस्वी हुई।"

समाधि के पास से हटने को जी नही चाहता था। वहा का सारा वायुमडल इतना पुनीत था कि हम सव क्षणभर के लिए अपनेको भूल गए। पूज़िन की आखें गीली हो रही थी और हमारे हृदयो मे भावना का सागर लहरा रहा था।

समाधि को प्रणाम कर जव हम चले तो ऐसा लग रहा था, मानो कोई वहुत ही मूल्यवान निधि पीछे छूट गई हो।

लौटते मे पुस्तकालय मे गये। वहा के अधिकारी हमसे मिले। वडे भले लोग थे। उन्होने टाल्स्टाय का वहुत-सा साहित्य भेंट मे दिया। वहा से चले तो आगे वह तालाब मिला, जिसमे जीवन से निराश होकर एक दिन रात को सोफिया कूद पडी थी, लेकिन सर्दी के मारे पानी जमा होने के कारण अपने उद्देश्य मे सफल नही हो सकी थी। लौटते समय यास्नाया पोलियाना का छोटा-सा गाव भी देखा, जिसकी कोई दो हजार की वस्ती है। मार्कोवा ने वताया कि अव तो इस गाव का वहुत विकास हो गया है। स्कूल, पुस्तकालय, अस्पताल खुल गये है, लेकिन टाल्स्टाय के जमाने मे ये सव सुविधाए नही थी।

: १२ :

मास्को में टाल्स्टाय का घर

मास्को मे जुबोव्स्काया स्क्वायर के मध्य मे मर्क्यूलोव शिल्पी की बनाई टाल्स्टाय की एक विशाल मूर्ति है। इसी स्क्वायर के निकट से एक सडक जाती है, जिसका नाम है लियो टाल्स्टाय स्ट्रीट। ट्राम या बस मे अथवा पैदल जाते हुए दर्शक को साफ दिखाई दे जाता है कि वह मुहल्ला मामूली हैसियत के लोगो का है। आड-म्वरहीन मकान, ऊवड-खावड सडक। लेकिन इसी सडक पर एक महत्वपूर्ण स्थल है, जिसकी यात्रा किये बिना मास्को-प्रवास पूरा नही माना जा सकता। यह स्थल है महर्षि टाल्स्टाय का वह मकान, जिसमे यास्नाया पोलियाना जाने से पूर्व सन् १८८५ से लेकर १६०१ तक वह रहे थे। यह मकान उन्होने सन् १८८२ मे खरीदा था। उनकी मृत्यु के वाद उनकी पत्नी ने इसे वेच दिया। सन् १६२६ मे उसका राष्ट्रीयकरण कर लिया गया। अब वह ठीक उसी प्रकार सुरक्षित है, जिस प्रकार वह टाल्स्टाय के समय मे था।

मकान का फाटक प्राय बद रहता है। लोगो के आने-जाने के लिए वडे फाटक की वगल मे एक छोटा-सा प्रवेश-द्वार है। उसमे होकर जव हम घर के प्रागण मे खडे हुए तो बहुत-सी वाते मन मे घूम गईं। हमारी परिचारिका ने वताया कि सन् १८०७ मे जव इस मकान का निर्माण हुआ था तब यह वहुत छोटा था। केवल एक मजिल थी। स्वय टाल्स्टाय ने ऊपर की मजिल वनवाई।

मकान मे घुसते ही सवसे पहले हम भोजन के कमरे मे पहुचे, जिसमे मेज पर रकाबियां, पानी की सुराही तथा अन्य वस्तुए रक्खी थी। सामने एक वडी घडी लगी थी, जिसे टाल्स्टाय की स्त्री सोफिया आद्रीवना ने खरीदा था। उस घडी की विशेषता यह है कि उसमे घटे वजते समय पक्षी का-सा कलरव सुनाई देता है। इसी कमरे मे टाल्स्टाय की लडकी ततियाना का वनाया अपनी वहन मरिया इवोवना का वडा ही मनोहारी तैलचित्र है। मरिया टाल्स्टाय की सवसे प्रिय लडकी थी।

ततियाना अच्छी चित्रकार थी। उसकी कुशल तूलिका ने मरिया की छवि को ज्यो-का-त्यो अकित कर दिया है।

भोजन के इस कमरे से सटा बाहर की ओर एक कमरा है, जिसमे टाल्स्टाय का वडा लडका सर्गी रहता था। उसमे पलग, लैंप आदि यथापूर्व रक्खे है। सामने दीवार पर रूस के उच्चकोटि के कलाविद रेपिन द्वारा निर्मित तनियाना का प्लास्टर ऑव पेरिस का चित्र है। पलग पर एक कवर पडा है, जिसपर सोफिया के हाथ की की हुई सुन्दर कलापूर्ण कढाई है।

भोजन के कमरे से अदर की ओर का कमरा शयनागार के रूप मे काम आता था। उसमे दो पलग पडे है, बरावर-बरावर। एक टाल्स्टाय का, दूसरा सोफिया का। दोनो एक-दूसरे से सटे हुए है। उनके विस्तरो के कवर भी सोफिया के तैयार किये हुए है। मकान मे पानी तथा बिजली की व्यवस्था नही थी। टाल्स्टाय लैम्प जलाकर पढते-लिखते थे और स्वय जाकर मास्को नदी से पानी लाते थे। सोने के कमरे मे एक मेज पर पानी का वर्तन रक्खा है।

इसी कमरे मे एक सोफा पडा है और कुछ कुर्सिया। एक ओर को छोटी-सी मेज लगी है, जो सोफिया को अपने किसी मित्र से भेट मे मिली थी और जिसपर वैठकर वह टाल्स्टाय की रचनाओ की कापिया किया करती थी। दीवार पर रूसी कलाकार गेय का वनाया सोफिया का तैल-चित्र है। गोद मे लडकी अलेक्जैण्ड्रा है।

इसके वाद टाल्स्टाय के सबसे छोटे लडके ईवानिया का कमरा है। अपने पिता का वह बहुत ही लाडला बेटा था, वडा प्रतिभाशाली। टाल्स्टाय कहा करते थे कि वह कुशाग्र बुद्धि का वडा होनहार वालक है और आगे चलकर वह उनका साहित्यिक उत्तराधिकारी वनेगा। वहुत छोटी उम्र मे उसने एक कुत्ते की कहानी लिखी था, जो टाल्स्टाय को वहुत पसद आई थी। लेकिन भगवान ने उस वालक को ७वर्ष की अवस्था मे ही इस दुनिया से उठा लिया। उसकी सारी वस्तुए, खेल-खिलौने जैसे-के तैसे रक्खे है।

उसके पास के कमरे मे घर के बच्चो की कक्षा लगा करती थी। उसमे एक मेज के सहारे कई कुर्सिया पडी है। उसके निकट का कमरा वस्तु-भडार था। उसकी वगल मे आद्री का कमरा है। उसके बरावर का कक्ष वडा ही कलापूर्ण है। उसमे ततियाना रहा करती थी। ततियाना के स्वय के वनाये सुन्दर चित्रो के अतिरिक्त रूस के वहुत-से नामी कलाकारो की कृतियो को उसमे स्थान दिया गया है। त्रुव्यस्कोई

की वनाई टाल्स्टाय की एक मूर्ति सामने रक्खी है। ततियाना की आदत थी की जव उसके यहा कोई वडा आदमी आता था तो मेजपोश पर उसके हस्ताक्षर करा लेती थी और वाद मे उसे काढ लेती थी। उसकी इस दूरदर्शिता से आज टाल्स्टाय, सोफिया, गेय, रेपिन आदि के ६६ हस्ताक्षर मेजपोश पर है। वरावर के कमरे मे समोवार आदि सामान है।

दूसरी मजिल के लिए थोडी-सी सीढिया चढनी होती है। सीढियो पर एक निर्जीव भालू हाथ मे तश्तरी लिये खडा है। यह भालू सोफिया को भेट मे मिला था। टिकटियो पर सजावट की दृष्टि से कुछ टोकरिया रक्खी है।

ऊपर पहुचते ही सबसे वडा एक हॉल आता है, जिसमे भोजन की मेज लगी है। जव मेहमान अधिक हो जाते थे तो सव लोग इसी कमरे मे भोजन करते थे। सास्कृतिक कार्यक्रम भी यही हुआ करते थे। एक ओर को सोफा तथा कुछ कुर्सिया पडी है। एक पियानो रक्खा है। टाल्स्टाय पियानो वडा अच्छा वजाते थे। उसपर वजाने के लिए उन्होने स्वय कुछ गीत लिखे थे। सुप्रसिद्ध सगीतज्ञ वीयोविन के गीत भी वह प्राय वजाया करते थे। उनका परिवार वडा ही सगीत-प्रेमी था। लडका सर्गी अच्छा गाता था, मरिया और ततियाना गिटार वजाने मे निपुण थी। सगीतज्ञ शेलियेपीन के गीत टालस्टाय को विशेप प्रिय थे। वह प्राय स्वय आकर अपने गीत सुनाया करते थे। उनका कण्ठ वहुत ही मधुर था।

सोफे के पास मेज पर शतरज का सामान रक्खा है। टाल्स्टाय को शतरज का वडा शौक था, लेकिन वह अच्छा नही खेलते थे। जीतने पर उन्हे वडी खुशी होती थी, हारने पर झुझला जाते थे।

हाल के पार्श्व मे ड्राइग रूम है, जिसमे सोफिया मिलने आनेवालो का स्वागत करती थी। उसमे फर्नीचर वडा मामूली है। वाई दीवार पर तीन चित्र लगे है—सिरोफ का वनाया सोफिया का, रेपिन का वनाया ततियाना का और गेय का वनाया मरिया का। तीनो ही चित्र वडे अच्छे है।

टाल्स्टाय शिकार के वडे शौकीन थे। एक वार वह भालू का शिकार खेलने गये। अकस्मात भालू उनपर झपटा और टाल्स्टाय का सिर तथा माथा उसने अपने मुह मे ले लिया। यदि उसी समय अस्तश्को नामक व्यक्ति वहा न आ गया होता और उसने भालू को गोली से न उडा दिया होता तो सचमुच वड़ा अनर्थ हो जाता। भालू की चोट के दो निशान टाल्स्टाय के माथे पर अत तक बने रहे। उस भालू की खाल

आज भी वडी मेज के नीचे बिछी है और उस घटना की याद दिलाती है ।

ड्राइग रूम से सटे कमरे मे मरिया रहती थी। मरिया को तडक-भडक पसद न थी। वह अपने पिता की भाति वडे सीधे-सादे ढग से रहती थी। उसके कमरे मे आडम्बर का नाम-निशान नही है। इसी कमरे मे बैठकर वह अपने महान् पिता की रचनाओ की प्रतिलिपि करने मे लगी रहती थी और उनके नाम आये पत्रो का उत्तर लिखती रहती थी। उसकी डाक्टर वनने की वडी इच्छा थी, लेकिन वह पूरी न हो सकी। विवाह के कुछ समय पश्चात् ही उसकी मृत्यु हो गई।

मरिया के कमरे के वाद घर के दो सेवको का कमरा है । टाल्स्टाय प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग स्थान के पक्षपाती थे, लेकिन स्थानाभाव के कारण दो सेवक एक ही कमरे मे रहते थे। उसके सामने की अलमारी मे सोफिया की पोशाके टगी हैं। उनमे की सफेद पोशाक सोफिया को वहुत पसद थी। फिर आता है मेह-मानो का कमरा। उसमे टाल्स्टाय के विशेष अतिथि ठहरा करते थे।

दूसरी पक्ति मे सबसे पहला कमरा टाल्स्टाय के प्रधान सेवक सिरोकॉफ का है। वह १८ वर्ष तक अपने स्वामी के साथ रहा। अपना एक चित्र उसे भेट करते हुए टाल्स्टाय ने लिखा—"अपने साथी को।"

मकान का सबसे छोटा कमरा टाल्स्टाय का अपना था। उसीमे उनकी मेज-कुर्सी पडी है, वडी ही साधारण-सी। कुर्सी तो वहुत ही छोटी है। टाल्स्टाय कागजो को आखो के नजदीक रखकर लिखते-पढते थे। इसी कमरे मे उन्होने अपनी ६० रचनाए तैयार की। दस वर्ष के परिश्रम से 'रिजरेक्शन' का यही सृजन हुआ। मेज पर पेपरवेट, कलमदान, होल्डर और उनका स्टैण्ड आदि सव पहले की तरह रक्खे है। निकट ही दीवार मे एक तख्ता लगा है। मेज के सहारे लिखते-लिखते जव टाल्स्टाय थक जाते थे तो खडे होकर इसी तख्ते पर कागज रखकर लिखते थे।

कमरे के वाहर एक छोटी-सी कोठरी मे दो जोडी जूते रक्खे है। उनमे से एक जोडी स्वय टाल्स्टाय ने वनाकर ततियाना के पति को भेट मे दी थी। उसने उसे टाल्स्टाय की रचनाओ की वारह जिल्दो के साथ अलमारी मे रख दिया और उसपर लिख दिया—'टाल्स्टाय की तेरहवी जिल्द।' जव टाल्स्टाय को इसका पता चला तो वह वडे दुखी हुए। उन्होने कहा—"यह वडा अनुचित है। पुस्तके पढने के काम आती है, जूते पहने जाते है। पुस्तको के साथ जूतो का रखना वहुत ही बुरा है और १मुनासिव भी है।"

वही एक ओर टाल्स्टाय की साइकिल रक्खी है । इस साइकिल का उपयोग वह ६७ वर्ष की अवस्था तक करते रहे। वैसे साइकिल पर चढना उन्हे अच्छा नही लगता था, क्योकि वह मानते थे कि साइकिल के चलने से सडक पर पैदल चलने-वाले लोगो को असुविधा होती है।

टाल्स्टाय की सबसे प्रिय सवारी थी घोडा। ८० साल की उम्र तक वह घोडे पर चढते रहे। एक बार घुडसवारी मे उनकी टाग मे चोट आ गई थी और उन्हे कुछ दिन बैसाखी का प्रयोग करना पडा था । वह बैसाखी आज भी यास्नाया पोलियाना मे सुरक्षित रक्खी है । मकान मे घुसते ही दाई ओर को सरक्षक की कोठरी के बाहर की दीवार पर जो चित्र लगा है, उसमे टाल्स्टाय अश्वारोही के रूप मे है । पैदल चलना भी उन्हे बहुत अच्छा लगता था। ६० वर्ष की आयु मे वह एक बार यास्नाया पोलियाना से पैदल चलकर मास्को आये थे । बाद के एक कमरे मे उनकी क्राकरी रक्खी है।

बस यही है वह मकान, जिसमे उस टाल्स्टाय ने अपने जीवन के १६ वर्ष व्यतीत किये थे । नीचे एक छोटा-सा उद्यान है, जिसमे मकान के निकट ही एक छोटे आकार का निकुज जैसा कमरा बना है। जाडे के दिनो मे इसी कमरे मे बैठकर टाल्स्टाय लिखा करते थे। एकान्त मे होने के कारण वहा वह एक तो शोर-गुल से बच जाते थे, दूसरे उद्यान की हरियाली को भी देख सकते थे।

मकान के प्रागण मे एक और दुमजिला मकान है। जिन दिनो ऊपर की मजिल बन रही थी, टाल्स्टाय तथा उनके परिवार के सदस्य इसी मकान मे रहे थे। इस मकान के सामने मोटरखाने जैसे तीन बडे कमरे है, जिनमे से एक मे पुस्तके है, दूसरे मे टाल्स्टाय का घोडा बधता था।

टाल्स्टाय के जीवन-काल मे न जाने कितनी विभूतिया उस मकान मे आई। चेखव जैसे महान् साहित्यकार आये, रूस के अमर कलाकार गोर्की के साथ टाल्स्टाय की यहीपर प्रथम भेट हुई, शेलियेपीन तथा रोबिन्स्टीन जैसे सगीतज्ञ ने अपने मधुर कठ से न जाने कितनी बार वहा के वायुमडल को मुखरित किया। रेपिन तथा गेय जैसे कलाविदो ने इसी मकान मे अपनी तूलिका से टाल्स्टाय तथा उनके कुटुम्बी-जनो की चिर नवीन तथा चिरस्मरणीय छविया अकित की।

सन् १९२० मे लेनिन आये तबतक टाल्सटाय महाप्रस्थान कर चुके थे। लेनिन टाल्स्टाय के बडे प्रशसक थे और उन्हे इस बात का बडा गर्व था कि उन

जैसा ऊचे दर्जे का कलाकार उनके देश मे उत्पन्न हुआ। टाल्स्टाय की कृतियो मे 'वार एण्ड पीस' तथा 'अन्ना करीनीना' उन्हे अत्यन्त प्रिय थे। टाल्स्टाय के विषय मे लेनिन ने सात लेख लिखे, जो आज भी उपलब्ध है।

सारा मकान देखने के बाद मै बाहर अहाते मे आकर क्षणभर चुपचाप खडा रहा। तरह-तरह के विचार मन मे उठे—काल कितना क्रूर है। वह सबकुछ लील जाता है। इस हरे-भरे घर को उसने कितना सूना कर डाला! आने-जानेवाले यात्री तक भीतर सावधानी से पैर रखते है कि कही वहा की समाधि भग न हो जाय। भोजन की मेजे खानेवालो की राह देखती है, पियानो अपनी मधुर ध्वनि सुनाने के लिए तडपता है। हसरत से आज भी बयार बहती है, पर उसके स्पर्श से आनन्दित होनेवाला हृदय कहा है। पुष्प आज भी खिलते है, पर उन्हे दुलारनेवाले हाथ और प्यार से उन्हे देखनेवाली आखें कहा है!

जब मै इन विचारो में डूब रहा था, उद्यान के किसी वृक्ष पर पक्षी चहचहा उठा, मानो कह रहा हो—यह घर आज जितना समृद्ध है, उतना शायद ही कभी रहा हो। उसका कोना-कोना आज उस भावना से परिपूर्ण है, जो कभी मरती नही और जो इन्सान को हमेशा जीवित रखती है।

: १३ :

टाल्स्टाय-संग्रहालय

मास्को के सग्रहालयो मे टाल्स्टाय-सग्रहालय का विशेष स्थान है। क्रोपाटकिन स्ट्रीट पर निर्मित इस सग्रहालय की स्थापना टाल्स्टाय की प्रथम पुण्य-तिथि पर (७ नवम्बर १९११ को) हुई थी। १९१७ की क्राति से पूर्व उसका रूप बडा छोटा था। टाल्स्टाय के कुछ मित्रो, सबधियो तथा प्रशसको ने उनकी कतिपय चीजो का सग्रह करके वहा रख दिया था। सन् १९३९से उसके विस्तार का कार्य विधिवत प्रारभ हुआ। सोवियत सरकार ने न केवल अपने इस महान लेखक की रचनाओ के अन्वेषण की व्यवस्था की, अपितु उनके व्यापक प्रचार की भी। फलत टाल्स्टाय के जीवन-विषयक जितनी सामग्री मिल सकती थी, इकट्ठी की गई और उनकी कृतियो का भी सग्रह किया गया।

आज रूस के सबसे बडे साहित्यिक सग्रहालयो मे इस सग्रहालय की गणना होती है। उसके कई विभाग है। एक विभाग मे टाल्स्टाय की पाडुलिपिया है, दूसरे मे उनके चित्र तथा अन्य वस्तुए, तीसरे मे पुस्तकालय आदि-आदि। एक विभाग द्वारा विशेषज्ञो की यात्राओ तथा भाषणो का प्रबन्ध किया जाता है।

सबसे पहले मै चित्रोवाले विभाग मे गया। टाल्स्टाय के जन्म (२८ अगस्त १८२८) से लेकर अन्तिम समय तक की झाकी इस विभाग के चित्रो मे प्रस्तुत की गई है। सर्वप्रथम यास्नाया पोलियाना का वह घर दिखाया गया है, जिसमे टाल्स्टाय पैदा हुए थे। जब वह केवल नौ साल के थे तभी उनके पिता निकोलस टाल्स्टाय चल बसे थे। माता मरिया टाल्स्टाय का विछोह तो उन्हे डेढ वर्ष की अवस्था मे ही सहन करना पडा। माता-पिता, दोनो के चित्र वहा लगे है, जिनसे पता चलता है कि टाल्स्टाय का जन्म कैसे कुल मे हुआ था।

प्रारभिक शिक्षा के बाद वह कज़ान विश्वविद्यालय मे गए, पर वहा की शिक्षा से उन्हे सतोष न हुआ। १८५० मे वह कोकेसस पहुचे। १८५२ में उनकी चाइल्ड-

हुड (बचपन) और १८५७ मे 'यूथ' (युवावस्था) नामक रचनाए प्रकाशित हुई। कोकेशस के अनेक चित्रो के वीच टाल्स्टाय की स्वय की वनाई कई तस्वीरें लगी हुई हैं। कोकेशस मे उन्होने युद्ध-सम्बन्ध कई कहानिया लिखी।

१८५४ मे वह सेवेस्टपोल की रक्षा के लिए क्रीमिया गये। वह युद्ध १८५३ से १८५६ तक चला। उस काल मे लिखी सेवेस्टपोल से सबधित कई रचनाए उपलब्ध हैं। १८५५ मे वह पीटर्सवर्ग लौट आये। अनन्तर कई देशो मे घूमे। १८५७ मे पेरिस गये। वहा का कला-भवन, लूव्र उन्हे पसन्द आया, लेकिन स्टाक एक्सचेज अच्छा नही लगा। उसी वर्ष वह स्विट्जरलैंड गये। लोजान मे उन्होने एक कहानी लिखी। जर्मनी के ड्रेजदन नगर की आर्ट गैलरी उन्हे रुचिकर लगी। वह इग्लैड गये। वहा का पार्लमेंट भवन उन्हे नही भाया। वह स्वय लिखते है कि जिस समय पार्लमेंट के सदस्य भाषण दे रहे थे, उनकी इच्छा हुई कि नीद ले लें।

१८५७ मे उन्होने यास्नाया पोलियाना मे किसानो के बच्चो के लिए स्कूल खोला। वच्चो के उपयोग के लिए ए० वी० सी० नामक पुस्तक तैयार की, जिसके पाच खडो मे वर्णमाला से लेकर आगे तक के पाठ दिये हुए हैं। १८६२ मे 'यास्नाया-पोलियाना' नामक पत्र निकाला। उसी वर्ष ३४ वर्ष की अवस्था मे एक चिकित्सक की अठारह वर्षीया पुत्री सोफिया आन्द्रीवना के साथ उनका विवाह हुआ।

एक कमरे मे 'वार एड पीस' को चित्रित किया गया है, दूसरे मे 'रिज़रेक्शन' को। इन दोनो कृतियो की प्रमुख घटनाओ को लेकर उनके चित्र बनाये गए हैं, जिससे पुस्तको के अनेक प्रसग स्वत ही दर्शक के हृदय पर अकित हो जाते हैं। 'अन्ना करीनीना' के भी कई चित्र एक कक्ष मे लगाये गए हैं। इस उपन्यास की मुख्य पात्री अन्ना की आकृति का टाल्स्टाय ने जो वर्णन किया है, वह पुश्किन की वहन की आकृति से वहुत मिलता-जुलता है। अत जहा अन्ना का कल्पित चित्र लगाया है, वहा पुश्किन की वहन के चित्र को भी, तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से, स्थान दिया है। एक कमरे मे गिन्सवर्ग की बनाई टाल्स्टाय की बडी भावपूर्ण मूर्ति है।

यास्नाया पोलियाना मे टाल्स्टाय का 'फ्रूट्स ऑव एन्लाइटनमेंट' सन १८८९ मे खेला गया, जिसमे उनके कुटुम्बीजनो ने अभिनय किया। उनका 'पावर ऑव डार्कनैस' (अधकार की शक्ति) जर्मनी, जापान, इटली, फ्रास आदि देशो मे खेला गया। १९०१ मे उन्होने 'हादजी मुरात' नामक कहानी लिखी।

इस सग्रहालय के चित्रो मे टाल्स्टाय के अनेक रूप देखने को मिलते हैं—

वालक, युवक, लेखक, सैनिक, दार्शनिक आदि-आदि। टाल्स्टाय पर लिखी कुछ पुस्तके भी इसमे प्रदर्शित की गई है।

लेकिन सग्रहालय का वह विभाग मुझे वडा समृद्ध लगा, जिसमे टाल्स्टाय की पुस्तके, पत्र तथा पाडुलिपिया रक्खी गई है। एवेलिन जाइदेशनूर ने, जो १९२४ से वहा काम कर रही है, वडी आत्मीयता के साथ वह विभाग दिखाया। टाल्स्टाय को भारतीय साहित्य से वडी रुचि थी। उन्होने ५ भारतीय लोक-कथाओ का अनुवाद किया। २९ कहानियो का 'पचनन्त्र' से। महाभारत तथा भगवद्गीता से सुभाषितो का सग्रह किया। अपनी 'ए० वी० सी' पुस्तक मे उन्होने कई कहानिया 'पचतत्र' से दी है।

टाल्स्टाय ने लगभग १० हजार पत्र वाहर के लोगो को लिखे। रूसी के अतिरिक्त बहुत-से पत्र अग्रेजी, फ्रेच तथा जर्मन भाषाओ मे है। करीव एक लाख साठ हजार शीटे उन्होने लिखने मे इस्तेमाल की। दूसरे लोगो ने कोई पचास हजार पत्र टाल्स्टाय को लिखे। ये सब पत्र विभिन्न देशो और भाषाओ के है और उस सग्रहालय मे वे सव सुरक्षित है।

टाल्स्टाय कहा करते थे कि लेखक को अपनी अच्छी-से-अच्छी कृति पाठको को देनी चाहिए। इसलिए अपनी रचनाओ मे वह खूव काट-छाट करते थे। कभी-कभी रचनाओ के प्रारम्भ करने मे उन्हे वडी कठिनाई होती थी। शुरू करते थे, सतोष नही होता था, काट देते थे, फिर लिखते थे, फिर काट देते थे। 'अन्ना करीनीना' का प्रारम्भ उन्होने १० वार किया, 'वार एड पीस' का १५ वार, 'रिजरेक्शन' का ११ वार।

समझ मे नही आता कि ऐसा क्यो होता था। काट-छाट प्राय तव होती है, जबकि लेखक का दिमाग साफ नही होता। टाल्स्टाय ने जो कुछ लिखा है वह वहुत सुलझा हुआ है। उसमे कही भी उलझन नही है। तव इतनी काट-छाट क्यो होती थी? कदाचित् इसलिए कि पहले उनके जो जी मे आता था, लिखते जाते थे, वाद मे उसे सवारते थे। अपनी हर रचना वह पहले अपने हाथ मे लिखते थे, फिर उनकी पत्नी सोफिया या लडकी मरिया अथवा अन्य कोई उसकी नकल करते थे। टाल्स्टाय फिर उसमे काट-छाट करते थे, पुन नकल होती थी, पुन वह लेखक की कलम से रग जाती थी। टाल्स्टाय कहते थे कि स्थायी महत्त्व की चीजे २०-२० वार लिखनी चाहिए। कहते है, 'वार एड पीस' के प्रूफो मे जव वेहिसाव काट-छांट होने लगी तो

प्रकाशक बडे हैरान हुए। उन्होने टाल्स्टाय से कहा, "जनाव, आप इस तरह सशो-धन करेंगे तो आपकी पुस्तक कदापि प्रकाशित नही होने की।" टाल्स्टाय ने तत्काल उत्तर दिया, "साहब, आप अच्छी चीज चाहते हैं, तो यह सब आपको सहन करना ही होगा।"

सोफिया या मरिया के धीरज की तारीफ करनी होगी। एक-एक चीज की वार-वार नकल करने मे उनपर सचमुच वडा जोर पडता होगा। कहते है, 'वार एड पीस' जैसी विशाल पाडुलिपि की सोफिया ने ८ या १० वार नकल की थी। पति के साथ उसके झगडो की वात कौन नही जानता। लेकिन उतने पर भी वह सदैव पति की रचनाओ की पाडुलिपियो की नकल तथा उनके सम्पादन के कार्य मे सलग्न रहती थी। टाल्स्टाय खूव लिखते थे। शुरू के दिनो मे तो उन्होने वहुत ही अधिक लिखा।

टाल्स्टाय की सवसे पहली रचना सन् १८५१ मे तैयार हुई और १८५२ मे छपी। अतिम रचना आत्मघात से सवधित थी, जा रूस के वाल-साहित्य के विशे-षज्ञ कर्नें चकोव्स्की के नाम पत्र के रूप मे लिखी गई थी। वह उनकी मृत्यु के ६ दिन पहले तैयार हुई थी। प्रकाशित हुई उनके निधन के वाद, १३ नवम्वर १६१० को 'रैच' नामक पत्र मे।

'रिज़रेक्शन' उन्होने २६ दिसम्वर १८८६ को शुरू किया। पूरा करने मे दस वर्ष लगे। 'वार एड पीस' मे सात वर्ष (१८६३-१८७०) और 'अन्ना करीनीना' मे छ वर्ष (१८७३-१८७८)। पहले उपन्यास की पाडुलिपि मे लगभग ७००० शीटे है, दूसरे मे ५००० और तीसरे मे २५००। शुरू करने से लेकर अन्तिम रूप देने तक के सारे कागज सुरक्षित रक्खे गये है। उन्हे देखकर पता चलता है कि टाल्स्टाय कितने परिश्रमशील थे। जवतक उन्हें सतोष नही हो जाता था, पाडुलिपि को हाथ से नहीं छोडते थे। वह कहा करते थे कि मैं अपनी छपी पुस्तको को नही पढ सकता, क्योकि जैसे ही किसी पुस्तक को हाथ मे उठाता हू, उसपर कलम चलने लगती है।

उनकी कृतियो के विश्व की सभी भाषाओ मे अनुवाद हुए है। वस्तुत उनकी रचनाए देश-काल की सीमाओ मे आवद्ध नही हैं। उनकी कहानिया, उनके उपन्यास उनके निवध, सवके लिए है। उनमे उन तथ्यो का निरूपण है, जो हमेशा ताजे रहते है और सवको स्वस्थ मानसिक भोजन प्रदान करते हैं।

एवेलिन ने हमे अन्ना करीनीना, पावर ऑव डार्कनेस, वार एड पीस आदि

की मूल पाडुलिपियो के कुछ पृष्ठ दिखाये और वडी ममता के साथ उनका परिचय दिया। उन्होंने वताया कि किस प्रकार टाल्स्टाय की एक-एक रचना को इकट्ठा किया गया है और किस प्रकार उनके आधार पर अनुसधान का कार्य चल रहा है। रूस की सरकार उस सारे साहित्य को विधिवत् रूप से ६० जिल्दो मे शीघ्र ही प्रकाशित करने जा रही है। एवेलिन ने यह भी वताया कि वह विभिन्न भाषाओ मे अनूदित टाल्स्टाय की पुस्तको का सग्रह कर रही है और बहुत-सी पुस्तके इकट्ठी भी हो गई है।

। एवेलिन विगत ३४ वर्षों से उसी काम मे लगी है। और भी अनेक भाई-बहने उसमे जुटे है। एवेलिन ने कई व्यक्तियो से परिचय कराया। उनकी लगन तथा कार्य-निष्ठा को देखकर हृदय गद्गद् हो गया। एवेलिन ने वताया कि महात्मा गाधी तथा टाल्स्टाय के बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ था, वह भी उनके यहा सुरक्षित है। उन्होने दोनो के एक-एक पत्र की फोटो-कापिया हमे दिखाई। बोली, "इन दोनो महापुरुषो ने एक दूसरे से काफी प्रेरणा ली।"

टाल्स्टाय के वारे मे भी उन्होने वहुत-सी सामग्री उस विभाग मे एकत्र की है। उसमे ततियाना की डायरी तथा जीवनी प्रमुख है। सारी सामग्री उन्होने कितनी सावधानी तथा सुरक्षा के साथ रक्खी है, वह देखने की चीज है। लोहे की अलमारियो मे उन्हे इतने व्यवस्थित ढग से रक्खा गया है कि कोई भी चीज मागिये, तत्काल निकालकर दिखाई जा सकती है और क्या मजाल कि निकालने मे किसी कागज को कोई क्षति पहुचे। कमरे मे खिडकिया तक लोहे की है।

मैने एवेलिन को वताया कि भारत मे टाल्स्टाय वडे लोकप्रिय है और उनके प्रशसको की सख्या वहुत वडी है। लोग उन्हे 'महर्षि टाल्स्टाय' कहते है। उनकी रचनाओ के अनेक भारतीय भाषाओ मे अनुवाद हुए है और हिंदी मे उनकी वहुत-सी पुस्तके उपलब्ध है।

इतना सुनकर उन वृद्धा की आखे चमक उठी। उनके लिए यह कम उल्लास की वात नही थी कि जिस महापुरुष के लिए उन्होने अपना जीवन समर्पित कर रक्खा है, वह दूसरे देशो मे, विशेषकर भारत मे, लोगो के दिलो मे इस प्रकार अपना घर वनाये हुए है। उन्होने कहा, "टाल्स्टाय की लोकप्रियता का अनुमान इस वात से भी होता है कि वाहर से जो भी भाई-वहनें इस नगरी मे आते है, वे इस सग्रहालय को अवश्य देखते है। पर हा, रवीन्द्रनाथ ठाकुर जव मास्को आये तो अकस्मात् उनकी

तबीयत खराब हो गई और वह नही आ सके । उन्होने हमे एक पत्र भेजा कि वह इच्छा होते हुए भी अस्वास्थ्य के कारण सग्रहालय मे नही आ सकेंगे । उनका वह पत्र हमने सुरक्षित रक्खा है ।"

एवेलिन ने कई हस्तलिखित पृष्ठो की फोटो-कापिया मुझे दी । इसी प्रकार चित्र-विभाग की सचालिका लोम्यूनोव ने टाल्स्टाय के माता-पिता के चित्रो की एक-एक प्रति भेट मे दी । मैंने उनका आभार माना और जब विदा ली तो एवेलिन मेरे रोकते-रोकते बाहर तक पहुचाने आई । चलते-चलते मैंने उनसे कहा, "आप बडी भाग्यशालिनी है जो निरन्तर ऐसे महापुरुष के ससर्ग मे रहती है, जिसने दुनिया के जाने कितने लोगो को प्रेरणा दी है और आगे देते रहेगे ।"

: १४ :

कृषि एवं उद्योग-प्रदर्शिनी

मास्को की कृषि तथा उद्योग-प्रदर्शिनी अपने ढग की निराली चीज है और उसे देखने के लिए दूर-दूर के लोग आते है। जब कई मित्रो ने मुझसे उसकी चर्चा की और उसे देखने का आग्रह किया तो मैने सोचा कि होगी कोई प्रदर्शिनी, जिसमे कृषि तथा उद्योग-धधो की चीजे दिखाई गई होगी। लेकिन वहा पहुचा तो देखता क्या हू कि वह हमारी सामान्य कल्पना से एकदम भिन्न है। खुले विस्तृत मैदान मे सैकडो पक्के मण्डप बने हुए है, फव्वारे चल रहे है और रग-बिरगे बल्बो के प्रकाश से प्रदर्शिनी ऐसी जगमगा रही थी कि देखकर तबीयत खुश हो जाती है।

प्रदर्शिनी बारहो महीने रहती है। सारे सोवियत सघो की कृषि तथा उद्योग-धधो की प्रगति का अध्ययन करना है तो इस प्रदर्शिनी को देख लीजिये। लेकिन घटे-दो-घटे मे आप चाहे तो उसका पूरा चक्कर भी नही लगा सकते। उसे अच्छी तरह देखने के लिए कम-से-कम आठ-दस दिन का समय चाहिए।

पहले दिन जब मै वहा पहुचा तो घटेभर मे उसका प्रवेश-द्वार तथा केन्द्रीय मण्डप ही देख सका। द्वार बडा विशाल तथा कलापूर्ण है। उसके ऊपर रूस के एक महान शिल्पकार द्वारा निर्मित एक युवक और युवती की धातु की विशाल मूर्ति है। हाथ मे आर्थिक समृद्धि का प्रतीक अनाज की बालो का एक पूला है। अन्दर घुसते ही मुख्य मण्डप के ऊपर ३३० फुट की ऊचाई पर सोने की एक तारिका दूर से ही दर्शको को दिखाई देती है। फव्वारों की बहार का तो कहना ही क्या!

प्रदर्शिनी का क्षेत्रफल इतना अधिक है कि पैदल घूमकर उसे देखना बडा कठिन है। दर्शको की सुविधा के लिए शासन ने शानदार लारियो की व्यवस्था कर रक्खी है। लारियो के दोनो ओर तथा आगे-पीछे शीशे लगे है। थोडा-सा पैदल घूमकर और दो-चार मण्डप देखकर, लोग उन लारियो मे आ बैठते है और उनमे धीरे-धीरे सारी प्रदर्शिनी की परिक्रमा कर लेते है। यों लारी मे बैठकर देखा तो क्या जा

सकता है, लेकिन इतना अनुमान अवश्य हो जाता है कि प्रदर्शिनी कितनी विशाल है। लारी मे बैठे-बैठे कोई-न-कोई यह भी बता देता है कि उसमे क्या-क्या चीजें है। पहले दिन मैंने भी लारी मे बैठकर एक चक्कर लगाया। बाद मे तो कई सध्याए उसके देखने मे व्यतीत की। ज्यो-ज्यो देखता गया, उसके प्रति मेरी रुचि बढ़ती गई।

जार के जमाने मे रूस कृषि की दृष्टि से बहुत ही पिछडा हुआ था। उसका कारण यह था कि बडे-बडे सामन्तो और जमीदारो ने भूमि का अधिकाश भाग अपने कब्जे मे कर लिया था और किसानो को भारी लगान देना पडता था। पुराने यत्रो से खेती होती थी। किसानो के पास इतने साधन ही नही थे कि वे मशीनो और अच्छे खाद का उपयोग कर सकें। नतीजा यह कि फसल बहुत थोडी होती थी और अधिकाश किसान भूखो मरते थे। लेकिन जब नई शासन-व्यवस्था आई तो जमीदारी-प्रथा का अन्त कर दिया गया और भूमि, वन आदि सब राज्य की सम्पत्ति हो गये। जमीदारो के एकाधिपत्यवाली भूमि किसानो के उपयोग मे आने लगी। लगान और ऋण से कृषक मुक्त हुए और अपनी पूरी शक्ति तथा साधनो से वे कृषि के कार्य मे लग गये। बजर भूमि तोडी गई, खेतो का आकार बडा किया गया, मशीने काम मे लाई गईं, अच्छा खाद जुटाया गया और सामूहिक खेती की व्यवस्था की गई।

जिस समय कृषि मे तेजी से प्रगति हो रही थी, नाजी आक्रमण हुए और खेती-बाड़ी को उससे बडी क्षति पहुची। कहते है, नाजी सेनाओ ने ९८ हजार सामूहिक फार्मों को, करीब दो हजार राज्यीय फार्मों को तथा ३ हजार मशीन एव ट्रेक्टर-केन्द्रो को लूटकर नष्ट कर डाला। इतना ही नही, लगभग पौने दो करोड घोडो, भेड-बकरियो तथा सूअरो आदि को या तो वे मारकर खा गये, या हाक ले गये।

नाजी-उपद्रव शान्त होने पर लोग फिर कृषि की उन्नति मे लग गये। उनके परिश्रम से आज उस देश मे खाने के लिए गेहू, मक्का आदि अनाज तथा वस्त्रो के लिए कपास का इतना उत्पादन होता है कि अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए लोगो को किसी दूसरे देश का मुह नही ताकना पडता। जनसख्या की वृद्धि के साथ-साथ अन्न तथा कपास के अधिकाधिक उत्पादन पर जोर दिया जा रहा है। सारे देश मे हजारो अन्वेषण-केन्द्र तथा प्रयोगशालाए है, जिनमे कृषि की अभिवृद्धि के लिए नये-नये प्रयोग होते रहते है।

रूस मे कृषि एव उद्योगो-सम्बन्धी प्रगति का अनुमान उक्त प्रदर्शिनी को देखकर भली प्रकार हो जाता है। यह प्रदर्शिनी ५११ एकड भूमि मे फैली हुई है। उसमे ३०७ मण्डप है। सोवियत यूनियन के प्रत्येक सघ और प्रत्येक जिले के अपने-अपने मण्डप है, जिनमे अधिकारी लोग अपने यहा के विशेष उत्पादनो का प्रदर्शन करते है। अनाज, सागभाजी, फल तथा अन्य वस्तुओ को वे इतने आकर्षक ढग से सजाते है कि दर्शक उनकी कलापूर्णता से प्रभावित हुए बिना नही रहते। अनाज मे मक्का, फलो मे अगूर, साग-भाजियो मे टमाटर, खीरे, आलू तथा काशीफल देखते ही बनते थे। तरबूज इतने बडे कि उस आकार के अन्यत्र शायद ही मिलें। एक मण्डप मे अनाज तथा दालो के बीच साबुत मसूर दिखाई दी। मूगफली भी कई मण्डपो मे थी। जार्जिया के मण्डप मे चाय देखी। पर मालूम हुआ कि वह बहुत हल्की किस्म की होती है, फिर भी खूब चलती है।

प्रत्येक मडप को बडे ही सुन्दर और सुरुचिपूर्ण ढग से बनाया गया है और उसके भीतरी भाग को आकर्षक ढग से सजाया गया है। बड़े-बड़े मानचित्र, फोटो तथा ग्राफ देकर प्रत्येक स्थान के उत्पादन की विशेषताए समझाने का प्रयत्न किया गया है। हर मडप मे योग्य गाइड रहते है, जो दर्शको की टोलिया बनाकर सब बाते बडे विस्तार से समझाते है।

फसलो की पैदावार को व्यावहारिक रूप से दिखाने के लिए तरह-तरह की फसलो की खेती भी उस प्रदर्शिनी मे होती है। एक खेत मे मक्के की फसल खडी थी। भुट्टे लगे थे। उन्हे देखकर पता चलता था कि किस प्रकार खेती करने से मक्के के इतने बडे दाने और भुट्टे उन्हे प्राप्त होते है। जार्जिया के मडप के निकट चाय का बगीचा था। वहा ले जाकर गाइड ने हमे बताया कि किस प्रकार वे लोग चाय के पौधो को काटते है, जिससे नई कोपलें निकले और नई कोपलो के निकलने पर वे किस प्रकार उन्हे तोडते है। कई विशेष मडपो मे गाये तथा भेडे दिखाई गई थी और कुछमे घोड़ो की नस्लें। कुछमे मधुमक्खी-पालन की व्यवस्था थी।

२६० किस्म की फसलें, ८१४ प्रकार के फल तथा २५०० प्रकार के वृक्ष तथा वल्लरिया, जो कि नगरो को सुशोभित करने के काम आती है, दर्शको को वहा दिखाई देती है।

सन् १९५६ मे इस प्रदर्शिनी के साथ उद्योग-विभाग भी जोड दिया गया। उनका उद्देश्य था उद्योग, इजीनियरिंग तथा विज्ञान मे हुई प्रगति का दिग्दर्शन

कराना। उद्योग-विभाग के अनेक मडप है, जिनमे मशीन, यत्र, मॉडल आदि दिखाये गए है। एक मडप मे कारो तथा उनके विभिन्न कल-पुरजो का प्रदर्शन किया गया है। २६ विशाल मण्डपो मे लगभग डेढ हजार प्रकार की मशीने रखी गई है।

कृषि तथा उद्योगो की वह वास्तव मे अद्‌भुत दुनिया है। वहुत-सी दुकाने भी है, जिनपर ताजे फल आदि मिलते है। ऐसा मालूम होता है, मानो किसी छोटे-मोटे शहर मे आ गये हो। इस स्थायी प्रदर्शिनी के दो वडे लाभ साफ दिखाई देते है। एक तो यह कि सामूहिक तथा राज्यीय फार्मों के सर्वोत्तम उत्पादन, मशीन तथा ट्रैक्टर-केन्द्रो के उत्तमोत्तम यत्र, पशुओ की उत्कृष्ट नस्लें तथा अनुभवी कार्य-कर्ताओ एव विशेषज्ञो के कृपि और उद्योग-सम्वन्धी उच्च कोटि के अन्वेषणो का वहा प्रदर्शन हो जाता है और एक ही स्थान पर रूस के ही नही, अन्य देशो के लोगो को भी उन्हे देखने का अवसर मिल जाता है। लेकिन उससे भी वडा दूसरा लाभ यह है कि विभिन्न प्रदेशो तथा जिलो के उत्पादको मे एक-दूसरे से आगे वढने की स्पर्द्धा उत्पन्न होती है। हरकोई चाहता है और प्रयत्न करता है कि उसका मडप दूसरे मडपो से वढकर हो। यह स्पर्द्धा नये-नये प्रयोगो को जन्म देती है।

जितने घटे प्रदर्शिनी खुली रहती है, दर्शको का ताता लगा रहता है। वहा कई रेस्ट्रा तथा कैफे है, दो सिनेमाघर है, एक खुला मच है और वाहर से आनेवाले लोगो के लिए विश्रामगृह है। हमे वताया गया कि १९५४ तथा १९५६ के बीच ८४ देशो के ढाई हजार शिष्टमंडलो ने प्रदर्शिनी का निरीक्षण किया।

एक वात हमे वहुत ही असुविधाजनक प्रतीत हुई। वस्तुओ के विवरण तथा चार्ट आदि रूसी भाषा मे दिये हुए है। उनका साहित्य भी अधिकाश रूसी मे है। इससे जवतक कोई परिवाचक साथ मे न हो, तबतक विदेशियो को सारी चीजें, विशेषकर मशीने, समझने मे वडी कठिनाई होती है। एक वार मै अकेला वहा घूमने निकल गया। जिस किसी मडप मे गया और वहा की व्यवस्थापिका से कुछ पूछना चाहा, उसने कह दिया, "इग्लिस्की नियत।" अर्थात्—मै अंग्रेजी नही जानती। "इदिस्की नियत" अर्थात्—हिन्दी नही जानती। इसी प्रकार कारो के मडप मे मुझे वडी परेशानी हुई। रूसी भाई-वहनें अपनी भाषा मे समझाने का प्रयत्न करते थे, लेकिन न तो वे पूरी तरह समझा पाते थे, न उनकी वात समझ मे आती थी। प्रदर्शिनी-सम्वन्धी कुछ साहित्य अग्रेजी मे भी निकला है, लेकिन वह पर्याप्त नही है।

फव्वारो के इर्द-गिर्द बेंचें पडी रहती है। घूमते-घूमते दर्शक थक जाते हैं, अथवा थोडी देर को विश्राम लेना चाहते है तो इन बेंचों पर आ बैठते है और उछलती-कूदती जल-धाराओ की अठखेलिया देखकर तथा जल-सीकरो की शीतलता का अनुभव करके बडे आनन्दित होते है। बच्चो के लिए तो यह स्थान विशेष आमोद-प्रमोद का है। छोटे-छोटे बच्चे चारों ओर किलकारिया भरते हुए दिखाई देते है।

अपने लम्बे प्रवास मे मैंने प्रदर्शिनिया कई देशो मे देखी, लेकिन प्रदर्शन, प्रयोग तथा शिक्षा का जैसा सामजस्य मुझे इस प्रदर्शिनी मे दिखाई दिया, वैसा अन्यत्र कही नही दिखाई दिया। रूस की कृषि तथा उद्योगो की अभिवृद्धि मे इस प्रदर्शिनी का निस्सदेह बहुत बडा हाथ है।

: १५ :

इलिया एहरनबुर्ग के साथ

मास्को के निवास-काल मे कई रूसी लेखको, विद्वानो तथा सम्पादको से भेंट हुई। उनमे से कुछके साथ वडी रोचक चर्चाए हुई। यहा मुझे विशेष रूप से जिनका उल्लेख करना है, वह है इलिया ग्रिगोरीविच एहरनबुर्ग। इलिया अतर्राष्ट्रीय ख्याति के साहित्यकार है। उनकी दर्जनो पुस्तके निकल चुकी है और उनके अनुवाद अग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, जापानी भारतीय तथा अन्य भाषाओ मे हुए है। द्वितीय महायुद्ध मे जर्मनो को पराजित कराने मे इस लेखक का महत्वपूर्ण योग रहा। उन्होने रूसियो मे अदम्य उत्साह और चेतना उत्पन्न की और 'रेड स्टार' पत्र मे लेख लिख-लिखकर लाल सेना को निरतर उत्साहित किया। लेकिन युद्धोत्तर काल मे इसी लेखक के एक विवादास्पद उपत्यास 'थौ' ने तूफान खडा कर दिया और यह मानकर कि उसके कुछ अश सोवियत सघ के मूल उद्देश्यो के विरुद्ध है, उनकी सोवियत अधिकारियो ने अच्छी खबर ली। फिर भी इलिया विचलित न हुए। आज रूस के प्रथम श्रेणी के लेखको मे उनका अग्रणी स्थान है।

इलिया का नाम मैने पहले से ही सुन रक्खा था। उनसे मिलने की इच्छा भी वहुत थी। अचानक एक दिन भारतीय दूतावास से श्रीमती कमला रतनम् का फोन आया, "आज दोपहर को हम लोग इलिया से मिलने जायगे। आपको भी चलना है।" इस समाचार से मुझे बडा हर्ष हुआ। रतनम्-दम्पती, उनकी सुपुत्री माधवी, एक रूसी कलाकार मरीना बुगीवा तथा मै, कार द्वारा मास्को से रवाना हुए।

इलिया का फ्लेट वैसे शहर मे भी है, लेकिन वह प्राय रहते है इस्त्रा मे, जो कोलाहल से दूर, मास्को से पश्चिम मे, लगभग ६० किलोमीटर के फासले पर है। इस्त्रा राजनैतिक दृष्टि से बडे महत्व का स्थान है। जर्मन तथा रूसी सेनाओ मे यहा पर घमासान युद्ध हुआ था, जिसकी साक्षी आज भी सडक के दाई ओर खडा ध्वस्त गिरजाघर तथा अन्य इमारते देती है।

इस्त्रा का मार्ग बडा मनोरम है। साफ-सुथरी सडक के दोनो ओर दूर-दूर तक हरियाली-ही-हरियाली दिखाई देती है और ज्यो-ज्यो इस्त्रा निकट आता है, ऊचे-ऊचे सघन वृक्ष वहा के वायुमण्डल को बहुत ही लुभावना बना देते है।

जिस समय हम लोग मास्को से रवाना हुए थे, पानी पड रहा था, लेकिन आगे बढते ही पानी बद हो गया, मौसम साफ हो गया। शहर से बाहर निकलने पर सडक के दोनो ओर लकडी के कुछ मकान बने हुए और कुछ बनते दिखाई दिये। पूछने पर पता चला कि उन मकानो को स्वय मजदूर लोग अपने लिए बना रहे है और यह उनकी निजी सम्पत्ति होगी। मुझे बताया गया कि हाल ही मे निजी उद्योग को प्रोत्साहन देने की योजना स्वीकृत हुई है और मकान बनाने आदि के लिए सरकार से ऋण भी दिया जा रहा है।

इस्त्रा के कुछ इधर ही सुविख्यात लेखक चेखव का घर है, जो अब टूटा-फूटा पडा है। उसके पास ही चेखव का स्मारक है, जो इस बात का स्मरण दिलाता है कि मेडीकल इन्स्टीट्यूट से स्नातक होने के बाद चेखव ने यहीपर अपनी प्रैक्टिस शुरू की थी।

इस्त्रा से कुछ आगे मोरोजोव नामक एक सम्पन्न व्यक्ति की जागीर है। चेखव तथा गोर्की मोरोजोव के अनन्य मित्र थे और उनके यहा प्राय आया-जाया करते थे। रूसी क्राति के कुछ समय पूर्व दूरदर्शी मोरोजोव ने अपनी यह जागीर बोल्शेविक पार्टी को दे दी थी।

जिस समय हम लोगो की कार इलिया के घर पर पहुची, शाम के पौने पाच बजे थे। इलिया तथा उनकी पत्नी को पहले से ही सूचना थी। वे प्रतीक्षा कर रहे थे। कार के रुकते ही सबसे पहले दो कुत्ते दौडकर बाहर आये। उनमे एक बडा था, दूसरा मझोले कद का। भौंकते हुए वे हम लोगो के पैरो से लिपटने लगे। उन्हे देखकर माधवी भयभीत हो उठी और चिल्लाने लगी, तबतक इलिया आ गये। सामान्य-सी पोशाक, दुबली-पतली देह, उभरी हुई निश्छल आखे, होटो पर मुस्कान, सिर पर लम्बे श्वेत केश। यह थी इलिया की बाह्याकृति। उनके चेहरे को देखकर ऐसा प्रतीत हुआ, मानो शरत सामने हो। अद्भुत साम्य है दोनो के चेहरो मे। उन्होने बडी आत्मीयता से हाथ मिलाया, परिचय हुआ। ऐसे मिले मानो वर्षो की जान-पहचान हो। उनके आने के जरा-सी देर बाद उनकी पत्नी भी आ गई।

अभिवादन के उपरान्त वे हमे घर के बाहरवाले छोटे-से चबूतरे पर ले गये,

जहा से चारो ओर के दृश्य देखे जा सकते थे। सामने एक छोटी-सी नदी थी, जिसके किनारे पर कुछ खेत थे। इलिया सवसे पहले वही गये। सचमुच उन्होने जगल मे मगल कर रक्खा है । वाद मे उनके अपने साग-भाजी के खेत मे गये । ऐसा लगा, जैसे भारत के किसी गाव मे हो। पालक, सोया, गाजर, करेला, वदगोभी, वैगन, चुकन्दर, मिर्च आदि की हरी-भरी क्यारिया भारत के लिए इलिया की ममता का आभास करा रही थी। इलिया ने वताया कि सन् १९५६ मे जव वह भारत आये थे, तव यहा से अनेक प्रकार की साग-भाजियो के वीज अपने साथ ले गये थे। उन्हीको सावधानी से वोकर तथा उनकी देखभाल करके यह फसल तैयार की थी।

वहा से वह हमे पुन घर के निकट ले गये और अपने अहाते के पेड-पौधो को दिखाते हुए उनका परिचय कराया। वोले, "यह जैतून का पेड है। यह यूक्लिप्टस का है। यह पौधा अर्जेण्टाइना का है।" इस प्रकार एक के वाद एक, उन्होने कई पौधो की ओर हमारा ध्यान दिलाया और वडी आत्मीयता से उनका परिचय दिया। फिर घर के नीचे के एक कक्ष मे ले गये। उस कक्ष की छत और दीवारे शीशे की थी और गरम पानी के पाइप लगाकर ऐसी व्यवस्था की गई थी कि वहा के कडे शीत तथा वर्फ से विकासशील पौधो की रक्षा हो सके। वडी विचित्र दुनिया थी पेड-पौधो की वह। जाने किस-किस देश के पौधे छोटे-वडे गमलो मे लगे थे। छ-फुटे एक पौधे की ओर सकेत करते हुए इलिया वोले, "जानते है यह किसका पौधा है? यह आम है। इसकी वडी मजेदार कहानी है। पिछली वार जव नेहरू मास्को आये थे तो उनके सम्मान मे भारतीय दूतावास ने एक एक भोज दिया था। उसमे किसी ने आम खाकर गुठली फेक दी। मै उसे उठाकर कागज मे लपेटकर जेव मे रख लाया। यहा आकर उसे मैने जमीन मे गाड दिया। उसीका नतीजा है यह।" पता नही, उसपर कभी फल आयेगा या नही, पर इलिया के लिए यह क्या कम सतोप की वात थी कि उनके सग्रह मे भारत के अत्यन्त लोकप्रिय फल का पौधा विद्यमान है। पपीते का एक पौधा भी वहा था। कक्ष के एक गमले मे एक मोटे तने के फुट-भर के पौधे की ओर इशारा करके उन्होने कहा, "यह जापानी है। देखने मे छोटा-सा लगता है, पर है यह पूरी उमर का पेड। इसे कृत्रिम उपायो से इस वौने रूप मे रक्खा गया है।" वाहर क्यारियो मे मटर तथा गुलाव के रग-विरगे पुष्प खिले थे और महक रहे थे। इलिया ने वताया कि शीत, पाले और चूहो से वचाव के लिए

इनके ऊपर घास की विछावन डालनी पडती है। तव इनकी रक्षा होती है।

मकान मे प्रवेश करते ही पहला कक्ष चुने हुए पौधो तथा लता-वल्लरियो को समर्पित दीख पडा। वह तीन ओर से खुला था, पर वेलो ने फैलकर उसे वद कमरे का रूप दे दिया था। अदर तीन कमरे और थे, वडे ही सादे, पर कलापूर्ण। एक कमरे मे भारत से भेट मे मिले चार रगीन चित्र लगे थे। सामने दीवार पर फ्रेम मे मखमल पर कढा शाति का प्रतीक कपोत था, जो उन्हे आगरे के 'भारत-सोवियत सास्कृतिक सघ' की ओर से भेट मे मिला था। वरावर के कमरे मे अन्य वस्तुओ के वीच कुछ कितावे थी, जिनमे नेहरूजी की 'मेरी कहानी' के रूसी भाषान्तर पर वडे आकार के कारण खासतौर पर निगाह जाती थी। वही एक ओर को दीवालगिरी पर भारत से लाये कुछ लकडी के खिलौने करीने से रक्खे थे। शीशे के एक केस मे भारत से भेट मे मिली विभिन्न प्रकार की सिगरेटे थी।

इलिया एक-एक शब्द तौल-तौलकर वोलते थे और वड़े ही धीमे। उनकी सौम्यता हृदय को पुलकित करनेवाली थी और उनकी पारदर्शी निश्छलता वार-वार हमारी आखो को अपनी ओर खीच लेती थी। उनकी पत्नी उच्चकोटि की चित्रकार है। पर कितना अन्तर था दोनो मे ! इलिया सहज और गभीर, पत्नी वडी ही सजीव और स्फूर्तिवान। एक कमरे मे सुप्रसिद्ध फ्रासीसी कलाकार पिकासो के चित्रो के साथ श्रीमती इलिया के भी कुछ चित्र लगे थे।

हम लोग उनके घर को देख रहे थे तवतक लता-वल्लरियोवाले कक्ष मे मेज पर चाय की व्यवस्था हो गई। सूचना मिलने पर हम आकर कुर्सियो पर वैठ गये। इलिया तथा उनकी पत्नी के अलावा उनके परिवार की एक छोटी-सी वालिका भी थी। खाने के लिए वहुत-सी चीजे थी। फलो मे मेव, अगूर, केले, अनन्नास तथा मौसम्मी। खाते-खाते चर्चा चल पडी। हममे से एक ने पूछा, "अपनी विदेश-यात्रा मे आपको कौन-कौन-से देश खासतौर पर अच्छे लगे ?"

इलिया ने उत्तर दिया, "भारत, चीन और जापान। एक-दूसरे से हर वात मे अलग होते हुए भी यही तीन देश मिलकर एशिया का निर्माण करते है।

"जापान के वारे मे आपका क्या विचार है ?"

"जापान ने वडी उन्नति की है। भौतिक क्षेत्र मे वह वहुत आगे वढ गया है, लेकिन उसकी आत्मा और सस्कृति अपनी निराली है। जव मै वहा गया तो लोगो ने और वहा के पत्रो ने मेरा वडा अभिनदन किया और जितने दिन रहा, किसीने

मेरी उपेक्षा नही की।"

इसके बाद चाय तथा भोजन की चर्चा चल पडी। इलिया ने कहा, "मुझे तेज भारतीय चाय पसद है। अजता-एलोरा जाते समय औरगाबाद मे चाय के चूरे से तैयार हुई काढे-जैसी जो चाय मिली थी, वह मुझे अबतक याद है। दुर्भाग्य से हमे यहा सर्वोत्तम भारतीय चाय नही मिल पाती, क्योकि हमारे खरीददार प्राय वही चाय पसद करते है, जो कि रूसी चाय से स्वाद तथा सुगधि मे मिलती-जुलती है।"

इतना कहते-कहते हल्की-सी मुस्कराहट उनके होटो पर खेल गई। अपनी बात को जारी रखते हुए उन्होने कहा, "मेरी बहुत-सी आदते भारतीय है। मास मुझे पसद नही। हरी सब्जिया और चावल अच्छे लगते है। मिर्च भी मजेदार लगती है।" फिर कुछ रुककर बोले, "भारत के कुछ होटलो मे और रेस्ट्राओ मे यूरोपियन खाना दिया जाता है। यह उचित नही है, क्योकि वह अग्रेजी खाना होता है। भारतीय भोजन ठीक है। भारत मे मुझे सबसे अच्छा खाना रामेश्वरी नेहरू के घर मे मिला। मुझे जाफरान और इलायची बहुत प्रिय है। आम का अचार भी बहुत अच्छा लगता है।'

"भारत का कौन-सा शहर आपको पसद आया ?" विषय बदलते हुए हमने प्रश्न किया।

उन्होने कहा, "सबसे मजेदार पर भयकर कलकत्ता लगा। मद्रास उससे अच्छा है। समुद्र की निकटता के कारण वहा का जलवायु अनुकूल है। दिल्ली मे कोई विशेष बात नही मालूम हुई। नई दिल्ली जैसा शहर ससार मे कही भी मिल सकता है। पुरानी दिल्ली भारत के किसी भी अन्य नगर की भाति है। लेकिन कला की दृष्टि से मुझे मथुरा सबसे उत्कृष्ट प्रतीत हुआ। वहा के सग्रहालय मे गाधार शैली और गुप्त-काल की कला दिखाई दी। आगरे मे ताजमहल भी देखा। वह मुसलमानी कला का नमूना है और उसका मुझपर उतना प्रभाव नही पडा, जितना मथुरा का। एलोरा-अजन्ता भी बहुत अच्छे लगे। नासिक की भी बढिया छाप पडी। लेकिन सबसे प्रिय लगा महाबलीपुरम का प्राचीन मन्दिर।"

चाय का घूंट भरते हुए उन्होने कहा, "भारत की अर्वाचीन चित्रकारी मे मुझे अमृत शेरगिल के चित्र बडे प्रिय मालूम हुए। कलकत्ते मे जैमिनी राय का सग्रह भी पसद आया। उसमे लोककला और आध्यात्मिकता की झलक है। कलकत्ता मे

महालानोबिस के घर मे रवीन्द्रनाथ ठाकुर का एक चित्र लगा था, जिसे देखकर मुझे लिनार्डो ड विंसी का स्मरण हो आया। मेरी शातिनिकेतन जाने की वडी इच्छा थी, लेकिन समयाभाव के कारण वहा न जा सका।"

"भारत मे आपको सवसे विशेष क्या लगा ?"

इस प्रश्न पर इलिया की आखे चमक उठी, वोले, "वहा के लोग।"

"लेकिन वे तो हजारो वर्षों से है, उसमे विशेषता क्या है ?"

"हजारो सालो से है तो उससे क्या, मैने तो उन्हे पहली बार देखा। मान लो कि आप रूस आओ, अस्सी साल के टाल्स्टाय को देखने और मै कहू कि उस बूढे आदमी मे देखने को क्या रखा है, तो आप यही कहेगे न कि हम तो उन्हे पहली वार देख रहे है। सवसे अधिक प्रभाव मुझपर भारतीय सस्कृति का पडा। भारत के लोगो ने आध्यात्मिक दृष्टि से वडी प्रगति की है। लेकिन मेरे सामने सवसे वडी कठिनाई भाषा की थी। मै अग्रेजी नही जानता (हम लोगो की वात-चीत श्रीमती कमलाजी के माध्यम से हुई, जो कई भाषाए जानती है।), न भारतीय भाषाए। फ्रेच जानता हू। सो लोगो से सीधी बात करने के लिए पाडिचेरी गया, पर वहा एक वडी विचित्र चीज देखी। वहा के एक फ्रेच मेयर की मूर्ति संग्रहालय की प्राचीन वस्तुओ के वीच रख दी गई है और भारत के देवी-देवताओ की प्रतिमाओ के वीच विक्टर ह्यूगो तथा अन्य फ्रासीसियो की मूर्तिया विराजमान है। ऐसी मूर्तियो को वहा से हटा देना चाहिए। इसी प्रकार कलकत्ता मे मैने उन सैनिको का स्मारक देखा, जिन्होने भारतीयो की हत्या की थी। यह गलत चीज है। कटु स्मृतियो की याद दिलानेवाली वस्तुए इस तरह नही रहनी चाहिए। इस दृष्टि से मद्रास के लोगो मे अधिक सुरुचि दिखाई दी। वहा की प्राचीन वस्तुओ के वीच मलका विक्टोरिया की मूर्ति नही थी।"

"भारतीयो की किस वात ने आपको सवसे अधिक प्रभावित किया ?"

इलिया ने वडी गम्भीरता से कहा, "उनकी दृढ सकल्प-शक्ति ने, जो कि आध्यात्मिकता से प्राप्त होती है। भौतिक प्रगति वाछनीय है, आवश्यक भी है, लेकिन आध्यात्मिकता की कीमत देकर उसका विकास उचित नही है।"

"हमारे समाज मे पिछले दिनो तक आध्यात्मिक तथा भौतिक जीवन मे असतुलन रहा। अव उसे दूर किया जा रहा है। सामान्य व्यक्ति का जीवन-स्तर हम ऊचा करना चाहते है। इसलिए हमारी अभिलाषा है कि कम-से-कम अगले १५-२०

वर्षों मे शाति रहे।" हमने कहा।

"आपकी वात ठीक है," इलिया वोले, "हम सवको शाति चाहिए। पर मुझे लगता है कि यह तभी सभव होगा, जवकि आपके सह-अस्तित्व तथा पचशील के अनुसार हम चलें। लेकिन आप लोगो के लिए एक चीज वडी जरूरी है और वह यह कि आप जीवन मे नया रस पैदा करें। नये मूल्य लावें। यह ठीक है कि आपके यहा कुछ नई चीजें हैं, लेकिन उनके साथ दो-दो हजार साल की पुरानी मान्यताए भी हैं।"

थोडी देर को खामोशी हो गई। उसे भग करते हुए इलिया वोले, "आजादी के वाद से आप लोगो ने काफी काम किया है, फिर भी वहुत-सा अभी करने को वाकी है। पाकिस्तान से इतने लोग आये, आपने उनमे से वहुतो को वसा दिया, लेकिन अव भी काफी लोग वेघरवार हैं। रात को रास्ते की पटरी पर सोते हैं। दिल्ली, कलकत्ता मे मैंने वहुत-से लोगो को इस तरह सोते देखा। मद्रास मे मछुओ की हालत भी वडी गई-वीती है। दिल्ली मे मैं एक सम्पन्न व्यक्ति के यहा ठहरा। रात को उठकर वाहर गया तो देखता क्या हू कि कई लोग मकान की सीढियो पर सो रहे हैं। वह जाडो की रात थी।"

हममे से एक ने कहा, "हम लोग इस दिशा मे काफी कोशिश कर रहे हैं, पर इसके लिए समय चाहिए। सगठित शक्ति से काम करने की आवश्यकता है। इसीलिए हम नही चाहते कि हमारी तनिक भी शक्ति झगडो के कामो मे खर्च हो। हम किसी गुट के साथ वधना नही चाहते। हमारी नीति तटस्थता की है। हमें पूरी आशा है कि अगले पचास वर्षों मे हमारा देश काफी आगे वढ जायगा।"

इलिया से हम लोग वहुत-से सवाल कर चुके थे। इस वीच श्रीमती इलिया खामोश रही। अव हमने अपना ध्यान उनकी ओर दिया। हमने उनसे कहा, "इलिया के साथ आप भी तो भारत गई थी। आपको हमारा कौन-सा शहर अच्छा लगा?"

वह वोली, "यह कहना मुश्किल है कि कौन-सा शहर अच्छा लगा, पर दिल्ली से आगरे की यात्रा वडी रुचिकर लगी। देहाती जीवन को देखते हुए यात्रा करने का यह पहला अवसर और पहला अनुभव था। लेकिन सुनिये, मुझे सापो को देखकर वडी हैरानी होती है। मैं जव भारत मे थी तो वहा की दिलचस्प चीजो को देखते-देखते सापो की वात भूल गई थी। लेकिन एक रोज आगरे मे घूमते हुए अचानक साप पर निगाह पड ही गई। कोई सपेरा साप का खेल दिखा रहा था। आप यह

न समझे कि सापो से मुझे डर लगता है। नही, ऐसी बात नही है, पर साप मुझे अच्छा नही लगता। नेवला अच्छा लगता है। बडा प्यारा होता है।"

इसपर कमलाजी ने वह कहानी सुनाई, जिसमे एक स्त्री अपने बच्चे को पालतू नेवले की देख-रेख मे सोता छोडकर काम पर चली गई थी। लौटने पर जब उसने खून मे सने नेवले को बैठे देखा तो उसे ख्याल हुआ कि हो-न-हो, उसीने बच्चे को मार डाला। क्रोध मे उसने एक पत्थर उठाकर नेवले के मारा। बेचारा मर गया। तब वह अदर गई। देखती क्या है कि बच्चा चैन से सो रहा है और उसके पास एक साप मरा पडा है। अब सारी बात उसकी समझ मे आई और वह स्वामिभक्त नेवले को मारने की भूल करने पर सिर धुनकर रह गई।

इस कहानी को सुनकर इलिया मुस्करा पडे। बोले, "हमारे लेखक चेखव भी एक नेवला सीलोन से ले आये थे। उसकी उन्होने अपनी कई कहानियो और पत्रो मे चर्चा की है।"

उनके साहित्य की चर्चा होने पर बताया कि उनकी पुस्तको मे १ आउट ऑव क्यौस, २ लव ऑव जानने, ३ एडवेचर ऑव यूलियो यूनिनीतो, ४ थौ, ५ फाल ऑव पेरिस, ६ मास्को स्ट्रीट, ७ स्टोर्म, ८ दी नाइन्थ वे, ९ हाऊ रशा वाज टैम्पर्ड, १० दी वर्क ऑव राइटर्स, बहुत लोकप्रिय हुई है। उनके अनुवाद कई भाषाओ मे निकले है। अग्रेजी मे कम हुए है। एक किताब बगला मे और एक तेलगू मे भी अनूदित हुई है। हिन्दी मे भी कुछ निकली है। सबसे अधिक अनुवाद जापान मे हुए है। जब वह वहा गये तो उन्हे उनकी पुस्तको के अस्सी अनुवाद भेट किये गए। 'फॉल ऑव पेरिस' तथा 'स्टौर्म' पर उन्हे 'स्टालिन पुरस्कार' मिल चुका है।

यह पूछने पर कि आप इस समय क्या लिख रहे है, इलिया ने कहा, "मै इस समय जापान, भारत और ग्रीस पर एक पुस्तक लिख रहा हू। उसका नाम मैने 'पूर्व और पश्चिम' रखा है। लेकिन यहा मेरा किप्लिग से भिन्न मत है। मै इस बात को नही मान सकता कि पूर्व पूर्व है, पश्चिम पश्चिम, और दोनो कभी नही मिलेगे। मेरा विचार है कि पृथ्वी की भाति ससार एक वृत्त है, जिसको मनुष्य अपनी मनमानी पूर्व और पश्चिम की सीमाओ मे विभक्त नही कर सकता। एक और पुस्तक फ्रास के साहित्य तथा कला पर लिख रहा हू।"

"आप लेखन-कार्य कहा किया करते है? मास्को के घर मे या यहा?"

वह बोले, "शहर मे लिखने का कहा मौका मिलता है! छोटा-सा मकान है।

लोगो का आना-जाना बना रहता है, फिर टेलीफोन। लिखना-पढना तो इस एकान्त मकान मे होता है।"

"अब आप अपनी लेखनी द्वारा भारत की सस्कृति और आध्यात्मिकता के सदेश को दुनिया के लोगो तक पहुचाइये।"

"नही," इलिया बोले, "यह काम भारतीयो को स्वय करना चाहिए। मै तो भारत मे एक मास रहा। इस अवधि को देखते मैने आपके देश के बारे मे काफी लिख डाला है। मै उन लोगो की तरह नही हू, जो किसी स्थान को बिना देखे उसपर पूरी किताब लिख डालते है।"

"पूरी किताब ?"

"जीहा, एक नही, तीन-तीन ?"

हम सब बडे जोरो से हँस पडे।

विषय बदलने के लिए हमने श्रीमती इलिया से पूछा, "क्या कभी-कभी इलिया लिखने मे इतने व्यस्त हो जाते है कि खाना-पीना भी भूल जाते हो ?"

"नही," वह बोली, "मै ऐसा नही होने देती।"

इसपर इलिया को न्यूटन के भुलक्कड स्वभाव की बात बताते हुए हमने वह कहानी सुनाई, जिसमे छोटी-बडी बिल्लियो के निकलने के लिए किवाड मे दो छोटे-बडे सूराख करने का रोचक प्रसग आता है। इलिया हँस पडे। बोले, "मैने भी पेड पर चिडियो के लिए घर बनाया है। बसन्त के दिनो मे फ्रास, स्विटजरलैण्ड तथा इटली तक से चिडिया आती है। उनके प्रवेश के लिए मैने ठीक-ठीक सूराख किया है—न बडा न छोटा, जिसमे उन्हे यह डर न हो कि बिल्ली भी उस सूराख से आकर उनपर हाथ साफ कर सकती है। मेरी चिडिया न्यूटन की बिल्लियो से अधिक चालाक है। क्यो, है न ?"

दो घटे से अधिक हो चुके थे। हम लोगो ने उनका बडा आभार माना और बिदा चाही। हम सब उठे। बाहर आये। इलिया ने गुलाबो की क्यारी मे जाकर जेब से कैंची निकाली और दो फूल बडी सावधानी से काटे। मैने कहा, "इस अवसर पर मुझे गाधीजी का स्मरण हो आया है। वह भी फूल कैंची से काटते थे। फूलो को हाथ से ऐंठकर तोडने मे उन्हे क्रूरता दिखाई देती थी।"

इलिया ने बडे प्रेम से हाथ मिलाया, हमे बिदा दी और जबतक मोटर आखो से ओझल नही हो गई, पति-पत्नी खडे-खडे हम लोगो की ओर देखते रहे।

: १६ :

एक इतिहासज्ञ से भेंट

साहित्य द्वारा भारत और रूस के बीच गहरे सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयोजन से मास्को मे जो सस्थाए महत्वपूर्ण कार्य कर रही है, उनमे दो सस्थाए प्रमुख है। एक है—विदेशी भापा प्रकाशन-गृह (फॉरिन लेग्वेजैज पब्लिशिग हाउस), जो रूसी साहित्य को भारतीय तथा अन्य भाषाओ मे प्रकाशित करता है। दूसरी है 'प्राच्य सस्थान' (ओरियटल इन्स्टीट्यूट), जो अन्य भापाओ की चुनी हुई कृतियो को रूसी मापा मे निकालता है। मास्को पहुचने के एक-दो दिन बाद ही मै प्राच्य सस्थान मे गया। वहा के भारतीय विभाग के अध्यक्ष श्री चेलिशेव से भेट हुई। चेलिशेव हिन्दी के अच्छे ज्ञाता है। धाराप्रवाह हिन्दी बोलते है और लिखने का भी मजे का अभ्यास है। भारत के साहित्य और साहित्यकारो मे उनकी विशेप दिलचस्पी है। उन्होंने मुझसे कहा कि आप हमारी सस्था के सचालक प्रो० ए० एम० द्याकोव से अवश्य मिले। अन्य मित्रो ने भी उनसे मिलने का आग्रह किया। लेकिन मुझे मालूम हुआ कि द्याकोव महोदय वृद्ध है और उनका स्वास्थ्य ठीक नही है। अत मैने सोचा कि उन्हे कष्ट देना उचित नही होगा। किन्तु इसी बीच प्राच्य सस्थान के हिन्दी-विभाग की तमारा बहन ने अकस्मात् प्रो० द्याकोव से मेरे लिए समय ले लिया। मै उस बहन को साथ लेकर उनसे मिलने गया। मुझे मालूम हो गया था कि द्याकोव प्राच्य सस्थान के सचालक मात्र नही है, बल्कि वह उस सस्था के एक प्रमुख स्तम्भ है। इतना ही नही, रूस के महान् इतिहासज्ञो मे उनकी गणना होती है। जिस समय समाजवादी क्रान्ति हुई, उनकी अवस्था २०–२२ वर्ष की थी। उन्होने अपनी जवानी क्राति को सफल बनाने और समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने मे लगाई। उस समय उनका कार्यक्षेत्र ताशकन्द था। उन्होने फारसी सीखी, उर्दू का अध्ययन किया और ताशकद के विद्यालय मे मार्क्सवाद और लेनिनवाद की शिक्षा देते रहे।

तमारा बहन ने रास्ते मे मुझसे कहा, "भारतीय समस्याओ का जितना गहरा और व्यापक अध्ययन इन प्रोफेसर महोदय का है, उतना कम ही लोगो का आपको मिलेगा। उनकी 'भारत मे राष्ट्रीयताओ का निर्माण' अपने ढग की एक ही पुस्तक है। मजे की बात यह है कि अच्छी अग्रेजी जानते हुए भी वह आपसे आपकी भाषा—हिन्दी मे ही बात करेगे। आपको बडा आनन्द आवेगा।"

बडी सडक को छोडकर एक तग गली मे जब हम एक मकान पर रुके और तमारा ने कहा कि यही उनका घर है तो मै आश्चर्यचकित रह गया। बडा मामूली-सा मकान था। मैने तो स्वप्न मे भी कल्पना नही की थी कि इतनी बडी सस्था का सचालक और इतना बडा इतिहासज्ञ ऐसे छोटे मकान मे रहता होगा। पर रूस के आर्थिक सगठन तथा समाज-व्यवस्था की यह सबसे बडी विशेषता है कि वहा आवश्यकता के अनुसार चीजें मिलती है, पद के अनुसार नही।

मकान कई मजिल का था। द्याकोव ऊपर के एक तल्ले मे रहते थे। लिफ्ट से हम लोग उनके तल्ले पर पहुचे और घटी बजाई। क्षणभर मे एक ऊचे कद और फुर्तीले शरीर के सज्जन ने दरवाजा खोला और हाथ जोडकर अभिवादन करते हुए कहा, "नमस्कार! आइये।"

मुझे यह समझते देर न लगी कि यही सज्जन प्रो० द्याकोव है। चूकि तमारा ने मुझे रास्ते मे बता दिया था कि वह हिन्दी अच्छी तरह से जानते है, इसलिए उनके हिन्दी मे अभिवादन करने पर मुझे अचरज नही हुआ, उल्टे खुशी हुई।

वह मुझे अपने अध्ययन-कक्ष मे ले गये, जो बडा ही आडम्बरहीन था। सामान के नाम पर उसमे एक बडी मेज, तीन कुर्सिया, एक पलग तथा अलमारियो मे कुछ पुस्तके। बस! बैठते ही उन्होने हिन्दी मे कहा, "क्षमा कीजिये, मुझे अग्रेजी मे बात करना अच्छा नही लगता। हम लोग हिन्दी मे बात करेंगे। मेरी भाषा मे उर्दू के शब्द अधिक रहते है। आशा है, आपको उससे कोई असुविधा नही होगी।"

मैने कहा, "बिल्कुल नही। मै स्वय उर्दू जानता हू। इसलिए उर्दू के शब्दो को समझने मे मुझे जरा भी कठिनाई या असुविधा नही होती।"

इसके उपरान्त मैने उनकी कुशल-क्षेम पूछी और यह जान लेने के बाद कि अब उनका स्वास्थ्य पहले से कुछ ठीक है, चर्चा प्रारभ करते हुए कहा, "तमारा बताती है कि आप भारत हो आये है। वहा कब गये थे?"

बोले, "पिछले २४ दिसम्बर (१९५६) को गया था, ३ मार्च तक वहा

रहा । खूब घूमा । आगरा, लखनऊ, मेरठ, काशी, कलकत्ता, पुरी, भुवनेश्वर, कटक, कोणार्क, मद्रास, त्रिवेन्द्रम, कोयम्बूटर, उटकमण्ड, मैसूर, वैगलोर, हैदराबाद, औरगाबाद, अजता, एलोरा, बम्बई, दिल्ली आदि-आदि देखे ।"

मेरे यह पूछने पर कि आपको सबसे अच्छा नगर कौन-सा लगा, उन्होने कहा, "यह बताना मुश्किल है । मुझे कही भी अधिक समय रहने को नही मिला । दो-दो, तीन-तीन दिन एक-एक स्थान पर रहा । फिर भी कोणार्क का मन्दिर मुझे बहुत अच्छा लगा । प्राचीन होने के साथ-साथ उसकी कला अद्भुत है । एलोरा भी बहुत सुन्दर है । अजता भी पसन्द आया, लेकिन एलोरा के बराबर नही । वहा के कुछ चित्र खराब हो गये है । इसके अलावा वहा चित्र-ही-चित्र है । एलोरा मे मूर्तिया भी है । शहरो मे सबसे दिलचस्प लखनऊ लगा । कह नही सकता, क्यो ? काशी अच्छी नही लगी । वहा गदगी बहुत है । साधू-सन्यासी-फकीर मुसीबत करते है । पैसा मागते है । घाट वहा काफी है और अच्छे है । सबसे बुरा मुझे कलकत्ता मे काली-घाट पर लगा, जहा बकरो का वलिदान किया जाता है और खून बहता है ।"

"आप क्या किसी कान्फ्रेस मे भारत गये थे ?"

"जी नही, मै एक बडी पुस्तक तैयार कर रहा हू—हिन्दुस्तान की कौमे । उसीके सिलसिले में सोवियत सरकार ने भेजा था । चूकि कौमो पर पुस्तक तैयार करनी है, इसलिए मैने कोशिश की कि ज्यादा-से-ज्यादा घूमकर अधिक-से-अधिक लोगो से मिलू, वहा की चीजो को देखू और अपने विषय का अध्ययन करू । मुझे खेद है कि मै आसाम और पजाब नही जा सका । केरल मुझे बडा अच्छा लगा । वहा नारियल के पेड है, समुद्र है । कैसा अच्छा लगता है । कन्याकुमारी से कोचीन तक कार मे गया, वहा से रेल द्वारा कोयम्बटूर । मै मलयालम नही जानता था, सो अग्रेजी से काम लेना पडा । हैदराबाद मे उर्दू से काम चल गया ।"

मैने कहा, "आप इतना घूमे । भारत मे आपको क्या विशेषता मालूम हुई ?"

उन्होने तत्काल उत्तर दिया, "वहा के गाव और गावो का वायुमण्डल । मेरठ के नजदीक के एक गाव मे मै ठहरा और इधर-उधर खूब घूमा । लोगो से मिला । स्कूल देखे । लोग बडे भले और प्रेमी स्वभाव के लगे । उन्होने मेरा आदर किया । उनका व्यवहार बड़ा मधुर था ।"

मैने कहा, "भारत के गावो की सबसे बडी विशेषता यह है कि वहा के लोग एक विशाल परिवार की भाति रहते है । वहा यह जानना बडा मुश्किल होता है कि

कौन किस जाति का है।"

वह वोले, "आपका कहना ठीक है। इस ओर मेरा भी ध्यान गया। वहुत-से लोग मेरे साथ थे। वे आपस मे एक-दूसरे को ऐसे सम्वोधन करते थे, मानो एक ही घर के हो। हिन्दू-मुसलमानो आदि सवको मैने ऐसा ही पाया। सवसे अच्छे मुझे भारत के आदमी लगे। वे गावो मे रहते है। खूव खुश है और खुशी से वात करते है। मजे की वात यह है कि भारत के गावो का आर्थिक सगठन कुछ ऐसा है कि पता ही नही चलता कि कौन अमीर है और कौन गरीव। शहरो मे यह वात साफ मालूम हो जाती है। वहा अमीर-गरीव के रहन-सहन और पहनावे मे वडा फर्क है। केरल मे कई धर्मों के लोग है—ईसाई, हिन्दू, मुसलमान, आदि-आदि, पर उनमे भी मुझे कोई ऊच-नीच का भेद दिखाई नही दिया, न कपडे-लत्ते से, न रीति-रिवाज से।"

"दिल्ली आपको कैसी लगी ?"

"नई दिल्ली वहुत सुन्दर शहर है, पर उसपर यूरोप का वडा प्रभाव है। उसमे भारतीयता नही है। पुरानी दिल्ली भारतीय है, पर वहुत सुन्दर नही है।"

मैने पूछा, "आपको मन्दिरो मे कौन-सा मन्दिर अच्छा लगा ?"

कुछ रुककर उन्होने कहा, "सच वात यह है कि मुझे नये मदिर नही भाये। शहरो के मन्दिर अक्सर गन्दे दिखाई दिये। वहा पण्डे-पुजारियो की भरमार होती है और वे लोगो की जेव से ज्यादा-से-ज्यादा पैसे निकालने की कोशिश करते है। दक्षिण का शुचीन्द्रम् का मन्दिर मुझे वहुत ही अच्छा लगा। महावलीपुरम् तथा कोणार्क के मन्दिर भी वडे प्रिय मालूम हुए। भुवनेश्वर मे तो निरे मन्दिर है।"

मैने कहा, "जीहा", वह 'मदिरो का नगर' कहलाता है।"

"आपका कहना ठीक है। विदेशी होने के कारण जगन्नाथपुरी के मन्दिर मे मुझे नही जाने दिया गया। भुवनेश्वर के एक मन्दिर मे भी जाने से रोक दिया। मुझे वताया गया कि उसमे विदेशी नही जा सकता। मीनाक्षी के मन्दिर की मैने वडी प्रशसा सुनी थी, लेकिन समयाभाव के कारण वहा जाने का अवसर नही मिल पाया।"

"भारत मे आप नेहरू आदि नेताओ से मिले ?"

"जी नही, वे चुनाव के दिन थे। सव लोग इधर-उधर घूम रहे थे। हा, उडीसा मे श्री हरेकृष्ण मेहताव से मिला। उन्होने मुझे अपने साथ ही ठहराया। उडीसा के

बारे मे उनसे बहुत बातचीत हुई।"

विषय बदलने के विचार से मैंने पूछा, "भारत मे आपको खाने-पीने से तो कष्ट नही हुआ ?"

उन्होने उत्तर दिया, "बिल्कुल नही, बल्कि वहा की खाने-पीने की चीजे मुझे बहुत पसन्द आईं। (कुछ हँसकर) लेकिन कलकत्ते का रसगुल्ला और सन्देश अच्छा नही लगा। बहुत मीठा था। दक्षिण के भोजन मे मिर्चे बहुत थी, पर वे बुरी नही लगी। वहा की रसम और दही की खट्टी छाछ, जो उनके खाने में जरूर रहती है, अच्छी लगी।"

"यात्रा से लौटकर आपने भारत के बारे मे कुछ लिखा ?"

"जीहा, एक लम्बा लेख लिखा, जो अभी प्रकाशित नही हुआ है। लेकिन सुनिये, मैं तो भारतवर्ष के विषय मे बहुत पहले से लिखता आ रहा हू। मेरी कई किताबें हैं। वे रूसी मे निकली है। 'नेशनल क्वश्चन इन इडिया एण्ड ब्रिटिश इम्पीरियलिज्म' सन् १६४८ मे निकली, 'इडिया ड्यूरिंग दी सैकिंड वर्ल्ड वार एण्ड आफ्टर' का अनुवाद मलयालम मे हुआ है। वहा के 'नवयुगम' पत्र के सम्पादक दामोदरम् ने किया है। तीसरी पुस्तक है 'नेशनल स्ट्रक्चर ऑव दी पॉप्यूलेशन ऑव इडिया।' इनके अतिरिक्त बहुत-से लेख लिखे है, 'जैसे रिपब्लिक ऑव इडिया एण्ड पाकिस्तान।' मैंने पाकिस्तान के विरुद्ध बहुत लिखा है। वहा के लोग अच्छे है, पर उनकी नीति मुझे पसन्द नही है।"

मेरे यह पूछने पर कि अब आप क्या लिख रहे है, वह बोले, "अब मै कोई एक हजार पृष्ठ की पुस्तक लिख रहा हू—'कटेम्पोररी हिस्ट्री ऑव इडिया फ्रौम १६१८ टू दी माडर्न टाइम्स।'

"भारत का राष्ट्रीय आदोलन गाधीजी के नेतृत्व मे सन् १६१८ से प्रारम्भ हुआ था। इसीलिए मैंने अपने इतिहास के आरभ के लिए वह तिथि चुनी है। इस आदोलन मे सारे देश ने भाग लिया, लेकिन एक बडी कठिनाई है और वह यह कि हमे उस जन-आदोलन की सामग्री एक स्थान पर नही मिलती। नेहरू की पुस्तकें हैं, तेन्दुलकर की 'लाइफ ऑव महात्मा' की जिल्दे है, सुन्दरलाल का 'भारत मे अग्रेजी राज' है। ये सब पुस्तकें अच्छी और उपयोगी है, पर भारत के महान आदोलनो से सम्बन्धित सामग्री उनमे एक जगह नही मिलती।"

मैंने डा० पट्टाभि सीतारामैया के 'सस्ता साहित्य मण्डल' से प्रकाशित 'काग्रेस

का इतिहास' की ओर सकेत किया। वह वोले,"वह वहुत महत्वपूर्ण ग्रथ है। उसमे काग्रेस का इतिहास है, ऐतिहासिक मसविदे है, लेकिन उसमे जन-आदोलन पर कम ध्यान दिया गया है। जो पुस्तकें उपलब्ध है, उनमे इतिहास है, जन-आदोलन की झाकी नही है।"

मैने उनका और अधिक समय लेना उचित न समझकर विदा लेने की दृष्टि से कहा, "मै कामना करूगा कि आप चिरायु हो और स्वस्थ रहे, जिससे इतिहास द्वारा रूस और भारत की व्याख्या करके आप दोनो देशो के वीच एक मजवूत कडी वन सकें। आपका कार्य निस्सदेह सेतुवन्ध के निर्माण का है। आपके देश ने भारत के सर्वमान्य ग्रथ—'रामचरित मानस' तथा 'महाभारत' रूसी भाषा मे अनूदित करके दोनो देशो को एक-दूसरे के निकट लाने के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। पर गाधीजी के विना भारत को नही जाना जा सकता। अच्छा हो कि आप लोग मास्को मे एक गाधी-सग्रहालय स्थापित कर दें और उसमे गाधीजी तथा उनकी विचार-धारा से सम्वन्धित साहित्य रक्खें।"

उन्होने वडे ध्यान से मेरी वात सुनी। वोले, "भारत का वहुत-सा साहित्य यहा प्रकाशित हुआ है और हो रहा है। नेहरू की 'आत्मकथा' तथा 'डिस्कवरी ऑव इडिया' के अनुवाद निकले है।"

"गाधीजी की कुछ पुस्तको का भी अनुवाद कराइये।"

वह वोले, "गाधीजी की 'आत्मकथा' का अनुवाद हुआ है। उल्यानोवस्की ने किया है। द्वितीय महायुद्ध के पहले निकला था। अव प्राप्य नही है। नया सस्करण निकालने का विचार हो रहा है।"

उनके छोटे-से कमरे मे सात पिंजडे लगे थे, जिनमे विभिन्न प्रकार की सात चिडिया थी। चलते-चलते मैने पूछा, "आपको चिडिया पालने का शौक है?"

वोले, "जीहा, कोई नौ साल से यह शौक चल रहा है। मैने पक्षियो के सवध मे वहुत पढा है। भारत से भी इस विषय की वहुत-सी पुस्तकें लाया था।"

"आपने इन्हे अलग-अलग क्यो रक्खा है?"

मेरे इस सवाल पर वह मुस्करा उठे। वोले, "इसलिए कि साथ-साथ रहने पर ये लडती है और प्यार से एक-दूसरे से नही वोलती। फिर यह भी तो है कि आदमी की तरह इनको भी अलग-अलग फ्लैट मे रहना पसन्द है, भले ही फ्लैट छोटा-सा ही क्यो न हो?"

मैंने विनोद मे पूछा, "ये वोलती है ?"

वह हँसकर वोले, "जीहा, खूव वात करती है। वातचीत मे आपने उनकी वात सुनी नही। वे वरावर अपनी वात कह रही थी।"

विनोद को जारी रखते हुए मैंने कहा, "ये कौन-सी भाषा वोलती है ? रूसी?"

वह जोर से हँस पडे। वोले, "नही, रूसी नही वोलती, उनकी अपनी भाषा है, पर मै उसे समझ लेता हू।"

६१ वर्ष के उन युवा से मैंने विदा ली। वह द्वार तक पहुचाने आये और हाथ मिलाते हुए मैंने देखा, उनके चेहरे पर युवकोचित उत्साह खेल रहा था और आत्मी-यता से उनकी आखे चमक रही थी।

: १७ :

कुछ बोलते चित्र

कुछ वर्ष पहले रूस मे गाधीजी के वारे मे वडी विचित्र-सी भावना थी। वहा के सामान्य लोग तो अपने देश की चहारदीवारी मे इतने वन्द थे कि वाहर के महापुरुषो के विषय मे उनका ज्ञान प्राय नगण्य था, लेकिन वहा के कुछ नेताओ की धारणा थी कि गाधीजी प्रतिक्रियावादी है। अपने रूसी-विश्वकोष मे उन्होंने वहुत-सी ऊल-जलूल वातें उनके वारे मे लिख मारी थी। किन्तु जमाना वदलता रहता है। आज रूस के सामान्य लोग गाधीजी तथा उनके सिद्धान्तो की जानकारी प्राप्त करने के लिए वडे उत्सुक है। ओरियण्टल इस्टीट्यूट के एक अधिकारी गाधीजी के अहिंसा के सिद्धात के वारे मे कई वार वहुत देर तक चर्चा करते रहे। सोवियत इन्फोर्मेशन व्यूरो ने अपने यहा गाधीजी के व्यक्तित्व एव प्रभाव पर मुझसे एक भाषण कराया तथा मास्को रेडियो ने मेरी एक वार्ता गाधीजी पर उनकी जयती के दिन, २ अक्तूवर को, प्रसारित की। एक दिन एक वडी मजेदार घटना हुई, जिससे पता चला कि वहा के सडक-चलते लोग भी अब गाधीजी के सम्वन्ध मे कितने जिज्ञासु है। एक दिन शाम को मै वोल्शाई थियेटर के पास घूम रहा था। सन्ध्या को वहा प्राय भीड रहती हैं। अचानक एक वृद्ध रूसी मेरे पास आकर रुके और वोले, "इदिस्की ?" अर्थात्—क्या तुम भारतीय हो ? मेरे 'दा' (हा) कहने पर उन्होंने रूसी मे कुछ कहा, जिसे मै समझ नही पाया। लेकिन वीच-वीच मे 'गाधी' शब्द सुनकर मुझे लगा कि हो-न-हो, वह गाधीजी के वारे मे कुछ कह रहे है। वृद्ध ने वार-वार मुझे समझाने की चेष्टा की, लेकिन निष्फल। तभी वहा एक अग्रेजी जाननेवाले रूसी आये। उन्होने हमारी मदद की। उनकी मार्फत वृद्ध सज्जन ने मुझसे पूछा, "यह वताओ कि जिस आदमी ने गाधी को मारा उसका क्या हुआ ?"

मुझे उनकी इस जिज्ञासा पर वडा आश्चर्य हुआ। मैने सक्षेप मे कह दिया,

"उसे फांसी हो गई।"

मेरा इतना कहना था कि वह सज्जन बच्चे की तरह खुशी से उछल पडे। बोले, "बहुत अच्छा हुआ। यही होना चाहिए था।"

मैंने पूछा, "इस समाचार से आप इतने खुश क्यो हो उठे? क्या आपने कभी गाधीजी को देखा था?"

वृद्ध ने सिर हिलाकर कहा, "नही, मैंने उन्हे कभी नही देखा, न उनका कुछ साहित्य पढा है, लेकिन मै जानता हू कि वह एक महापुरुष थे। उन्होने साम्राज्यवाद से मोर्चा लिया, एक नये ढग से भारत को आजादी दिलवाई और शान्ति का सन्देश सारे ससार मे फैलाया। ऐसे महापुरुष के हत्यारे को यही सजा मिलनी चाहिए थी, उसे फासी पर ही लटकाना चाहिए था। बहुत अच्छा हुआ, बहुत अच्छा हुआ।"

इतना कहकर उन सज्जन ने सिर झुकाकर बडे आदरभाव से नमस्कार किया और उमग से भरे चले गये।

... .

अपने वीसे की मियाद बढवाने के लिए मैं एक दिन वहा के वैदेशिक विभाग मे गया। काम होने के बाद बाहर आया। सोचा कि सीधा घर पहुच जाऊगा, लेकिन रास्ता भूल गया। भटकते-भटकते हैरान हो गया। रूसी भाषा से अनभिज्ञ होने के कारण किसीसे बात कर सकना मेरे लिए सम्भव नही था। आखिर बेबस होकर सडक की पटरी पर खडे होकर राह देखने लगा कि शायद कोई अग्रेजी या हिन्दी जाननेवाला आ जाय। प्रतीक्षा करते थोडी देर हो गई कि एक रूसी लडकी आई और मेरी परेशानी ताडकर अग्रेजी मे बोली, "मै आपकी कुछ सहायता कर सकती हू?"

मुझे लगा, मानो भगवान की भेजी मदद मिली। मैंने उसकी ओर देखा और बोला, "रास्ता भूल जाने से मै तो बहुत हैरान हो रहा था और सूझ ही नही रहा था कि क्या करू! अच्छा हुआ, तुम मिल गईं।"

उसने पूछा, "कहा जायगे?"

"वैसे जाना तो मुझे बरोव्स्काया ग्रोस्सो है, लेकिन इस समय मेरा कोई कार्यक्रम नही है, खाली हू। तुम जहा कहो, चल सकता हू।"

हम लोग लाल चौक की ओर बढे। चलते-चलते लडकी ने पूछा, "मास्को मे कब से हैं? सन्त वसील का गिरजाघर देखा है?"

मैंने कहा, "मै यहां हू तो कई दिन से, लेकिन यह गिरजा नही देखा है।"

"तो चलिये, वही चलें। पास ही है। वहा पुरानी वस्तुओ का सग्रह है।"

हम लोग उधर ही वढे। रास्ते मे वातचीत होने लगी।

"पढती हो?"

"जीहा।"

"कौन-सी क्लास मे?"

"दसवी मे।"

"कितनी उम्र है?"

"कोई चौदह साल की।"

मैंने विनोद मे कहा, "देखो, कैसा सयोग है! मेरी लडकी भी तुम्हारी ही उम्र की है और दसवी मे पढती है। कितने भाई-वहन हो तुम लोग?"

वह वोली, "मेरे वहन कोई नही है। एक छोटा भाई है।"

मुझे वडा आश्चर्य हुआ। मैंने कहा, "मेरी लडकी के भी एक ही भाई है। तुम्हारे पिता क्या करते है?"

मेरे इस प्रश्न पर वह लडकी जरा ठिठकी, फिर वोली, "वह द्वितीय महायुद्ध मे मारे गये।"

मै उसके चेहरे की ओर देखता रह गया। विनोद का भाव तिरोहित हो गया। लडकी के साथ की तुलना गायव हो गई। मेरे चेहरे का भाव वदल गया। उदासी छा गई। लडकी ने यह देखा तो झट सभलकर वोली, "घर का आदमी जाता है तो बुरा तो लगता ही है, पर सच मानिये, जो हुआ उसका हमे मलाल नही है, क्योकि पिता की मृत्यु देश के लिए हुई।"

चौदह साल की वालिका के मुह से यह सुनकर मै दग रह गया। उसकी वाणी मे शिकायत न थी, उल्टे अभिमान था कि उसके पिता के प्राण देश के लिए काम आये।

... ...

एक दिन वस से घर लौट रहा था। मेरे भारतीय कपडे देखकर एक महिला अग्रेजी मे वाते करने लगी। उन्होने पूछा कि मै कव से मास्को मे हू? कवतक रहूगा? कहा ठहरा हू? मास्को कैसा लगा? आदि-आदि। मैने सव वातो का उत्तर दे दिया। जव वह उतरने लगी तो वोली, "मेरा घर आपके पास ही है। किसी दिन आइये।"

बात आई-गई हो गई। दो-एक दिन बाद एक रोज मेरे बगाली साथी ने खबर दी कि वह महिला मेरी याद कर रही थी।

उसी दिन शाम को उनके यहा जाने का मौका हुआ। वह सातवे तल्ले पर रहती थी। छोटा-सा कमरा था, जिसमे दो पलग थे, दो कुर्सिया, एक छोटी-सी मेज। हम लोग कुर्सियो पर बैठ गये। अपना परिचय देते हुए उन्होने बताया कि वह कई वर्ष तक दुभाषिये का काम करती रही, इसलिए अग्रेजी बोलने का उन्हे अच्छा अभ्यास हो गया है। उनके पिता प्रोफेसर थे और मा अग्रेजी की विदुषी थी। उनके कमरे मे बाई ओर की दीवार के दाये कोने मे एक बडा रगीन चित्र लगा था। उसकी ओर सकेत करके वह बोली, "यह मेरे पिता हैं।

मैंने पूछा, "अब आपके घर मे कौन-कौन है ?"

पास बैठे बालक के कधे पर हाथ रखकर उन्होने कहा, "यह मेरा लड़का है। दूसरा लडका फौजी ट्रेनिग मे गया है। वह कभी-कभी आता है।"

"और ?"

"बस !"

इतना कहकर उन महिला ने एक लम्बी सास ली, फिर कुछ ठहरकर बोली, "मेरे पति बडे अच्छे थे। वह भी प्रोफेसर थे। क्रीमिया मे लडाई मे मारे गये। उनके जाने का मुझे उतना दु ख नही है, क्योकि जब देश पर मुसीबत आई तो हर आदमी का कर्त्तव्य था कि देश की रक्षा करे। पर मुझे बडा भारी दु ख है अपने आठ बरस के मासूम बालक का, जो बमबारी मे हमेशा के लिए चला गया।"

महिला की आखे डबडबा आई। रुधे कठ से बोली, "मै नही जानती, बडे होने पर वह क्या बनता, पर सच कहती हू, वह बडा होनहार था !"

पिता के चित्र से पाच-छ फुट के फासले पर लगे दूसरे चित्र को हमारी गीली आखे बडी देर तक देखती रही।

... ...

एक दिन मास्को से कुछ दूर एक सामूहिक फार्म (कलेक्टिव फार्म) देखने गये। साथ मे लखनऊ के मेरे नामरासी की पत्नी श्रीमती प्रकाशवतीजी तथा विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह मे काम करनेवाले हमारे मित्र शकर गौड़ थे। फार्म के एक परिवार के निमत्रण पर हम लोग गये थे। वहां पहुचने पर उन्होने हमे अपना बगीचा दिखाया, खेत दिखाया, घर दिखाया, तीस-पैतीस सेर दूध देनेवाली श्यामा-

गाय दिखाई और अन्त मे हम लोग जलपान करने मेज पर बैठे। जलपान क्या, पूरा खाना था। खाते-खाते विनोद चलता रहा। कोई घटे-डेढ घटे हम लोग वहा ठहरे होगे। घर के लोगो की आत्मीयता तथा आतिथ्य को देखकर बडी खुशी हुई। जब विदा लेने लगे तो शकर ने इशारे से कहा कि इनके बच्चो को कुछ दे देना चाहिए। प्रकाशवतीजी ने अपने बटुए मे से कुछ सिक्के निकाले और मेरी ओर बढा दिये। उसमें से सोविनीर के रूप मे मैंने स्वतन्त्र भारत का एक पैसा एक बालक को दे दिया। उसपर अशोक-स्तम्भ था। बालक को मैंने वह बताया तो वह प्रसन्न हो गया। प्रकाशवतीजी ने एक इकन्नी दी। एक महिला ने बालक को देने के लिए ज्योही उसे अपनी हथेली पर रक्खा कि कुछ देखकर उसे उठाकर मेज पर पटक दिया, जैसे वह कोई अस्पृश्य अथवा अवाछनीय वस्तु हो। बोली, "इसपर देखते है, किसकी तस्वीर है? सम्राट् जार्ज की। वह साम्राज्यवाद के द्योतक थे। फिर इन लोगो ने आपपर कितने दिन हुकूमत की। आपने उसे बर्दाश्त किया, लेकिन स्वतत्र होने के बाद आप ऐसी चीजो को कैसे सहन करते है, यह हमारी समझ मे नही आता।"

... ...

हमारे देश के बहुत-से लोग विदेशो मे जाते है। उनमे से कुछ विदेशियो को खुश करने के लिए अपने यहा के बारे मे कुछ-का-कुछ कह आते है। सोवियत इन्फॉर्मेशन ब्यूरो मे जब मै बोलने गया तो मेरे भाषण के पश्चात् एक सज्जन ने प्रश्न किया, "हमे बताया गया कि आपके देश के ८५ प्रतिशत आदमी गरीब है और बडी तबाही का जीवन बिता रहे है। क्या यह सच है?"

मै समझ गया कि यह सूचना हमारे ही किसी देशवासी ने उन्हे दी है। मैंने तुरन्त उत्तर दिया, "आपके प्रश्न का पहला भाग सही है, दूसरा बिल्कुल गलत। हमारे यहा के ८५ फीसदी लोग देहातो मे रहते है, लेकिन वे तबाही की जिन्दगी नही बिताते। उनका मानदड ऊचा उठाने की जरूरत हम अनुभव करते है, लेकिन उनका जीवन तबाही का है, यह नितात असत्य है। शहरो की अपेक्षा वे कही अधिक सुखी और सतुष्ट है।"

मुझे लगा, देश के बाहर हमे यह नही भूलना चाहिए कि हम अपने राष्ट्र के प्रतिनिधि है।

... ...

एक दिन शाम को मै भारतीय दूतावास गया। वहा भोजन करने और वात-चीत मे रात के ११ बज गये। मुझे मेरे स्थान पर छोड आने के लिए दूतावास के एक भाई भेजे गये। हम दोनो ट्राम से रवाना हुए। मै तो उस शहर के लिए नया था, लेकिन दूतावास के वह सज्जन तीन वर्ष से वहा रहने पर भी रास्ता भूल गये और हम लोग गलत दिशा मे वहुत दूर निकल गये। उसी ट्राम मे कही से एक रूसी महाशय सवार हुए। वह खूब चढाये हुए थे। अन्दर आते ही उन्होने भारतीय दूता-वास के युवक को हाथ पकडकर उठा दिया और मेरे वरावर वैठ गये। उनके चेहरे की भाव-भगिमा तथा व्यवहार से मुझे यह समझते देर न लगी कि वह हजरत होश मे नही है। फिर भी मैने कुछ नही कहा और उन्हे वैठ जाने दिया। उनके मुह से तेज दुर्गंध आ रही थी। वैठकर उन्होने वाहे फैलाकर अगडाई ली और खट-से अपना सिर मेरे कधे पर रख दिया। मै फिर भी चुप वैठा रहा, लेकिन ट्राम मे वैठे रूसी भाई-वहनो ने उसकी इस हरकत को वर्दाश्त नही किया। एक भाई उठकर आये। उन्होने उस आदमी के रोकते-रोकते उसे हाथ पकडकर उठाकर एक ओर को खडा कर दिया और अगले पडाव पर गाडी रुकने पर कन्डक्टर लडकी ने उसे नीचे उतार दिया। अपने देश की मर्यादा का प्रश्न जो था!

... ...

हम लोग लेनिन के आखिरी वर्षों मे रहनेवाले गाव गोर्की को देखकर कार से मास्को लौट रहे थे। ड्राइवर ने परिवाचिका के द्वारा मुझसे पूछा कि क्या उस गाव को नही देखोगे, जहा रूस के महान् लेखक मैक्सिम गोर्की रहे थे? मुझे भला इसमे क्या उज्र हो सकता था! 'नेकी और पूछ-पूछ।' मैने कहा, "जरूर चलो।" वह स्थान (गोर्की की गोर्की) मास्को से दूसरी दिशा मे ४०-५० किलो-मीटर पर था। शहर आकर हम लोग सीधे उधर ही वढे। समय की वचत के ख्याल से वस्ती से निकलने पर ड्राइवर ने गाडी की रफ्तार तेज कर दी। सडक अधिक चौडी नही थी। ज्यादा भीड-भाड न होने पर भी वसें-मोटरे आ-जा रही थी। ड्राइवर वडी कुशलता से अपना रास्ता निकालता गया। आठ-दस मील इस तरह गये होंगे कि अचानक हमारी गाडी के सामने माल-लदा एक ट्रक आ गया। उससे आगे निकालने के लिए हमारे ड्राइवर ने गाडी को जरा किनारे किया। अकस्मात ट्रक के ड्राइवर ने अपनी गाडी को अनजाने तनिक उसी ओर को मोड दिया, जिधर से हमारी कार निकल रही थी। हमारे ड्राइवर को अपनी गाडी को और किनारे

करना पडा। इस प्रयत्न मे मोटर के वाए पहिए सडक के किनारे की नाली मे चले गयें। ज़ोर का झटका लगा। बेचारी दुवली-पतली परिवाचिका पीछे की सीट पर से ऐसी उछली कि ग्रागे ड्राइवर की सीट पर जा गिरी। गाडी की रफ्तार काफी तेज थी। मुझे लगा कि गाडी ग्रव उलटी, ग्रव उलटी। एक ग्रोर के पहिये नाली मे निचाई पर, दूसरी ग्रोर के सडक के किनारे ऊचाई पर। कुछ गज तक गाडी इसी ग्रवस्था मे चलती रही। हमारे दिल काप रहे थे, पर ड्राइवर ने किसी प्रकार की घवराहट नही दिखाई ग्रौर वडी होशियारी से गाडी की रफतार को एक साथ तेज करके झट से उसे नाली से वाहर कर लिया ग्रौर सडक पर लाकर खडा कर दिया।

गाडी के रुकते ही हम लोग उतर पडे। मुझे चिन्ता हुई कि कहीं ड्राइवर के चोट न ग्राई हो। मैंने परिवाचिका के द्वारा उससे पूछा, "क्यो भाई, तुम्हारे कही लगी तो नही!"

ड्राइवर ने वडी व्यग्रता से कहा, "ग्राप वताये। ग्राप तो सकुशल है न ?"

मेरे 'हा' कहने पर उसने चैन की सास ली। वोला, "शुक्र है। ग्राप सही-सलामत वच गये। ग्राप हमारे मेहमान है। ग्रगर ग्रापको कुछ हो गया होता तो हमारा मरना हो जाता। हम ग्रौर हमारे मुल्क का मुह सदा के लिए काला हो जाता!"

: १८ :

वाणी की स्वाधीनता !

मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि रूस का राजनैतिक जीवन कैसा है ? क्या वहा के लोगो को वाणी की स्वाधीनता है ? वहा का शासन किस प्रकार चलता है ? क्या उसमे इस वात की गुजाइश है कि लोग जो चाहे कह सके, जो चाहे कर सके ? ये तथा ऐसे ही प्रश्न पूछे जाना विल्कुल स्वाभाविक है, कारण कि वहा की राजनीति मे आये दिन विचित्र घटनाए घटती रहती है और कभी-कभी तो ऐसे परिवर्तन होते है, जिनकी वाहर के तो क्या, स्वय वहा के लोग भी स्वप्न तक मे कल्पना नही कर सकते ।

इसमे कोई सन्देह नही कि रूस का सामाजिक जीवन जितना उन्मुक्त और आर्थिक जीवन जितना सन्तोषप्रद है, राजनैतिक जीवन उतना ही अनिश्चित एव वन्धनयुक्त है । सामान्यतया वहां के लोग राजनीति पर वात ही नही करते । वाहर के लोग उनसे कोई सवाल पूछते है तो वडी विनम्रता से वे कह देते है—"खेद है, आपने जो वात पूछी है, मुझे उसकी कोई जानकारी नही है ।" कोई-कोई कह देता है, "आप वुरा न माने, हम इस वारे मे वाद मे वात करेंगे ।" वस मे, ट्राम मे, रेल मे या सडक पर पैदल चलते शायद ही कोई राजनीति के वारे मे वात या वहस करता दिखाई देता हो । सवारी मे वैठने को जगह मिल गई तो लोग झट अखवार या पुस्तक निकालकर पढने लगते है । मै इतने दिन रूस मे रहा, इतना घूमा, लेकिन मैने राजनीति के वारे मे कही भी जोरदार चर्चा या गर्मागर्म वहस नही सुनी। इतना ही नही, वाहर से आनेवाले पर्यटक जव वहा के लोगो को राजनैतिक चर्चा मे घसीटना चाहते है तो उनकी परेशानी उनके चेहरे से साफ दिखाई देने लगती है । मैने कई वार अपनी परिचारिका या परिचारक से अथवा अन्य किसी अग्रेजी या हिन्दी जाननेवाले व्यक्ति से राजनीति के वारे मे वात चलाई तो वे न केवल टाल गये, अपितु कुछ वेचैन-से हो उठे । मेरे साथ जो वगाली भाई वहा थे, उनका

सम्पर्क किसी रूसी परिवार से हो गया और उन्होने किसी दफ्तर मे उस परिवार का टेलीफोन नम्बर दे दिया। मुझे इसका पता न था। एक दिन उस परिवार की महिला मिली तो बोली, "इस भले आदमी ने सरकारी दफ्तर मे तथा दूसरी कई जगहो पर मेरा फोन नम्बर दे दिया है। बार-बार फोन आने से एक तो मेरे काम मे हर्ज होता है, दूसरे मुझे वैसे भी बडी परेशानी होती है।" इतना कहकर वह चुप होगई, मानो किसीने आगे कुछ कहने से उन्हे रोक दिया हो। पर उनके चेहरे से स्पष्ट था कि आज नही तो कल, ये हजरत तो चले जायगे, पर पीछे उसकी मुसीबत हो जायगी। तरह-तरह के सवाल पूछे जायगे—यह कौन सज्जन थे ? यहा उन्होने क्या-क्या किया ? वह इन्हे कैसे जानती है ? आदि-आदि। वह बडी हैरानी मे पड जायगी। ऐसी हालत मैंने इस घर मे ही नही, और भी अनेक परिवारो मे देखी।

रूस के लोग काफी जागरूक है। अपने काम के बारे मे इतनी जानकारी रखते है, उसकी बारीकियो को इतनी अच्छी तरह से समझते है कि कभी-कभी उनकी बात सुनकर दग रह जाना पडता है। तब यह मानना कि राजनीति की उन्हे जानकारी नही है अथवा कि राजनीति मे उनकी रुचि नही है, ठीक नही जान पडता। प्रश्न उठता है कि फिर ऐसा क्यो होता है ? क्या वहा की सरकार की ओर से उन-पर प्रतिबन्ध लगाये गये है या वे स्वेच्छा से ऐसा करते है ?

इस सवाल का जवाब देने के लिए रूस के पीछे के इतिहास पर निगाह डालनी होगी। पीछे हम सकेत कर चुके है कि कुछ वर्ष पहले तक रूस के चारो ओर 'लोहे की दीवार' खडी हुई थी। वहा के शासको ने इन वर्षों मे अपना ध्यान तथा साधन अपने देश के आर्थिक निर्माण पर केन्द्रित किये। देश की समृद्धि के लिए योजनाए बनाई और ऐसी भावना पैदा की कि वहा के कोटि-कोटि निवासी एकनिष्ठ होकर काम मे लग गये।

लेकिन यातायात के साधनो ने दुनिया को बहुत छोटा बना दिया और अन्त-र्राष्ट्रीय परिस्थिति ने पारस्परिक सम्पर्क अनिवार्य कर दिया तो रूस के कर्णधारो ने अनुभव किया कि उनके चारो ओर का घेरा उनके लिए अब आगे हितकर नही होगा और वे दुनिया की दौड मे पिछड जायगे। नतीजा यह हुआ कि उन्होने अपना दरवाजा खोला, लेकिन बहुत थोडा और बडे ही धीमे, क्योकि वे जानते थे कि उनके द्वार के बाहर विरोधी तत्व मौजूद है। यही कारण है कि अपने द्वार को पूरा

खोल देने मे रूस के शासक आज भी हिचकिचाहट अनुभव करते है, लेकिन साथ ही उन्हे यह भी लगता है कि दुनिया से कटकर अलग रहना अब किसी भी राष्ट्र के लिए सभव नही है।

रूस के शासको की इसी भावना का प्रभाव वहां के लोगो पर है। वे विदेशियो के निकट आने, उनसे सम्पर्क स्थापित करने के लिए आतुर है, लेकिन साथ ही वे सावधान भी है कि उनका देश वाहरी लोगो के स्वार्थ-साधन का निशाना न वने।

रूस मे केवल एक पार्टी है—कम्यूनिस्ट पार्टी। उसीके हाथ मे सारी शक्ति और सत्ता है। विरोधी दल वहा एक भी नही है और न कोई विरोधी पत्र ही। सारा देश पन्द्रह प्रजातन्त्रो मे विभाजित है, जिनका चुनाव वहा के नागरिक करते है। रूस की सर्वोच्च सस्था सुप्रीम सोवियत है, जिसे देशव्यापी चुनाव के द्वारा चार वर्ष के लिए चुना जाता है।

सुप्रीम सोवियत मे दो सदन है। सघ की सोवियत और जातियो की सोवियत। सघ की सोवियत के लिए प्रति तीन लाख व्यक्तियो पर एक प्रतिनिधि चुना जाता है। जातियो की सोवियत का चुनाव यूनियन के नागरिक करते है। हर सघ प्रजातन्त्र से २५ प्रतिनिधि, हर स्वायत्त प्रजातन्त्र से ११, हर स्वायत्त क्षेत्र से ५ और हर जातीय क्षेत्र से १, इस प्रकार मतदान होता है।

दोनो सदनो के सयुक्त अधिवेशन मे सुप्रीम सोवियत अपने प्रिसीडियम (अध्यक्ष-मडल) का चुनाव करती है, सोवियत यूनियन सरकार वनाती है और सोवियत यूनियन की सुप्रीम कोर्ट आदि का चुनाव करती है। वस्तुत. यही सुप्रीम सोवियत है, जो राज्य-सत्ता की सभी ऊची सस्थाओ के काम का सचालन करती है और उनपर कडी निगरानी रखती है। उसके दोनो सदनो को समान अधिकार होते है। दोनो मे से कोई भी कानून वनाने का प्रस्ताव पेश कर सकता है। जव कोई भी कानून दोनो सदनो मे आधे से अधिक वहुमत से पास हो जाता है तव वह स्वीकृत समझा जाता है।

सुप्रीम सोवियत के साल मे दो अधिवेशन होते है। वास्तव मे सुप्रीम सोवियत का मुख्य काम तो इन नियमित अधिवेशनो के अवसर पर होता है, लेकिन स्थायी सस्था है प्रिसीडियम और उसीके हाथ मे सवकुछ रहता है। वही सोवियत के नये चुनाव का आदेश देता है, अतर्राष्ट्रीय सधियो की परिपुष्टि करता है, सोवियत यूनियन पर फौजी आक्रमण होने की स्थिति मे युद्ध की घोषणा करता है, आम फौजी

भर्ती की आज्ञा देता है, सेना के सचालको और विदेशो मे सोवियत यूनियन के विशेष अधिकार-प्राप्त प्रतिनिधियो को नियुक्त करता है और सम्मान की पदविया, उपाधिया एव पदक निर्धारित तथा प्रदान करता है।

प्रिसीडियम मे १ सभापति, १५ उपसभापति (प्रत्येक प्रजातन्त्र से एक-एक) १ मन्त्री तथा १५ सदस्य होते है।

१८ वर्ष के प्रत्येक व्यक्ति को मत देने का अधिकार है। इस अवस्था का प्रत्येक नागरिक स्थानीय सोवियत का प्रतिनिधि चुना जा सकता है, लेकिन सघ-प्रजातन्त्र या स्वायत्त प्रजातन्त्र की सुप्रीम सोवियत के लिए २१ और सोवियत यूनियन की सुप्रीम सोवियत के लिए २३ वर्ष की उम्र का प्रतिबध है। चुनाव गुप्त मतदान द्वारा किये जाते है। मतदाता बद स्थान पर जाकर, जहा अन्य कोई व्यक्ति नही होता, पेटी मे अपनी पर्ची डाल आता है।

अपना मत देने के बारे मे वहा के लोग वडे सजग है। सन १९४६ से अवतक के चुनावो को देखने से पता चलता है कि ९९ फीसदी से अधिक लोगो ने मतदान किया।

चुनाव के लिए वहा की कम्यूनिस्ट पार्टी अपने उम्मीदवार खडे करती है। इसके अतिरिक्त वहा की सार्वजनिक सस्थाओ के भी उम्मीदवार खडे होते है। मजदूर अपने कारखानो के मजदूरो की आम सभा मे, किसान अपने गावो या सामूहिक खेतो के किसानो की आम सभा मे और सैनिक अपनी टुकडियो के सैनिको की आम सभा मे अपने-अपने उम्मीदवार नामजद करते है।

चुनाव मे कोई भी जीते, लक्ष्य सवका एक ही है—किसान-मजदूरो की सरकार बनाना और कम्यूनिस्ट विचार-धारा के आधार पर देश के शासन का सचालन करना।

जैसा कि ऊपर वताया गया है, रूस की सर्वोच्च सत्ता सोवियत सघ का अध्यक्ष-मण्डल (प्रिसीडियम) है। उसीके स्वर पर सारा देश चलता है। उसकी सयुक्त निष्ठा मे जव कोई भी सदस्य विघ्न उपस्थित करता है तो शेष सदस्य उसे कठोर-से-कठोर दण्ड देने मे तनिक भी नही हिचकिचाते। विगत वर्षो मे जो हुआ है, उसे पाठक भूले न होगे। सच पूछा जाय तो यह कठोर दण्ड देश मे एक प्रकार का आतक उत्पन्न कर देता है। आम लोग सोचने लगते है कि जव वडे-से-वडे व्यक्ति के साथ इस प्रकार का व्यवहार हो सकता है तो हम किस खेत की मूली है!

यह तो नही कहा जा सकता कि रूस के लोग अपनी वर्तमान राजनैतिक स्थिति

से सतुष्ट है। आने या जानेवाले पत्र जब सेंसर होकर अप्रत्याशित विलम्ब से मिलते है तो निश्चय ही वहा के लोगो को क्षोभ होता होगा, ५० किलोमीटर से दूर जाने पर जब उन्हे या किसीको भी विदेशी विभाग की परवानगी लेनी पडती है तो उन्हे अवश्य ही झुझलाहट होती होगी, अपने पत्रो मे रोज अपने ही देश के अधिकांश समाचार पढ-पढकर उनका जी जरूर ऊबता होगा, लेकिन इन तथा ऐसे ही अन्य अनेक प्रतिबधो के बावजूद वहा के लोगो के राष्ट्र-प्रेम मे कोई अतर नही दिखाई देता। जिसे जो काम मिला है, उसमे वह ऐसी एकाग्रता से संलग्न रहता है, मानो वह उसका निजी काम हो। देश-हित उनके लिए सर्वोपरि है, निजी स्वार्थ गौण है।

रही आलोचना की बात। मुझे बताया गया है कि समय-समय पर सरकारी मत्रालय के विभिन्न विभागो के कर्मचारियो की बैठकें होती रहती है। उनमे वे अपने कार्य का सिंहावलोकन करते है और मत्री तथा अन्य उच्च कर्मचारियो की उपस्थिति मे खूब जोरो की आलोचनाए होती है। छोटे-से-छोटा कर्मचारी भी बड़े-से-बडे व्यक्ति की आलोचना करने के लिए स्वतन्त्र होता है, लेकिन ये सारी आलोचनाए और विरोध उस विभाग की सरकारी सीमा से बाहर नही आ सकते।

प्रत्येक आदर्श समाज मे उसके हर नागरिक को स्वतत्रता होनी चाहिए कि वह जो ईमानदारी से अनुभव करे सो कहे, उसे जो उचित लगे सो करे, लेकिन हमे यह भी नही भूलना चाहिए कि वाणी की स्वाधीनता के साथ-साथ यह भी जरूरी है कि लोगो मे अपना कर्त्तव्य समझने और परिश्रम से उसे पूरा करने की वृत्ति उत्पन्न हो। तभी वाणी की स्वतत्रता सार्थक हो सकती है और देश के लिए वरदान बन सकती है।

: १९ :

"क्या रूस में धार्मिक स्वतंत्रता है ?"

सामान्यतया विश्वास किया जाता है कि रूस भौतिकता-परायण देश है और वह 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद' के सिद्धान्त का अनुयायी होने के कारण मानता है कि यदि किसी देश को उन्नति करनी है तो आर्थिक धरातल पर असतोष और द्वेष रहना आवश्यक है। आम लोगो की यह भी धारणा है कि रूस की शक्ति और साधन आर्थिक क्षेत्र पर केन्द्रित है। अत प्राय पूछा जाता है—"वहा धर्म का क्या स्थान है ? क्या वहा धार्मिक स्वतत्रता है ? लोग जिस धर्म को चाहे मान सकते हे ? क्या वहा पूजा-उपासना के स्थान है और लोग उनमे जाते है ?"

वस्तुत रूस जाने से पूर्व ये तथा कुछ ऐसे ही प्रश्न मेरे मन मे भी उठा करते थे। इसलिए जब मै रूस पहुचा तो इस सम्बन्ध मे मैंने अधिक बारीकी से खोज-बीन तथा चर्चाए की।

रूस मे कोई भी सरकारी धर्म नही है। वहा धर्मालयो, जैसे गिरजाघर आदि को राज्य-सत्ता से पृथक कर दिया गया है। न गिरजाघर राजनैतिक मामलो मे हस्तक्षेप कर सकते है और न राज्य-सत्ता ही गिरजाघरो की आतरिक समस्याओ मे किसी प्रकार की दखलदाजी करती है। राज्य की ओर से गिरजाघरो को आर्थिक सहायता नही दी जाती। उनका तथा पादरियो का खर्चा गिरजो के सदस्यो के चदे से चलता है।

यह ठीक है कि राज्य की ओर से किसी भी धर्म को प्रोत्साहन नही दिया जाता, लेकिन फिर भी वहा धर्म का अपना स्थान है। प्रत्येक व्यक्ति स्वतत्र है कि वह जिस धर्म को चाहे, माने, न चाहे तो न माने। राज्य की ओर से धर्म की बुनियाद पर नागरिको मे किसी प्रकार का भेद नही किया जाता। सरकारी कागजो मे कही भी नागरिक का धर्म नही लिखा जाता, न नौकरी आदि देने के समय धर्म के विषय मे कोई पूछताछ की जाती है। वहा धर्म प्रत्येक व्यक्ति का निजी मामला है।

किसी दूसरे व्यक्ति अथवा सस्था या राज्य को उसकी आजादी पर दवाव डालने का अधिकार नही है। जो लोग सामूहिक रूप मे पूजा करना चाहते हैं, वे वैसा करने को स्वतत्र है। यदि वीस व्यक्ति शामिल होने को तैयार हो तो धार्मिक सभा का सगठन किया जा सकता है। ये धार्मिक सभाए या सस्थाए कोई नया उपासना-केन्द्र वनवाना चाहे तो वनवा सकती है।

रूस मे सवसे अधिक ईसाई धर्मावलम्वी है। उनके कई गिरजे है, जिनमे वे रविवार को तथा अन्य अवसरो पर एकत्र होकर प्रार्थना करते है। उनके सवसे वडे अधिकारी लाटपादरी है, जो एक सलाहकार-समिति के परामर्श से सारी व्यवस्था करते है।

ईसाइयो के वाद दूसरा नम्वर आता है इस्लाम का। मुसलमानो के चार मुख्य केन्द्र है। पहला अजरवाइजान सोवियत प्रजातत्र की राजधानी वाकू मे, दूसरा उजविकिस्तान की राजधानी ताशकद मे, तीसरा वशकीर प्रजातत्र की राजधानी ऊफा मे और चौथा दागिस्तान प्रजातत्र के वुइनाक्स्क नगर मे। लेकिन अन्य कई स्थानो मे भी मुसलमान फैले हुए है और उनकी मस्जिदे है। लेनिनग्राड मे घूमते हुए सहसा मै एक इमारत के सामने रुक गया और परिवाचिका से पूछने पर मालूम हुआ कि वह मस्जिद है।

मुसलमानो मे वहुमत प्राय सुन्नियो का है, किंतु अजरवाइजान तथा कुछ अन्य प्रजातत्रो मे शीयो की सख्या भी काफी है। सवसे सतोष की वात यह है कि दोनो फिरको के अनुयायियो मे किसी प्रकार का वैमनस्य नही है। वे आपस मे मेल-जोल से रहते है और धार्मिक सिद्धान्तो की पृथकता उनके दिलो के वीच दीवार नही वनती।

ईसाई और मुसलमानो के अतिरिक्त वहा दूसरे धर्मावलम्वी भी है। वौद्ध धर्म भी वहा के प्रमुख धर्मों मे से है। वौद्धो की केन्द्रीय धार्मिक सस्था के अध्यक्ष एक प्रख्यात वौद्ध है, जो वुर्यात-मगोलिया के इवोलगिस्क नामक नगर मे स्थायी रूप से रहते है।

यहूदियो की सख्या भी रूस मे पर्याप्त है। उनके अनेक उपासना-गृह—सिनेगॉग है। इनके अलावा रिफार्मिस्ट, मेथॉडिस्ट, मेविन्धटे, एडवेन्टिस्ट आदि-आदि अल्पसख्यक मतावलम्वी भी पाये जाते है।

गिरजाघरो के आतरिक मामलो पर विचार करने के लिए समय-समय पर

धार्मिक सस्थाओ के सम्मेलन व परिषदें होती रहती है, जिनमे पादरी तथा अन्य लोग भाग लेते है। अनेक धर्मो की अकादमिया, धर्म-दीक्षा की पाठशालाए तथा पादरियो को शिक्षण देने के स्कूल है। इन सस्थाओ पर दूसरे मतावलम्बियो अथवा राज्य की ओर से कोई प्रतिवन्ध नही है। अपने मत के लोगो के साथ वे स्वतन्त्रता-पूर्वक सपर्क रख सकते है। इनमें कुछ सस्थाए तो ऐसी है, जो अपने प्रतिनिधि अन्य देशो मे रखती है।

धार्मिक मामलो मे सरकार की हस्तक्षेप की नीति न होने पर भी कभी-कभी ऐसे मसले आ सकते है, जिनका फैसला स्वय न किया जा सके और सरकारी सहायता अपेक्षित हो। ऐसी सभावना को ध्यान मे रखकर सोवियत सरकार ने दो समितिया बना रक्खी है। एक तो है रूसी ऑरथाडॉक्स गिरजा के मामलो की समिति, दूसरी धार्मिक सम्प्रदायो के मामलो की समिति। वास्तव मे इन समितियो का मुख्य काम उन समस्याओ को हल करना है, जिनमे सरकारी अधिकारियो तथा धार्मिक सस्थाओ के वीच विचार-विनिमय की आवश्यकता पडती है। ये समितिया इस वात पर भी निगरानी रखती है कि धार्मिक स्वतन्त्रता तथा उपासना की स्वतन्त्रता से सम्बन्धित नियमो का ठीक-ठीक पालन होता रहे। धार्मिक मसलो से सम्वन्ध रखनेवाले नियमो को तैयार करने का काम भी इन्ही समितियो द्वारा होता है।

धर्म के प्रति रुचि तथा निष्ठा उत्पन्न करने के लिए पादरी सेमिनार करते है तथा अन्य साधनो के द्वारा धर्म-भावना के प्रसार का प्रयत्न करते है।

शहरो से वाहर की आवादी के लिए भी स्थान-स्थान पर गिरजे है। मै कई सामूहिक खेतो (कलेक्टिव फार्मो) को देखने गया। मुझे वताया गया कि उनकी वस्ती के पास ही, कही-कही एक-दो मील पर, गिरजाघर है।

यह सव होते हुए भी नई पीढी के बीच से धर्म-भावना वडी तेजी से लुप्त होती जा रही है। गिरजो, सिनेगॉगो तथा अन्य उपासना-गृहो मे वृद्ध नर-नारियो की सख्या अधिक दीख पडती है। युवको को उनके शिक्षालयो अथवा घरो मे धर्म के प्रति आस्था रखने के लिए प्रोत्साहन नही मिलता। उनकी पुस्तको मे जहा राष्ट्रीय भावना को विकसित करने के लिए पाठ-पर-पाठ रक्खे जाते है, वहा धर्म के प्रति उनकी रुचि पैदा करने या उस रुचि को वढावा देने के लिए कोई सामग्री नही दी जाती। मास्को मे मुझे एक महिला मिली। वह वडी अच्छी कलाकार थी।

उन्होने एक दिन वडी वेदना के साथ मुझसे कहा, "मेरे पति तो लडाई मे मारे गये, पर मुझे उससे भी अधिक रज इस वात का है कि मेरी लडकी पगली-सी है।"

मैने पूछा, "क्यो, क्या वात है ?"

महिला ने वडे निराश स्वर मे कहा, "अजी, क्या वताऊ। वह दिन मे दो-दो वार गिरजा जाती है और हर घडी धार्मिक पुस्तके पढती रहती है।"

मैने कहा, "इसमे पागलपन की क्या वात है ? उसे अच्छी-अच्छी धार्मिक पुस्तके पढने को दीजिये और उसकी धार्मिक वृत्ति को विकसित कराइये।"

वह वोली, "आपने भी यह खूब कहा ! उसकी यह उमर तो काम करने की है, धर्म के चक्कर मे पडने की नही। आप जानते नही, लडकी वडी होशियार है। सात-आठ भाषाए जानती है। उसकी प्रतिभा का राष्ट्रोपयोगी प्रवृत्तियो मे उप-योग होना चाहिए।"

मैने कई परिवारो मे लडके-लडकियो से धर्म के वारे मे वातें की। उन्होने स्पष्ट कहा कि धर्म तो वडे-वूढो की चीज है। जवतक हमारे शरीर मे वल है, तव-तक हमे अपने कामो मे लगे रहना चाहिए। जव शरीर थक जायगा, हाथ-पैर नही चलेंगे तव धर्म का सहारा लेंगे। मैने उनसे कहा कि अगर तुम जरा गहराई और गभीरता से सोचोगे तो तुम्हे पता चलेगा कि हमारे कामो मे धर्म से वडी शक्ति मिलती है और उससे हमारी काम करने की क्षमता वढती है। लेकिन यह वात उनकी समझ मे नही आई। असल मे उनका विकास कुछ दूसरे ही वायुमडल मे हो रहा है।

मास्को तथा अन्य नगरो के वहुत-से गिरजे सग्रहालयो मे परिवर्तित कर दिये गए है। क्रेमलिन के गिरजे, जो कलापूर्ण स्थापत्य-कौशल के अच्छे नमूने है, अव पूजा-उपासना के केन्द्र नही है। उनके विशाल एव भावपूर्ण चित्र तथा अन्य वस्तुए अव इतिहास की सामग्री है। लाल चौक मे, मास्को नदी के तट के निकट का सत वसील का मनोहारी गिरजाघर अव प्राचीन अस्त्रो, चित्रो तथा कतिपय पाडु-लिपियो का सग्रह मात्र है। और कई गिरजाघर है, जिनके गगनचुम्बी शिखर इगित करते रहते है कि इस दुनिया की शक्ति से भी अधिक वलवती कोई सत्ता है, पर इस तथ्य की ओर ध्यान देनेवाले लोग वहा वहुत थोडे है। अधिकाश व्यक्तियो का जीवन भौतिक धरातल पर वडी तेजी से आगे वढ रहा है और वे अनुभव करते

है कि मनुष्य का सबसे बडा धर्म यह है कि वह सुखी रहे। धर्म अथवा अध्यात्म असली सुख की प्राप्ति मे किस प्रकार सहायक हो सकते है, यह वे नही समझ पाते। इसके दो कारण हो सकते है। एक तो यह कि उनकी शिक्षा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास पर अधिक जोर देती है और उन्हे विज्ञान की शक्ति पर अधिकाधिक निर्भर होना सिखाती है। दूसरे, विभिन्न धर्मो की असहिष्णुता तथा रूढिगत अन्धविश्वासो की बातो को जानकर उसका मन उस ओर से उदासीन हो गया है। तीसरी एक बात शायद यह है कि उनके देश का समूचा वायुमंडल उनमे नये प्रकार के सस्कार पैदा करता है। स्थान-स्थान पर आपको विशाल मूर्तिया मिलेंगी, लेकिन वे धर्माचार्यों की नही है। वे है श्रमरत-कर्मीजनो की, साहित्यकारो की, वैज्ञानिको की, इतिहासज्ञो की, राष्ट्रीय नेताओ की। वहा का युवक उनसे कर्त्तव्य-परायण बनने की प्रेरणा लेता है।

क्रेमलिन मे जब मैं एक गिरजे को देख रहा था, जिसमे ईसा तथा मरियम के बडे हृदयस्पर्शी चित्र है, एक अग्रेजी जाननेवाली बहन मेरे पास आई और बोली, "यह गिरजा आपको कैसा लगा ?"

मैंने उत्तर दिया, "बहुत अच्छा !"

इसके बाद उसने जो प्रश्न किया, उसपर मुझे हँसी आये बिना न रही। उन्होने पूछा, "क्या आपके देश मे भी पूजा के स्थान है ?"

मैंने उसे बताया कि हमारे देश मे उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक अनगिनत मदिर है और कुछ मदिर तो इतने सुदर और कला-पूर्ण है कि बाहर के लोग भी उनकी कारीगरी को देखकर दग रह जाते है।

पता नही, उन बहन को इसपर विश्वास हुआ या नही, पर उनके लिए यह विस्मय की बात थी कि भारत मे भी पूजागृह है।

इतना होने पर भी, ज्यो-ज्यो रूस का सपर्क अन्य देशो से, विशेषकर भारत से बढ रहा है, वहा के बहुत-से युवको और युवतियो मे धर्म के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हो रही है। मुझे एक भारतीय मित्र ने बताया कि कई रूसी भाई-बहन जैन धर्म, बौद्ध धर्म, हिंदू-दर्शन आदि मे बडी रुचि रखते है और उनके बारे मे भाति-भाति के प्रश्न करते है। उनकी इस जिज्ञासा को देखने से पता चलता है कि वे इस ओर अग्रसर हो रहे है।

: २० :

रूसी नगरों का आर्थिक संगठन

जर्मनी के आक्रमण से रूस की जो क्षति हुई, वह किसीसे छिपी नही है। कहते है, नाजी सेनाओ ने सोवियत सघ के लगभग १७०० नगरो को बर्बाद कर डाला और ७० हजार से अधिक गावो को जलाकर राख कर दिया। इतना ही नही, कोई साठ लाख मकान उनके द्वारा धराशायी किये गए, ढाई करोड व्यक्ति वेघरवार हो गये। ऐसे आडे समय मे रूस के निवासियो ने असाधारण साहस से काम लिया और रात-दिन एक करके, अपने अथक परिश्रम से, राख के ढेर को लहलहाते राष्ट्र के रूप मे परिवर्तित कर दिया। उनकी उजडी दुनिया एक बार फिर ऐसे बस गई, मानो कुछ हुआ ही न हो। सहार-शक्ति से भी वढकर सृजन-शक्ति है, इस कहावत को उन्होने सिद्ध करके दिखा दिया।

रूस के वर्तमान आर्थिक सगठन के विषय मे विस्तार से कुछ कहना सभव नही है। उसके लिए विभिन्न भागो मे स्थित नगरो, गावो तथा उनके निवासियो की वास्तविक स्थिति का अध्ययन आवश्यक है। फिर भी जितना जो कुछ मैने देखा, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि वहा के लोग सामान्यतया अपनी आर्थिक स्थिति से सतुष्ट है। वे जो कुछ पाते है, उससे उनकी दैनिक आवश्यकताए पूरी हो जाती है। भले ही उनके रहन-सहन का स्तर इग्लैण्ड, फ्रास अथवा अमरीका की भाति ऊचा न हो, भले ही उन्हे छोटे-छोटे मकानो मे गुजर-बसर करनी पडती हो, भले ही उनमे से अधिकाश के पास अपनी मोटर न हो, पर कुल मिलाकर उन्हे आर्थिक दृष्टि से कोई खास लाचारी अनुभव नही होती। प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को काम मिल जाता है, खाने को अन्न, पहनने को कपडे, रहने को मकान, प्राय नि शुल्क शिक्षा और चिकित्सा की सुविधा। इससे अधिक सामान्य व्यक्ति को और चाहिए भी क्या ?

कुछ अपवादों को छोडकर सोवियत सघ मे सवकुछ राज्याधीन है। छोटी-

से-छोटी दुकान से लेकर वडे-से-वडे कल-कारखाने आदि सवका सचालन राज्य द्वारा होता है। मकान, शिक्षालय, यातायात के साधन इत्यादि सभी कुछ सरकार के हाथ मे है। व्यक्तिगत सम्पत्ति जैसी कोई भी चीज वहा नही है। प्रश्न उठता है कि यदि ऐसा है तो व्यक्ति को कार्य करने और देश की सम्पत्ति को वढाने की प्रेरणा कैसे मिलती है? आखिर कोई भी आदमी अपना पसीना तभी तो वहा सकता है जवकि उसे व्यक्तिगत रूप से लाभ हो। सामान्यतया यह वात सही है, लेकिन यह भी सत्य है कि कोई भी राष्ट्र तव आगे वढता है, जवकि उसके नागरिक निजी स्वार्थ को न देखकर देशहित के लिए कार्य करते-है। रूस ने इन वर्षों मे जो आश्चर्यजनक भौतिक प्रगति की है, वह उसके कोटि-कोटि नर-नारियो के निजी स्वार्थों को त्यागकर देश के व्यापक हित मे अपनेको खपा देने के कारण ही सभव हो सकी है। यह कहना गलत होगा कि रूस का प्रत्येक निवासी वैयक्तिक स्वार्थ से एकदम ऊपर उठ गया है, लेकिन इसमे कोई शक नही कि अपने देश को नीचे गिराकर अपना स्वार्थ साधने की दूषित मनोवृत्ति वहा के अधिकाश लोगो मे नही है।

राष्ट्रीय भावना के अतिरिक्त रूस का आर्थिक ढाचा भी कुछ इस प्रकार का है कि लोगो को स्वत ही अपनी पूरी क्षमता से काम करने की प्रेरणा होती है। कुछ लोगो को निश्चित मासिक वेतन दिया जाता है, लेकिन यदि वे काम के साधनो मे वचत करके अधिक परिणाम निकालकर दिखा देते है तो उन्हे वोनस दिया जाता है, जिसकी राशि उनके वेतन के १० प्रतिशत से लेकर ५० प्रतिशत तक होती है। इसके अलावा अन्य व्यक्तियो को कुछ तो वेतन दिया जाता है और कुछ काम मे उनका हिस्सा रहता है। यदि वे अधिक काम कर डालते है तो उनकी आमदनी भी उसी अनुपात मे वढ जाती है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह २० सेर दूध निकालकर दे। लेकिन वह दे देता है एक मन, तो एक ही दिन मे उसके काम की दो इकाइया (नार्म) उसके हिसाव मे दर्ज हो जायगी और उसीके अनुसार उसे पैसा मिलेगा।

कार्य तथा वेतन की दृष्टि से वहा स्त्री-पुरुषो के वीच भेदभाव नही किया जाता। 'समान कार्यों के लिए समान वेतन' का सिद्धात लागू होता है। हमने कई कारखाने तथा सस्थाए देखी। उनमे अधिकाश स्त्रिया काम करती मिली। पूछने पर इसका कारण यह वताया गया कि द्वितीय महायुद्ध मे लगभग ढाई करोड आदमी मारे

गये, फलत पुरुषों का उपयोग कुछ विशेष विभागो मे, जैसे सेना आदि मे, अधिक किया जाता है।

चीजे वहा बहुत महगी है। सामान्य जूता ५-६ सौ रूवल से कम मे नही मिलता। ओवरकोट मे पाच हजार रूवल लग जाते है। मामूली कपडे की कमीज दोसौ रूवल से कम मे क्या मिलेगी ? ऐसी चीजे, जो कि रोजमर्रा के काम मे नही आती, और भी महगी है। मुह पर पाउडर या होटो पर लाली लगाये हजार पीछे एक लडकी भी मुश्किल से मिलेगी, लेकिन उपभोक्ता वस्तुए अपेक्षाकृत सस्ती है, जैसे रोटी, मास, साग-तरकारी। दूध डेढ रुपये सेर के करीव। प्रयत्न हो रहा है कि दैनिक आवश्यकताओ की वस्तुओ के दाम और कम किये जाय। जिन खाद्य पदार्थों के लिए सन् १९४७ मे १०० रूवल खर्च करने पडते थे, अव उनके लिए ४३ रूवल लगते है। पिछले एक वर्ष मे रोटी के मूल्य मे १४ प्रतिशत, साग-सब्जी मे १६, दूध मे २१ तथा मक्खन मे २८ प्रतिशत की कमी हुई है। रूवल की सरकारी विनिमय-दर एक रुपये तीन आने के वरावर है, लेकिन व्यवहार मे एक रुपये के दो रूवल मिल जाते है।

जो भी व्यक्ति ३७० रूवल से अधिक पाता है, उसे आयकर देना होता है, जो वेतन के १ ५ से लेकर १३ प्रतिशत तक होता है। यह कर प्राय आमदनी की राशि तथा आश्रितो की सख्या पर निर्भर करता है। यदि किसी व्यक्ति को तीन से अधिक व्यक्तियो का भरण-पोषण करना होता है तो उसके आयकर मे ३० प्रतिशत की कमी कर दी जाती है। अधिकतम कर उन व्यक्तियो से लिया जाता है, जिनकी आमदनी १२ हजार रूवल से अधिक है। चिकित्सको, वकीलो आदि को श्रमिको की अपेक्षा अधिक कर देना होता है। यदि किसीके कोई वच्चा न हो तो उसे अपनी आमदनी का ६ प्रतिशत कर देना होगा, एक वच्चेवाले को १ प्रतिशत तथा दो वच्चोवालो को ½ प्रतिशत।

सारे श्रमिको तथा कर्मचारियो का, भले ही वे कोई हो और कही भी काम करते हो, राज्य द्वारा वीमा किया जाता है। सामाजिक वीमे के अन्तर्गत वीमारी-हारी के लिए आवश्यक धन दिया जाता है। इतना ही नही, निर्योग्यता एव वृद्धा-वस्था-पेशने भी सामाजिक वीमे मे से दी जाती है। जिन परिवारो के जीविको-पार्जक मर गये है, वे भी उसी निधि से सहायता पाते है। ६० वर्ष की अवस्थावाले पुरुष, जो कि २५ वर्ष तक लगातार कार्य कर चुके है और ५५ वर्ष की स्त्रिया जो

कि २० वर्ष तक कार्य कर चुकी है, वृद्धावस्था-पेंशन पाने की अधिकारिणी होती है। भूमि के भीतर अथवा गर्म दूकानो आदि पर भारी काम करने की स्थिति में पुरुष के लिए ५० या ५५ वर्ष के होने पर तथा २०-२५ वर्ष के सेवा-काल के पश्चात् और स्त्रियो के लिए ४५-५० वर्ष की उम्र तथा १५-२० वर्ष के सेवा-काल के बाद पेंशन की सुविधा हो जाती है। पेंशन की राशि वास्तविक वेतन के ५० से लेकर १०० प्रतिशत तक होती है। कम-से-कम ३०० रूबल प्रति मास।

प्रत्येक व्यक्ति को ८ घटे प्रतिदिन काम करना होता है। शनिवार को छ घटे। वर्ष मे बारह दिन की छुट्टिया होती है। कठिन तथा जटिल कार्यों के लिए ४८ दिन तक की। स्त्रियो के लिए मातृत्व-अवकाश की अवधि ११२ दिन है।

शहरो मे कुल मिलाकर शायद ही कोई ऐसा परिवार होगा, जिसमे प्रत्येक व्यक्ति ७०० रूबल प्रति मास से कम कमाता हो। चूकि परिवार का हर व्यक्ति काम करता है, इसलिए आमदनी बढ जाती है और घर का काम मजे मे चल जाता है। ख्रुश्चेव जैसे उच्च सत्ताधिकारियो को छोडकर सामान्यतया अधिकतम वेतन सात हजार रूबल प्रति मास है, जो विश्वविद्यालयो के प्रोफेसरो आदि को मिलता है। लेकिन सबसे अधिक आमदनी होती है लेखको को, जिनकी पुस्तकें लाखो की सख्या मे छपती है। बाल-साहित्य के प्रमुख प्रणेता कर्ने चकोव्स्की की एक पुस्तक की ३ करोड प्रतिया छपी। राज्य की ओर से लेखको को अन्य सुविधाए भी प्राप्त हो जाती है।

हमे यह देखकर बडा हर्ष हुआ कि रूस के लोग बडी निष्ठा, तत्परता तथा परिश्रम से काम करते है। दुकान, कारखाना, रेडियो, बस, ट्राम, कही भी देख लीजिये, स्त्री-पुरुष बडी फुर्ती और लगन से काम करते मिलेंगे, यहातक कि काफी उम्र के बूढे स्त्री-पुरुष भी कुछ-न-कुछ करते दिखाई देते है। वृद्ध लोग स्थान-स्थान पर जूतो की पालिश लेकर सडक की पटरी पर बैठ जाते है या फूल लेकर अथवा चाकू-कैंची पर धार रखने के लिए चक्के लेकर। बूढी स्त्रिया सडक पर झाडू या ऐसा ही कोई दूसरा हल्का काम करती दिखाई देती है। कहने का तात्पर्य यह कि प्राय' लोग काम से बचते नही है और अगीकृत कार्य को पूरी शक्ति और दक्षता से करने का प्रयत्न करते है।

सवारी के भाडे सस्ते है। भूगर्भ-रेल मे कही भी चले जाइये, पचास कापक का

टिकट लेना होता है। वस, ट्राम अथवा ट्राली वस का भाडा फासले पर निर्भर करता है।

मकान-भाडा वेतन के हिसाब से लगता है। लेकिन इधर सरकार लोगो को अपने मकान वनाने की सुविधा एव साधन दे रही है। इस्त्रा तथा अन्य स्थानो की यात्रा करते समय हमने रास्ते मे देखा कि निजी सम्पत्ति के रूप मे कुछ लोगों के अपने मकान वन रहे थे।

चूकि लोगो को काम, रोटी, घर, कपडे, नि शुल्क शिक्षा तथा चिकित्सा की सुविधा प्राप्त है और वृद्धावस्था की पेंशन भी, इसलिए वे प्राय लालची नही है और न पैसा वचाने की ही उनमे वृत्ति है। जो पाते है, खर्च कर डालते है। सिनेमा-घरो, थियेटरो मे अक्सर भीड दिखाई देती है, वल्कि मास्को के सवसे वडे थियेटर वोल्शाई थियेटर आदि के टिकट के लिए हफ्तो प्रतीक्षा करनी पडती है।

वहा की अर्थ-व्यवस्था मे एक वात वडी विचित्र लगती है। कमाई हजारो मे होती है, पर वचता क्या है ? कुछ भी नही। एक हाथ मिलता है, दूसरे हाथ निकल जाता है। यह स्थिति स्वाभाविक नही है। रूवल के प्रति लोगो के मन मे कोई ममता नही है। वे उसे वहुतायत से मिलनेवाली किसी भी अन्य वस्तु की भाति मानते हैं और वैसा ही उसका उपयोग करते है।

कुछ परिवार हमे ऐसे भी मिले, जो सर्वहारा वर्ग की सत्ता स्थापित होने के पूर्व सम्पन्नता का जीवन व्यतीत करते थे। अव उनका तग स्थान मे रहना और सीमित सुविधाए पाना निश्चय ही उनके लिए सुखकर नही है, फिर भी कुल मिला-कर हमे वहुत कम लोग ऐसे मिले, जिन्हे वर्तमान अर्थ-व्यवस्था से विशेष असतोष हो।

शहरो की अपेक्षा गांवो का आर्थिक सगठन कुछ भिन्न है। इसकी चर्चा हम अगले अध्याय में करेंगे।

: २१ :

रूस की समृद्धि में ग्रामों का स्थान

रूस के आर्थिक सगठन की बुनियाद को मजबूत करने तथा उसकी समृद्धि को वढाने मे वहा के सामूहिक खेतो—कलेक्टिव फार्मो—का प्रमुख हाथ है। इन खेतो को रूसी भाषा मे 'कोलखोज' कहते है,जो 'कोलक्तिव्नोये खोज्येस्तवो' का सक्षिप्त रूप है। इन फार्मों मे किसान-परिवार मिलकर रहते हैं और खेती-वाडी करते है। ये एक प्रकार से हमारे ग्राम जैसे है। अन्तर केवल इतना है कि हमारे यहा के किसान अपने-अपने हल-बैलो से खेती करते है, वहा के किसान सारी भूमि को सयुक्त परिवार की मानकर सामूहिक रूप से काम करते है। दूसरे, फार्मों की समूची व्यवस्था प्रत्येक फार्म के सदस्यो पर ही निर्भर करती है।

मास्को के हवाई अड्डे से शहर जाते समय दूर से कुछ फार्म मेरी आखो के सामने से गुजरे थे। बाद मे कई फार्म अदर जाकर देखे। पता लगाने पर मालूम हुआ कि सोवियत सघ मे लगभग ८५ हजार ७०० सामूहिक फार्म है, जिनमे कोई दो करोड किसानो के परिवार सम्मिलित है। सन् १६४० मे प्रत्येक फार्म मे कृषक-परिवारो का औसत ८१ पडता था, १६५५ मे यह सख्या वढकर २२६ हो गई। ये फार्म स्वस्थ जलवायु वाले स्थानो पर वसे हैं। फार्मों मे किसानो के घर लकडी के वने है और वहुत ही साफ-सुथरे है। वच्चो की पढाई के लिए हर फार्म मे एक हाईस्कूल है और चिकित्सा के लिए ओपधियो के साथ-साथ पेशाव, खून आदि की जाच के लिए आवश्यक प्रसाधनो एव एक्सरे-प्लाटो से युक्त क्लिनिक है। सारे फार्म के निवासियो के सामूहिक आमोद-प्रमोद के लिए क्लव, पठन-पाठन के लिए पुस्त-कालय आदि की भी व्यवस्था है। इस प्रकार हर फार्म अपने-आपमे एक परिपूर्ण इकाई है।

अन्य वस्तुओ की भाति रूस की सारी भूमि राज्याधीन है, लेकिन नि शुल्क उपयोग के हेतु राज्य द्वारा वह फार्मों को अनिश्चित काल के लिए दे दी जाती है।

जो परिवार फार्म मे शामिल हो जाते है, उनके प्रत्येक सदस्य के लिए आवश्यक नही होता कि वे वहा काम करे ही। शहरो के निकटवर्ती फार्मों के अनेक स्त्री-पुरुष शहर मे जाकर कल-कारखानो मे काम करते है।

फार्मों की व्यवस्था उनके सदस्यो की आम सभा तथा प्रवन्ध-मडल के हाथो मे होती है। आम सभा की दो बैठको के बीच की अवधि मे प्रवन्ध-मडल कार्य-भार सभालता है। प्रबध-मडल का एक सभापति होता है, जिसका चुनाव सभी सदस्य मिलकर करते है। आम सभा की बैठको मे प्रवन्ध-मडल की वार्षिक रिपोर्ट, वर्षभर के उत्पादन की योजना तथा प्रत्येक कार्य की इकाई (नार्म) तथा उन कार्यों का काम के दिनो की इकाइयो के हिसाब से मूल्य निर्धारण करने के सम्वन्ध मे विचार किया जाता है। यह भी तय किया जाता है कि कुल आमदनी मे से कितनी खेत मे ही लगा दी जाय और काम के दिन की प्रति इकाई के लिए नकद या चीजो के रूप मे कितना दिया जाय।

प्रत्येक फार्म की सामान्यतया तीन प्रवृत्तिया होती है। १ कृषि तथा साग-भाजी की खेती २ फलो का उत्पादन तथा ३ पशु-पालन। इन तथा भूमि एव चारे-दाने की देख-रेख के लिए पृथक-पृथक 'ब्रिगेड' होते है।

हर परिवार के लिए कुछ निजी भूमि भी होती है। इस भूमि का आकार आम सभा की बैठक मे इस आधार पर निश्चित होता है कि कृषक-परिवार मे काम करने योग्य सदस्य कितने है। वह सभा यह भी तय करती है कि प्रत्येक किसान-परिवार निजी रूप मे कितने पशु रख सकता है। इस प्रकार जो भूमि मिलती है, उसपर हर परिवार का घर होता है, जिसके इर्द-गिर्द साग-भाजी तथा फल-फूल पैदा किये जाते है। हमने बीसियो फार्म देखे होगे। उनमे एक भी घर ऐसा नही दिखाई दिया, जिसके पार्श्व मे सुन्दर फूलो की क्यारिया तथा साग-भाजियो की खेती न हो। फूलो से फार्मो की शोभा बढती है और तरकारियो के उत्पादन से खाने के लिए ताजी साग-भाजी मिल जाती है। बहुत-से लोग फूलो को शहर मे आकर बेच जाते है। रूस मे घर को फूलो से सजाने का आम रिवाज है। छोटे-से-छोटे घरो मे भी फूलो की बहार दिखाई देती है। इस निजी भूमि की पैदावार तो वैयक्तिक सम्पत्ति होती ही है, यदि कोई चाहे तो उस भूमि को बेच भी सकता है।

सामूहिक फसल पर सारे फार्म का अधिकार होता है। उसकी बिक्री फार्मों द्वारा ही होती है। वे अपनी फसल को जिसे चाहे दे सकते है, लेकिन सामान्यतया वे उसे

सरकार को देते है, कारण कि एक तो सरकार के पास वहुत वडी मात्रा मे फसल को खरीदने के साधन होते है, दूसरे वह अपने ट्रक आदि भेजकर खेतो से माल मगा लेती है। यदि फार्मों के व्यवस्थापक अलग-अलग दुकानो को माल बेचें तो उन्हे एक साथ पैसा नही मिलता। चीजो के विकने पर वसूली होती है। इसमे कभी-कभी यह भी खतरा रहता है कि टमाटर आदि बिगडनेवाली चीजें खराब हो जाती है और उनका पैसा नही मिलता। इसलिए लोग १५ प्रतिशत कम दाम लेकर भी अपनी वस्तुओ को सरकार के हाथ वेचना ही अधिक लाभदायक मानते है। सरकार को जो १५ प्रतिशत मिलता है, उसमे से वह फार्मों को आवश्यकता पडने पर कर्ज देती है तथा ट्रैक्टर आदि की सुविधा करती है। ऋण पर २।। प्रतिशत व्याज लेती है। राज्य की ओर से भूमि-सुधार, उत्पादन-वृद्धि तथा पैदावार के सुगम विक्रय के लिए जो सुभीते दिये जाते है, उनको देखते हुए मूल्य मे १५ प्रतिशत की कमी अथवा २।। प्रतिशत का व्याज कुछ भी नही है।

प्रत्येक फार्म मे सामान्यतया १५०० से लेकर ६००० हैक्टर तक भूमि वोवाई के लिए रखनी होती है। कुछ सामूहिक खेतो मे अनाज की फसल १० हजार हैक्टर से भी अधिक भूमि मे की जाती है।

हिसाव की व्यवस्था वडी विचित्र है। हर काम के लिए दैनिक इकाई (नार्म) निश्चित कर दी जाती है। आसान कामों की इकाई को पूरा करने पर उस किसान के नाम आधा दिन लिख दिया जाता है, सामान्य काम के लिए पूरा दिन। यदि काम कठिन या जटिल हो तो उसके लिए अपेक्षाकृत वडी इकाई रक्खी जाती है, जो २ से लेकर २।। तक होती है। प्रत्येक कृषक के नाम जितनी इकाइया लिखी होती है, उन्हीके हिसाव से फार्म की समूची आय मे से उसे हिस्सा दिया जाता है। किसान की आमदनी कृषि के परिणाम पर निर्भर करती है। खेत मे जितनी अधिक पैदावार होगी, दिन के काम का मूल्य उतना ही अधिक बढ जायगा। अत हर किसान का प्रयत्न होता है कि वह खूब श्रम करे और पैदावार को वढावे, जिससे उसकी आमदनी मे वृद्धि हो। सामूहिक कृषि से होनेवाली आय पर किसानो को कोई भी कर नहीं देना पडता। मशीनो, औजारो, वीज, खाद आदि पर जितना खर्च आता है, वह सयुक्त होता है। उसे निकालकर जो आमदनी होती है, वही विभाजित की जाती है। इसके अतिरिक्त निजी भूमि पर हुए उत्पादन से भी थोडी-वहुत आय हो जाती है। पशु-पालन मे दक्षता दिखाने तथा उनके उत्पादन मे वढोतरी

करने पर पृथक पारिश्रमिक मिलता है। इस प्रकार कुल मिलाकर किसान सतुष्ट दीख पडता है। वृद्धावस्था मे पेंशन आदि की सुविधा तो शहरो की भाति उन्हे है ही।

इन सामूहिक फार्मों के अतिरिक्त कुछ फार्म ऐसे भी है, जिनका सचालन राज्य की ओर से होता है। ये 'सोव्खोज' कहलाते है, जो रूसी भाषा के 'सोवियेत्स्कोवे खोज्येस्तवो' का सक्षिप्त रूप है। इनका उत्पादन भी राज्य के हाथ मे रहता है। सोवियत सघ मे इस प्रकार के फार्मों की सख्या ५००० के लगभग है, जिनमे अन्न-उत्पादन, कपास की पैदावार, पशु-पालन, फल-उत्पादन, चाय की पैदावार आदि के फार्म भी सम्मिलित है।

राज्यीय फार्म का औसत क्षेत्रफल १७,४०० हैक्टर होता है और फलो की भूमि का ५००० हैक्टर। इन फार्मों के कार्य का दायित्व 'राज्यीय फार्मों के सोवियत मन्त्रालय' पर रहता है। उसीके द्वारा निर्देशको की नियुक्ति होती है। विगत पाच वर्षों मे इन फार्मो ने अनाज के उत्पादन मे ६० प्रतिशत, साग-भाजियो मे १७० प्रतिशत, पशु-धन तथा दूध मे दुगने तथा ऊन मे ६० प्रतिशत की वृद्धि की है। छठी पचवर्षीय योजना मे निश्चय किया गया था कि देश मे उत्पन्न होनेवाले कुल अनाज का ११ वा भाग राज्यीय फार्मों द्वारा जुटाया जायगा।

मास्को से कोई २५ किलोमीटर पर एक फार्म है, जिसे रूसी मे 'पामियते इलिच', अर्थात् 'इलिच फार्म' कहते है। इसका नामकरण लेनिन के नाम पर किया गया है। यह फार्म हमे विशेष रूप से दिखाया गया। हमारी टोली मे कई देशो के लोग थे। वहा पहुचने पर फार्म के अध्यक्ष रामान्यूक ने हम लोगो का स्वागत किया। उन्होने हमे एक कमरे मे बिठाकर बताया कि उस फार्म की स्थापना २५ जनवरी १९३० मे हुई थी। आरम्भ मे फार्म मे बहुत थोडी भूमि थी और बिजली आदि की सुविधा नही थी। जमीन उपजाऊ न होने के कारण उसपर बडा परिश्रम करना पडा। आज उस फार्म के पास ८०० हैक्टर भूमि है, फलो के बगीचे है, साग-भाजिया बहुत बडी मात्रा मे पैदा होती है और सैकडो गायो, घोडो, मुर्गियो आदि का पालन होता है। तीनसौ से अधिक परिवार वहा रहते है। उनके अपने ९ ट्रैक्टर और १६ ट्रक है। अपनी असाधारण प्रगति और उपलब्धि के कारण सन् १९३९ मे इस फार्म को 'आर्डर ऑव लेनिन' प्राप्त हुआ।

फार्म के कार्य को पाच विभागो मे विभक्त कर दिया गया है। १ अन्नो-

त्पादन २ फल ३ सागभाजी ४ चारा-दाना और ५ पशु-पालन। प्रत्येक विभाग का कार्य एक-एक ब्रिगेड के सुपुर्द है। व्यवस्था के लिए १७ सदस्यों का, जिसमे ६० प्रतिशत महिलाए है, एक बोर्ड है। उसका चुनाव ग्राम सभा के द्वारा होता है।

अन्न की खेती-बारी देखने के उपरान्त हम लोग साग-भाजी का विभाग देखने गये। उसमें अनेक प्रकार की चीजें उग रही थी। जाडो में शीत और पाले से बचाव करने के लिए खेतो मे गहरी क्यारियो में फसल बोई जाती है। उन्हें ढकने के लिए शीशे के ५ × ३ फुट के चौखटे लगे हुए थे। गर्मियो मे चौखटो को एक ओर से उठा देते है, जिससे हवा और धूप भीतर पहुच जाती हैं। कई तरकारिया बारहो महीने मिलती है। जाडे के दिनो मे पौधो और बेलो को गर्मी पहुचाने की भी व्यवस्था है। पाइपो द्वारा तरल खाद दिया जाता है।

खीरे और टमाटर का वह मौसम था। हमारी परिवाचिका छोटे-छोटे मुलायम खीरे तोडकर लाई, जो हमारे यहा के खीरो की तरह थे। उन्हे खाते-खाते हमे लगा कि ऐसे स्थान पर दूसरो के श्रम का उपयोग न करके स्वय पुरुषार्थ करना चाहिए। फिर क्या था! हमारी टोली लगी खीरो की बेलो को टटोलने। पतले-पतले खीरे तोडकर खुद खाये, दूसरो को खिलाये। अधिकारियो ने बताया कि इस फार्म मे सन् १९५६ मे साग-भाजियो की बिक्री से लाखो रूबल की आय हुई। आठ लाख रूबल फलो से प्राप्त हुए।

साग-भाजियो के हरे-भरे खेतो से चलकर हम लोग गोशाला मे पहुचे। वहा बहुत-सी गायें थी। बडी ही हृष्ट-पुष्ट। एक-एक गाय ३०-३०, ३५-३५ सेर दूध देती हैं। इतना दूध आदमी हाथ से कबतक निकालेगा! अत दूध मशीन से निकाला जाता है। पानी पीने के लिए हर गाय की नाद के पास एक-एक नल इस ढग से लगाया गया है कि गाय के मुह लगाने पर उसमे से पानी निकलने लगता है। नीचे एक कुडी-सी लगी है, जिसमे गिरनेवाले पानी को गाय सुविधा से पी लेती है। नल अपने-आप बन्द हो जाता है। इससे पानी बिखरने नही पाता और गन्दगी नही होने पाती। बछियो और बछडो को रखने की अलग व्यवस्था है।

गोशाला देखने के बाद हम सेबो के बगीचे मे पहुचे। पेड सेबो से लदे थे। फार्म के अधिकारी ने एक पेड के पास ले जाकर कहा, "वैसे तो इस सारे बगीचे के ही सेब मीठे है, लेकिन इस पेड के फलो को जरा खाकर तो देखिये। आपकी तबीयत खुश हो जायगी।" फिर कुछ रुककर उन्होने कहा, "पककर जो फल अपने-आप टूटकर

नीचे गिर जाते है, उनकी मिठास निराली होती है। पक्षियो के खाये हुए फल भी वडे मीठे होते है। आपको तो पता होगा ही कि पक्षी वडी होशियारी से फलो का चुनाव करते है। उन्हे फौरन पता चल जाता है कि सबसे बढिया फल कौन-सा है।"

हम लोगो ने पेड के नीचे पडे हुए सेवो को उठाकर खाना शुरू किया, लेकिन उससे सतोष न हुआ तो ऊपर से तोडने लगे। जितने वहा खा सकते थे, खाये। कुछ साथ मे भी ले लिये।

वहा से चलकर हम एक राजीय फार्म देखने गये। जगल मे होने के कारण स्थान वडा रमणीक था। सन् १९१८ मे लेनिन वहा कुछ दिन रहे थे। पेड काटकर कुछ भूमि खेती के योग्य बनाई गई। प्रारम्भ मे कुल ४० हैक्टर भूमि थी, अब १४०० हैक्टर है। खेती-बारी के अतिरिक्त गाये, घोडे, मुर्गी आदि के पालन का भी इस फार्म मे प्रबन्ध है। २२४ दूध देनेवाली गाये थी। पूछने पर मालूम हुआ कि एक-एक आदमी २०-२५ गायो की देखभाल करता है। तीन बार दूध निकाला जाता है। चारे की दृष्टि से फार्म स्वावलम्वी है।

फार्म मे ३०० व्यक्ति काम करते है। उनको ७० प्रतिशत वेतन मिलता है और ३० प्रतिशत काम का लक्ष्य पूरा होने पर दिया जाता है। डाइरेक्टर को महीने मे १४०० रूबल मिलते है, उसी अनुपात से। लक्ष्य से अधिक काम होने पर अधिक आमदनी होती है। गोशाला मे काम करनेवाली स्त्रिया ८०० से १००० रूबल प्रतिमास तक कमा लेती है।

जाडो मे जब खेती का काम नही होता या कम होता है तो लोग अपने समय का खाली बैठकर अपव्यय नही करते। चटाई या टोकरिया आदि बुनते है अथवा अन्य पूरक धधे करते है। विशेषज्ञो को तो पूरे साल फार्म का ही काम रहता है।

देश के उत्पादन को बढाने मे सामूहिक फार्मो का महत्वपूर्ण स्थान है। फार्मो के निवासी वडे तन्दुरुस्त दिखाई दिये। भूमि के साथ आत्मीयता का नाता होने के कारण वे खूब मेहनत करते है और इस प्रकार निजी लाभ के साथ-साथ राज्य की समृद्धि को भी बढाने मे योगदान करते है। जो लोग अधिक परिश्रम करके उत्पादन का आदर्श उपस्थित करते है, उनके चित्र क्लबो मे लगाये जाते है। अन्य चीजो को दिखाते समय सब फार्मो के अधिकारी उन चित्रो का परिचय देते है तो उनकी आखे उमग तथा उत्साह से चमक उठती है। सामूहिक फार्मो का इतिहास बहुत पुराना नही है, लेकिन कुछ ही वर्षो मे उनकी जडे बहुत ही गहरी हो गई है।

: २२ :

सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन

रूस के निवासियो का सामाजिक जीवन वडा उन्मुक्त है। उसमे सकीर्णता प्राय नही दिखाई देती। यह ठीक है कि वहा के अधिकाश व्यक्तियो के पास आलीशान मकान नही है, यह भी ठीक है कि उनके पास यूरोप के अन्य देशो की भाति वढिया पोशाकें नही है, लेकिन इसमे सन्देह नही कि जो मिलनसारिता, आत्मीयता तथा सेवा-वृत्ति रूस के लोगो मे मैंने पाई, वह अन्यत्र दिखाई नही दी।

वहुत-से लोगो की धारणा है कि रूस के निवासियो मे परिवार-भावना नही है। उनकी धारणा है कि लडका वडा हुआ, उसने शादी की कि मा-वाप से उसका सम्वन्ध-विच्छेद हो जाता है और फिर वे एक-दूसरे के सुख-दु ख मे काम नही आते। इस वात मे आशिक सत्य है। विवाह के वाद अक्सर लोग मा-वाप से अलग हो जाते है, लेकिन उनके सम्पर्क और स्नेह-सम्वन्ध वरावर वने रहते है। मुझे याद है कि भाई सोमसुन्दरम की पत्नी, जो रूसी है, कितनी चिंतित थी, जवकि उनकी माताजी अस्वस्थ थी और अस्पताल मे चिकित्सा करा रही थी। वह प्रतिदिन शाम को उन्हे देखने जाती थी। कहने का तात्पर्य यह कि दु ख मे वे लोग एक दूसरे के काम आते है और खुशी के अवसरो पर भी वे सामूहिक रूप से एकत्र होकर अवसर की शोभा और आनन्द मे वृद्धि करते है।

इसी प्रकार लोग यह भी कहा करते है कि रूस मे पति-पत्नी के सम्वन्ध वहुत स्थायी नही होते। जवतक कोई वात नही, दम्पत्ति साथ रहते है, लेकिन जरा-सी वाधा उपस्थित हुई कि अलग हो जाते है। यह वात सही नही है। रूस मे तलाक को अच्छी निगाह से नही देखा जाता और एक वार विवाह के सूत्र मे वध जाने पर उसे निभाने का भरसक प्रयत्न किया जाता है। पति-पत्नी एक-दूसरे को प्रेम करते है, लेकिन उनके प्रेम मे सकीर्णता नही है। जरा-सी वात पर सन्देह की निगाह से एक-दूसरे को देखने की दूषित वृत्ति उनमे नही है। वे सुविधानुसार साथ-साथ

ग्रौर कभी-कभी ग्रपने-ग्रपने मित्रो, सम्बन्धियो के साथ सास्कृतिक कार्यक्रमो ग्रादि मे जाते है, खुलकर दूसरो से मिलते है, लेकिन उसका उनके वैवाहिक सम्बन्धो पर प्रतिकूल प्रभाव नही पडता। वहुत गभीर कारण उपस्थित होने ग्रौर ग्रदालती कार्रवाई के वाद ही तलाक की ग्रनुमति मिलती है। एक पत्नी के रहते दूसरी शादी करना कानूनन ग्रपराध है।

ग्रविवाहित लडकियो पर वहा कडे प्रतिवन्ध नही है। वे जव जहा जाना चाहे, जा सकती है। मा-वाप की ग्रोर से उन्हे पूर्ण स्वतत्रता है। लेकिन वे उस ग्राजादी का दुरुपयोग प्राय नही करती, यो ग्रपवाद सव जगह निकल ग्राते है। वहा क्वारी कन्या के सतान होना ग्रच्छा नही माना जाता, लेकिन यदि इस प्रकार की लाचारी कभी उपस्थित हो जाती है तो लडकी को पतित या हीन नही माना जाता। उसकी प्रसूति की भली प्रकार व्यवस्था की जाती है ग्रौर उस सतान को मा के नाम के साथ जोड दिया जाता है।

विवाहो की रजिस्ट्री होती है। इस कार्य के लिए सिविल रजिस्ट्री व्यूरो है। उसमे रजिस्ट्री होने के वाद ही शादी पक्की होती है। पति-पत्नी के पासपोर्टो मे दर्ज हो जाता है कि वे विवाहित है। शादी के वाद ग्रक्सर ग्रपनी हैसियत के ग्रनुसार दावत दी जाती है।

विवाह के वाद जमा की गई सम्पत्ति पर पति-पत्नी दोनो का समान ग्रधिकार होता है। यदि दोनो मे से कोई शारीरिक रूप से ग्रशक्त हो जाय तो उसकी देख-भाल की जिम्मेदारी दूसरे पर होती है।

स्त्रियो का प्राधान्य होने के कारण प्रत्येक विभाग मे ज्यादातर लडकिया काम करती है। वे छोटे-से-छोटे ग्रौर वडे-से-वडे काम को सभालने की क्षमता रखती है, यहातक कि टेक्नीकल कामो मे भी वे ग्रग्रणी रहती है। चिकित्सा ग्रादि के क्षेत्रो मे तो स्त्रियो का प्रतिशत वहुत ग्रधिक है।

वाजार मे खरीद-फरोख्त का काम मुख्यत स्त्रिया ही करती है। दुकानो पर सामान लेने का वहा ग्रपना ढग है। प्रत्येक वस्तु के दाम निश्चित है। ग्रधिकांशत चीजो के सामने दाम लिखे रहते है। ग्रापको जो चीज़ चाहिए, देख लीजिये, दाम जान लीजिये ग्रौर उतने दाम का काउंटर से कूपन खरीद लीजिये। उस कूपन को जव ग्राप वेचनेवाली वहन या भाई को देंगे तव ग्रापको वह वस्तु मिलेगी। उसमे कभी-कभी वहुत विलम्ब हो जाता है ग्रौर यदि भीड ग्रधिक हो तो व्यक्ति के

धीरज की परीक्षा हो जाती है। मैंने बीसियो दुकानो पर खरीद-फरोख्त होते देखी, लेकिन क्या मजाल कि कोई भी स्त्री उतावली होकर दूसरी को धक्का देकर स्वय आगे बढने का प्रयत्न करे। फलो या साग-भाजियो की दुकानो पर तो हमेशा लम्बी कतार लगी रहती है, किन्तु हरकोई अपनी बारी की प्रतीक्षा करता है। एक रोज रात को मेरे एक भारतीय मित्र अगूर खरीदने गये। दुकान पर बडी लम्बी लाइन लगी थी। मित्र उसीमे जाकर खडे हो गये। मुझे कुछ खरीदना नही था, अत खिडकी के पास खडे होकर तमाशा देखने लगा। इतने मे एक सज्जन आये और पंक्ति मे न खडे होकर सीधे खिडकी पर पहुच गये और अगूरो की माग करते हुए पैसे हाथ मे लेकर खिडकी के अदर हाथ बढा दिया। लडकी ने सामान देने से इन्कार कर दिया। इतना ही नही, एक दस-बारह साल का बालक पक्ति मे से निकलकर आया और उस आदमी की बाह पकडकर सकेत किया कि लाइन मे आ जाओ, पर वह भला आदमी अपने स्थान से नही हिला। इसपर उस बालक ने धीरे-से उसकी बाह पर एक मुक्का मारा और फिर अपनी बारी लेने का इशारा किया। इतने पर भी जब वह नही माना तो सब समझ गये कि वह हजरत चढाये हुए है।

दुकानो पर हिसाब लगाने की पद्धति बडी सुगम है। हर दुकान पर जोड के लिए बडे-बडे दानो का एक बोर्ड होता है। उसमे रूबल तथा कापेक के जोड की पक्तिया निर्धारित होती है। उनकी मदद से सैकडो-हजारो के जोड बात-की-बात मे लग जाते है। बीसियो चीजें ले लीजिये। आपको हिसाब की हैरानी हो सकती है, पर बेचनेवाली बहन बडे आराम से उस बोर्ड के दानो की सहायता से आपको योग बता देंगी। बडी-बडी दुकानो पर जोड लगाने की मशीने है।

उपभोक्ता वस्तुए वहा बहुतायत से मिल जाती है, लेकिन आराम तथा ऐश्वर्य की चीजो की बडी कमी है। हम बता चुके है कि पाउडर तथा होठो की लाली जैसी चीजें वहा बडी महगी मिलती है। धूप का चश्मा भी मैंने बहुत कम क्या, शायद ही किसीको लगाये देखा हो। बिजली का टोस्टर अथवा सिगरेट सुलगाने का लाइटर भी वहा दुर्लभ है।

लोगो मे प्राय फैशनपरस्ती नही है। अपने देश मे उन्हे जो वस्त्र सुलभ है, उसे पहन लेते है और सबसे बडी बात यह है कि जो प्राप्य नही है, उसके लिए वे शिकायत नही करते, न बडबडाते है। स्त्रियो मे सिगरेट पीने की प्रथा नही है। वे धम्रपान को बुढापे की निशानी मानती है और उससे बचने की भरसक चेष्टा

करती है।

घरो को साफ-सुथरा रखने तथा सजाने मे वहा के लोग वडे तत्पर है। छोटे-से-छोटे घर का व्यवस्था-कौशल देखने योग्य होता है। कम-से-कम आयवाला व्यक्ति भी एक-दो रूवल के फूल खरीदकर फूलदान मे अवश्य रखता है। नवीनता वनाये रखने के लिए वे कमरे मे सामान का क्रम तथा स्थान अक्सर वदलते रहते है।

रूस मे कवूतरो को चुगाने की प्रथा का वडा प्रचलन है। कवूतर सारे ससार मे शाति का प्रतीक माना जाता है, अत यह स्वाभाविक है कि शाति के लिए प्रयत्नशील रूस शाति के इन प्रतीको का आदर करे और उनके प्रति आत्मीय भाव रक्खे। लाल चौक मे, लेनिन पुस्तकालय के पास के मैदान मे तथा अन्य स्थानो मे कवूतरो के झुड-के-झुड देखे जा सकते है। कवूतरो को चुगाने की यह प्रथा यूरोप के अन्य देशो मे भी पाई जाती।

रूस मे साप्ताहिक छुट्टी रविवार की रहती है। शनिवार की शाम को लोग वडे ही हर्षोन्मत्त दिखाई देते है। स्त्री-पुरुषो की टोलिया हँसती, गाती, विनोद करती घर से निकलती है और कुछ घटो के लिए जीवन के भार को और नीरसता को भूल जाती है। उल्लास की अवस्था मे होने पर भी अमर्यादित शायद ही किसी-को पाया जा सके। शनिवार की रात को वे लोग मित्रो को खाने पर वुलाते है और उनके साथ खूव नाच-गान होता है। घर के छोटे-वडे सव उसमे हिस्सा लेते है। विनोद की मात्रा रूसी लोगो मे काफी होती है। चेहरे पर मनहूसियत का जामा पहने कम ही लोग मिलेंगे।

वाजार वहा सोमवार को वन्द रहता है। इससे लोगो को वड़ी सुविधा होती है। रविवार की छुट्टी के दिन लोग जाकर आराम से सामान खरीद लाते है।

रूस मे वहुत-से स्त्री-पुरुषो के दात लगे हुए होते है। लेकिन मजे की वात यह है कि नकली दात स्टेनलैस स्टील के होते है। मुह खोलते ही साफ दिखाई दे जाते है। सोने के दात वहुत कम लोग लगवाते है। सफेद दात, पता नही, वहा क्यो नही मिलते। मैने एक भी व्यक्ति को सफेद दात लगाये नही देखा।

धर्म को वहा राज्य की ओर से प्रोत्साहन न मिलने पर भी विभिन्न धर्मो के अनुयायी समय-समय पर धार्मिक उत्सव करते रहते है। पर उनमे प्राय. वृद्ध स्त्री-पुरुषो की सख्या अधिक रहती है, युवको और युवतियो की कम।

सास्कृतिक कार्यक्रम वहा वहुत लोकप्रिय है। कुशल-से-कुशल अभिनेता,

सगीतज्ञ, गीतकार, नृत्यकार आपको मिल जायगे। ऑपेरा-भवन तो जितने रूस मे है उतने ससार के किसी भी देश मे नही है। मास्को का वोल्शाई थियेटर, लेनिनग्राड का किरोव थियेटर तथा मैली ऑपेरा थियेटर, कीव का शीवशेंको थियेटर दूर-दूर तक विख्यात है।

रूस के वेले (नृत्य-नाट्य) सारी दुनिया मे मशहूर है। जिन दिनो मै मास्को पहुचा, वहा का सवमे लोकप्रिय वेले 'स्वान लेक' चल रहा था। उसे देखने की मेरी वडी इच्छा थी, लेकिन हफ्तो पहले टिकट लेना होता है। मुझे सुविधा नही हुई। वाद मे वोल्शाई थियेटर कुछ दिन के लिए वन्द हो गया। जव मै अन्य देशो मे घूमकर मास्को लौटा तो वोल्शाई थियेटर खुल गया था और उसमे 'फाउण्टेन' वेले चल रहा था। वह भी 'स्वान लेक' की टक्कर का है। सयोग से एक मित्र की सहायता से टिकट की व्यवस्था हो गई। देखने गये। जैसा सुना था, वैसा ही निकला। एक तो थियेटर-भवन वडा कलापूर्ण है। दूसरे, उसका मच अपने ढग का एक ही है। इतना विशाल मच मैंने अन्यत्र नही देखा। तीसरे, खेल वडा ही भावपूर्ण तथा हृदय-स्पर्शी था। एक उजबेक अमीर एक लडकी पर आसक्त हो जाता है, लडकी वहुत ही सुन्दरी है। जब अमीर की वेगम को इसका पता चलता है तो वह उसका मन उधर से हटाने के लिए प्रयत्न करती है, पर निष्फल। उसकी ईर्ष्या वढती जाती है। अन्त मे वह उस कोमलागी सुन्दरी की हत्या करवा देती है। अमीर को जव यह मालूम होता है तो उसे वडी वेदना होती है और उसकी स्मृति मे वह एक 'फाउण्टेन' (निर्झर) का निर्माण कराता है। वस इतनी-सी कहानी है, लेकिन अमीर का प्रेम और मानसिक सघर्ष, वेगम की ईर्ष्या, लडकी का सौंदर्य तथा युद्ध आदि नृत्य-नाट्य द्वारा इतने प्रभावशाली ढग से दिखाये गए है कि दर्शक मुग्ध रह जाते है। वीच-वीच मे नृत्य तो कमाल के है। पैर के अगूठे के छोर पर सारे शरीर को सतुलित करके थिरकना और गति-पूर्वक नृत्य करना, एक युवक का जरा-से सहारे से नर्तकी को ऊपर इस सहजता से उठा लेना, मानो वह स्वत ही हवा मे उड गई हो, शरीर से विभिन्न अगो को फैलाकर भाति-भाति की आकृतिया बनाना, ये सव चीजें ऐसी है कि जिनकी विना देखे कल्पना नही की जा सकती।

मच घूमनेवाला होने से दृश्यो के वदलने मे देर नही लगती। आप नवाव का महल देख रहे है। पर्दा गिरते ही मिनटो मे एकदम दूसरा ही दृश्य सामने आ जाता है। यदि मच घमनेवाला न हो तो उस दृश्य की तैयारी मे घटो लग जाय। एक

विशेषता और है। और वह यह कि मच और पर्दों की ऐसी व्यवस्था की गई है कि दृश्यो मे गहराई भी साफ अनुभव होती है। सडक है तो लगता है, मीलो लम्बी चली गई है। उसपर दौडते घोडे को देखकर ऐसा जान पडता है, मानो वह किसी वास्तविक सडक पर दौड रहा है।

इसी प्रकार ऑपेरा (सगीत नाट्य) भी वहा की विशेषता है। सीधे-सादे दृश्य, पर इतने सजीव कि लगता है, मानो हम वास्तव मे उन स्थानो को देख रहे है, मच पर नही। अभिनय इतना भावपूर्ण कि विना भाषा समझे भी आप ऊब नही सकते। पात्रो की भाव-भगिमा से कहानी अपने-आप स्पष्ट हो जाती है।

वच्चो के थियेटर-भवन पृथक् है। उनमे वच्चो के मनोरजन तथा चरित्र-निर्माण के लिए उन्हीके अनुरूप नाटक किये जाते है।

सर्कस रूस मे अत्यन्त लोकप्रिय है। लगभग पचास स्थायी सर्कस-गृह है। छुट्टियो के ही दिनो मे नही, अन्य दिनो मे भी वहा लोगो की वेहद भीड रहती है। टिकट की व्यवस्था पहले से करानी होती है।

यही हाल सिनेमा-घरो का है। अनेक सिनेमाघर स्थायी है, कुछ चलते-फिरते सिनेमाघर है। लेनिन सिनेमा को वहुत महत्व देते थे। वडे-वडे लेखको की कृतियो की वहां काफी फिल्मे वनी है, इतिहास की घटनाओ को भी चित्रो का विषय वनाया गया है। सिनेमाघर वडे ही सुरुचिपूर्ण तथा आरामदेह है।

कठपुतली के खेल तो वहा वहुत ही लोकप्रिय है। उनकी कला को विकसित करने के लिए राज्य ने वहुत खर्च किया है। तभी वे आज इतनी उन्नत अवस्था मे है कि अन्य देशो के लोग भी उन्हे देखकर दग रह जाते है।

रूस के निवासी वडे ही कला-प्रेमी है। सामान्य-से-सामान्य परिवार भी सिनेमा, नाटक आदि पर खूब खर्च करते है।

छुट्टियो मे लोग प्राय शहर से वाहर चले जाते है। छोटे-वडे सभी घूमने के शौकीन है। यातायात की सुविधा के कारण इधर-उधर आने-जाने मे विशेष कठिनाई नही होती। दर्शनीय स्थानो तक जाने के लिए वसें आदि सुलभ रहती है।

चित्रकारी, सगीत, नृत्य आदि के शिक्षण को राज्य की ओर से वरावर प्रोत्साहन मिलता है। इनके विकास के लिए वहा छोटी-वडी अनेक सस्थाए है। इतना ही नहीं, वहा वहुत-से ऐसे केन्द्र भी है, जो इन विषयो मे प्रयोग और अनुसधान करते रहते है।

: २३ :

शिक्षा की प्रगति

पिछले वर्षों मे शिक्षा के क्षेत्र मे रूस ने जो प्रगति की है, वह निस्सदेह प्रशसनीय है। सन् १८९७ की जनगणना के अनुसार रूस मे केवल २७ प्रतिशत प्रौढ साक्षर थे। ज़ार के जमाने मे शिक्षा के प्रसार की विशेष सुविधाए नही थी, वल्कि यह कहना अधिक ठीक़ होगा कि उस ओर शासन की कोई खास रुचि नही थी। कुछ स्थानो की तो वडी ही अजीव-सी हालत थी। कजाको मे केवल दो प्रतिशत लोग लिखना-पढना जानते थे। किरगिजो की दशा तो और भी वदतर थी। कोई भी देश विना शिक्षा की समुचित व्यवस्था और प्रसार के ऊपर नही उठ सकता। क्राति के वाद रूस मे भी शिक्षा के देशव्यापी प्रचार के लिए जोरो से प्रयत्न किया गया। विना स्त्री, पुरुष और राष्ट्रीयता के भेद के सवको सामान सुविधाए दी गई। नई शिक्षा-सस्थाए खोली गई, अध्यापक तैयार किये गए। इन सव प्रयत्नो का परिणाम यह हुआ कि आज वहा शत-प्रतिशत शिक्षित है। प्रारभिक, माध्यमिक, उच्चतर तथा विश्वविद्यालय अथवा इन्स्टीट्यूट की शिक्षा सभीको उपलब्ध है। सन् १९२० और ४० के बीच लगभग ५ करोड प्रौढो को शिक्षित किया गया। १९३९ की जन-गणना के अनुसार ९ वर्ष की अवस्था से लेकर ४९ वर्ष की अवस्था तक के ८९ प्रतिशत व्यक्ति साक्षर हो गये। १९३० मे प्रारभिक शिक्षा अनिवार्य की गई, १९३९ मे देशव्यापी माध्यमिक शिक्षा का प्रवन्ध किया गया और देहातो मे भी माध्यमिक स्कूल खोले गये। द्वितीय महा-युद्ध के कारण १९४१ से १९४५ तक के काल मे यह प्रगति रुक-सी गई, लेकिन सन् १९४९-१९५१ के बीच सात वर्ष की शिक्षा सवके लिए अनिवार्य कर दी गई।

शिक्षा की पद्धति सारे देश मे एक-सी है। ३ वर्ष की उम्र से लेकर २३ वर्ष की अवस्था तक पूरी शिक्षा प्राप्त की जा सकती है, लेकिन यह आवश्यक नही कि हरेक व्यक्ति ऐसा करे ही। उदाहरण के लिए कोई भी लडका या लडकी प्रारभिक

७ वर्ष का पाठ्य-क्रम पूरा करके या तो आगे की पढाई करती रह सकती है, अथवा किसी विशेष माध्यमिक स्कूल मे दाखिला करा सकती है। किसी उद्योग-सस्था मे जाना चाहे तो उसमे जा सकती है।

शिक्षा वहा ३ वर्ष की आयु से प्रारभ होती है। शिक्षा की यह पहली पारी सात वर्ष की उम्रतक चलती है। कक्षाए सवेरे से ही शुरू हो जाती है। बाल-शिक्षा के ये केन्द्र प्राय सभी दोमो (गृह-समूहो) मे है। सवेरे नाश्ता करने के बाद जब मै घूमने के लिए निकलता था तो किसी भी केन्द्र के आगे मेरे पैर अपने-आप रुक जाते थे। छोटे-छोटे स्वस्थ बच्चे बडे ही मगन होकर खेलते दिखाई देते थे। वहा खेल द्वारा उन्हे शिक्षा दी जाती है। तरह-तरह के खिलौने बच्चो को सुलभ रहते है। कभी-कभी बच्चे आपस मे लड पडते है, कभी-कभी मारपीट हो जाती है। ऐसे अवसरो पर अध्यापिका की परीक्षा होती है। बीसियो बार मैने बच्चो मे मारपीट या लडाई होते देखी, लेकिन क्या मजाल कि उनके झगडे को निबटाने के लिए अध्यापिका उनपर हाथ उठावे। बडे प्यार और धीरज के साथ वह उनके बीच समझौता करा देती है। ये केन्द्र खुले मैदान मे बने है। उससे बच्चो को खेल-कूद के साथ ताजी हवा का भी लाभ मिल जाता है। वस्तुत इन केन्द्रो का मुख्य उद्देश्य बच्चो का शारीरिक विकास करना और स्कूल जाने के लिए उन्हे तैयार करना है। बच्चे वहा लगभग १२ घटे रहते है। उनका खर्चा मुख्यतः सरकार देती है।

इसके बाद प्रारम्भिक स्कूलो की व्यवस्था है। उनमे अलग-अलग पाठ्यक्रम है—४ वर्ष का—७ से ११ वर्ष के बच्चो के लिए; ७ वर्ष का—७ से १४ वर्ष तक के बच्चो के लिए; १० वर्ष का—७ से १७ वर्ष के बच्चो के लिए। १४ से लेकर २५ साल के ऐसे युवक या युवतिया, जो किसी विशेष कारण से आगे सामान्य शिक्षा प्राप्त नही कर सके, अपना काम निबटाने के बाद विशिष्ट स्कूलो मे पढाई-लिखाई कर सकते है।

पढाई प्रत्येक सोवियत सघ की अपनी भाषा मे होती है। मातृ-भाषा के विकास तथा अभिवृद्धि पर विशेष जोर दिया जाता है। मातृ-भाषा के अतिरिक्त अग्रेजी, जर्मन या फ्रेंच मे से एक विदेशी भाषा भी सीखनी होती है। रूसी तो सीखनी ही पडती है।

स्कूली पढाई के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धन के लिए बच्चो को अन्य सुविधाए भी प्राप्त है, जैसे पुस्तकालय, वाचनालय, आदि। उनके लिए आरोग्य-भवनो मे जाकर

रहने तथा विभिन्न स्थानो का पर्यटन करने का भी सुभीता रहता है। मुझे कई स्थानो पर स्कूल के बच्चो की टोलिया मिली। उनके अनुशासन को देखकर मै दग रह गया। सग्रहालयो मे मैने किसी भी बच्चे को शोर मचाते, धक्का-मुक्की करते अथवा चीजो को छूते या बिगाडते नही देखा, हालाकि उनकी टोली मे छोटी उम्र के भी बहुत-से बच्चे थे।

ऐसे बच्चो के लिए, जिनके मा-बाप गुजर गये है, राज्य पृथक् व्यवस्था करता है। वे अनाथालय मे रहते है और उनका सारा खर्च सरकार उठाती है।

अपने देश के औद्योगिक विकास की दृष्टि से शासन को उद्योग-धधो के विशेषज्ञ प्राप्त हो, इसके लिए वहा के माध्यमिक स्कूलो से ही बहुकौशलीय प्रशिक्षण चालू कर दिया गया है। उससे बच्चो को आधुनिक उद्योगो तथा कृषि-उत्पादन की सैद्धातिक एव व्यावहारिक शिक्षा मिलने लगती है और आगे चलकर वे अपने विषय मे पारगत हो जाते है।

माध्यमिक स्कूलो को यथासभव घरो के पास ही बनाया जाता है, जिससे छात्रो को आने-जाने मे असुविधा न हो और उनका समय नष्ट होने से बच जाय।

युद्ध के दौरान मे युवको को स्कूल छोडकर काम पर जाना पडता था। उनकी पढाई चालू रहे, इसलिए सध्याकालीन तथा पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा देनेवाले स्कूल खोले गये।

स्कूली बच्चो को पाठ्य पुस्तके राज्य की ओर से दी जाती है। पाठ्य पुस्तको की प्रतिवर्ष २० करोड से अधिक प्रतिया प्रकाशित होती है।

शिक्षको के प्रशिक्षण के लिए अलग व्यवस्था है। वस्तुत बिना ट्रेंड अध्यापको के पढाई का काम ठीक से नही चल सकता। उससे भी जरूरी बात यह है कि अध्यापक ऐसे होने चाहिए, जिनकी अध्यापन मे विशेष रुचि हो। अध्यापन के शिक्षण के लिए लोगो का चुनाव करने मे इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है।

माध्यमिक शिक्षा पूरी कर लेने के बाद १७ से ३५ वर्ष तक की आयु का कोई भी नागरिक उच्च शिक्षालय मे प्रवेश पा सकता है, लेकिन एक शर्त है। जिस विषय का उसने अध्ययन किया है, उसकी गहरी जानकारी उसे होनी चाहिए। इसके लए उसकी परीक्षा होती है। जो उसमे उत्तीर्ण होते है, वे ही प्रवेश पाते है।

१९५६ के बाद से सभी उच्च शिक्षालयो मे नि शुल्क शिक्षा दी जाती है। ग्रीष्मकालीन छुट्टियो मे छात्र-छात्राओ को आरोग्य-भवनो और सैरगाहो मे रहने

के लिए नि शुल्क स्थान दिया जाता है।

रूस मे ३६ विश्वविद्यालय है। उनमे सबसे पुराने ये है—१ मास्को विश्वविद्यालय, (सन् १७५५ मे स्थापित), तार्तू विश्वविद्यालय (१८०२), कजान विश्वविद्यालय (१८०४), खारकोव विश्वविद्यालय (१८०५), लेनिनग्राड विश्वविद्यालय (१८१६), और कीव विश्वविद्यालय (१८३४)। इनमे सबसे अधिक ख्याति मास्को विश्वविद्यालय की है।

बहुत-से छात्र-छात्राए विश्वविद्यालय मे न जाकर इन्स्टीट्यूटो मे चले जाते है, जहा उन्हे शिक्षा के साथ-साथ विभिन्न उद्योगो की उच्च शिक्षा मिलती है।

विश्वविद्यालय अथवा इन्स्टीट्यूट मे दाखिला बडी कडाई से होता है। हर परीक्षार्थी को एक टैस्ट देना होता है। जो पास हो जाते है, उन्हे दाखिल कर लिया जाता है। लेकिन अनुत्तीर्ण होनेवाले छात्रो को एक या दो अवसर टैस्ट मे बैठने के लिए और मिलते है। उनमे से बहुत-से तो आगे पढने का विचार छोड़कर कारखानो आदि मे काम करने चले जाते है, कुछ शहर मे रहकर पढाई करने और पुन परीक्षा में बैठने के विचार मे वही किसीके यहा नौकरी कर लेते है। अनेक भारतीय मित्रो के यहा ऐसी ही रूसी बहने काम करती हुई मैने देखी। वे बडी इज्जत के साथ नौकरी करती है। सबसे बडी बात मैने उनमे यह देखी कि कोई भी काम वे ओछा या छोटा नही मानती। वे जूतो पर पालिश कर देती है, कपडे धो देती है, घर की सफाई, खाना आदि तो करती ही है। उनमे स्वाभिमान मैने बेहद पाया। किसी लड़की से जरा तेज बात कह दीजिये, वह काम छोडकर चली जायगी और उनका सगठन ऐसा है कि एक लड़की के चले जाने पर दूसरी मिलना मुश्किल होता है।

रूस मे सबसे अधिक मान लेखको और शिक्षको का है। शिक्षको को अच्छा वेतन मिलने के अतिरिक्त समाज मे उन्हें बडे आदर की दृष्टि से देखा जाता है। उन्हे अनेक सुविधाए दी जाती है। मास्को विश्वविद्यालय के कई प्रोफेसर मुझे मिले। उनमे विज्ञान-विभाग के प्रोफेसर बी० जी० जूबोव की स्मृति सदा बनी रहेगी। वह पढाने जा रहे थे। अचानक सडक पर मिल गये। साथ हो गये। लगभग दो घटे साथ रहे। वह भारत हो गये है और सर सी० वी० रमन के बडे प्रशसक है। मैने कई बार उन्हे स्मरण दिलाया कि उनके छात्र प्रतीक्षा कर रहे होगे, लेकिन वह नही माने। बडे ही भले और मिलनसार थे, बडे ही निरभिमानी।

शिक्षितो की सख्या अधिक होने के कारण पुस्तको की विक्री वहा खूब होती है। मामूली-से-मामूली पुस्तक लाखो की सख्या मे निकल जाती है। वैसे भी वहा पुस्तकें खूब पढी जाती हैं। लिफ्ट के पास वैठी वृद्धा प्राय उपन्यास या अन्य कोई पुस्तक पढती मिलती है। सुरग की रेल मे, वस मे, ट्राम मे जगह मिली कि लोग पुस्तक निकालकर पढने लगते हैं। पुस्तकें खरीदकर पढने की वहा वडी ही स्वस्थ परिपाटी है। हजार रूबल प्रति मास कमानेवाले व्यक्ति की आमदनी का भी कुछ भाग पुस्तके खरीदने पर चला जाता है।

रूस मे प्रत्येक क्षेत्र मे जो-प्रगति हो रही है, उसका मुख्य श्रेय वहा के लोगो की अनुसधान-वृत्ति को है। अपने-अपने कार्य को वे आगे वढा सकें, नई-नई खोजे कर सकें, इसके लिए स्थान-स्थान पर अनुसधान-केन्द्र हैं, जहा सव प्रकार की सुविधाए दी जाती है। विज्ञान ने वहा जो असाधारण उन्नति की है, वह इसीका परिणाम है। शिक्षा के क्षेत्र मे भी वरावर अनुसधान होते रहते हैं कि किस प्रकार शिक्षा को और अधिक उपयोगी वनाया जा सकता है, किस प्रकार उसका स्तर ऊचा किया जा सकता है और किस प्रकार छात्रो और अध्यापको की क्षमता को और वढाया जा सकता है। सच वात यह है कि शिक्षा वहा के शासको की दृष्टि मे सवसे अधिक महत्व की चीज़ है, क्योकि वे मानते हैं कि विना शिक्षा के उनके देश की प्रतिभा विकसित नही हो सकती। उनकी शिक्षा-पद्धति नई पीढी को राष्ट्रीयता का पाठ पढाती है और वहा की तरुणाई को कर्मठ वनाने का प्रयत्न करती है।

: २४ :

साहित्यिक आदान-प्रदान

हमारे देश की विभिन्न भाषाओ मे रूस के अनेक साहित्यकारो तथा चितको की रचनाओ के अनुवाद प्रकाशित हुए है। कुछ लेखक तो भारत मे इतने लोकप्रिय है कि उनकी पुस्तको के एक ही भारतीय भाषा मे कई-कई रूपान्तर हुए है। टाल्स्टाय, गोर्की, तुर्गनेव, पुश्किन, डास्टोवस्की, क्रोपाटकिन, प्रभृति के नाम शायद ही कोई ऐसा सुशिक्षित भारतीय हो, जो न जानता हो। इधर तो बहुत-सा रूसी साहित्य रूस से ही विभिन्न भारतीय भाषाओ मे अनूदित और प्रकाशित होकर आ रहा है, फिर भी हमारे देश मे वहा के अनेक ग्रथकारों की कृतियो के अनुवाद तथा प्रकाशन का कार्य यथावत् चल रहा है।

रूस और भारत के बीच आदान-प्रदान का इतिहास बडा पुराना है। इतिहास के विद्यार्थी जानते है कि पद्रहवी शताब्दी मे वास्को डी गामा से भी लगभग ३० वर्ष पूर्व अफानासी निकितन नामक रूसी सौदागर भारत आया था। वह यहा काफी घूमा और रूस लौटकर उसने 'तीन समुद्रों के पार की यात्रा' पुस्तक लिखी। 'परदेशी' फिल्म ने, जो कि भारत तथा रूस के सयुक्त प्रयत्न से बनी है, इस सौदागर का नाम देश के कोने-कोने मे पहुचा दिया है। इसमे सदेह नही कि इस साहसी व्यक्ति ने भारत और रूस के बीच, उस प्रारभिक अवस्था मे, एक शृखला स्थापित करने का प्रयास किया। भारत से भी अनेक व्यापारी रूस गये।

इसके पश्चात् चेर्निश्व्स्की तथा दोब्रल्यूबोव ने भारत की १८५७ की क्राति पर लेखनी चलाई। उसी काल मे रूसी कवि जूकोव्स्की ने नल-दमयन्ती के आख्यान को अपनी रचनाओ का विषय बनाया। १९ वी शती के अन्त मे धार्मिक साहित्य के विद्वान् मिनायेव भारत आये। उनकी डायरी रूसी में प्रकाशित हुई। रूसी चित्रकार वेरेश्चागिन ने भारतीय जीवन पर अनेक चित्रो की रचना की।

बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे भारतीय साहित्य के अध्ययन तथा रूपान्तर का

कार्य वडी तेजी से शुरू हुआ। आज मास्को, लेनिनग्राड तथा ताशकद मे न केवल भारतीय साहित्य के अध्ययन, अनुवाद एव प्रकाशन का काम हो रहा है, अपितु वहा के महाविद्यालयो तथा विश्वविद्यालयो मे हिन्दी ,उर्दू , वगला, सस्कृत, मराठी तथा पजावी भाषाओ के शिक्षण की भी व्यवस्था है। इन नगरो मे भारतीय भाषा-विज्ञान-सवधी शोध का कार्य विधिवत रूप से हो रहा है। इस क्षेत्र मे सोवियत सघ की 'विज्ञान अकादमी' के 'प्राच्य सस्थान' (ओरियटल इन्स्टीटचूट) की सेवाए विशेष रूप से उल्लेखयोग्य है। यह सस्था भारतीय भाषाओ के अध्ययन तथा भारतीय साहित्य-सम्वन्धी समस्याओ के अनुसन्धान मे वडे ही परिश्रम से सलग्न है। इस समय इस सस्था द्वारा हिन्दी, उर्दू ,वगला, पजावी, तमिल, तेलगु, मराठी, मलयालम तथा सिहली मे व्याकरण, शव्दकोश-विज्ञान तथा ध्वनि-शास्त्र एव इतिहास-सम्वन्धी समस्याओ पर कार्य हो रहा है। आधुनिक भाषाओ के साथ-साथ सस्कृत एव पाली के साहित्य को भी महत्व दिया जा रहा है। हिन्दी, उर्दू तथा वगला मे विशाल शव्दकोश तथा व्याकरणो की रचना हो रही है। पद्रह भाषा-विदो का एक मडल हिन्दी-व्याकरण तैयार कर रहा है।

मास्को के 'प्राच्य सस्थान' मे हमे अनेक वार जाने का अवसर मिला। हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष श्री चेलिशेव धारा-प्रवाह हिन्दी वोलते है और अच्छी लिख भी लेते है। इस सस्था का मुख्य कार्य भारतीय साहित्य की कृतियो का रूसी मे अनुवाद करना है। लेनिनग्राड मे भी 'प्राच्य सस्थान' है। उसका उल्लेख हमने लेनिनग्राड के प्रसग मे विस्तार से किया है। इन दोनो सस्थानो ने अवतक जो कुछ शोध तथा अनुवाद-कार्य किया है, वह अभिनदनीय है। महाभारत (आदि-पर्व), रामचरित-मानस, मुद्राराक्षस, मृच्छकटिक, वैताल पचविंशत, पचतत्र, हितोपदेश, जातककथा, भगवद्गीता आदि के अनुवाद हो चुके है। पाठक जानते है कि प्रो० वारान्निकोव ने, जो अव इस ससार मे नही है, दस वर्ष तक अथक परिश्रम करके रामायण का पहले रूसी गद्य मे, फिर पद्य मे अनुवाद किया। उसमे छद भी उन्होने वही रक्खा है, जो मूल भाषा मे है। पहला सस्करण हाथो-हाथ विक गया। द्वितीय सस्करण आज वाजार मे है। प्रो० कल्यानोव ने, जो सस्कृत के प्रगाढ पडित है और धाराप्रवाह सस्कृत वोलते है, वडे परिश्रम ले महाभारत के 'आदिपर्व' का अनुवाद किया और अव 'सभा-पर्व' का कर रहे है।

भारतीय लेखको मे रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा प्रेमचन्द का वहुत-सा साहित्य

रूसी मे प्रकाशित हुआ है। अन्य लेखको मे दो-एक लेखको को छोडकर शेष वे लेखक है, जो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से साम्यवादी विचार-धारा के पोषक है और जिन्होने अपने साहित्य द्वारा उस विचारधारा के प्रचार मे पर्याप्त सहायता की है। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वहा के सुशिक्षित व्यक्तियो मे से अधिकाश की जवान पर केवल पाच-सात साम्यवादी लेखको के नाम है। जव मैने उन्हे यह वताया कि भारत मे उनके अलावा और भी वहुत-से उच्च कोटि के लेखक है तो उन्होने स्पष्ट कहा कि उनके अज्ञान का कारण यह है कि हमारे भारतीय वन्धुओ ने उनका परिचय केवल उन्ही नामो तथा उनके साहित्य से कराया है। लेकिन उन्होने आशा व्यक्त की कि पारस्परिक सम्पर्को के वढने से उनके एकागी ज्ञान मे वृद्धि होगी और उनका क्षेत्र निश्चय ही व्यापक वनेगा। मुझे हर्ष है कि अव प्रसाद, निराला, वृन्दावनलाल वर्मा, विष्णु प्रभाकर, सुदर्शन आदि लेखको की ओर भी उनका ध्यान गया है और इनकी कुछ रचनाओ के अनुवाद हुए है और हो रहे है। श्री चेलिशेव तथा प्रो० कल्यानोव को इस कार्य मे अनेक रूसी तथा भारतीय व्यक्तियो का सहयोग प्राप्त है।

यहा मुझे एक प्रसग याद आता है। जव मै पहली वार मास्को के 'प्राच्य सस्थान' मे गया तो मेरे साथ वह वगाली सज्जन भी थे, जिनका उल्लेख पहले हो चुका है। सयोग से उसी दिन रूसी भाषा मे हिन्दी के चुने हुए कवियो की कवि-ताओ का एक सग्रह छपकर आया था। उसकी चर्चा करते हुए श्री चेलिशेव ने वडे प्रसन्न होकर कहा, "यशपालजी, आप अच्छे मौके पर आये है। लीजिये, पहली प्रति आपको भेट करता हू।" उन्होने हिन्दी मे "श्री यशपाल जैन को चेलिशेव की ओर से सप्रेम भेट" लिखकर एक प्रति वडे स्नेह से मुझे दी। उसके पश्चात् उन्होने वगाली महोदय से कहा कि एक कागज पर आप अपना नाम लिखकर मुझे दे दे, जिससे मै दूसरी प्रति पर आपका शुद्ध नाम लिखकर आपको दे सकू। उन सज्जन ने अपना नाम अग्रेजी मे लिखकर दिया। उसे देखकर चेलिशेव के चेहरे पर जो भाव उभरा, उसे मै कभी नही भूल सकता। क्षणभर स्तब्ध-से रहकर उन्होने पूछा, "क्या आप हिन्दी नही जानते, जो आपने अपना नाम अग्रेजी मे लिखा है?"

उन्होने जवाव दिया, "जी, मै हिन्दी वोल तो लेता हू, पर लिख नही पाता।"

चेलिशेव ने किंचित व्यग्य से कहा, "आप भारतीय है और हिन्दी नही लिख पाते! खैर, कोई वात नही, मै आपका नाम हिन्दी मे ही लिखूगा और शुद्ध लिखने

का प्रयत्न करूगा।"

कहने की आवश्यकता नही कि चेलिशेव ने हिन्दी मे शुद्ध नाम लिखकर पुस्तक उन्हे दी। यह प्रसग वास्तव मे वडा कटु है और हम भारतीयो के लिए उसमे एक वडी शिक्षा निहित है। जव हम भारत से वाहर जाते है तो हम न वगाली रहते हैं न पजावी, न गुजराती रहते है न मराठी, न उडिया रहते हैं न मद्रासी, हमे एक ही नाम से जाना जाता है और वह है 'भारतीय'। साथ ही यह भी माना जाता है कि स्वतत्र भारत का नागरिक अपनी राष्ट्रभाषा से अवश्य परिचित होगा। हम अपने अग्रेजी के ज्ञान पर और हिन्दी के अज्ञान पर भले ही गर्व अनुभव करे, लेकिन वाहर के लोगो पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होती है, उसका अनुमान उपरोक्त घटना से किया जा सकता है।

मास्को का 'विदेशी भाषा-प्रकाशन-गृह' रूसी साहित्य को भारतीय भाषाओ मे प्रकाशित कर रहा है। वहा हमारे कई भारतीय मित्र कार्य करते हैं। इस समय वहां हिन्दी, वगला तथा उर्दू मे अनुवाद की समुचित व्यवस्था है। शीघ्र ही मराठी, तमिल आदि मे भी हो जायगी। इस सस्था से अवतक टाल्स्टाय, गोर्की, तुर्गनेव, डास्कोवस्की आदि का काफी साहित्य भारतीय भाषाओ मे निकल चुका है और निकल रहा है। रूस की विभिन्न क्षेत्रीय प्रगति की जानकारी देनेवाला भी वहुत-सा साहित्य निकला है। अर्वाचीन लेखको की भी अनेक रचनाओ का अनुवाद हुआ है। हिन्दी-विभाग के प्रमुख श्री ग्लदिशेव से मै मिला। उन्होने अपनी प्रकाशन-योजना वताई और पूछा कि उनके यहा से हिन्दी मे जो अनुवाद हुए है, उनके विषय मे मेरी क्या राय है। मैने उन्हें वताया कि जो अनुवाद मेरी निगाह से गुजरे है, उनमे से अधिकाश शाब्दिक है, इसलिए भाषा तथा शैली मे जितना प्रवाह होना चाहिए, नही है। दूसरे, मैने उनसे कहा कि आप अव मुख्यत आधुनिक रूसी लेखको की कृतियो के अनुवाद करा रहे हैं। उस साहित्य मे से अधिकाश मे गहराई कम है, वह प्रचारात्मक अधिक है। अत वह भारत मे विशेष लोकप्रिय होगा, इसकी सभावना नही है। वाद मे मुझे मालूम हुआ है कि मेरी यह वात उन्हे रुचिकर नही लगी। उन्होने मेरे एक मित्र से कहा कि यह भी खूव है, जो हमारे अर्वाचीन लेखको को पसन्द नही करते! सोवियत सघ के उदय तथा विकास मे आधुनिक लेखको का योग अधिक माना जाता है और अनुभव किया जाता है कि टाल्स्टाय, डास्टोवस्की, गोर्की आदि तो जैसे कुछ पुराने युग के हैं।

सभवत ग्लदिशेव की ग्रप्रन्नता का यही कारण रहा होगा। उन्होने मुझे गोर्की की 'मेरे विश्वविद्यालय' तथा चेखव की 'कुत्तेवाली महिला' पुस्तके भेट मे दी। ग्रादमी भले लगे। उनके प्रकाशन के पीछे कोई सुसम्बद्ध योजना नही दिखाई दी। जिसने जो सलाह दी, उसीके ग्रनुसार ग्रनुवाद करवा डाला। वैसे सन् १९६० तक की प्रकाशन-योजना उन्होने वना रखी है, पर पुस्तको के चुनाव ग्रादि मे कोई खास विवेक नही है। ग्लदिशेव भारतीय वन्धुग्रो मे 'वडे भाई' के नाम से पुकारे जाते है। हिन्दी मजे की वोल लेते है।

वगला-विभाग के ग्रध्यक्ष से भी भेट हुई। उन्होने ग्रपने विभाग की योजना वताई। उनका वगला का ग्रभ्यास ग्रच्छा है। कई पुस्तके उन्होने प्रकाशित की है। वडे सरल ग्रौर सज्जन व्यक्ति जान पडे।

इन सस्थाग्रो के ग्रतिरिक्त 'चिल्ड्रन्स हाउस ग्रॉव वुक्स' ग्रपने ढंग की एक निराली सस्था है। ३ से लेकर १७ वर्ष तक के वच्चो तथा किशोरो के लिए इस सस्था से हजारो पुस्तके प्रकाशित हुई है। विश्व की ४९ भाषाग्रो मे से पुस्तकें चुन-कर उनके रूसी ग्रनुवाद किये गए है। भारतीय लोककथाए वहा के पाठको मे वडी लोकप्रिय है। 'पचतत्र' तथा 'हितोपदेश' की कहानिया भी वडे चाव से पढी जाती है। १८५७ के गदर पर कई किताबे निकली है। 'ए डेन्जरस इवेडर', 'फायर ग्रॉव दी फ्यूरी' ग्रादि-ग्रादि। स्टेनवर्ग की 'इडियन ड्रीमर' व्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध है। स्टेनवर्ग ने भारत की यात्रा करने के वाद यह उपन्यास लिखा था।

जिस समय मै इस सस्था के वाचनालय मे गया, ग्राठ-दस वर्ष की एक वालिका कोई पुस्तक पढ रही थी। मैने परिवाचिका से पूछा तो उसने वताया कि वह एक भारतीय लोक-कथा पढ रही है। मैने उस वालिका से सवाल किया कि उसे वह कहानी कैसी लग रही है। वालिका ने जवाव दिया, "वहुत ग्रच्छी।" मैने फिर पूछा कि उसमे ग्रच्छाई की क्या वात है। वालिका ने तत्काल उत्तर दिया—"यह वडी ही रोचक है ग्रौर कुतूहल इसमे खूव है।"

एक ग्रौर सस्था है 'सोवियत इन्फार्मेशन व्यूरो', जिसका काम वैसे मुख्यत: ग्रपने देश की जानकारी देना है, लेकिन वह ग्रग्रेजी का एक पाक्षिक पत्र निकालता है 'सोवियतलैण्ड'। इस पत्र के हिन्दी, उर्दू, वंगला, तेलगु, तमिल, मलयालम, पजावी मराठी, कन्नड, गुजराती तथा उडिया सस्करण भी प्रकाशित होते है। यह सस्था भारत तथा ग्रन्य देशो की जानकारी प्राप्त करने के लिए विदेशियो के व्याख्यानो

की व्यवस्था करती रहती है । मुझसे भी उन्होने दो व्याख्यान कराये । एक था गाधीजी के व्यक्तित्व तथा प्रभाव के विषय मे, दूसरा भारतीय साहित्य के वारे मे । भाषण के वाद लोगो ने जो प्रश्न किये, उनसे मालूम होता था कि हमारे देश तथा यहा के साहित्य के सम्वन्ध मे उनमे वडी जिज्ञासा है और वे अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करने को वहुत ही उत्सुक रहते है ।

सोवियत नारी-सभा तथा सोवियत सघ की ट्रेड यूनियनो की केन्द्रीय परिषद् द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'सोवियत नारी' सामाजिक एव राजनैतिक समस्याओ पर प्रकाश डालने के साथ-साथ साहित्य और कला की अच्छी सेवा कर रही है । उसके सस्करण विश्व की अनेक भाषाओ मे प्रकाशित होते है । भारतीय भाषाओ मे वह हिन्दी तथा उर्दू मे निकलती है ।

लेखको को सहायता तथा प्रोत्साहन देने के लिए जो सस्थाए काम कर रही है, उनमे दो का उल्लेख करना आवश्यक है । एक है 'सोवियत लेखक सघ' । रूस के वडे-वडे लेखक उससे सम्वद्ध है । किसी समय मे गोर्की उसके अध्यक्ष रहे थे । मुझे उसके उपाध्यक्ष श्री अप्लातीन तथा श्रीमती रोमानोवा अनेक वार मिली । सघ की सक्रिय कार्यकर्त्री मरियम सल्गानिक से भी कई वार भेंट हुई । इन तीनो ने तथा इनके अन्य सहयोगियो ने मेरी जो सहायता की, उसके प्रति मे हमेशा कृतज्ञ रहूगा । उन्होने न केवल अनेक स्थानो एव सस्थाओ को देखने का कार्यक्रम वनाया, अपितु कार एव परिवाचिका की सुविधा भी प्रदान की । यो तो जो भी लेखक वाहर से आते है, सघ के पदाधिकारी उनकी पूरी-पूरी मदद करते है, लेकिन भारतीय लेखको के प्रति इनकी विशेष आत्मीयता है ।

दूसरी सस्था है वाक्स । यह भी लेखको की काफी सहायता करती है और साहित्यिक एव सास्कृतिक उत्सव आदि करने मे इसका प्रमुख हाथ रहता है। भारतीय मित्रो के सहयोग से इस सस्था ने मास्को मे अनेक भारतीय सन्तो तथा लेखको की जयन्तिया मनाने की योजना वनाई है । कई जयन्तिया जैसे प्रसाद-जयन्ती, कालिदास-जयती आदि मास्को मे मनाई जा चुकी है ।

हिन्दी की पढाई की ओर रूस के अधिकारियो का ध्यान अधिकाधिक जा रहा है । मास्को, लेनिनग्राड, ताशकन्द के अतिरिक्त अन्य कई स्थानो के कालेजो मे हिन्दी के अध्ययन की व्यवस्था हो गई है । दूसरी जगहो पर भी शीघ्र ही की जा रही है । भाषा के साथ-साथ भारतीय साहित्य का भी प्रवेश होना स्वाभाविक है ।

इसमे कोई सन्देह नही कि रूस मे भारत तथा भारतीय साहित्य की ओर उत्तरोत्तर रुचि बढ रही है, लेकिन सबसे बडी आवश्यकता इस बात की है कि वहां के अधिकारियो को उचित तथा निष्पक्ष मार्ग-दर्शन मिले। उन लोगो मे जिज्ञासा है और वे अपने कार्य-क्षेत्र तथा दृष्टिकोण को व्यापक भी करना चाहते हैं। मास्को लेनिनग्राड तथा अन्य जिन स्थानो मे मैं गया, वहा की विभिन्न साहित्यिक सस्थाओ के अधिकारियो ने कहा कि हमारा ज्ञान सीमित इसलिए है कि जिन भारतीय मित्रो से हमारा सम्पर्क रहा, उन्होने विचार-धारा विशेष के अतिरिक्त अन्य विचार-धाराओ के लेखको तथा उनके साहित्य ने हमारा परिचय नही कराया। पर अब स्थिति बदल रही है, और पारस्परिक आदान-प्रदान की वृद्धि से भारत-सम्बन्धी हमारे ज्ञान मे भी अभिवृद्धि होगी।

रूस के विभिन्न पत्रो में कभी-कभी भारत के समाचार प्रकाशित होते रहते है, लेख और कहानिया आदि भी। 'आग्न्योक' ऐसा ही एक पत्र है। और भी कुछ पत्र है। पर चूकि वे रूसी मे निकलते है, इसलिए उनकी उपयोगिता रूस की परिधि तक ही सीमित है।

: २५ :

रूस की पत्र-पत्रिकाएं

रूस मे मुझे सबसे अधिक असुविधा समाचार-पत्रो के सम्बन्ध मे अनुभव हुई। वहा जितने पत्र निकलते है, उनमे से दो-एक को छोड शेष सब रूसी भाषा मे है। शहर मे घूमते हुए मै प्राय देखता था कि जगह-जगह दीवारो पर बोर्ड लगे है, जिनमे 'प्रावदा', 'इज़वेस्तिया' या अन्य कोई पत्र लगा है और आने-जानेवाले लोगो मे से बहुत-से रुककर उनपर निगाह डालते जाते है। ललचाई आखो से मै उनकी ओर देखता था और कभी-कभी स्वय किसी बोर्ड के सामने खडे होकर कुछ पढने और समझने का प्रयत्न करता था, लेकिन सिवा चित्रो के, यदि वे होते थे तो, और कुछ पल्ले नही पडता था। हा, हफ्ते मे एक बार अग्रेजी का 'मास्को न्यूज' मिल जाता था, लेकिन उसमे खबरे इतनी सक्षिप्त रहती है कि उनसे सतोष नही होता था। पहला स्पूतनिक जब छोडा गया, मै लेनिनग्राड मे था। मास्को लौटा तो देखता हू कि 'मास्को न्यूज' के सारे पन्ने उसीके समाचार मे भरे पडे है। वैज्ञानिको, राजनेताओ, इतिहासकारो तथा विद्वानो के मत देने के साथ-साथ स्पूतनिक के निर्माण तथा उसमे योग देनेवालो का विस्तृत परिचय भी दिया गया था।

रूस मे पत्र-पत्रिकाओ का जाल-सा विछा हुआ है। वहा की जितनी भाषाए है, उन सबमे पत्र निकलते है। इस समय वहा की विभिन्न भाषाओ मे ७२०० से अधिक समाचार-पत्र तथा २००० से अधिक पत्रिकाए प्रकाशित होती है। पत्रिकाओ मे ६० ऐसी है, जिनका प्रकाशन सन् १९५५ मे प्रारभ हुआ है। सन् १९५५ के आकडो के अनुसार समाचार-पत्रो की प्रतिदिन की औसत बिक्री ४ करोड ६० लाख थी।

मास्को से प्रकाशित होनेवाले केन्द्रीय समाचार-पत्रो मे सबसे प्रमुख पत्र है, 'प्रावदा' जिसका प्रकाशन ५ मई १९१२ को शुरू हुआ था। उसकी स्मृति मे ५ मई का दिन आज भी 'प्रेस डे' के रूप मे मनाया जाता है। यह पत्र दैनिक है और सोवियत सघ की कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा प्रकाशित होता है।

मास्को के अलावा रूस के बारह अन्य नगरो से भी वह निकलता है। मास्को मे इस पत्र का विशाल भवन है। सन् १९५५ मे इसकी लगभग ५० लाख प्रतिया छपती थी। बडे आकार मे यह चार पृष्ठ का निकलता है और प्रकाशन के बाद जरा-सी देर में उसका प्रसार सारे शहर मे हो जाता है। यह पत्र वहा बडा लोकप्रिय है। लेकिन मुझे बताया गया कि उसमे मुख्यत रूस की ही खबरे रहती है। इससे रूस के निवासियो को पता चलता है कि उनके देश मे किस क्षेत्र में कहा क्या हो रहा है। मुझे यह भी बताया गया कि सामान्यतया उसमे समाचारो के रोमाचकारी शीर्षक नहीं दिये जाते, बल्कि खबरे सयत ढग से दी जाती है। पार्टी का पत्र होने के कारण वह पार्टी की नीति का प्रतिनिधित्व करता है।

लाखो प्रतिया प्रतिदिन छापने के लिए कितने विशाल साधनो की आवश्यकता पडती होगी, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। 'प्रावदा' के अपने भवन मे छपाई की बडी-बडी मशीनें लगी है, जिनपर मशीनो के विशेषज्ञ काम करते है। पत्र की छपाई बडी साफ-सुथरी होती है।

दूसरा दैनिक पत्र है 'इजवेस्तिया', जो कि सुप्रीम सोवियत के प्रिसीडियम की ओर से निकलता है अर्थात् सरकारी पत्र है। सन् १९१७ से निकल रहा है। सोमवार को बन्द रहता है। इस पत्र को भी बडी लोकप्रियता प्राप्त है और इसकी नीति सरकारी नीति की बोधक होती है।

'त्रुद' ट्रेड यूनियनो की केन्द्रीय परिषद् अर्थात् मजदूर-वर्ग का समाचार-पत्र है। सन् १९२१ से प्रकाशित हो रहा है। इस प्रकार ये तीन पत्र रूस की तीन शक्तियो अर्थात् कम्यूनिस्ट पार्टी, सरकार और मजदूर-वर्ग के पत्र है।

'कोम्सोमोल्स्काया प्रावदा' तरुण कम्यूनिस्ट लीग की केन्द्रीय परिषद् का मुखपत्र है। १९२५ से निकलता है। 'क्रास्नाया-ज्वेज्दा' (लाल सितारा) सोवियत यूनियन के प्रतिरक्षा-मत्रालय की ओर से प्रकाशित होता है। दैनिक-पत्र है, सोमवार की छुट्टी रहती है।

अन्य दैनिक पत्रो मे 'सेल्स्कोये खोज्येस्तवो' कृषि-मत्रालय का पत्र है। 'गुदोक' रेल्वे मत्रालय से निकलता है। पहले का प्रकाशन सन् १९२९ से और दूसरे का १९२० से हो रहा है।

सप्ताह मे दो बार प्रकाशित होनेवाला पत्र है 'मेडितसिन्स्की रैवोतनिक', जो स्वास्थ्य-मंत्रालय का मुखपत्र है। हफ्ते मे तीन बार निकलनेवाले पत्र है—

'प्रोमिशलेनों एकानामिकेश्काया', 'लितरेचर्नाया गाज्येता' तथा 'सोवियेत्स्काया कुल्तूरा'। इनमे पहला उद्योग तथा अर्थशास्त्र से सम्वन्ध रखता है, दूसरा साहित्य से और तीसरा सस्कृति से। 'लितरेचर्नाया गाज्येता' 'सोवियत लेखक सघ' की ओर से सन् १६२६ से निकल रहा है और 'सोवियेत्स्काया कुल्तूरा' को रूस का सास्कृतिक मत्रालय १६५३ से प्रकाशित कर रहा है।

मास्को से निकलनेवाले इन पत्रो के अतिरिक्त लगभग १५० पत्र सोवियत सघो की विभिन्न राजधानियो से तथा ४८०० पत्र नगरो तथा जिलो से निकलते है। ये पत्र अपने-अपने सघो की भाषा मे होते है। यूक्रेन के १००० पत्रो में ८०० पत्र यूक्रेनियन भाषा मे प्रकाशित होते है।

सन् १६५५ मे तरुण कम्युनिस्ट लीग ने तरुणो के लिए १०३ तथा वच्चो और लडकियो के लिए २२ समाचार-पत्र निकालने शुरू किये, जिनमे 'पायोनरस्काया प्रावदा' भी सम्मिलित है। इन पत्रो का उद्देश्य वच्चो तथा युवको को अपने देश की प्रगति की जानकारी देना है।

अग्रेजी के 'मास्को न्यूज' के अतिरिक्त मास्को से एक-एक पत्र फ्रेंच तथा जर्मन मे भी निकलते है।

समाचार-पत्रो को सम्वाद तास (टेलीग्राफ एजेसी ऑव दी सोवियत यूनियन) तथा देश-विदेश के सम्वाददाताओ एव अन्य साधनो से प्राप्त होते है। मजदूरो, किसानो आदि के पत्रो तथा लेखो को भी पत्रो मे स्थान मिलता है।

रूस मे मुद्रित समाचार-पत्रो के अलावा टाइप किये हुए अथवा हाथ से लिखे पत्रो का भी प्रचलन है। वे औद्योगिक केन्द्रो, सामूहिक खेतो, कार्यालयो, स्कूलो आदि मे लगा दिये जाते है। प्रमुख स्थानो पर लगे होने के कारण वे खूब पढे जाते है। ऐसे पत्र महीने मे दो-तीन वार निकलते है। कुछ अधिक वार भी।

मासिको तथा अन्य पत्रो की भी रूस मे कमी नही है। अधिकाश पत्र सामाजिक एव अर्थशास्त्र-सम्वन्धी विषयो को लेकर निकलते है और कुछका सम्वन्ध कला एव साहित्य से रहता है। इन पत्रो मे 'कम्युनिस्ट', 'रेवतनित्सा', 'क्रेस्त्यान्का', 'आग्न्योक' आदि लाखो की सख्या मे छपते है। सन् १६५७ मे मासिको की सख्या ढाई हजार से अधिक थी और वे रूस की ५६ भाषाओ मे निकलते थे। अव तो उनकी सख्या और भी बढ गई होगी।

'आग्न्योक' के कार्यालय मे कई वार जाने का मुझे अवसर मिला। 'प्रावदा

स्ट्रीट' पर 'प्रावदा कार्यालय' के निकट ही उसका ग्राफिस है। पत्र के वैदेशिक सम्पादक एल० चर्न्याव्स्की तथा उनके अनेक सहयोगी मिले। चर्न्याव्स्की भारत मे वडी दिलचस्पी रखते है। उन्होने वताया कि उनके प्रधान सम्पादक श्री सोफरोनोफ भारत हो गये है। यहा वह खूब घूमे और उन्होने अपने पत्र मे प्रकाशित करने के लिए पर्याप्त सामग्री एकत्र की। चर्न्याव्स्की ने यह भी बताया कि वह अपने पत्र 'आग्न्योक' मे ऐसी सामग्री विशेष रूप से देना चाहते है, जिसमे आधुनिक भारत की वहुमुखी प्रगति का चित्र हो। "सामुदायिक योजना, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, उद्योग धधे आदि की दृष्टि से आपके देश मे जो उन्नति हुई है, उसपर हमे कुछ सचित्र लेख दीजिये। हम उन्हे सहर्ष छापेंगे। हमारे देश के लोगो की उनमे वडी दिलचस्पी है।" उन्होंने मुझसे कहा।

मैने उत्तर दिया, "आप जो कहते है, सो ठीक है, पर आप कुछ रचनाए गाधीजी और उनकी विचारधारा पर भी छापिये। विनोबाजी और भूदान-यज्ञ ने हमारे देश मे अद्भुत चेतना उत्पन्न की है। उनके वारे मे भी लेख दीजिये। उससे हमारे देशवासी आपके साथ अधिक निकटता अनुभव करेंगे।"

लेकिन मैने देखा कि उनकी रुचि उनके वताये विषयो मे अधिक थी। वैसे उन्होने कुछ भारतीय लेखको की कहानिया भी समय-समय पर अपने पत्र मे प्रकाशित की है और अव भी करते है, लेकिन उनका खास झुकाव भारत की भौतिक प्रगति से अपने देशवासियो को अवगत कराने की ओर है। वह मानते है कि भारत मे जो काम आज हो रहा है, उसमे यहा के किसानो और मजदूरो का विशेष हाथ है। शायद यही कारण है कि इन चीज़ो को वह अधिक प्रचारित करना चाहते है।

वच्चो के लिए भी वहा कई मासिक पत्र निकलते है। 'गेय पिक्चर्स' छोटी आयु के वालको के लिए वडा उपयोगी पत्र है। उसका रूप-रग वडा आकर्षक रहता है। उसमे मैत्री, ईमादारी, कर्त्तव्य-पालन आदि के वारे मे ऐसे सरल लेख रहते है, जिन्हे वच्चे आसानी से समझ सके। विनोद की भी वहुत-सी चीजे रहती है।

स्कूल जाने की उम्रवाले वच्चो के लिए बड़े महत्व का पत्र है 'मुर्जिलका'। उसमे कहानिया, कविताए तथा रेखा-चित्र रहते है। वडे-वडे और अकर्पक चित्र भी इस पत्र को लोकप्रिय वनाने मे सहायक होते है। वारह से लेकर पन्द्रह वर्ष तक के वालको के लिए 'पायोनर' अच्छा पत्र है। इसमे वालको की सव प्रकार की जिज्ञासा को खुराक देने का प्रयत्न किया जाता है। एक वार मेक्सिम गोर्की ने रूस के

वच्चो से पूछा था, "तुम लोगो के लिए सवसे अधिक रुचिकर क्या है ?" उन्होंने उत्तर दिया, "सवकुछ।" इसका तात्पर्य यह है कि वालको की रुचि किसी एक विषय तक सीमित नही रहती। वे वहुत-सी चीजो के विषय मे जानने को उत्सुक रहते है।

वडो की भाति वच्चो मे भी वहा पढने का वडा शौक है। मुझे यह जानकर आश्चर्य-मिश्रित हर्ष हुआ कि बच्चो का 'पायोनरस्काया प्रावदा' ३० लाख छपता है और 'मुर्जिलका' १० लाख से ऊपर।

सवसे उल्लेखनीय वात यह है कि पत्रो के लेखको तथा सम्पादको के वीच वडी सद्भावना है। सम्पादक रचनाओ को वडे ध्यानपूर्वक पढते है और यदि उन्हे उसमे किसी परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव होती है तो उसे लेखक को समझाते है और लेखक वडी खुशी से उसे कर देते है। इसके अतिरिक्त एक विशेष वात यह भी है कि वडे-से-वडे लेखक भी वच्चो के पत्रो मे वच्चो के लिए लिखते है, क्योकि वे मानते है कि वच्चो के लिए लिखना वडी जिम्मेदारी का काम है।

चूकि वहा कोई विरोधी दल नही है, इसलिए विरोधी पत्र भी नही है, फिर भी पत्रो मे वहा के काम तथा व्यक्तियो की आलोचना भी रहती है। उस आलोचना पर अधिकारी लोग गभीरतापूर्वक विचार करते है और जहा कही दोष रहता है, उसे दूर करने का प्रयत्न करते है।

रूस के सारे पत्र राज्य की सम्पत्ति नही है। उनका प्रकाशन विभिन्न जन-सगठनो जैसे कम्यूनिस्ट पार्टी, ट्रेड यूनियन, लेखक-सघ आदि के द्वारा होता है। कुछ पत्र मत्रालयो की ओर से निकलते है।

रूस मे एक ही विचार-धारा है और सारे पत्रो का एक ही उद्देश्य है—उस विचार-धारा को प्रोत्साहन देना, उसका प्रचार करना। यह देखकर वडा आश्चर्य होता है कि एक ही लीक पर करोडो चेतन व्यक्तियो को कैसे चलाया जा सकता है। सच वात यह है कि वहा की प्रत्येक वस्तु लोगो को अपनी एक ही विचार-धारा के प्रति निष्ठावान् वनने की प्रेरणा देती है।

मास्को का सवसे वडा प्रेस प्रावदा प्रेस है। उसकी स्थापना सन् १९३४ मे हुई। 'प्रावदा' के अतिरिक्त और भी अनेक पत्र-पत्रिकाए उसमे छपती है। प्रेस मे लग-भग चार दर्जन लाइनो टाइप मशीनें है और छपाई के लिए करीव दो दर्जनें रोटरी मशीनें है, जो तीन घटे मे २०-२५ लाख प्रतिया छापकर और तह करके निकाल देती है। प्रेस मे अधिकाशत महिलाए काम करती है।

: २६ :

यातायात के साधन

मास्को मे आवागमन के साधन बहुत ही सुविधाजनक है। सारे नगर मे सुरग की रेलो—मीत्रो, बिजली से चलनेवाली ट्राली बसो और ट्रामो तथा टैक्सियो एव बसो का जाल बिछा हुआ है। क्या मजाल कि आपको पाच मिनट भी कही प्रतीक्षा करनी पडे। लम्बी-से-लम्बी कतारे देखते-देखते समाप्त हो जाती है। रात के दो घटो (एक बजे से तीन तक) को छोडकर सवारिया वहा बराबर चलती रहती है।

यातायात की यह सुविधा पिछले तीस वर्षो के भीतर हुई है। उससे पहले वहा केवल ट्राम और घोडा-गाडिया चलती थी। आज घोडा-गाडिया मुश्किल से दीख पडती है और उनका उपयोग मुख्यत. माल ढोने के लिए किया जाता है।

आवागमन सबसे अधिक ट्रामो द्वारा होता है, क्योकि विकसित होते-होते वे आज

समय निकालकर मीत्रो देखने गया। वास्तव मे उसकी जैसी ख्याति सुनी थी, वैसा ही उसे पाया। वाद मे पेरिस, लदन और जर्मनी की सुरग की रेले देखकर यह धारणा और भी पुष्ट हुई कि मास्को की मीत्रो की वरावरी कोई नही कर सकता। मास्को मे जहा-जहा मीत्रो के स्टेशन है, वहा-वहा ऊपर एक इमारत वनी हुई है, जिसके वाहर M चिह्न वना हुआ है। रात मे वह लाल प्रकाश से दहकते अगारे की तरह चमकता रहता है, जिससे यात्रियो को दूर से ही पता चल जाता है कि वहापर मीत्रो का स्टेशन है। अदर टिकट की व्यवस्था है। टिकट लेने के पश्चात् सीढियो पर जाने से पहले एक घूमनेवाला अथवा रोकदार गेट होता है, जहा टिकट जाचनेवाली महिला खडी रहती है। उसे टिकट दिखाने के वाद आप विजली से चलती सीढियो पर, जिन्हे ऐक्सकलेटर कहते है, जाकर खडे हो जाइये। सीढियो को वरावर चलते देखकर शुरू मे थोडा डर-सा लगता है, खासकर पहली सीढी पर पैर रखने और तीन-चार सीढियो के चलकर सभलने तक और अत मे आखिरी तीन-चार सीढियो को पार करने तक, लेकिन दो-चार वार उनपर चल लेने के वाद फिर कुछ नही लगता। जरा अभ्यास हुआ कि फिर तो खडे होकर निश्चिंत भाव से कोई चीज़ पढ सकते है, अथवा आराम से इधर-उधर की कला या यात्रियो की चहल-पहल को देख सकते है। हर जगह सीढियो की कम-से-कम दो कतारें होती है। एक ऊपर से नीचे जानेवाली, दूसरी नीचे से ऊपर आनेवाली। जिन्हे जल्दी होती है, या जो तेज चलने के अभ्यस्त होते है, वे स्वय भी चलकर तेजी से उतर जाते है। लेकिन सामान्यतया उतावली दिखानेवाले कम ही लोग पाये जाते है। सीढियो के दोनो ओर ऊपर से नीचे तक लकडी के लम्बे चिकने हत्थे लगे रहते है। जानेवाले लोग वाऍ हाथ की ओर हत्थे पर हाथ टिकाकर खडे हो जाते है। उनके खडे होने के वाद सीढियो पर इतनी जगह वची रहती है कि पीछे से कोई जल्दी-जल्दी उतरे तो उसे रुकावट नही होती।

जिन-जिन देशो मे सुरग की रेलें है, उन-उनमे इसी प्रकार की विजली से चलनेवाली सीढिया है। यदि ये सीढिया न होती तो कल्पना कीजिये कि भूमि के अदर इतनी निचाई पर चलनेवाली रेलो तक पहुचने और फिर वाहर आने मे लोगो को कितना परिश्रम करना पडता और कितनी उनकी शक्ति और समय खर्च होता!

पेरिस, लदन, जर्मनी आदि की तुलना मे सवसे अधिक सुविधाजनक और

अच्छी सीढिया मास्को की है। उनमे न तो झटका लगता है और न किसी प्रकार की आवाज होती है। शायद इसका कारण यह है कि अन्य देशो की तुलना मे मास्को की सीढिया नई है और उनमे सामान भी अच्छी किस्म का लगा है।

सीढिया उतरने के बाद नीचे प्लेटफार्म पर पहुच जाते है। मास्को के प्लेटफार्म सफाई की दृष्टि से तो बेजोड है ही, कला तथा सुरुचिपूर्णता की दृष्टि से भी बडे सुन्दर है। प्लेटफार्म पर खडे होकर बिजली के सुहावने प्रकाश और समशीतोष्ण वायु मे ऐसा प्रतीत होता है, मानो किसी कला-भवन मे पहुच गये है। ऊपर से हवा आने की व्यवस्था होने के कारण ऐसा नही लगता कि किसी तहखाने मे जा पहुचे है। हर स्टेशन की अपनी अलग कला है। सबमे सगमरमर की दीवारे और स्तम्भ है और उनकी सजावट निकट के क्षेत्र की विशेपता के आधार पर की गई है। उदाहरण के लिए प्लोश्चद स्वर्टलोवा स्टेशन को लीजिये। चूकि वह नगर के विशिष्ट थियेटर-भवनो के निकट है, इसलिए उस स्टेशन पर थियेटर से सम्बन्धित अलकरण दिये गए है। लेकिन उसके निकट का प्लोश्चद रिवोल्यूत्सी स्टेशन एकदम भिन्न है। वह बडा सादा है और उसकी महरावें गहरे लाल पत्थर की है। कुछ स्टेशन रूस के महापुरुषो की विशाल मूर्त्तियो से अलकृत है तो दूसरो पर दूसरे प्रकार की कलाकृतिया उत्कीर्ण है। नोवोकुज्नेत्स्काया स्टेशन पर युद्ध के दृश्य दिखाये गए है और रूस के सुविख्यात सिपहसालारो की मूर्त्तियो से उन्हे सजाया गया है।

रेलगाडिया भी बडी साफ-सुथरी और आरामदेह है। नीचे यातायात की रुकावट न होने के कारण वे खूब तेज चलती है। एक सुरंग रेलो के आने के लिए होती है, दूसरी जाने के लिए। गाडियो की सीटे बडी आरामदेह है और उनमे एक ही दर्जा होता है।

मास्को मे मेट्रो की तीन लम्बी लाइने है और चौथी वृत्ताकार है। कुल मिलाकर उनका विस्तार ६५ किलोमीटर है।

पहली लाइन है सोकोल्निकी स्पोर्तिवनाया, जो कि नगर मे उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर जाती है। उसके स्टेशन है—सोकोल्निकी, क्रास्नोसेल्स्काया, कोम्सोमोल्स्काया, क्रास्निये वोरोता, किरोव्स्काया, जेर्जिन्स्काया कागानोविच स्टेशन, बिबलियोतेका इमेनी लेनिना, क्रोपाटकिन्स्काया, पार्क कुल्तूरी, फ्रुन्जेन्स्काया और स्पोर्तिवनाया।

दूसरी लाइन है पर्वोमिस्काया कीव्स्काया, जो पूर्व से पश्चिम को जाती है।

उसके स्टेशन है—इज़मेलोव्स्काया, स्तालिन्स्काया, इलेक्त्रा जवोदस्काया, बौमेन्स्काया, कुर्स्काया, प्लोश्चद रिवोल्यूत्सी, अरवत्स्काया और स्मोलेन्स्काया।

तीसरी लाइन है सोकोल-अवतोज़्वोदस्काया, जो उत्तर-पश्चिम से दक्षिण को जाती है। उसके स्टेशन है—एरोपोर्त, डाइनेमो, वेलोरस्काया, मायाकोव्स्काया, प्लोश्चद स्वर्डलोवा, नोवो कुज़नेत्स्काया और पेवलेत्स्काया।

वृत्ताकार लाइन के स्टेशन है—पार्क कुल्तूरी, कोल्त्सेवाया, केलूज़्स्काया, सर्पूकोव्स्काया, पेवलेस्काया, तैगन्स्काया, कुर्सकाया-कोल्त्सेवाया, कोम्सोमोल्स्काया, वेलोरस्काया-कोल्त्सेवाया, क्रैस्नोप्रेस्नन्स्काया और कीव्स्काया-कोल्त्सेवाया।

प्रत्येक लाइन की लम्बाई ११ से २० किलोमीटर (७ से १३ मील) के वीच है और उसे तय करने मे १७ से ३० मिनट तक लगते है।

हर गाडी मे ६ या ८ डिब्बे होते है और वे १ मिनट ५ या ७ सैकिन्ड के अतर से चलती है, अर्थात् एक घटे मे तीस से लेकर चालीस गाडिया दौडती है। हर डिब्बे मे ५२ मुसाफिरो के वैठने का स्थान होता है और १२० के खडे होने का। लगभग ३० लाख व्यक्ति प्रतिदिन मीत्रो द्वारा आते-जाते है।

भाडा ८ कोपक प्रति किलोमीटर के हिसाव से लगता है, वस का १७, ट्राली बस का १५ और ट्राम का ६ कोपक लगता है। बहुत-से लोग एक साथ टिकटो की कापिया खरीद लेते है, जिनसे कुछ किफायत हो जाती है। महीनेदारी पासो की भी व्यवस्था है।

अभी तीन और लाइनें तैयार हो रही है। इन तीनो के तैयार होने पर शहर के वहुत वडे भाग मे मीत्रो का जाल विछ जायगा।

यात्रियो के चढने-उतरने के लिए रेल, ट्राम, वस आदि मे दो दरवाजे होते है। कडक्टर के सकेत करते ही ड्राइवर अपने स्थान पर वैठा हुआ पुर्जे को घुमाकर उन्हे वन्द कर देता है। जल्दी मे वन्द होने के कारण किसी यात्री का हाथ-पैर फसकर चोट न खा जाय, इसलिए दो ओर से आनेवाली किवाडो के वीच मे रवर लगी रहती है। इस प्रसग मे मुझे एक घटना याद आ रही है। एक दिन मै कही जा रहा था। मेरे साथ नीना नाम की परिव्राचिका थी। हम लोग वस पर सवार हुए, लेकिन नीना ने अचानक कन्डक्टर से पूछा तो पता चला कि हम गलत गाडी मे सवार हो गये है। नीना ने मुझसे कहा, "जल्दी से उतरो।" मै उतरा और वाहर पहुच गया। मेरे पीछे नीना उतरी। सयोग से, उसका एक पैर गाडी के अन्दर था कि दरवाजा

वन्द हो गया । वेचारी हाथो के वल नीचे गिरी । जरा कल्पना कीजिये उसकी हालत की । एक पैर किवाडो के वीच अटका था, जिसे वह गिरी हुई हालत मे खीचने का असफल प्रयास कर रही थी । यात्रियो ने यह देखा तो एकदम चिल्लाये । ड्राइवर ने झट द्वार खोल दिया। पैर वाहर निकल आया । उसके कोई खास चोट तो नही आई, लेकिन किवाडो के वीच दव जाने से टाग मे दर्द तो हो ही गया । उसने दवे हुए स्थान को खूव मला, फिर भी वेचारी कुछ दूर तक लगडाकर चलती रही । ऐसी घटनाए सामान्यतया कम ही होती है ।

नगर के यातायात के इन साधनो के अलावा मास्को मे ९ रेल्वे स्टेशन है, जहा से विभिन्न स्थानो को गाडिया जाती है । लेनिनग्राड, व्लाडीवोस्तक, कजान, स्टालिनग्राड, अजरवेजान, जार्जिया, गोर्की, उक्रेन आदि-आदि सभीके लिए रेल की सुविधा है। रेल के अलावा वसे भी विभिन्न नगरो को जाती है । सडके और वसें अच्छी होने के कारण वहुत-से लोग वसो से जाना पसद करते है ।

माल ढोने मे मास्को-नहर तथा वोल्गा-दोन नहर वडी सहायक है। उन्होने मास्को नगरी को श्वेत, वाल्टिक, केस्पियन, आजोव तथा काला सागरो से जोड दिया है। इन नहरो मे स्टीमर वड़े आराम से चलते है और उनके द्वारा विभिन्न नगरो के साथ माल का आयात-निर्यात होता रहता है । नगर मे तीन वदरगाह है, उत्तरी, पश्चिमी और दक्षिणी । सामान लादने, उतारने आदि की आधुनिक सुविधाओ से ये तीनो ही वदरगाह सुसज्जित है ।

इतना वडा देश विना हवाई यातायात के कैसे काम चला सकता है ? मास्को से अपने देश के विभिन्न नगरो को ही नही, अन्य देशो को भी हवाई जहाज आते-जाते है । शहर मे दो हवाई अड्डे है । वाईकोवो, जो नगर से दक्षिण-पूर्व मे ३२ किलो-मीटर पर है । व्नूकोवो, जो दक्षिण-पश्चिम मे २४ किलोमीटर पर है । मास्को से वुखारेस्ट, सोफिया, तिराना, वलिन, वेल्ग्रेड, वूडापेस्ट, वारसा, प्राग्, वियना, हेलसिंकी, कोपनहेगन, स्टाकहोम, कावुल, उलान-वेटर, पीकिंग तथा पयोंग्याग के लिए सीधी लाइने है। पेरिस जाने के लिए प्राग् पर विमान वदलना पडता है। अव तो दिल्ली और मास्को के वीच भी सीधी हवाई सर्विस की व्यवस्था हो गई है। जेट विमानों का भी उपयोग होने लगा है। मास्को से चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग् मे जेट से ही गया था और मास्को से लौटते समय ताशकन्द तक की यात्रा जेट विमान मे ही की ।

: २७ :

सर्वोच्च सम्मान और पुरस्कार

अपने देश के चतुर्मुखी निर्माण के लिए रूस का शासन वडा ही सजग है। वह अपने नागरिको को राष्ट्र की अभिवृद्धि के लिए न केवल आवश्यक साधन प्रदान करता है, अपितु उनकी सेवाओ को सार्वजनिक रूप से सम्मानित भी करता है। जो कोई व्यक्ति अथवा सस्था लोक-कल्याण का महत्वपूर्ण कार्य करती है, राज्य उसे राष्ट्रीय सम्मान, जैसे उपाधि, पदक, पुरस्कार आदि से विभूषित करता है। वैसे प्रत्येक स्वाधीन-चेता राष्ट्र अपना कर्तव्य मानता है कि वह अपने देश के उन्नायकों एव महान् सेवको को उचित सम्मान और गौरव से मडित करे। कहने की आवश्यकता नही कि इससे कृतज्ञता-प्रकाशन का तो अवसर प्राप्त होता ही है, दूसरे लोगो को भी सेवा की प्रेरणा मिलती है। यह ठीक है कि सेवा का वदला नही चुकाया जा सकता, लेकिन यह भी सही है कि अपने महान् सेवको को मान देकर कोई भी राष्ट्र अपनेको ही गौरवान्वित करता है।

छोटे-वडे प्राय सभी स्वतन्त्र देशो मे पुरस्कार तथा उपाधिया देने की परिपाटी प्रचलित है। हमारे अपने देश मे भी ऐसा होता है। अग्रेजो के जमाने मे लोगो को खिताव मिलते थे, देश के स्वतन्त्र होने के वाद नई उपाधिया चालू की गई है और वे विभिन्न क्षेत्रो मे की गई महत्वपूर्ण सेवाओ के उपलक्ष मे दी जाती है।

रूस मे पदक, पुरस्कार तथा उपाधिया देने का खूव प्रचलन है। वहा के शासको के सामने दो चीजें मुख्य रूप से रहती हैं। एक तो यह कि उनके देश के हर क्षेत्र—आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक आदि-आदि—मे काम करनेवालो का हौसला वढता रहे, उन्हे अधिकाधिक सेवा करने की प्रेरणा मिलती रहे, दूसरी यह कि उनका शाति का सदेश सारे ससार मे फैले और उस दृष्टि से जिस व्यक्ति की उल्लेखयोग्य सेवाए हो, उसे सम्मानित किया जाय। इस तरह रूस मे दो प्रकार के सम्मान हैं—राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय। सवसे पहले

हम राष्ट्रीय सम्मानो अर्थात् रूस के नागरिको अथवा सस्थाओ को दिये जानेवाले पुरस्कारों और उपाधियो की चर्चा करेंगे।

सोवियत राज्य की स्थापना के प्रारम्भिक काल मे दो आर्डर स्थापित किये गये थे। सैनिक कौशल के लिए 'आर्डर ऑव रैड बैनर' और श्रम-सबधी उपलब्धियो के लिए 'आर्डर ऑव दी रैड बैनर ऑव लेबर'। तत्पश्चात 'आर्डर ऑव लेनिन' प्रारभ किया गया और आज रूस की वही सर्वोच्च उपाधि है। इनके अलावा और भी कई उपाधिया रूस के अध्यक्ष-मण्डल के ऐलानो द्वारा प्रदान की जाती है।

उपाधियो के अतिरिक्त २७ विभिन्न प्रकार के पदक रक्खे गये है, जो श्रम, युद्ध तथा वीरता आदि की दृष्टि से की गई सेवाओं के उपलक्ष्य मे दिये जाते है।

पिछले पच्चीस वर्षों मे उद्योग, कृषि, परिवहन, सस्कृति, विज्ञान आदि के क्षेत्रों मे २० लाख व्यक्तियो एव सस्थाओ को ये आर्डर अथवा पदक मिल चुके है। हमने कई ऐसी सस्थाए देखी, जिन्हें 'आर्डर ऑव लेनिन' प्राप्त हो चुका था। उन सस्थाओ को अपनी उपाधियो को पूरा आदर और गौरव देते देखकर हमें वडी खुशी हुई और हमने अनुभव किया कि उपाधिया वहा सचमुच प्रेरणा देती है।

इन सम्मानो के अतिरिक्त विज्ञान, इजीनियरिंग, कृषि, चिकित्सा-विज्ञान और समाज-विज्ञान के क्षेत्रो में महत्वपूर्ण सेवाओ के लिए सन् १६२५ मे 'वी० आई० लेनिन पुरस्कार' प्रारभ किये गए थे, जो दस वर्ष तक चालू रहे। सन् १६५६ से उन्हे फिर से देना शुरू कर दिया। ये पुरस्कार विज्ञान, इंजीनियरिंग, कला, साहित्य आदि पर वर्ष मे एक वार २२ अप्रैल को, लेनिन के जन्म-दिवस पर, दिये जाते है।

रूस के जिस पुरस्कार से सारी दुनिया परिचित है, वह है 'अन्तर्राष्ट्रीय लेनिन शान्ति पुरस्कार'। पहले इस पुरस्कार का नाम स्टालिन के नाम के साथ जुड़ा हुआ था, लेकिन ८ सितम्बर १६५६ को रूस के अध्यक्ष-मण्डल ने एक ऐलान द्वारा उसका नाम बदलकर लेनिन के नाम पर रख दिया। ऐसे दस पुरस्कार हर साल दिये जाते हैं। शान्ति की रक्षा और दृढता के लिए चलनेवाले सघर्षों मे महत्वपूर्ण योगदान देने के उपलक्ष में किसी भी देश के नागरिक को ये पुरस्कार दिये जा सकते हैं। पुरस्कार प्राप्त करनेवाले को एक स्वर्णपदक तथा एक लाख रूवल नक़द दिये जाते हैं। पुरस्कारों का निर्णय करने के लिए एक विशेष समिति है।

सन् १६५० से लेकर अवतक फ्रांस, चीन, इटली, ब्रिटेन, जापान, स्विट्जरलैण्ड, इडोनेशिया, फिनलैण्ड, नार्वे, स्वीडन, जर्मनी, सीरिया, अमरीका आदि-आदि

वीसियो देशो के निवासियो को ये पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। भारत में भी सन् १९५२ मे यह पुरस्कार डा० सैफुद्दीन किचलू और सन् १९५३ में श्री नवाबसिंह सोखी को मिला था। अन्य देशो के पुरस्कृत सम्माननीय व्यक्तियो मे मेडम सनयात सेन, इकुओ ओयामा, इलिया एहरनवुर्ग प्रभृति के नाम विशेष रूप से उल्लेख-योग्य है।

जहातक आतरिक सम्मानों की वात है, इसमे कोई सदेह नही कि उनकी उपयोगिता है और उनके द्वारा रूस के निवासियो तथा सस्थाओ को पर्याप्त प्रोत्सा-हन भी मिल रहा है, लेकिन अतर्राष्ट्रीय शाति-पुरस्कार के सवध मे इस स्पष्ट घोषणा के वावजूद कि वह विना किसी राजनैतिक मान्यता एव जाति तथा विश्वास के भेद-भाव के किसी भी देश के नागरिक को प्रदान किया जा सकता है, उसके चुनाव के पीछे साम्यवादी विचार-धारा का रग रहता है। यदि ऐसा न होता तो अवतक इस पुरस्कार का क्षेत्र और लोकप्रियता वहुत व्यापक हो गई होती। प्रेम और शाति के आधार पर सारे ससार के राष्ट्रो को एक-दूसरे के निकट लाने मे गाधीजी से वढकर किसकी सेवाए होगी? लेकिन इस पुरस्कार के लिए उन्हें योग्य नही समझा गया। इसके राजनैतिक कारणो मे हम नही जाना चाहते, लेकिन इसमे सदेह नही कि पुरस्कार के घोषित उद्देश्यो को देखते हुए उसके लिए उपयुक्त व्यक्तियो की सूची मे गाधीजी का नाम सवसे ऊपर होना चाहिए था। किसी भी पुरस्कार से गाधीजी का गौरव तो भला क्या वढना था, वह पुरस्कारो से वहुत ऊचे थे, लेकिन फिर भी इस पुरस्कार को उचित दर्जा दिलाने मे इससे वडी सहायता मिल सकती थी। यह तो रही हमारे देश की वात। अन्य देशो मे भी ऐसे अनेक व्यक्ति हुए है और है, जिनकी सेवाए मानव-जाति के इतिहास मे चिरस्मरणीय रहेंगी। उनको पुरस्कार देकर रूस न केवल अपनी उदारता का परिचय देता, अपितु इस पुरस्कार की ओर अतर्राष्ट्रीय जगत मे कही अधिक आदर और आकर्षण वढ जाता। हम आशा करें कि अन्य देशो के साथ सम्पर्कों मे वृद्धि होने से रूस की सकीर्ण दीवारे टूटेंगी और अन्य विचार-धाराओ तथा विश्वासो के प्रति वहा के निवासियो का दृष्टिकोण अधिक व्यापक वनेगा?

: २८ :

स्त्री-बच्चों का संरक्षण

रूस के पास सबसे बडी दौलत उसके इसान है और इसमे सदेह नही कि वहा का शासन अपनी इस निधि का सरक्षण बहुत ही सावधानी से करता है । हम पहले ही बता चुके है कि द्वितीय महायुद्ध मे वहा के ढाई करोड आदमी मारे गये थे । अतः आज सारे देश मे स्त्रिया की बहुतायत है । प्राय सभी विभागो मे स्त्रिया ही काम करती दिखाई देती है । राज्य की ओर से पुरुषो और स्त्रियो के बीच कोई भेद-भाव नही किया जाता—न नौकरियो मे, न वेतन मे, न और किसी चीज मे । इतना ही नही, बल्कि कुछ मामलो मे पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियो को अधिक सुविधाए दी जाती है ।

गर्भवती स्त्रिया की समय-समय पर जाच करने और उन्हे आवश्यक परामर्श देने के लिए अनेक केन्द्र है । प्रसूति के लिए प्रसूति-गृह है । बच्चा होने के ५६ दिन पहले से स्त्रियो को काम से छुट्टी मिल जाती है, जो ५६ दिन बाद तक चलती है । जरूरत पडने पर वह छुट्टी बढाई भी जा सकती है । कहने का तात्पर्य यह कि जबतक स्त्री काम करने योग्य नही हो जाती तबतक काम पर जाने के लिए वह विवश नही होती ।

गर्भवती माताओं के नाम तत्काल सलाह-केन्द्रों मे दर्ज कर लिये जाते है । ये केन्द्र प्रसूति और बाद मे उनके बच्चों की डाक्टरी देखभाल करते रहते है । ९५ फीसदी के लगभग बच्चे प्रसूति-गृहो मे पैदा होते है । मेरे मेजबान भाई मेघालाल की पत्नी को जापे के लिए प्रसूति-गृह मे भरती कराया गया था । मेघालालजी रोज शाम को उनके समाचार लेने तथा उनकी जरूरत की चीजें पहुचाने जाते थे । एक दिन मैं भी उनके साथ गया । प्रसूति-गृह की सफाई आदि देखकर बडी प्रसन्नता हुई । पूछने पर मालूम हुआ कि वहा पर एक पैसा भी खर्च नही पडता, बल्कि सरकार की ओर से हर बच्चे की मा को कुछ पैसा देता है । कोई बच्चे के होने से

वाद से कुछ मासिक भत्ता भी मिलता है । हमे वताया गया कि युद्ध के वाद पाच वर्षो मे सरकार की ओर से इस प्रकार के भत्ते के रूप मे १४८० करोड रूवल दिये गए थे ।

स्त्री-वच्चो के स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रक्खा जाता है। यहा मुझे एक प्रसग याद आता है। मास्को-स्थित भारतीय दूतावास के एक अधिकारी महोदय के यहा कोई रूसी लडकी काम करती थी। किसीने दूतावास के निकट के चिकित्सा-केन्द्र को सूचना दी कि उस लडकी का स्वास्थ्य गिरता जा रहा है और वह वहुत दुवली हो गई है। परिणाम यह हुआ कि अधिकारी महोदय के पास सूचना आई कि उस लडकी को अमुक दिन केन्द्र मे आकर अपनी जाच करानी चाहिए। लडकी घर का छोटा-मोटा काम, जैसे सफाई आदि करती थी। वह केन्द्र मे गई, वहा उसकी जाच हुई और उसे वास्तव मे अस्वस्थ पाने पर उसकी चिकित्सा की गई। जव वह पूर्णतया स्वस्थ हो गई तो उसे स्वस्थता का प्रमाण-पत्र देकर पुन काम पर भेज दिया गया। उसने काम शुरू कर दिया। उसके कुछ ही दिन वाद जिस इलाके मे वह रहती थी, वहा के चिकित्सा-केन्द्र की सूचना आई कि उन्हे मालूम हुआ है, वह लडकी वीमार है और उसे अमुक तारीख को केन्द्र मे उपस्थित होना चाहिए। घरेलू कर्मचारी का रोज़-रोज गैरहाजिर होना किसी भी व्यक्ति को भारी पड सकता है। फलत अधिकारी महोदय, विशेषकर उनकी पत्नी वडी झुझलाई। उनका कहना था कि जव उस लडकी को उसकी शारीरिक योग्यता का एक चिकित्सा-केन्द्र ने प्रमाण-पत्र दे दिया है तो दूसरे केन्द्र मे उसके जाने की कोई आवश्यकता नही है। केन्द्रवाले कहते थे कि चूकि वह उनके क्षेत्र मे रहती है, इस-लिए जवतक वे स्वय उसे नही देख लेंगे, तवतक वे नही मानेंगे। वात काफी वढ गई, पर अन्त मे उस लडकी को जाना पडा। सभवत उसे वहा रहने की ज़रूरत नही पडी, पर अधिकारी लोग अपने कर्त्तव्य का पालन करके ही माने।

एक मामूली घरेलू कर्मचारी थी वह, पर शासन ने उसके मामले मे भी पूरी सावधानी वरती। इसके दो कारण हो सकते है। एक तो यह कि वे अपने किसी भी नागरिक को, जहातक उनका वस चलता है, वीमार वर्दाश्त नही करते, दूसरे यह कि एक के वीमार होने से दूसरो का स्वास्थ्य खतरे मे पडता है, इसे वे गभी-रता से देखते है। यह नही कि लोग वहा वीमार न पडते हो, यह भी नही कि सव ठीक ही हो जाते हो और कोई मरता न हो, लेकिन सच वात यह है कि कोई भी

व्यक्ति दवा-दारू के अभाव मे यातना नही भोगता।

शारीरिक अथवा मानसिक क्षमता मे स्त्रिया पुरुषो से पीछे नही है, वल्कि यह कहना अधिक सही होगा कि शरीर-श्रम के काम स्त्रिया अधिक करती है। सवेरे ही बाजार से साग-भाजी खरीदने का काम मुख्यत स्त्रियो के ही जिम्मे रहता है। वोझी (पोर्टर) वहा मिलते नही है। इसलिए थैलो मे ठसाठस सामान भरकर, काफी वोझ लेकर, स्त्रिया सपाटे-से घर लौटती देखी जा सकती है। अधिक वेतन पानेवाले व्यक्ति की घरवाली भी सामान लादकर लाने मे कोई हीन भाव अनुभव नही करती। इसी प्रकार किसी बडे पद पर काम करनेवाली स्त्री अपने अधीन छोटा काम करनेवाले मर्द को हेय दृष्टि से नही देखती। वह जानती है कि हर काम का अपना महत्व है और वह दूसरे कामो का पूरक है।

स्त्रियो की भाति वच्चो की भी देखभाल वहा वडी चिन्ता से की जाती है। उनके स्वास्थ्य की जाच करने के लिए पृथक चिकित्सा-केन्द्र है और शिक्षा के लिए शिक्षा-सस्थाए। मा जब काम पर जाती है तो वह अपने तीन वर्ष तक के बच्चे को शिशु-पालन-गृह मे छोड जाती है। ३ साल से ७ साल तक की उम्र का बच्चा किंडरगार्टन मे जाता है। दोनो ही मे अध्यापन की शिक्षा प्राप्त नर्सें बच्चो की देखभाल करती है। उनके स्वास्थ्य और शारीरिक विकास का विशेष रूप से ध्यान रक्खा जाता है।

शिशु-गृह तथा किंडरगार्टन मे वच्चो पर जो खर्च आता है, उसका अधिकाश भाग सरकार उठाती है। इस प्रकार न केवल मा निश्चिन्त होकर अपने काम पर चली जाती है, अपितु वच्चो को भी स्वस्थ वायु-मण्डल मे विकास का अवसर मिल जाता है। इन सस्थाओ मे लाखो छोटे-वड़े वालक पालन-पोषण तथा शिक्षा की सुविधा का लाभ लेते है।

वच्चो को और अधिक सुविधाए किस प्रकार मिल सकती है, उनके स्वास्थ्य और शारीरिक विकास की गति को कैसे वढाया जा सकता है, उनकी शिक्षा और अधिक उपयोगी किस प्रकार हो सकती है, आदि-आदि वातो पर वरावर अनुसधान होते रहते है।

वालको की दृष्टि से रूस का 'यग पायोनियर' आदोलन वड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ है। 'यग पायोनियर' उन स्कूली वच्चो को कहा जाता है, जो 'लेनिन यग पायोनियर्स' नामक सस्था के सदस्य होते है। यह सस्था किशोरो का जन-सगठन

है और उनमे ६ से १४ वर्ष तक की आयु के बालक-बालिकाए शामिल हो सकते है। वे अपने आचरण से और अपने अध्ययन से स्कूल के अन्य बच्चो के सामने आदर्श उपस्थित करते है। 'यग पायोनियर्स' के विभिन्न क्लब है, भवन है, पार्क है और फार्म है।

गरमियो के दिनो मे उनके लिए स्थान-स्थान पर शिविरो का आयोजन किया जाता है। इन शिविरो के कारण बच्चो को अपना पूरा देश देखने का अवसर मिल जाता है, साथ ही बहुत-सी चीजो की व्यावहारिक शिक्षा भी। शिविरों मे बच्चे साथ-साथ रहते है तो सामूहिक रूप से रहने और काम करने की शिक्षा उन्हे अनायास मिल जाती है।

१४ से २६ वर्ष तक की आयु के लिए 'यग कम्यूनिस्ट लीग' है, जिसका सक्षिप्त नाम 'कोम्सोमोल' है। यह सगठन युवको के अनुशासन और विकास की दृष्टि से बडे काम का है। उसका जाल सारे देश मे फैला हुआ है। फैक्टरियो, स्कूलो, सामूहिक खेतो आदि सबमे इस सगठन के केन्द्र है। लगभग १ करोड ८० लाख से अधिक इसके सदस्य है।

युवको मे सेवा की भावना उत्पन्न और विकसित करना, श्रम के प्रति प्रेम पैदा करना, उन्नत विज्ञान, इजीनियरिंग आदि की जानकारी और राष्ट्रीय अर्थ-तत्र तथा सस्कृति के सभी क्षेत्रो मे उस जानकारी का व्यावहारिक अमल, ये तथा अन्य ऐसी ही बातें है, जिनपर 'कोम्सोमोल' का विशेष ध्यान रहता है।

इस सगठन की वहा के राष्ट्रीय जीवन मे बडी प्रतिष्ठा है। उसके अपने क्लब है, पुस्तकालय हैं, प्रकाशन-गृह है और अपनी पत्र-पत्रिकाए है। यह सस्था जहा युवको के हितो का सरक्षण करती है, वहा उन्हे देश के अभ्युदय मे अपनी सर्वोत्तम देन देने की प्रेरणा भी देती है।

कहा जाता है कि बच्चो के लालन-पालन तथा उनके शारीरिक विकास की सर्वोत्तम व्यवस्था रूस मे है। इसमे कोई शक नही कि मुझे रूस के बच्चो के समान स्वस्थ बच्चे किसी भी अन्य देश के, जहा-जहा मै गया, नही दिखाई दिये। उनके चेहरे गुलाब के फूल जैसे खिले रहते है और गालो की स्वाभाविक लाली उनके स्वास्थ्य का परिचय देती है। सुबह-शाम हजारो बच्चो को आप घरो के कृत्रिम तापमान के बाहर खुले मैदानो और पार्कों मे खेलते पावेंगे। शीत अधिक होता है तो उन्हे खूब कपडे पहना दिये जाते है। बदर-टोपी, जिसे वे 'शपका' कहते है,

पहनाने का वहा बहुत रिवाज है। उससे सिर, कान और गर्दन तक की रक्षा हो जाती है। उस काली टोपी के पहन लेने के वाद वच्चो के गोरे चेहरे और भी आकर्षक लगते है। वडे-वडो का उनके साथ खेलने और उन्हे प्यार करने को जी मचल उठता है।

वच्चो के मनोरजन तथा मानसिक विकास के लिए अनेक सास्कृतिक केन्द्र है। उनके सिनेमा-घर है, थियेटर है, अनुसधान-शालाएं है। शासको की वरावर कोशिश रहती है कि वालको का, जिनके ऊपर देश का भविष्य निर्भर करता है, सर्वांगीण विकास हो और वे अच्छी तरह से शारीरिक तथा मानसिक क्षमता प्राप्त करके राष्ट्र के सुयोग्य नागरिक वनें।

यह ठीक है कि वहा की शिक्षा एकागी है और वह वचपन से ही लोगो को एक खास साचे मे ढालती है, फिर भी मानना होगा कि वहा के बच्चे वडे ही तन्दुरुस्त, लगनवाले और मेहनती है।

: २९ :

लेनिनग्राड में

मास्को मे एक महीने रहने के उपरान्त मै यूरोप के अन्य देश देखने चला गया। चैकोस्लोवाकिया, स्विट्जरलैण्ड, इटली, फ्रास, इग्लैण्ड, जर्मनी और डेनमार्क होकर अत मे मै फिनलैण्ड पहुचा। मास्को से विमान का वापसी टिकट ले गया था और ऐसा कार्यक्रम बनाया था कि फिनलैण्ड की राजधानी हेलसिन्की होता हुआ लेनिनग्राड पहुच जाऊ और वहा दो-तीन दिन रहकर मास्को आऊ। इस प्रकार यूरोप के उपरोक्त देशो मे घूमकर[1] मै आखिरी पडाव हेलसिन्की से पुन रूस की ओर रवाना हुआ।

जिस विमान से मै हेलसिंकी से चला वह रूसी था—एरोफ्लोट। जितना वह आरामदेह था, व्यवस्था उतनी ही खराब। न खाने को कोई चीज मिली, न पीने को चाय-काफी। उसकी परिचारिका बडी ही स्थूलकाय थी। विमान के उडान भरते समय कुर्सी पर जमी तो बराबर जमी ही रही। सभी कम्पनियो का नियम है कि विमान रवाना होता है तब, जी न मिचलाये इसलिए, लेमनचूस या पिपरमेट की गोलिया अथवा वैसी ही कोई चीज यात्रियो को दी जाती है और जब जहाज उतरता है, उस समय भी ऐसा ही किया जाता है। लेकिन इस विमान मे ऐसा कोई इन्तजाम न था। जब विमान ऊपर आकर समगति से चलने लगा तो मैंने परिचारिका से कहा, "एक प्याला कॉफी दे सकोगी ?" उसने सिर हिलाकर कहा, "नियत।"—अर्थात् नही। पता नही, क्या बात थी कि जो वह सारे सफर मे मुह फुलाये बैठी रही।

एक बार फिर सागर की बहार देखने को मिली। बाल्टिक सागर उमग से हिलोरें ले रहा था। सूर्य के प्रकाश मे उसके बदलते रूप बडे सुन्दर लगते थे।

---

[1] उस प्रवास का विस्तृत वृत्तान्त लेखक की शीघ्र प्रकाशित होनेवाली पुस्तक 'यूरोप की परिक्रमा' में पढ़िये।

जिस समय विमान लेनिनग्राड के हवाई अड्डे पर उतरा, शाम के ६ वजकर ५५ मिनट हुए थे। वहा का समय हेलसिंकी के समय से आगे था, यानी मेरी घड़ी मे उस समय ४ वजकर ५५ मिनट हुए थे। मैंने घडी आगे वढाई। एक वार मै फिर रूस में पहुच गया था। मुझे इसकी प्रसन्नता थी, कारण कि इतने देश देख लेने के वाद मै इस निर्णय पर पहुचा था कि रूस का-सा प्रेम, सेवा-भाव तथा भारत के प्रति आत्मीयता अन्य किसी भी देश मे दिखाई नही देती।

लेनिनग्राड देखने की मेरी वडी इच्छा थी, क्योंकि मैं जानता था कि रूस के इतिहास मे उस नगर का वडा महत्वपूर्ण स्थान है। पहले रूस की राजधानी वही थी और वह किसी समय अपने उत्कर्ष की चरम सीमा पर था। द्वितीय महायुद्ध मे वह नाजियो का कोप-भाजन वना और उसे भूमिसात कर दिया गया, लेकिन उसका गौरव कहा जानेवाला था। नाजियो के पराभूत होने पर उसका पुनर्निर्माण हुआ और आज जो शान लेनिनग्राड की है, वह मास्को या रूस के अन्य किसी नगर की नही है। ऐसे नगर का देखने का लोभ सवरण करना मुश्किल था। जाते समय मैंने प्राग् को कार्यक्रम मे रक्खा था, लौटते समय लेनिनग्राड को।

हवाई अड्डे पर पासपोर्ट तथा वीसा आदि की जाच मे एक घटे से अधिक लग गया। अच्छा हुआ कि हवाई अड्डे पर एक रूसी सज्जन मिल गये, जो अंग्रेजी जानते थे। उन्होने वड़ी मदद की। हवाई अड्डे के अधिकारी लोग इस शका का समाधान करना चाहते थे कि मै इतना घूमकर दूसरी वार रूस क्यो आया हूं। मैंने उनसे कहा कि मै तो लन्दन से सीधा स्वदेश लौट जाना चाहता था; लेकिन आपके यहां के ही लोग नही माने। टूरिस्ट ब्यूरो के अधिकारियों ने कह दिया कि मास्को मे तरमेज और तरमेज से दिल्ली तक के मेरे वापसी टिकट को वे वदल नहीं सकते। इसलिए उन्होंने मुझे सलाह दी कि आप घूम-घामकर मास्को लौट आओ और फिर अपने पास के टिकट का उपयोग करके दिल्ली चले जाना। उनकी इस सलाह को मानकर ही मुझे इधर आना पड़ा। खैर, जैसे-तैसे जान छूटी।

लेनिनग्राड का हवाई अड्डा वहुत शानदार न होने पर भी काफी अच्छा है। वडा भी खूब है। पर उसमें वह सफाई नहीं है, जो मुझे ज्यूरिक के हवाई अड्डे मे दिखाई दी। पासपोर्ट की जांच हो जाने पर, मेरी सहायता करनेवाले रूसी सज्जन ने पूछा कि शहर में कहां ठहरोगे? मैंने कहा, "मुझे पता नहीं। आप जहां कहेंगे, ठहर जाऊंगा।" उन्होंने वस में मेरा सामान रखवाया और वस का भाड़ा

भी अपने पास से चुका दिया। रास्तेभर वह भाई नाजियो की वर्वरता के किस्से सुनाते रहे। हवाई अड्डे से शहर काफी दूर है, पर उनकी हृदय-स्पर्शी कहानियो के कारण रास्ता मालूम भी न पडा। शहर मे घूमते हुए हम लोग एक जगह उतर पडे। वहा से सामान उठाकर आस्तोरिया होटल पहुचे। लेनिनग्राड के वडे होटलो मे से वह एक है। वड़ी लम्वी-चौडी इमारत है उसकी। वहुत-ही साफ-सुथरा। नीचे सामान रखकर वह मुझे सूचना-विभाग मे, जो कि उसी होटल मे है, ले गये। एक वहन ने मेरा पासपोर्ट और वीसा देखकर पूछा कि आप किसके निमत्रण पर यहा आये है? मैंने कहा, "किसीके भी नही। मै तो लेखक और पत्रकार हू। इस जिज्ञासा से स्वत ही आया हू कि इस नगर को देखू, जो रूस के इतिहास मे इतना प्रसिद्ध रहा है और जिसने रूस की क्राति मे महत्वपूर्ण भाग लिया है।" वह वहन कुछ देर तक सोचती रही। अनन्तर वह किसी ऊचे अधिकारी के पास गईं। थोडी देर वाद वह लौटकर आईं। मुझे मालूम नही कि अधिकारी के साथ उनकी क्या वातचीत हुई, लेकिन लौटते ही उन्होने ऊपर की मजिल के एक वडे कमरे मे मेरे ठहरने की व्यवस्था करादी। उन वहन की द्विविधा और वाद मे अधिकारी के पास जाने से एक वात साफ हो गई और वह यह कि वहापर उन्ही व्यक्तियो के ठहरने की व्यवस्था की जाती है, जो किसी रूसी सस्था के या सरकार के निमत्रण पर आते है। पता नही, मेरे लिए उन्होने किस तरह रास्ता निकाला होगा। सभवत उन्हे इस वात से आसानी हुई होगी और ठहराने का निर्णय करने मे सुभीता हुआ होगा कि मै एक महीने मास्को मे रह चुका था।

पाकिस्तान का एक शिष्टमण्डल उस होटल मे ठहरा हुआ था। कमरे मे सामान जमाकर जव मै नीचे रेस्ट्रा मे भोजन करने आया तो शिष्टमण्डल के कुछ लोग वहा मिल गये। मालूम हुआ कि वे रूसी सरकार के निमत्रण पर व्यापार-सम्वन्धी वातचीत करने आये थे। अगले दिन वे मास्को लौट जानेवाले थे।

रेस्ट्रा मे जाकर जव मैने खाना मागा तो कोई भी व्यक्ति मेरी वात नही समझ पाया। मै आलू और टमाटर विशेष रूप से चाहता था, पर मेरे वार-वार कहने, इशारे से समझाने और अन्त मे कागज पर चीजो की आकृतिया वनाने पर भी वे नही समझ पाये। हारकर मै सूचना-विभाग की वहन के पास गया और उन्हे सारा हाल कह सुनाया। वह वडी हँसी। फिर मेरे साथ आकर उन्होने रेस्ट्रा के आदमी को सव चीजें वतादी। समझने पर वे लोग भी हँसने लगे।

खाने मे ५ रूवल लगे, पर चीजे अच्छी मिली। खाकर वाहर आया। पाकिस्तानी शिष्टमण्डल के कुछ व्यक्ति फिर मिल गये। वैठकर वाते करने लगे। उनमे से एक ने कहा, "आप तो हिन्दुस्तानी है ?" मैने कहा, "जीहा।" वह बोले, "यह वताइये कि ये रूसवाले हिन्दी के लिए इतना कर रहे है, पर उर्दू के लिए कुछ क्यो नही करते ?"

उनके इस प्रश्न पर मुझे मन-ही-मन वडी हँसी आई, पर मैंने उसे रोककर कहा, "इसका जवाव या तो रूस की सरकार दे सकती है या आप ? मै क्या वताऊ ?"

उन्होने आग्रह करते हुए कहा, "आप इतने दिन से इस मुल्क मे घूम रहे है। कुछ तो वताइये।"

मैने कहा, "सच वात तो यह है कि आपका सवाल ही गलत है। रूस उर्दू के लिए भी वहुत-कुछ कर रहा है। उर्दू की कई किताबो के तरजुमे उसने रूसी मे निकाले है और अपनी वहुत-सी किताबो को उर्दू मे छापा है।"

उन्होने कहा, "नही साहब, हिन्दी के लिए जितना काम हो रहा है, उसे देखते उर्दू के लिए कुछ भी नही हो रहा है।"

मुझे उनकी वातचीत का ढग कुछ अजीव-सा लगा। मैने कहा, "आप इसकी कैफियत रूसी सरकार से तलव कीजिये।"

विषय वदलकर थोडी देर इधर-उधर की और वाते करके मै अपने कमरे मे चला आया। इस वीच एक परिचारिका काच की सुराही मे पानी भरकर रख गई और काच का एक गिलास। पिछली दो रातो मे अच्छी नीद नही आई थी। विस्तर पर पडते ही गहरी नीद मे सो गया।

सवेरे उठा तो घड़ी मे पौने नौ वजे थे। निवृत्त होकर हजामत वनाई और गरम पानी से अच्छी तरह से स्नान किया। वहुत दिनो वाद इस तरह आराम से नहाने का अवसर मिला था। वडा आनन्द आया।

तैयार होकर नीचे गया। नाश्ता किया। सूचना-विभाग की वहन ने मेरे साथ के लिए एक परिवाचिका की व्यवस्था कर दी। परिवाचिका का नाम था वेलन्टीना सेवित्साकोव। वह तरुणी विश्वविद्यालय से स्नातिका होकर पहले अध्यापिका वनी, पर वाद मे उसे लगा कि उस काम मे विकास की अधिक गुजाइश नही है और परिवाचिका का काम उसे अधिक सन्तोष प्रदान करेगा तथा उन्नति का मौका देगा तो वह इस क्षेत्र मे आ गई। वडी भली और स्नेहशील थी। उसने मुझसे पूछा, "आप

कितने दिन लेनिनग्राड मे रहेगे और क्या-क्या देखना पसन्द करेंगे ?" मैने कहा, "मेरे पास सिर्फ दो दिन है और यहा की लगभग सभी खास-खास चीज़े देखना चाहूगा।" इसपर वह मुस्कराकर बोली, "इतने कम समय मे यह कैसे सभव होगा ? मै पूछती हू, आखिर आपको जाने की ऐसी जल्दी क्या है ? यहा कुछ दिन ठहरिये और मजे-मजे मे सब चीज़े देखकर जाइये।"

मैने कहा, "मै अपने देश से बहुत दिनो का निकला हू और घूमते-घूमते थक गया हू। इसलिए जल्दी मे हू।"

वह बोली, "अच्छी बात है, चलिये, अभी तो दो-चार आस-पास की चीजे देख आवे। आज शाम या कल सवेरे से कार की व्यवस्था कर लेंगे, तब जल्दी हो जायगी।"

मैने उस बहन का आभार माना और हम लोग घूमने निकल पडे।

: ३० :

हरमिताज

होटल से रवाना हुए उस समय थोडा-थोडा पानी पड रहा था। उसकी चिन्ता न करके वेलन्टीना मुझे 'हरमिताज' की ओर लेकर चली। 'हरमिताज' के नाम से ऐसा बोध होता है, मानो कि वह कोई धर्म-स्थान हो, पर वास्तव मे वह कोई देवालय नही है, सग्रहालय है। वहा पहुचने से पहले ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि देने के विचार से वेलन्टीना ने बताया कि सन् १७०३ से लेकर १९१७ तक लेनिनग्राड का नाम सेट पीटर के नाम पर सेट-पीटर्सबर्ग रहा। बाद मे सन् १९२४ तक पीट्रोग्राड और फिर रूस के महान् नेता लेनिन के नाम पर लेनिनग्राड पडा। सन् १७१२ से सन् १९१८ तक वह रूस की राजधानी रहा, लेकिन रूस के शासको ने यह अनुभव करके कि वह रूस के उत्तर मे पडता है, केन्द्र मे नही है, राजधानी वहा से हटा ली और मास्को मे ले आये। नगर का क्षेत्रफल ३२५ वर्ग किलोमीटर है। उसमे आज ५८ पार्क, १८ थियेटर, ५८ सिनेमाघर, ३६० पुल, १०० छोटे-छोटे द्वीप और ४७ नदिया और नहरे है। ये सब बाते बताने के बाद उसने किंचित भावुकता से कहा, "आप देखेंगे कि यह नगर कितना प्राचीन है और कितना सुन्दर। हम जिस नदी के किनारे चल रहे है, उसका नाम निवा है। देखते है, किस शान से यह नदी बहती है और अपनी गरिमा से नगर की शोभा को कितना बढा देती है! लेकिन"…

इतना कहकर वेलन्टीना चुप हो गई। कुछ ठहरकर फिर बोली, "आप जो कुछ देख रहे है, सब नया बना है। बडी दुखभरी कहानी है इसके पीछे। नाज़ी सेनाओ ने तीन महीने तक इस नगर का घेरा डाले रक्खा और किसीको भी अन्दर नही आने दिया। रसद न मिलने से लाखो आदमी भूखो मर गये। चारो ओर लाशो के ढेर लग गये।"

वेलन्टीना का चेहरा उदास हो गया, किन्तु उसी क्षण सभलकर वह बोली,

"यह सब हुआ, पर किसी भी जीवित राष्ट्र की आत्मा कभी नही मरती। नाजियो के पराजित होकर हट जाने के पाच वर्ष के भीतर लेनिनग्राड फिर लहलहा उठा। आप ही बताइये, आपको ऐसा लगता है कि कभी यहा बमबारी हुई थी ?"

यह बात चल ही रही थी कि हम 'हरमिताज' पहुच गये। निवा नदी के तट पर खडे भव्य भवन की ओर सकेत करके वेलन्टीना ने कहा, "यही है हरमिताज। किसी जमाने मे यह जार का शीतकालीन प्रासाद था। कैथराइन द्वितीय ने इसका सन् १७६२ मे निर्माण कराया था। इसके बनानेवाले का नाम है रास्ट्रेली, जो इटली का निवासी था। १९१७ की क्राति के बाद से इसे सग्रहालय बना दिया गया और अब यह कला का एक विशाल केन्द्र है। इसके पाच मुख्य विभाग है—१ प्राचीन, २ रूसी, ३ पूर्वी, ४ पश्चिमी और ५ इटालियन तथा ग्रीस। हमारे पास समय कम है, फिर भी जितना देख सकते है, देखने की कोशिश करेंगे।"

कला-भवन मे प्रवेश करते ही कई कमरे ऐसे मिले, जिनमे रूस की विजय की वस्तुए, जनरलो की पोशाकें आदि रक्खी थी। उनके बाद वह कमरा आया, जिसमे रूस का एक विशाल नक्शा है। उस नक्शे पर किसी विदेशी प्रदर्शिनी मे प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। उसकी विशेषता यह है कि विभिन्न रगो के पत्थरो को जोडकर उसका निर्माण किया गया है। वर्तमान सोवियत सघ की पन्द्रह रिपब्लिके और उनकी राजधानिया उसमे दिखाई गई है। अपने ढग की वह बहुत ही आकर्षक चीज है।

बाद के एक कमरे मे एक घडी दर्शको का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करती है। जब उसमे घटा बजता है तो उसपर बना मोर पख फैलाता है, मुर्गा बाग देता है और उल्लू खट-खट करता है। घडी बडी विचित्र-सी है। उसके ऊपर मोर है, दाई ओर मुर्गा और बाई ओर उल्लू। यह घडी सन् १८७४ मे कुक्स नामक अग्रेज ने बनाई थी और काउण्ट पोटमकिम ने उसे केथराइन द्वितीय को भेंट किया था। घडी के ऊपर सोने का काम हो रहा है।

इटली का सग्रहालय बडा मूल्यवान तथा सुन्दर लगा। उसकी सामग्री ३२ कक्षो में है। १५वी शताब्दी के फ्रेंजलिका नामक कलाविद की 'मेडोना तथा शिशु' बडी ही भावपूर्ण कृति है। लिनार्डो ड विसी की मौलिक कृतिया 'मेडोना विद चाइल्ड' (मेडोना तथा शिशु) और 'मेडोना विद फ्लावर' (मेडोना पुष्पोसहित) इतनी सुन्दर है कि कोई भी व्यक्ति उन्हे बिना देखे आगे नही बढ सकता। सत्तरह वर्ष के

युवक कलाकार रफेलो की दो रचनाए 'मेडोना तथा शिशु' और 'वेदाढी का जोसेफ' अत्यन्त भावपूर्ण है। उन्हीके बीच माइकेल एजिलो की 'क्राउचिंग वॉय' अद्भुत मूर्त्ति है। ऐसा प्रतीत होता है, मानो वह वालक अभी वोल उठेगा।

टिशियन, वेरोनेज, टियपोलो, मोरेलियो आदि कलाकारो के पृथक्-पृथक् कक्ष है। टियपोलो के चित्र वहुत वडे आकार के है। एल ग्रेको का 'अपोसिल्स—पीटर एन्ड पाल' वडी ही मूल्यवान कृति है।

डच कलाकार रेमब्रेंड्ट के, जो फ्रास मे रहे थे, २५ मौलिक चित्र है। उनकी अपनी पत्नी का चित्र तो सुन्दर है ही, 'सलीव से यीशु का अवतरण' अपने ढग की अनोखी रचना है। दो और कृतिया वडी ही हृदयस्पर्शी है। एक है 'एन आल्ड मेन इन दी रैड' और दूसरी है 'दी रिटर्न ऑव दी प्रॉडीगल सन'। दूसरे चित्र मे दिखाया गया है कि एक लडका, जो कि घर से निकल गया था, वहुत दिनो वाद लौटकर घर आता है तो देखता क्या है कि उसका वाप उसके पीछे अन्धा हो गया है। वह पिता के पैरो के पास वडे सतप्त हृदय से बैठ जाता है और पिता प्यार और ममता से उसकी पीठ पर हाथ फिराता है। निकट ही परिवार के अन्य सदस्य खडे है।

फ्रास होल्स के चित्र भी देखने योग्य है। डच चित्रकार हेडा के जलपान-सम्बन्धी चित्र वहुत ही मनोरजक है। उससे आगे के कक्ष मे रूवन्स की ५० कृतिया है। वान डिक का अपना स्वतन्त्र कमरा है। उसमे पशु-पक्षियो से लेकर कीडे-मकोडे, साप आदि सव दिखाये गए है। कोई-कोई चित्र तो वडा ही भयकर और वीभत्स है।

फ्रासीसी चित्रो तथा स्थापत्य-कला के प्रदर्शन मे ४५ कमरो का उपयोग हुआ है। वैसे तो वहुत-सी चीजें है, जो इन कक्षो की ओर पर्यटक का ध्यान खीचती है, लेकिन लैनन की यथार्थवादी कला, पुस्सेन के नीले रग तथा क्लाड लौरन के प्राकृतिक दृश्य विशेष रूप से देखने योग्य है। क्लाड महोदय ने तो अपने चित्रो को केवल रात और दिन से ही सवधित रक्खा है। प्रभात, मध्याह्न, सन्ध्या और अर्द्ध रात्रि के ऐसे-ऐसे सुन्दर दृश्य दिखाये है कि निगाह उनपर से हटाये नही हटती। रगो की योजना आखो को वडी सुहावनी लगती है। प्रकृति के साथ यदि उन्होने पुरुष को न जोडा होता तो शायद उनकी कला एकागी रह जाती और उसका प्रभाव मानव-मन पर कुछ और ही प्रकार का पडता। अत प्रत्येक चित्र के अग्र भाग मे पुरुषो की आकृतिया अकित करके उन्होने मानव और प्रकृति का

नाता जोड दिया है और इस प्रकार अपनी कृतियो को वडा ही भावपूर्ण और सजीव वना दिया है।

एक कक्ष मे फ्रासीसी कलाविद गुदौन द्वारा निर्मित वाल्तेयर की मूर्ति वडी प्यारी है। सगमरमर की है। उसकी खूवी उसके अगो की सूक्ष्म अभिव्यजना मे तो है ही, चेहरे की भाव-भगिमा को वारीकी से दिखाने मे शिल्पी को गजव की सफलता मिली है।

जिसका प्रभाव फ्रास के इतिहास पर वर्षो तक रहा और जिसने ससार को अपनी प्रतिभा, साहस और शौर्य से चमत्कृत कर दिया, उस नेपोलियन का चित्र फ्रास के इस सग्रह मे न होता, यह कैसे सम्भव था। ग्रो द्वारा निर्मित नेपोलियन का और जैरार द्वारा अकित नेपोलियन की पत्नी जोजेफाइन का चित्र फ्रासीसी कला के उत्कृष्ट नमूने है।

क्लॉड मोने चित्रकला को नया मोड देनेवाला कलाकार माना जाता है। उसने आकृतियो के वाह्य रूप की सुडौलता तथा सुनिश्चितता पर अत्यधिक जोर दिये जाने की परम्परा को तोडकर भावप्रधान चित्रो का निर्माण किया। उसके कई चित्र उस सग्रह मे विद्यमान है। उनमे आकृतिया स्पष्ट नही है, न उनकी रेखाओ मे कोई अनुपात दिखाई देता है, लेकिन उन मोटी-पतली, आडी-तिरछी, वेहिसाव रेखाओ तथा रगो से कुल मिलाकर जो चित्र वनता है, उसकी प्रभावोत्पादकता दर्शक को चकित कर देती है। क्लॉड मोने के अतिरिक्त वान गान तथा पाल गागन के कई चित्र भी इस कोटि की कला के सुन्दर नमूने है।

फ्रास के आधुनिक कलाकारो मे पिकासो अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के चित्रकार है। उनकी कला ने अपने देश को ही सुशोभित नही किया, अन्य देशो की भी शोभा वढाई है। उनका 'तीन नग्न' शीर्षक चित्र वास्तव मे इस सग्रह का अद्भुत चित्र है।

फ्रास की चित्रकला तथा मूर्त्ति-कला के साथ-साथ वहा की दस्तकारी की चुनी हुई वस्तुओ के भी अनेक नमूने रक्खे गये है। उन्हे देखने से पता चलता है कि फ्रास के लोग केवल कल्पना-कानन अथवा कला के नन्दन-वन मे ही विचरण करना नही जानते, जीवन की ठोस वास्तविकताओ के प्रति भी सजग रहते है। दस्तकारी की कई चीजें उनके हस्तकौशल और व्यावहारिक वुद्धि के अच्छे नमूने है।

रूसी कला-कक्षो मे पुश्किन का सग्रह सूक्ष्म अध्ययन की अपेक्षा रखता है। चित्रो के अतिरिक्त उनकी अन्य अनेक वस्तुए उनके सग्रह मे रक्खी गई है। पुश्किन

की स्त्री बडी रूपवती थी। उनके दो चित्र वहा विद्यमान हैं। उन्हे देखकर लगता है कि पति के साथ उस स्त्री को आइने मे अपनी छवि देखने पर निश्चय ही अपने रूप पर गर्व अनुभव होता होगा।

चीनी कला का सग्रह अपने देश के गौरव के अनुरूप ही कहा जा सकता है। उसमे सुरुचिपूर्ण चित्र तो हैं ही, विविध प्रकार के चीनी वर्तन भी हैं। रेशम पर तूलिका का चमत्कार चीनी कला की अपनी देन है। वडे ही सयत रगो से वनस्पति (विशेषकर वेणु-कुजो), पक्षियो तथा पुष्पो को वाणी प्रदान करने मे चीन अन्य देशो से प्राय वाजी मार ले जाता है।

इस कला-भवन का सवसे दरिद्र सग्रह है भारत का। हमारे देश के विभिन्न भागो मे कला तथा दस्तकारी की बडी ही सुन्दर वस्तुए मिलती हैं, लेकिन उनका प्रदर्शन वहा देखने मे नही आता। जो चित्र वहा लगे हैं, उनसे कही अधिक आकर्षक और सुन्दर चित्र हमारे किसी भी सग्रहालय मे पाये जा सकते हैं। काश्मीर की लकड़ी की, मैसूर के चदन और हाथी-दात की, उडीसा के चादी के तार की वस्तुओ के विना कोई भी सग्रह कैसे पूर्ण हो सकता है? भारतीय कला मे अजता के चित्रो को स्थान न दे तो कला अपग दिखाई देगी। काश्मीर के प्राकृतिक सौदर्य की सारे ससार मे ख्याति है। स्वभावत कोई भी भारत-प्रेमी दर्शक काश्मीर की सुषमा का दर्शन करानेवाले चित्रो को खोजेगा। सग्रहालय का मौजूदा भण्डार वडा ही असन्तोषजनक है। कुछ मामूली-से चित्र तथा विभिन्न भागो से वेहिसाव इकट्ठी की हुई चीजें भारत की कला, कारीगरी एव सस्कृति के साथ न्याय नही करती।

जिस समय मैं भारतीय कला-कक्ष को देख रहा था, वहुत-से विदेशी दर्शक वहा एकत्र हो गये और मुझसे भाति-भाति के सवाल करने लगे। उनमे कुछ ऐसे रूसी भी थे, जो भारतीय विभाग मे रक्खी गाधीजी की मूर्त्ति को नही पहचानते थे। कुछको उनके जीवन के वारे मे तनिक भी जानकारी नही थी। वेलन्टीना की सहायता से मैंने उन लोगो का समाधान करने का प्रयत्न किया। वाद मे वेलन्टीना कहने लगी, "आपके साथ आने का सवसे अधिक लाभ तो मुझे हुआ। भारत के वारे मे वहुत-सी नई वातें मालूम हो गई।"

कला-भवन को देखने मे चार घटे लग गये। वास्तव मे वह इतना विशाल है कि वारीकी से उसका निरीक्षण करने के लिए कई दिन चाहिए। विभिन्न देशो की उत्कृष्ट कला का इतना विस्तृत और मूल्यवान संग्रह अधिकारियो के कला-प्रेम

का द्योतक है।

कला-भवन के पिछवाडे पैलेस-चौक है । जिस प्रकार मास्को मे लाल-चौक का महत्व और उपयोग है, उसी प्रकार इस चौक का यहा है। सार्वजनिक समारोह इसी चौक मे होते है। काफी लम्बा-चौडा है। उसके बीच मे ४७ मीटर ऊचा और ६ सौ टन भारी एक स्तम्भ है, जिसका निर्माण नेपोलियन पर विजय प्राप्त करने की स्मृति मे सन् १८१२ मे हुआ था। वह 'एलेक्जेंडर-स्तम्भ' के नाम से पुकारा जाता है। उसके एक ओर चहारदीवारी पर एक रथ तथा 'विजयी गुबद' बनी हुई है। वैसे तो इस चौक के साथ रूस की अनेक महत्वपूर्ण घटनाए जुडी हुई है, लेकिन उसे देखते ही विशेष रूप से स्मरण होता है सन् १९०५ के रक्तरजित रविवार का और १९१७ की महान् अक्तूबर-क्राति का। कहने की आवश्यकता नही कि इन दोनो ही क्रातियो ने रूस के इतिहास को नया मोड दिया।

: ३१ :

अन्य दर्शनीय स्थल

संत इसाक का गिरजाघर

कला-भवन और पैलेस चौक को देखकर सत इसाक का गिरजा देखने गये। उस समय आकाश मे वादल आख-मिचौनी कर रहे थे। प्रकृति की इस छटा के बीच गिरजे का भवन वडा मोहक लग रहा था। वेलन्टीना ने वताया कि इस गिरजे का निर्माण मोफरान नामक शिल्पी ने किया था और उसके वनाने मे चालीस वर्ष लगे। उसमे दीवारो पर विभिन्न रगो से चित्र वनाये गए थे, लेकिन अब जव कि वहा प्राचीन स्थानो का पुनर्निर्माण हो रहा है, इस गिरजे का भी रूस के कलाविदो ने कायाकल्प कर डाला। रगो का स्थान हरे मलकाइट ने ले लिया। आज उसकी शान ही निराली है। लेकिन अव उस गिरजे से प्रार्थना के स्वर नही उठते। अव तो वह सग्रहालय है। उसकी वेदिका और द्वार वडे ही कलापूर्ण है। द्वार के ऊपर अनेक धर्माचार्यों के चित्र है। गिरजे की ऊचाई १०२ मीटर है और उसमे एक ही पत्थर के वने ११२ विशाल स्तम्भ है, जिनमे से प्रत्येक का वजन १२० टन है। मुख्य द्वार कारीगरी की दृष्टि से वडा समृद्ध है। उसकी किवाडों का वजन ४६ टन है।

गिरजे का सवसे वडा आकर्षण उसकी छत की चित्रकारी है, जो अत्यन्त सुरुचिपूर्ण है। कहते है, गिरजे के निर्माण मे ४६ लाख मजदूरो ने योग दिया।

जव हम वाहर आने लगे तो वेलन्टीना वोली, "आप वडे अच्छे मौके पर आये है। पुनरुद्धार होने के कारण यह गिरजा अवतक दर्शको के लिए वन्द था। दो महीने पहले आप आये होते तो इसे देखने से वचित रह जाते।"

पीटर की मूर्त्ति

गिरजे के सामने जार पीटर प्रथम की विशाल मूर्त्ति है। वह एक तेजस्वी घोडे पर सवार है। घोडा आगे के दो पैरो को उठाये, पिछले दो पैरो के सुमो पर टिका

है। उसके और पीटर के चेहरो पर कभी न भूलनेवाले भाव झलकते है। वेलन्टीना कहने लगी, "नाजी आक्रमण के दिनो मे वडी मुश्किल से इस मूर्त्ति की रक्षा की जा सकी। जिस समय नगर पर वम गिर रहे थे, अन्य कला-कृतियो की भाति इस मूर्त्ति को रेत के वोरो और लकडी के तख्तो से ढक दिया गया। यदि ऐसा न किया गया होता तो यह मूर्त्ति सदा के लिए नष्ट हो जाती। ऐसी कलापूर्ण चीजें रोज-रोज थोडी तैयार हो पाती है।"

मूर्त्ति का सारा भार घोडे के पिछले दो पैरो के सिरे पर है। देखकर आश्चर्य होता है कि इतना वजन जरा-से सहारे से कैसे टिका है!

प्रकाश-स्तंभ

अगले दिन वेलन्टीना ने मोटर की व्यवस्था कर ली और हम लोग नाश्ता करके सवेरे ही निकल पडे। सारे शहर का चक्कर लगाया। पूरा नगर वास्तव मे ऐतिहासिक स्मृतियो और स्मारको से भरा पडा है। सवसे पहले निवा नदी के तट पर वह स्थान देखा, जो किसी जमाने मे प्रकाश-स्तम्भ का काम देता था। इमारत अव भी वही है, पर उसका प्रयोजन वदल गया है। अव वह सग्रहालय है।

दिसम्वर चौक

उसे देखते हुए दिसम्वर-चौक मे गये। जार के विरुद्ध सवसे पहला सैनिक विद्रोह इसी चौक मे हुआ था। विद्रोह असफल रहा और सारे नेता सूली पर लटका दिये गए।

अरोरा जहाज़

चौक से चलकर निवा नदी मे खडे अरोरा जहाज़ पर पहुचे। १९१७ की क्राति के साथ इस जहाज का वडा घनिष्ठ सवध रहा है। ज़ार के प्रासाद पर गोले फेंककर समाजवादी क्राति का श्रीगणेश इसी जहाज़ ने किया था।

सत पीटर और पाल का किला

लेनिनग्राड का सवसे महत्वपूर्ण स्थान है सन्त पीटर और पॉल का किला। निवा नदी के दूसरे तट से जव उसके गिरजे की पीली शिखरें देखी थी तो वह वडा छोटा और मामूली-सा लगा था, लेकिन उसके अन्दर गये तो देखा कि अपने-आप मे वह एक वहुत वडी वस्ती है। इस किले का निर्माण पीटर महान् की अभिलापा के फलस्वरूप हुआ था। वडी पुरानी इमारत है वह। निकोलस द्वितीय को छोडकर शेष सव ज़ारो की उसके गिरजे मे समाधिया है। क्राति का स्वर फूटा तो यह

विदाई

प्रस्थान
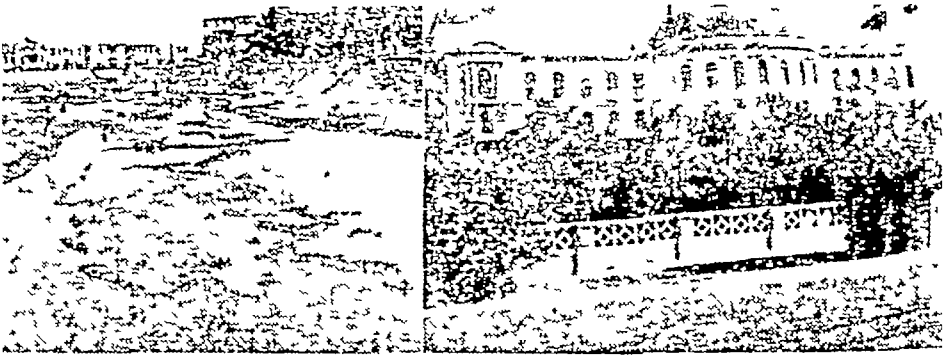
काबुल नगरी

अमानुल्ला की कोठी

काबुल में
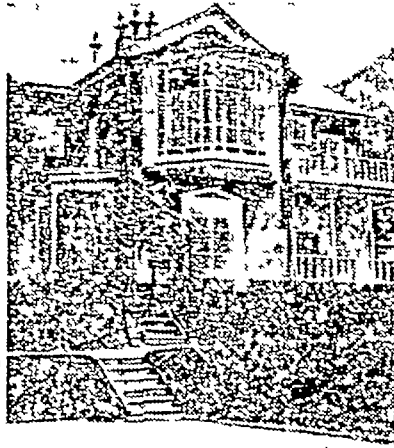
पगमान
का
एक कलापूर्ण भवन

मुनार यादगार

शाही उद्यान
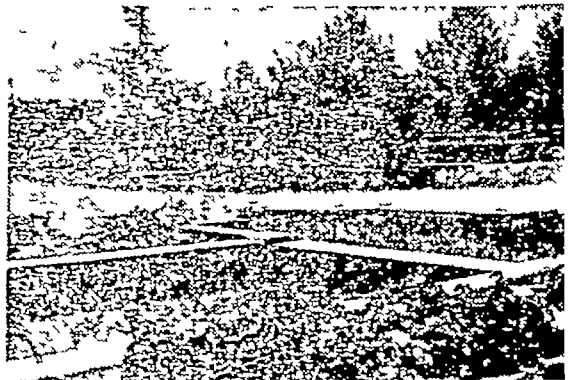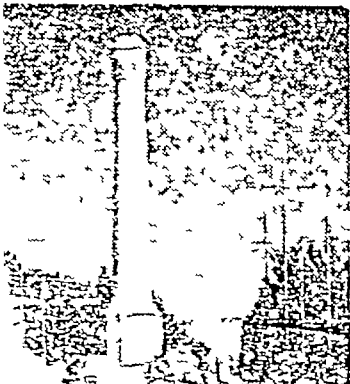
ताशकंद में

नगर
का
एक प्रसिद्ध चौक
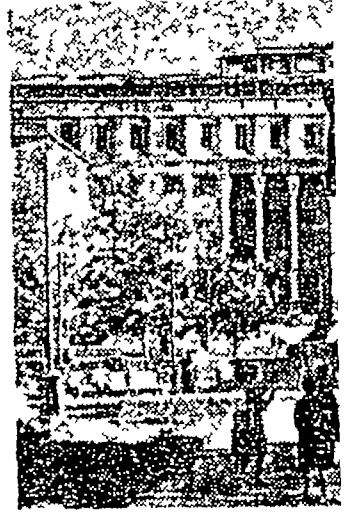
कपास के मौसम की

उज़बेक
कला
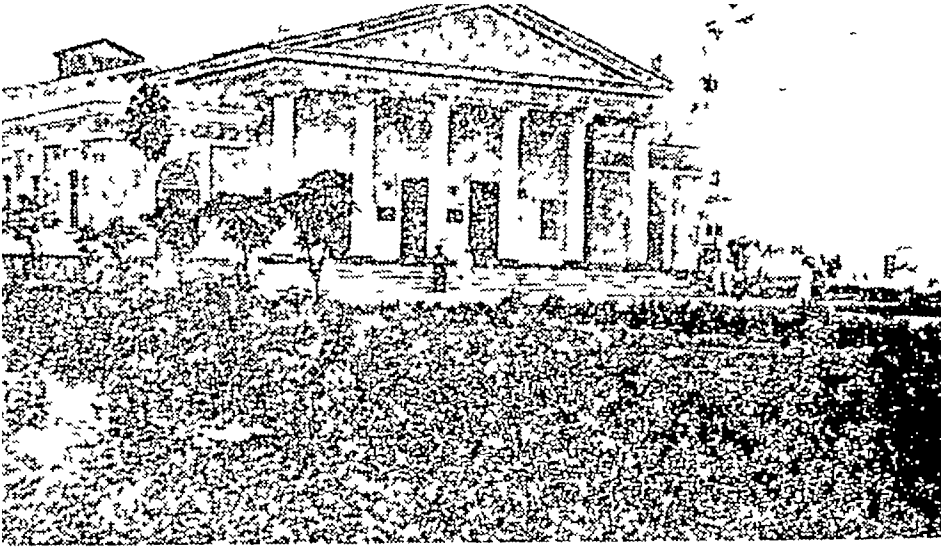
आशकावाद सुविख्यात नाटक-भवन

स्टालिनग्राड का एक दृश्य
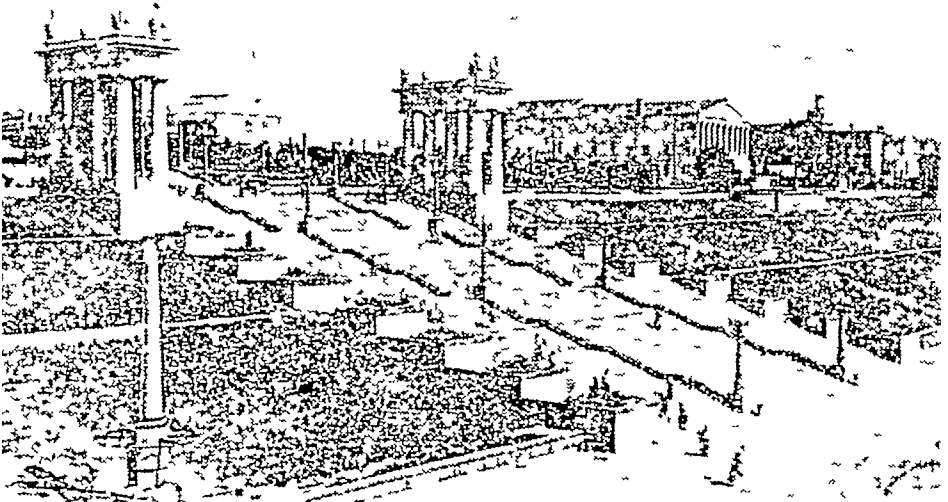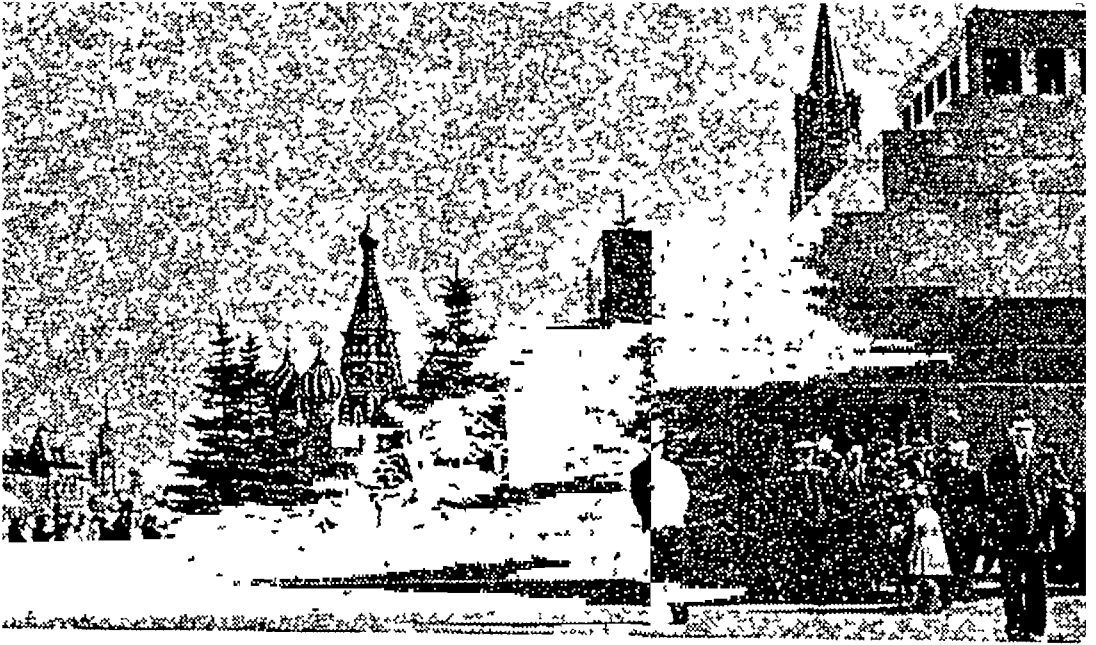
लेनिन की समाधि
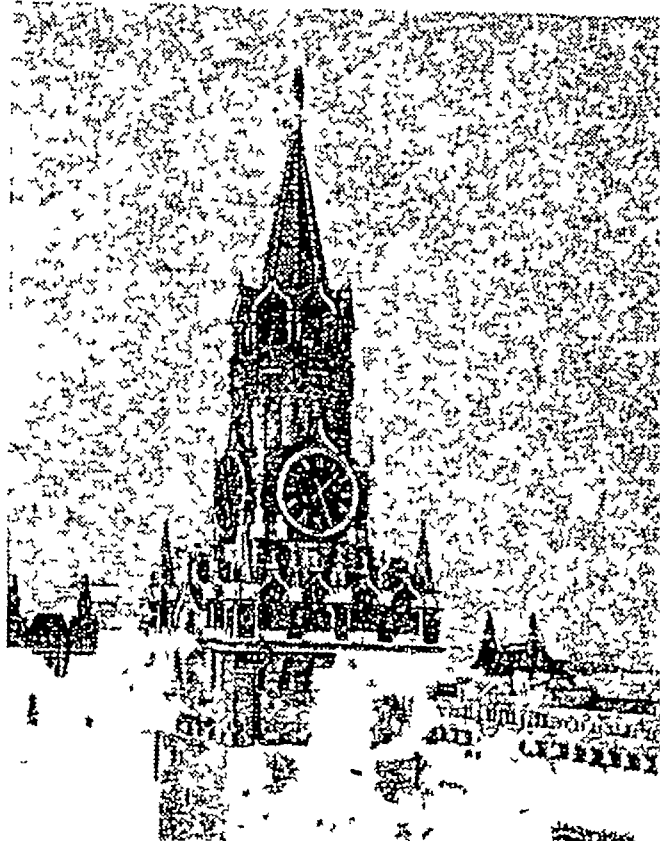
क्रेमलिन
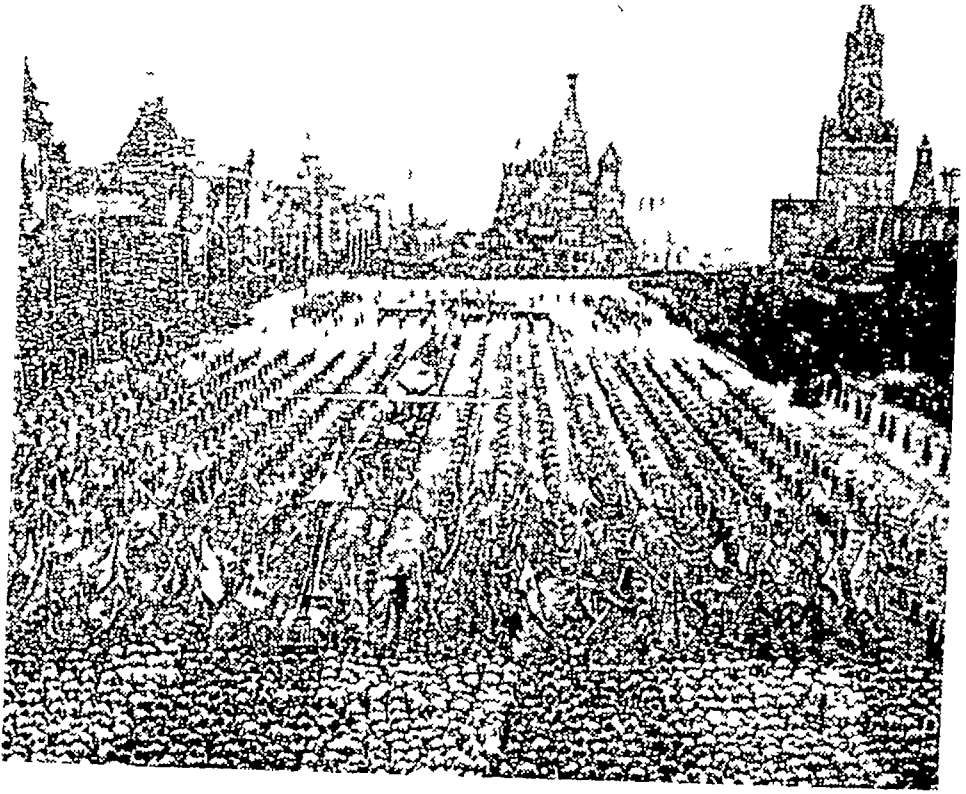
रेड स्क्वायर
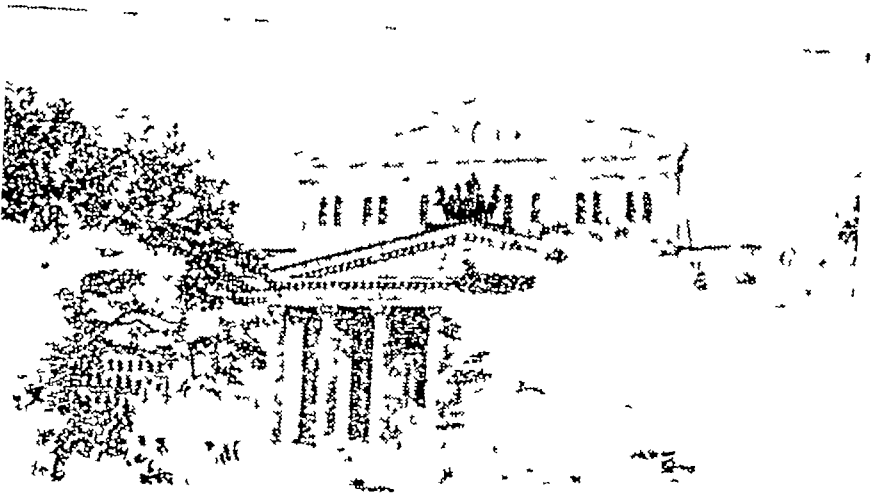
वोत
थिर
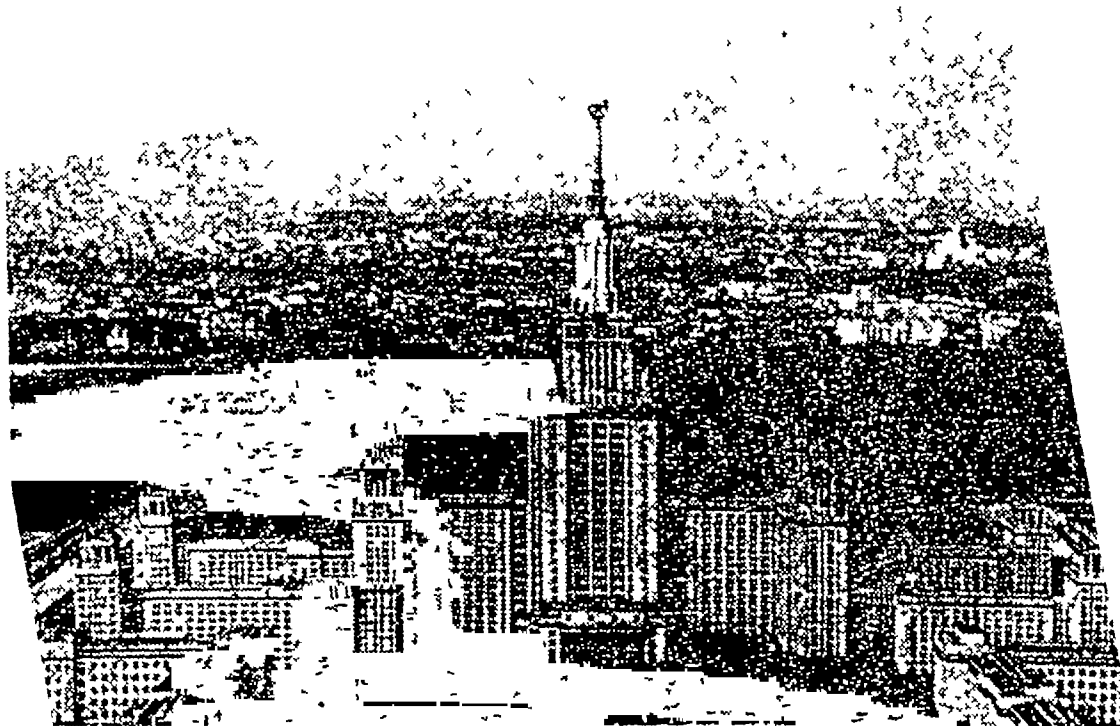
स्को-विश्वविद्यालय

लेनिन पुस्तकालय
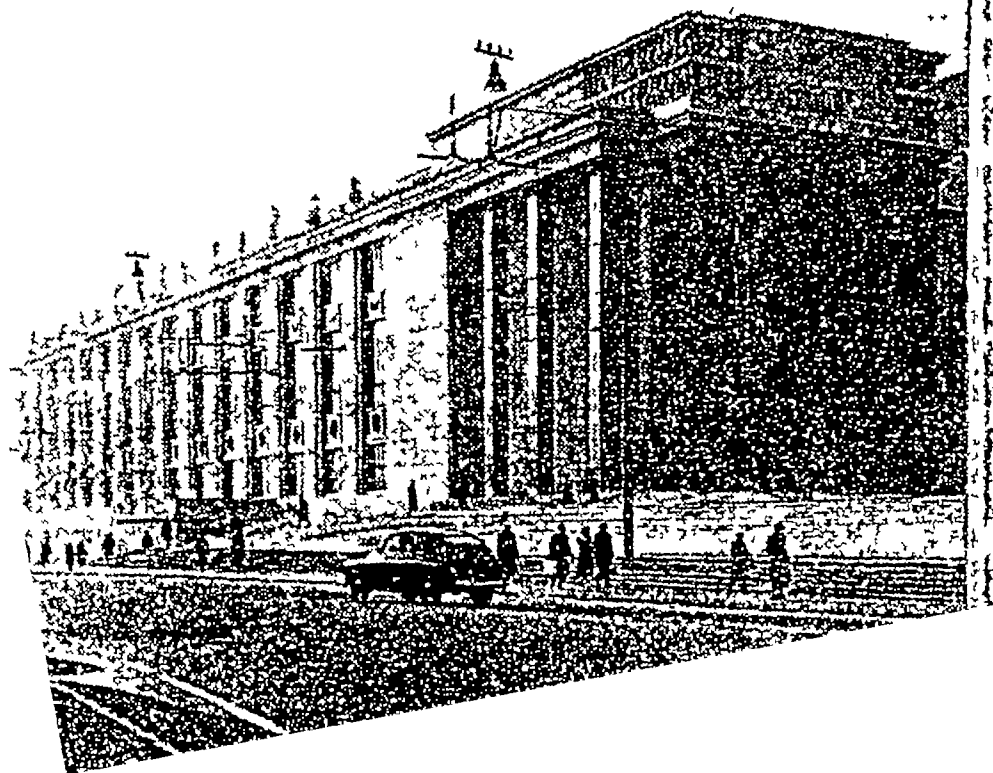
गोर्की-सग्रहालय
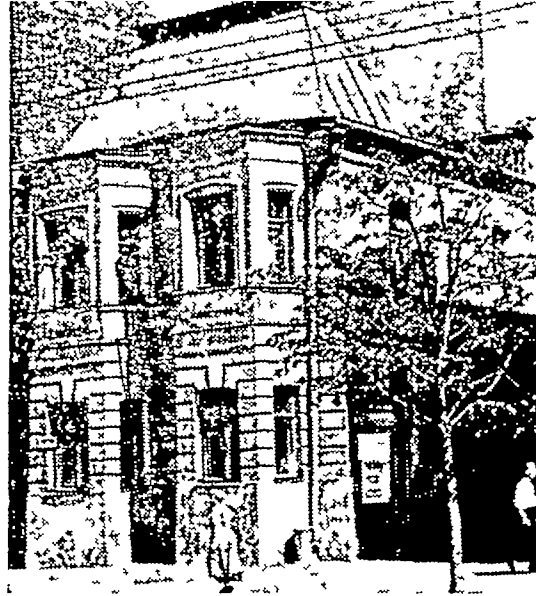
साहित्य-सग्रहालय

त्रेत्याकोव
कला-भवन
का
एक महान् चित्र
(ईसा का आगमन)

पुश्किन-सग्रहालय

प्राच्य-सग्रहालय

ओरियटल इन्स्टीट्यूट
(वाईं ओर से दूसरे हिन्दी विभाग के
अध्यक्ष श्री चेलिशेव)
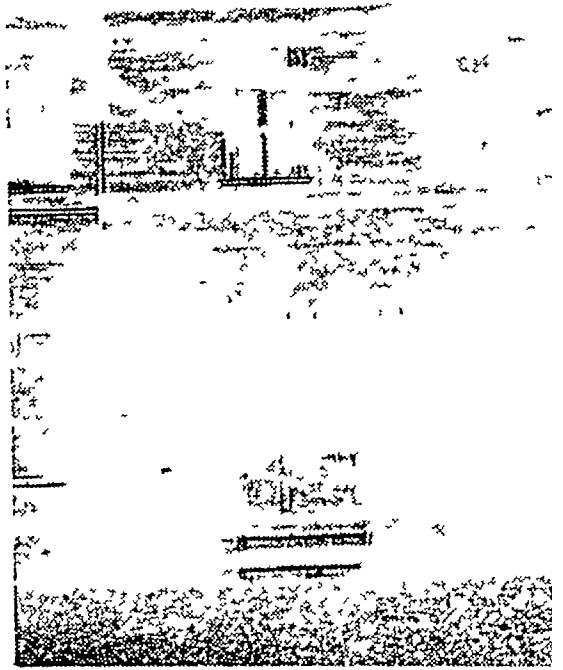
टालस्टाय का घर
(मास्को मे)
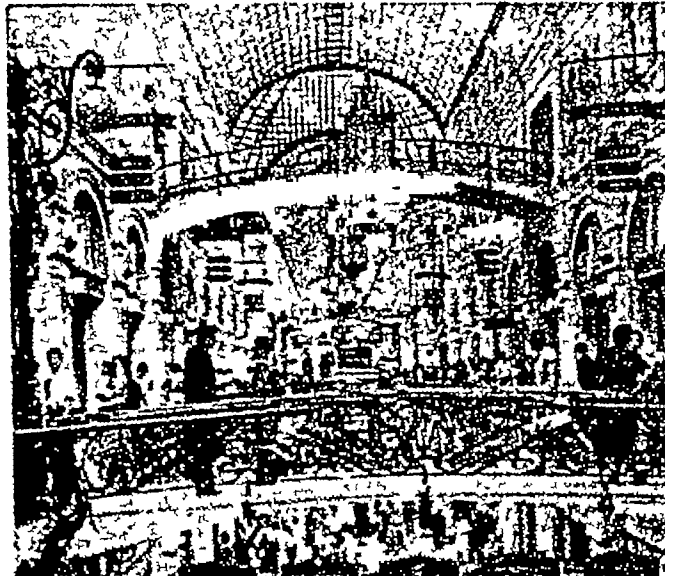
गूम
(कई मजिल की
दुकान)

कृषि तथा उद्योग प्रदर्शिनी
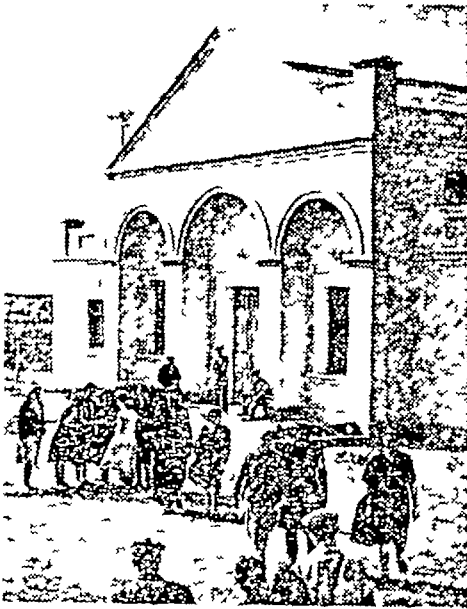
एक सामूहिक फार्म का क्लब

प्रदर्शिनी का शोभा-स्थल

भारतीय दूतावास मे स्वाधीनता-दिवस-महोत्सव
(राजदूत श्री मेनन भाषण करते हुए)

युवक-समारोह के कुछ भारतीय प्रतिनिधि

समारोह के अवसर पर नृत्य के दो दृश्य
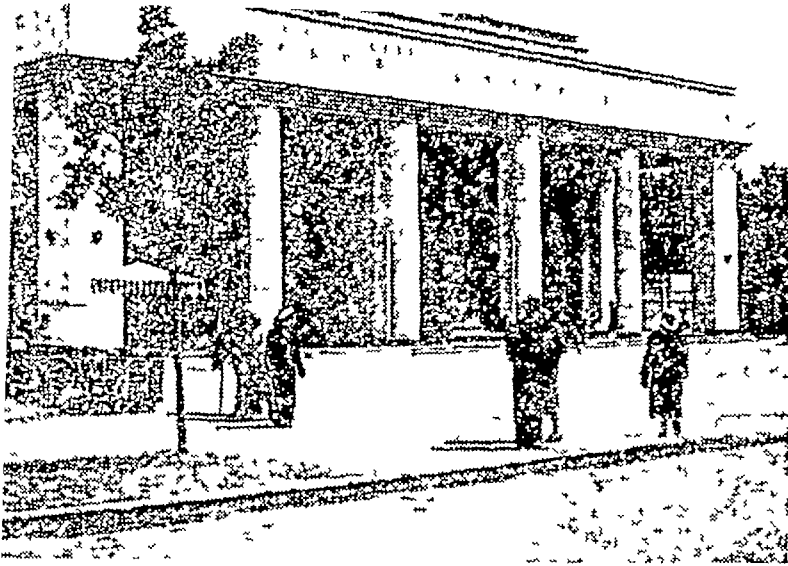
सुरग की रेल 'मीत्रो' का स्टेशन

जमीन के अदर रेल का प्लेटफार्म
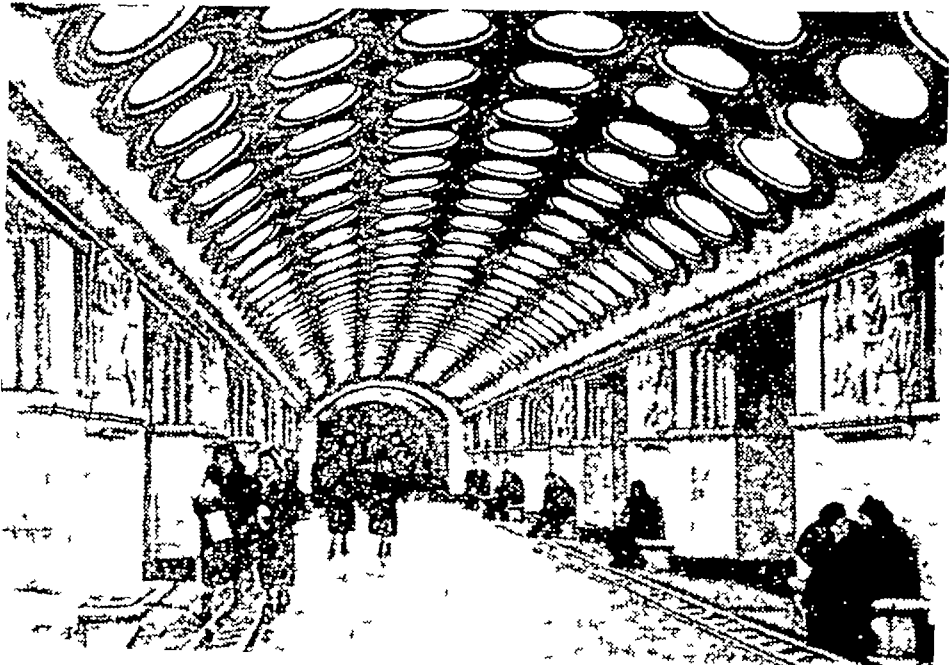
किंडरगार्टन मे भोजनोपरात बाल-विश्राम

देहात के घर मे खेलकूद
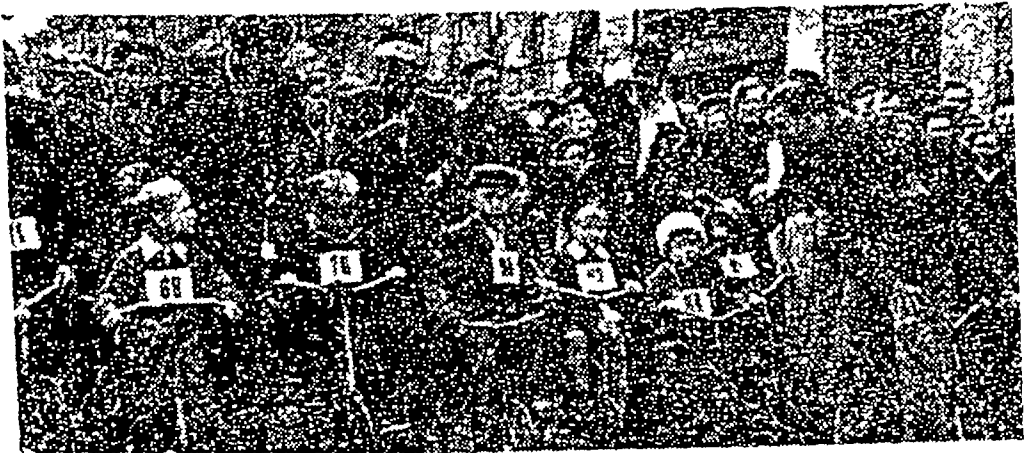
प्रतियोगिता

पढाई

पिकनिक
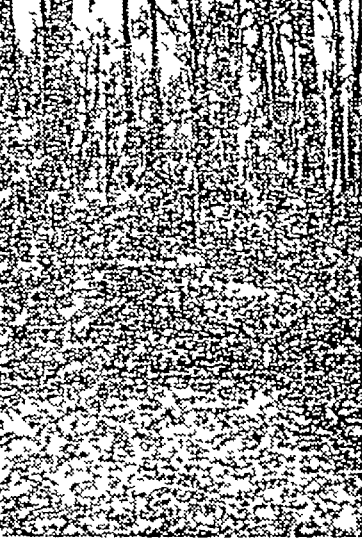
टाल्स्टाय की समाधि
यास्नाया पोलियाना मे)
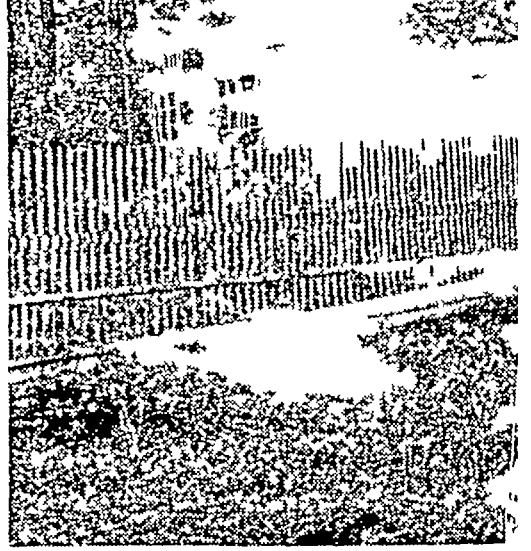
कलाकारो की वस्ती
(मास्को से कुछ दूर सुरम्य स्थान पर)

इस्त्रा मे
(वाई ग्रोर से)
लेखक,
इलिया एहरनवुर्ग,
श्रीमती कमला रतनम
तथा
श्री रतनम्

नगर का एक दृश्य

हरमिताज (नेवा नदी के तट पर ज़ार का शीतकालीन प्रासाद)
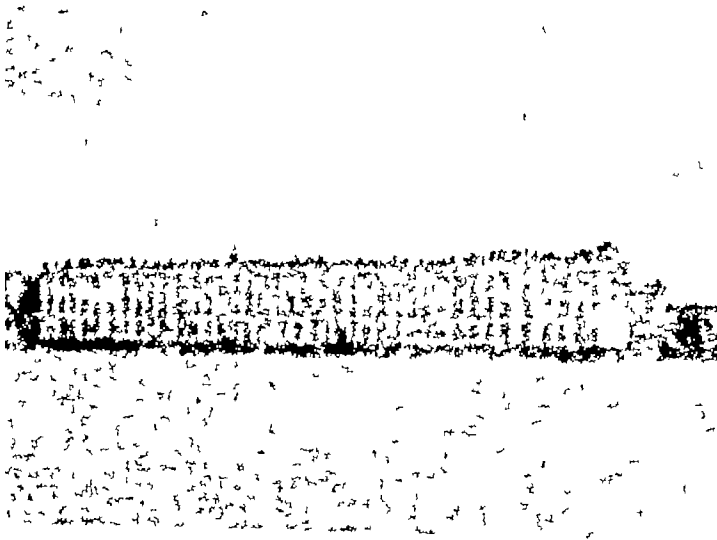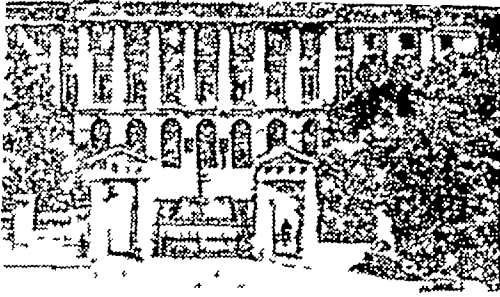
का
केन्द्र
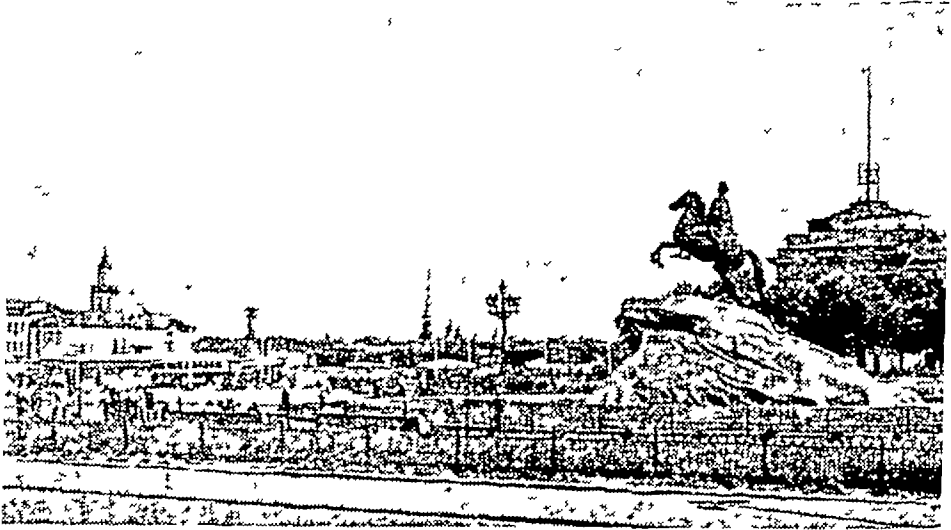
दिसम्बर-चौक

मत इसाक
का
गिरजाघर
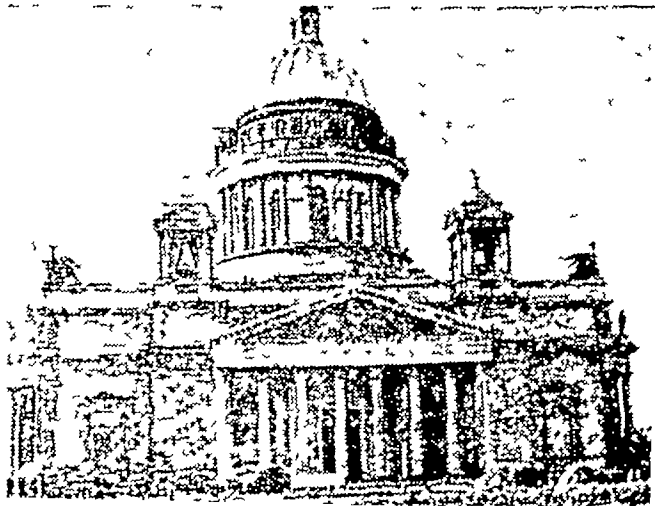
किला वन्दीगृह वना दिया गया और सारे प्रगतिशील नेता तथा अन्य व्यक्ति उसीमे वन्द करके रक्खे गये। रूस के सुप्रसिद्ध अराजकतावादी क्रोपाटकिन भी यहा वदी रहे थे। सन् १८७४ मे क्रोपाटकिन ने इस जेल मे प्रवेश करते समय का बडा ही रोमाचकारी वर्णन करते हुए अपने आत्म-चरित मे लिखा है

"मै एक अधकारमय रास्ते मे ले जाया गया। हथियारवन्द सन्तरी वहा टहल रहे थे। मै एक कोठरी मे वन्द कर दिया गया और उसका जवरदस्त फाटक लगाकर उसपर ताला डाल दिया गया। यह वही किलारूपी जेल थी, जिसमे पिछले दोसौ वर्ष से रूस की सर्वोत्तम शक्ति का विनाश किया गया था और जिसका नाम सेण्ट-पीटर्सवर्ग मे डर के मारे वडी दवी जवान से लिया जाता है। इसी कारागार मे रूसी जार प्रथम पीटर ने अपने लडके एलेक्सिस को घोर यातनाए दी थी और फिर उसे अपने हाथ से मार डाला था। यही राजकुमारी ताराकानोवा एक कोठरी मे रक्खी गई थी और जव उसमे पानी भर आया तो, उसके चूहे अपनी जान वचाने के लिए उस राजकुमारी के शरीर पर चढ गये थे। यहीपर भयकर मिनिच ने अपने शत्रुओ पर अत्याचार किये थे। यही द्वितीय केथेराइन ने अपने दुश्मनो को जिन्दा गडवा दिया था—उन लोगो को, जिन्होने उसके अपने पति की हत्या का विरोध किया था। प्रथम पीटर के शासन-काल से १७० वर्ष तक यह जेलखाना हत्या और अत्याचारो का अड्डा वना रहा था। यहा कितने ही आदमी जिन्दा दफना दिये गए थे या धीरे-धीरे मृत्यु के घाट उतार दिये गए थे, अथवा नमी और अन्धकार मे परिपूर्ण इन कालकोठरियो मे वे पागल हो गये थे। यहींपर दिसम्वरिस्ट लोगो को, जिन्होने रूस मे सर्वप्रथम प्रजातत्र का झण्डा फहराने का प्रयत्न किया था, पहले-पहल शहादत का मजा चखाया गया था। यहीं डोस्टोवस्की, वाकूनिन, पिसारेव आदि को कारा-वास का दण्ड भोगना पडा था। इसी जेल मे तत्कालीन सर्वोत्तम साहित्य-सेवी ठूसे गए थे। यहीपर काराकोजोफ पर जुल्म किये गए थे और उन्हे फांसी का दण्ड दिया गया था।"

आगे फिर वह कहते है,"इन सभीकी मूर्त्तिया मेरी कल्पना के चित्रपट पर खिच गईं। लेकिन मेरा ध्यान खासतौर पर अटका रहा वाकूनिन के चरित्र पर, जो आस्ट्रिया की एक जेल मे दो वर्ष तक दीवार से जजीर वाधकर रक्खे गए थे और फिर आस्ट्रियन सरकार ने जिन्हे रूस के जार निकोलस को सौंप दिया गया था और जिन्हे उसने ६ वर्ष तक इसी जेल में डाले रक्खा था। जार के मरने के वाद ही वह छूट

सके। लेकिन बाकूनिन ने धैर्य और साहस के साथ इन यातनाओ को सहा और जब वह जेल से बाहर निकले तब अपने स्वतन्त्र साथियो से अधिक शक्तिशाली और ताजे दिखाई दिये। मैने सोचा कि जब बाकूनिन ने अपने कठोर जीवन के ६ वर्ष यहा सफलतापूर्वक काट दिये, तब मै भी काट दूगा। मै यहा मरूगा नही।"

रूस के सुविख्यात लेखक गोर्की ने यही अपना बदी जीवन व्यतीत किया। लेनिन के बडे भाई भी इसीमे रहे।

किले मे बहुत-से भवन है, लेकिन उनमे गिरजे की इमारत सबसे अधिक शानदार है। कला और स्थापत्य का वह सुन्दर नमूना है । उसके अन्दर दायें पार्श्व मे पीटर महान् की समाधि है, उसके बाद अन्य जारो तथा जारीनाओ की। गिरजे की ऊचाई १२२ मीटर है। उसकी अब फिर से मरम्मत हो गई है। उसके चित्र बडे ही सुन्दर है। वेदिका तो बहुत ही भव्य है। उसपर मनोहारी चित्रकारी हो रही है।

मस्जिद

किला देखकर बाहर आये तो घूमते हुए एक इमारत ने अचानक मेरा ध्यान आकर्षित कर लिया। वह मस्जिद थी। वेलन्टीना ने बताया कि लेनिनग्राड मे १४ रूसी गिरजे है, १ सिनेगाग, १ मस्जिद, १ बेप्टिस्ट और १ कैथोलिक गिरजा। रविवार के दिन गिरजो मे खूब भीड होती है और जुमे के दिन मस्जिद मे बडी चहल-पहल रहती है।

स्टेडियम

नगर का खेल-कूद का मैदान शहर से ५-७ मील दूर है। उसे देखने की बहुत उत्सुकता नही थी। पर वेलन्टीना नही मानी। रास्ते मे एक विशाल जलराशि की ओर सकेत करके वेलन्टीना ने कहा, "यह फिनलैण्ड की खाडी है। हेलसिंकी यहा से कुल ३७० किलोमीटर है।" स्टेडियम पहुचें कि उससे पहले ही हमारी कार रोक दी गई। मैने पूछा, क्या बात है ?" वेलन्टीना ने जवाब दिया, "यहा पास दिखाना होता है। बिना पास के स्टेडियम नही जा सकते।" वेलन्टीना पहले ही पास बनवा लाई थी, इसलिए हमे कोई कठिनाई नही हुई। आगे जाकर कार से उतर पड़े और पैदल स्टेडियम मे प्रविष्ट हुए। उसके अदर के लम्बे-चौडे घेरे को देखकर अनुमान हुआ कि रूस के निवासी खेल-कूद के बहुत ही शौकीन है। बैठने की व्यवस्था सुविधाजनक है। इस स्टेडियम का निर्माण सन् १९५१ मे हुआ था। वेलन्टीना ने बताया कि कई लाख व्यक्तियो के बैठने का इसमे स्थान है। रूस के महान् क्रातिकारी कीरोव

के नाम पर उसका नामकरण किया गया है। आये-दिन उसमे खेल होते रहे है। मुझे देखकर अचरज हुआ कि वहा के अत्यधिक व्यस्त जीवनमे लोग खेल-कूद के लिए इतनी रुचि और इतना समय कैसे निकाल पाते है! इसका कारण शायद यह है कि वे 'काम के समय काम' और 'खेल के समय खेल' के सिद्धान्त को मानते है। जब काम के घटे होते है तो वे काम मे इतने जुटते है कि और सबकुछ भूल जाते है। खेल का समय होता है तो वे उसमे ऐसे लीन हो जाते है, मानो काम से उनको कोई सरोकार ही नही है। इससे काम को किसी प्रकार की हानि पहुचती हो, ऐसा नही है, बल्कि उल्टे उनकी कार्य-क्षमता मे वृद्धि होती है।

विश्वविद्यालय

लेनिनग्राड का विश्वविद्यालय रूस के अच्छे विश्वविद्यालयो मे से है। उसमे १३ फैकल्टी है और १४००० छात्र-छात्राए पढते है। ४४ इस्टीटयूट, यानी कालेज उसके अतर्गत है, जिनमे लगभग १२ लाख विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते है। विश्वविद्यालय मे उच्च वर्गों की तो पढाई होती ही है, अन्य भाषाओ का भी अध्ययन कराया जाता है। विदेशी भाषाओ मे हिन्दी को प्रमुख स्थान है, जो स्वाभाविक है। भारत के साथ रूस के सबधो को स्थायित्व देने के लिए भारतीय भाषाओ, विशेषकर हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है। यही कारण है कि लेनिनग्राड मे ही नही, रूस के अन्य नगरो मे भी हिन्दी के अध्ययन को विशेष रूप से प्रोत्साहन दिया जा रहा है। दूसरे, हमे यह भी लगा कि जर्मन विद्वानो की भाति रूस मे भी ऐसे बहुत-से स्त्री-पुरुष है, जो अनुसधान मे विशेष रुचि रखते है। वे विभिन्न भाषाओ का ज्ञान इसलिए अर्जित करते है कि उन भापाओ के साहित्य का मूल रूप मे रसास्वादन कर सके। उनकी इस जिज्ञासा को विश्वविद्यालय तथा कालेज और अधिक प्रोत्साहन देते है। लेनिनग्राड विश्वविद्यालय मे हिन्दी के अध्यापन का कार्य वहा के निवासियो द्वारा होता है।

विश्वविद्यालय की शानदार इमारते निवा नदी के पार बाई ओर को है। लेनिन इसी विश्वविद्यालय के छात्र रहे थे।

नगर की प्राकृतिक शोभा

सारे शहर का चक्कर लगाने पर लगा कि लेनिनग्राड नगरी भले ही मास्को जैसी विशाल न हो, पर उसकी प्राकृतिक शोभा निराली है। निवा नदी और फिनलैण्ड की खाडी ने उसे ऐसा सुन्दर रूप दिया है कि पर्यटक का मन उसपर

मुग्ध हुए विना नही रहता। यदि आपको नगर की ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि मालूम हो जाय तव तो 'सोने मे सुहागे' की कहावत चरितार्थ हो जाती है। वस्तुत लेनिनग्राड मे प्राकृतिक सुषमा और ऐतिहासिकता का वडा सुन्दर समन्वय हुआ है।

नगर वडा ही साफ-सुथरा है और वहा के निवासी वहुत ही स्वस्थ और प्रसन्न दिखाई दिये। वहा के नागरिको को अपने उस शहर पर गर्व करने का पूरा अवसर है। नाजी सेनाओ के भयकर आक्रमण का वहा के वीर नागरिको ने अपनी पूरी शक्ति से मुकावला किया और उन्हे नगर मे पैर नही रखने दिया।

एक रोचक प्रसग

पिछली शाम को जोर की वर्षा होने के कारण मै वाहर न जाकर होटल मे घूमता रहा। वेलन्टीना साथ थी। उसने वताया कि यह होटल पहले ब्रिटिश होटल था और इसमे धनिक व्यवसायी और राजदूत ठहरा करते थे, लेकिन अव यह लेनिनग्राड सोवियत के हाथ मे है। इसकी साज-सज्जा आज भी पहले जैसी है और वाहर से आनेवाले खास-खास लोग ही यहापर ठहराये जाते है। पानी थोडा थम जाने पर वेलन्टीना तो चली गई। मैने सोचा, लाओ, मास्को सोमसुन्दरम से वात कर लू। यह सोचकर मै नीचे आफिस मे गया और मास्को फोन मिलाने को कहा। यह भी कह दिया कि अगर सोमसुदरम के यहा से कोई उत्तर न मिले तो मेवालाल जायसवाल से मिला दे। दोनो फोन नम्वर देकर अपने कमरे मे चला गया। पाच मिनट हुए होगे कि घटी वजी। मेरे रिसीवर उठाते ही किसीने कहा—मास्को वात कीजिये। सोमसुन्दरम से वात हुई। उसके वाद जैसे ही मैने रिसीवर रक्खा कि फिर घटी वजी। रिसीवर उठाया, इस वार जायसवाल वोल रहे थे। उनसे वाते करके मैने फोन देनेवाली वहन से कहा, "यह तुमने क्या किया ? मैने दोनो नम्वर नही मागे थे। मैने तो यह कहा था कि अगर पहला न मिले तो दूसरा दे।" वह वहन सहम गई। वाद मे जव मै फोन का विल चुकाने गया तो वह वोली, "आप एक कॉल का दें। मेरी गलती थी, इसलिए एक का मै अपने पास से भरूगी।" मैने आग्रह करके पूरा विल चुका दिया, पर वह सदाशयी वहन इस घटना को भूली नही और उसका एवज दूसरे रूप मे देकर ही मानी। जव मै लेनिनग्राड से जाने को था, उन्होने हवाई अड्डे तक कार की व्यवस्था करादी। उनकी जरा-सी चूक से मेरे कोई ७-७॥ रूवल अधिक लगे थे, लेकिन उन्होने ३५-४० रूवल का मुझे फायदा करा दिया।

: ३२ :

ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट

मास्को मे मेरे मित्रो ने, विशेपकर श्रीमती कमला रतनम् ने, वडा आग्रह किया था कि लेनिनग्राड मे दो चीजें जरूर देखना। एक तो हरमिताज, दूसरी ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट। हरमिताज देख चुकने के वाद मैने ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट को देखने की व्यवस्था करने के लिए होटल के सूचना-विभाग से कहा। उन्होने अधिकारियो को फोन करके समय निश्चित करा दिया। वेलन्टीना के साथ कार से मै वहा पहुचा। इन्स्टीट्यूट हरमिताज (कला-भवन) के निकट ही है। अन्दर सूचना भिजवाने पर थोडी देर मे एक युवक वाहर आये और भारतीय पद्धति मे हाथ जोडकर अभिवादन करते हुए वोले, "नमस्कार, यशपालजी। आइये। मेरा नाम ज़ोग्राफ है। मुझे वडी खुशी है कि आप हमारे यहा पधारे।"

युवक ने यह सव हिन्दी मे कहा। मैने देखा कि न केवल उनका उच्चारण ही साफ और शुद्ध है, अपितु उनके वोलने मे आत्म-विश्वास भी है। मैने प्रत्युत्तर मे नमस्कार करते हुए कहा, "आप तो हिन्दी खूव वोल लेते है।"

मेरे इतना कहते ही उनके चेहरे पर मुस्कराहट दौड गई। शिष्टाचार दिखाते हुए वोले, "जीहा, थोडी-थोडी वोल तो लेता हू। पर हिन्दी से ज्यादा उर्दू वोलने का मुझे अभ्यास है।"

वात करते हुए हम लोग अन्दर पहुचे। एक वडा-सा हॉल था, जिसमे थोडे-थोडे फासले पर कई मेजे और उनके इर्द-गिर्द कुर्सिया पडी थी। ज़ोग्राफ मुझे और वेलन्टीना को अपनी मेज पर ले गये और वडे आदर से विठाते हुए वोले, "आपको शायद पता होगा कि इस सस्था मे भारतीय भाषाओ का काम होता है। हम सव इसी हॉल मे वैठते है। पर इस सस्था का जो रूप आज आप देखते है, वह पहले नही था। इसकी स्थापना सन् १८१८ में पूर्वी देशों की पाडुलिपियो के सग्रहालय (म्यूजियम ऑव ओरियण्टल मैनस्क्रिप्ट्स) के रूप मे हुई थी और शुरू मे सिर्फ

अरबी और फारसी की पाण्डुलिपिया इकट्ठी की गई थी। इस समय उनकी सख्या कोई छ-सातसौ होगी।"

"लेकिन यह तो सस्कृत के अध्ययन का भी एक महान केन्द्र है।" मैने कहा।

"जीहा, आगे चलकर सस्कृत को भी शामिल कर लिया गया। आज आपको यहा सस्कृत के अनेक दुर्लभ ग्रन्थ मिल जायगे।"

इतना कहकर वह उठे और उन्होने सस्कृत-जर्मन-कोश की सात जिल्दें लाकर मेरे सामने रख दी। बोले, "सस्कृत को शामिल करने के बाद उसका बहुत-सा साहित्य इकट्ठा किया गया। सन् १६३४ मे काम का और विस्तार हुआ। हिन्दी, उर्दू, बगला, पजाबी, मराठी, तेलगू आदि भाषाओ का भी काम हाथ मे लिया गया। सस्कृत और पाली का चल ही रहा था। आपने अकादमीशियन ए० पी० बारान्निकोव का नाम सुना होगा। भारत की आधुनिक भाषाओ के विभाग के वह सस्थापक थे।"

मैने कहा, "दिल्ली मे उनके सुपुत्र पी० ए० बारान्निकोव से प्राय भेट होती रहती है। सचमुच प्रो० बारान्निकोव बडे ही प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। 'रामचरित-मानस' का रूसी मे पद्यानुवाद करके उन्होने बडी दूरदर्शिता दिखाई।"

जोग्राफ बोले, "आपने यहा से प्रकाशित हिन्दी-रूसी-शब्द-कोश तथा उर्दू-रूसी-शब्द-कोश तो देखे होगे ?"

दो मोटी-मोटी जिल्दे मेरे सम्मुख रखते हुए वह बोले, "इनका निर्माण और सम्पादन प्रो० बेस्क्रोवनी ने किया है। और यह देखिये, उर्दू के लेखक मीर अम्मान के 'बाग-बहार' का रूसी अनुवाद। यह अभी-अभी निकला है।"

"इसका अनुवाद किसने किया है ?"

"मैने।"

उनकी मेज पर 'ग्रथ-साहब' की प्रति खुली हुई रक्खी थी। उसकी ओर सकेत करते हुए मैने पूछा, "आप पजाबी भी जानते है ?"

उन्होने बडी विनम्रता से उत्तर दिया, "जी, मै अग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, मराठी और पजाबी, ये भाषाए जानता हू। रूसी तो मेरी मातृभाषा है ही। अब मै अनुवाद करने के लिए 'ग्रन्थ साहब' का अध्ययन कर रहा हू।"

मै जोग्राफ के चेहरे की ओर देखता रह गया। कितनी भाषाए उस युवक ने सीख ली है! सीख ही नही ली, उनमे इतनी दक्षता भी प्राप्त कर ली है कि मूल

भाषा के ग्रन्थो का अपनी भाषा मे अनुवाद कर सकें !

मै यह सब सोच ही रहा था कि इतने मे एक सज्जन आये। कद उनका मझौला था। सूट पहने हुए थे। असाधारण स्फूर्ति थी उनमे। चेहरे के गाम्भीर्य से लगता था कि वह कोई विद्वान् पुरुष है। जोग्राफ ने खडे होकर उनका स्वागत किया और परिचय कराते हुए बोले, "आप प्रो० वी० आई० कल्यानोव है।"

उनका विस्तृत परिचय मुझे श्रीमती कमला रतनम् ने मास्को मे दी थी। यह भी बताया था कि वह बडी सुन्दर सस्कृत लिखते है और धाराप्रवाह बोलते है। मैने उन्हे प्रणाम किया और कहा, "मैने यहा आते ही आपके विषय मे पूछा था, लेकिन मालूम हुआ कि आज छुट्टी है। आप विश्वविद्यालय मे नही होंगे और यहा भी आने की सम्भावना नही है। श्री ज़ोग्राफ ने बताया कि घर पर छुट्टी के दिन भला आप कहा मिलेगे! मै तो निराश हो गया था। अकस्मात् आपके दर्शन से मुझे बडा आनन्द प्राप्त हुआ है।"

पास ही एक कुर्सी पर वह बैठ गये। मुझे मालूम था कि वह महाभारत के 'आदि पर्व' का अनुवाद रूसी मे कर चुके है, जो प्रकाशित हो गया है और अब वह 'सभापर्व' का अनुवाद प्रारम्भ करनेवाले है। बैठने पर इधर-उधर की चर्चा के बीच मैने उनसे पूछा, "आपको महाभारत का अनुवाद करने की प्रेरणा क्यो हुई ?"

उन्होने उत्तर दिया, "इसलिए कि वह भारतीय सस्कृति का विश्वकोश है।"

ये शब्द उन्होने इतनी आत्मीयता से कहे कि मुझे कमलाजी की कही बात याद आगई। उन्होने कहा था, "कल्यानोव भारतीय सस्कृति से इतने प्रभावित है कि उन्होने अपना नाम 'कल्याणमित्र' रख लिया है।"

"आप तो भारत हो आये है ?" मैने पूछा।

"जीहा, मै भारत हो आया हू और वहा काफी घूमा हू। कलकत्ते मे सुनीति-कुमार चाटुर्ज्या से मिला। पूना मे कई विद्वानो से भेट हुई। मद्रास और बगलौर भी गया था। दिल्ली तो जाना ही था। वहा अनेक व्यक्तियो से सम्पर्क हुआ, पर साहित्यकारो से अधिक मिलना-जुलना नही हो सका।"

मैने कहा, "अब आप दिल्ली पधारिये। वहा के सभी साहित्यकारो से आपका परिचय हो जायगा।"

उन्होने मुस्कराते हुए कहा, "लेकिन मै कोई साहित्यकार थोडे हू।"

मैने कहा, "आप साहित्यकार तो है ही, साथ ही आपने दो देशो के बीच प्रगाढ

सम्बन्ध स्थापित करने के लिए सेतुबन्ध-निर्माण का भी कार्य किया है और कर रहे हैं। रामायण और महाभारत के रूसी-सस्करण उपलब्ध कराकर आप लोगो ने करोडो भारतवासियो के हृदय मे अपना स्थान बनाने की दिशा मे कदम उठाया है।"

इसके उपरान्त हम पुन इन्स्टीट्यूट की प्रवृत्तियो की चर्चा करने लगे। जोग्राफ ने वताया कि वेस्कोवनी अव हिन्दी-साहित्य की चुनी हुई पुस्तको का अनुवाद कर रहे हैं। उन्होने प्रेमचन्दजी के 'प्रेमाश्रम' का अनुवाद किया है, और भी वहुत-सी कितावो का कर रहे है। सीनियर प्रो० वी० एस० वोरोब्योव-देस्यातोवस्की ने कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' का अनुवाद किया है, जो अगले वर्ष के मध्य तक छप जायगा।"

उन्होने वताया कि इस समय निम्नलिखित व्यक्ति भारतीय भाषाओ के कार्य मे सलग्न है

१ जी० ए० ज़ोग्राफ (पजावी) २ कुमारी टी० कतेनिना (हिन्दी-मराठी) ३ एस० रूदिन (हिन्दी-बगला-तेलगू) ४ वी० वालिन (हिन्दी-वगला) ५ श्रीमती आर० होलेवा (हिन्दी-उर्दू) ६ कुमारी स्वेतेविदोवा (वगला) ७ श्रीमती नोविकोवा (वगला)—लेनिनग्राड विश्वविद्यालय मे भारतीय विभाग की अध्यक्ष भी यही है—८ एरमन (सस्कृत-पाली) ९ श्रीमती तोल्स्ताया (पजावी)।

ज़ोग्राफ ने वताया कि इस कार्य को गति प्रदान करने मे जिन तीन व्यक्तियो के नाम मुख्य रूप से लिये जा सकते है, वे है, १ स्व० प्रो० वारान्निकोव २ प्रो० वेस्कोवनी और ३ प्रो० कल्यानोव।

इसके उपरान्त विभागीय व्यक्तियो का परिचय कराने के लिए ज़ोग्राफ ने उन सवको बुला लिया। जब वगला-विभाग की सचालिका कुमारी स्वेतेविदोवा का परिचय कराया गया तो प्रो० कल्यानोव ने मुस्कराते हुए कहा, "इनके नाम का, जानते है, रूसी मे क्या अर्थ है?" मैने कहा, "नही।" वह हँसते हुए वोले, "उसका अर्थ है श्वेतदर्शन। क्यो, यदि इनका नाम श्वेतदर्शना रख दिया जाय तो कितना उपयुक्त होगा!" उनके इस विनोद में हम सवने भाग लिया।

कल्यानोव ने वताया कि हमारे प्रो० श्चेवेत्स्कि ने, जो सोवियत सघ की एकादमी ऑव साइसेज के सदस्य है, वौद्ध धर्म का विशेष रूप से अध्ययन किया है और तीन पुस्तके लिखी है, जो 'थ्री सिस्टर्स' (तीन सहोदराए) के नाम से विख्यात है और रूस मे वहुत ही लोकप्रिय है, १ कन्सेप्ट ऑव वुद्धिज्म। यह पुस्तक

लेंदन से सन् १९२३ मे निकली, २. कन्सेप्ट ऑव बुद्धिस्ट निर्वाण (लेनिनग्राड से १९२७ मे प्रकाशित) ३ बुद्धिस्ट लॉजिक (इसका पहला खड सन् १९३० मे और दूसरा १९३२ मे लेनिनग्राड से निकला)।

कल्यानोव ने जब अपने प्रोफेसर का नाम लिया तो मै उसे ठीक से समझ नही पाया। मैने कहा, "इसे आप मेरी डायरी मे लिख दीजिये।" उन्होने देवनागरी लिपि मे वडे सुन्दर और स्पष्ट अक्षरो मे लिखा—"श्रीमदाचार्य श्चेर्बेत्स्कि।" मैने कहा, "श्रीमदाचार्य तो भारतीय सस्कृति का शब्द है।" वोले, "अपने यहा के 'थियोडोर' के लिए मुझे यही शब्द उपयुक्त लगता है और मै इसीका प्रयोग करना पसन्द करता हू।"

जोग्राफ ने फिर सस्था के परिचय का सूत जोडा। वोले, " 'मुद्राराक्षस' तथा 'मृच्छकटिक' के भी अनुवाद हमारे यहा तैयार है और जल्दी ही प्रकाशित हो जायगे।

कुमारी स्वेतेविदोवा मेरी वरावर की कुर्सी पर वैठी थी। मैने उनसे पूछा, "आपने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की किन-किन रचनाओ का अनुवाद किया है ?"

वह वोली, "कुछ कहानियो और कविताओ का। उनका सग्रह भी प्रकाशित हुआ है। उसमे उनकी वह कविता भी आ गई है, जो उन्होने मृत्यु के सम्वन्ध मे लिखी थी।"

मैने कहा, "वह तो शायद उनकी अन्तिम कविता थी।"

"नही", वह वोली, "उसके वाद उन्होने और भी कविताए लिखी है।"

कहने को वह इतना कह तो गई, लेकिन तभी उन्हे लगा कि अपने अतिथि की वात को उन्हे काटना नही चाहिए था, सो झट बोली, "क्यो, आप आश्वस्त ह कि वह उनकी अन्तिम कविता थी ?"

मैने कहा, "नही, आपकी वात सही हो सकती है। हमारी भारतीय भाषाए वहुत ही विकसित है और उनमे इतना विपुल साहित्य है कि किसकी कौन-सी रचना कव प्रकाशित हुई, यह जानना वड़ा कठिन है।"

कह नही सकता कि मेरे इतना कहने से उनका समाधान हुआ या नहीं, पर एक वात मेरे मन मे घर कर गई कि हमे पूरी तैयारी करके विदेश जाना चाहिए और कोई भी वात मुह से ऐसी नही निकालनी चाहिए, जिससे अपने देश के सम्वन्ध मे हमारी अजानकारी या अज्ञान प्रदर्शित हो।

काफी देर तक चर्चा करने के वाद हम लोग ऊपर की मजिल मे एक वडे हॉल मे गये, जहा शीशे की अलमारियो मे सस्कृत, पाली, अरवी, तुर्की, पजावी, चीनी तथा अन्य अनेक भाषाओ की पाडुलिपिया रक्खी हुई है। उन्हे देखकर मुझे लगा कि ये लोग कितने जिज्ञासु और परिश्रमशील है कि दूर-दूर से प्राचीन पाडु-लिपियो को लाकर एक मूल्यवान निधि अपने यहा सचित कर ली है।

प्रो० कल्यानोव ने वडी सावधानी से कई पाडुलिपिया निकाली और मुझे दिखाई। साथ ही वे पुस्तकें भी दिखाई, जो विभिन्न भारतीय भाषाओ से रूसी मे अनूदित होकर उनके यहा से प्रकाशित हुई थी।

काफी समय हो गया था। मैने इच्छा प्रकट की कि एक चित्र ले लू। मौसम साफ नही था, पर मेरे मुह से वात निकालते ही सव तैयार हो गये और सडक की ओर के उस छज्जे पर जा खडे हुए, जहा से कुछ ही कदम पर मथर गति से वहती निवा नदी की शोभा देखते ही वनती थी। चित्र खिच जाने पर प्रो० कल्यानोव वोले, "देखिये, कैसे सयोग की वात है। आपके देश से डा० रघुवीर जव यहा आये थे तो उन्होने भी इसी स्थान से हम लोगो का चित्र खीचा था।"

पूछने पर जव मैने वताया कि मै उसी सध्या को मास्को जा रहा हू तो प्रो० कल्यानोव ने वडी हार्दिकता से कहा, "आपकी यात्रा शुभ हो और आप शत-जीवी हो।"

मैने उनका आभार माना और उनके लिए मगल-कामनाए की। सव लोग मुझे द्वार तक पहुचाने आये और वडे भावना-भरे हृदय से उन्होंने मुझे विदा किया।

हमारी सारी वातचीत हिन्दी मे हुई थी। लौटते मे वेलन्टीना कहने लगी, "वाह, आज तो वडा मजा आया। मै आपके साथ परिवाचन का कार्य करने आई थी, लेकिन वह करना पडा आप लोगो को।"

असल मे हुआ यह कि वेलन्टीना हिन्दी नही जानती थी, इसलिए वीच-वीच मे अपनी चर्चा का सार हमे उसे वताना पडा था। इसीकी ओर उसका सकेत था।

: ३३ :

फिर मास्को में

लेनिनग्राड मे देखने और अध्ययन के लिए बहुत-सी सामग्री है, लेकिन एक तो मौसम वडा खराव था और सर्दी वहुत अधिक थी, दूसरे मुझे वार-वार लगता था कि अव जल्दी-से-जल्दी अपने देश लौट चलना चाहिए। इसलिए जितना देख सकता था, देखा और तीसरे दिन दोपहर वाद चलने की तैयारी की। सामान बाधने के उप-रान्त वेलन्टीना से विदा मागी तो वह कुछ द्रवित-सी हो गई। वोली, "अव आप कव आवेगे ? जब भी मौका मिले, जरूर आइये। हम और हमारे देशवासी आपका स्वागत करने के लिए सदा उद्यत रहेगे।" मैने उसका आभार माना और कहा, "मै यहा आने के लिए बरावर उत्सुक रहूगा। इस देश मे मुझे जितना स्नेह और आत्मी-यता मिली है, उतनी और कही नही मिली।"

मुझे ध्यान आया, पिछले दिन वेलन्टीना ने बताया था कि दो दिन पहले ही उसके पति कही से बदलकर लेनिनग्राड आये है। स्वाभाविक था कि वह अपना समय बचाकर घर पर उनके साथ विताने की इच्छा रखती और तदर्थ प्रयत्न करती, लेकिन भावना से अधिक उसने कर्तव्य को महत्व दिया और जबतक मैने उसे जाने के लिए बाध्य नही कर दिया, वह मेरे साथ बनी रही।

सूचना-विभाग की जिन बहनो ने मेरी मदद की थी, उनसे भी मिला और उन्हे धन्यवाद दिया। अपने परिवार से विछुडने पर जैसी मन स्थिति होती है, वैसी हुई। वार-बार सोचता था कि कौन जाने, हम लोग जीवन मे फिर कभी मिलेगे या नही। मुझ जैसे व्यक्ति से प्रतिफल की वे क्या अपेक्षा कर सकती थी, इतने पर भी उन्होने वडे आत्मीयभाव से मुझे हर प्रकार की सुविधा देने मे कोई कसर न उठा रक्खी।

साढे चार वजे कार द्वारा हवाई अड्डे के लिए रवाना हुआ। रास्ता साफ और अच्छा था। समय से काफी पहले वहा पहुच गया। पासपोर्ट आदि नही देखे गये।

इसलिए सारे समय हवाई अड्डे पर घूमता रहा। ५ वजकर १० मिनट पर विमान रवाना हुआ। रास्तेभर वादल छाये रहे और विमान नीचे-ऊपर होता रहा। तबीयत हैरान रही। विमान मे व्यवस्था भी अच्छी नही थी। पीने को एक प्याला कॉफी तक न मिली, न कुछ खाने को मिला। धीरे-धीरे चारो ओर अधेरे का आवरण फैल गया। इसलिए वाहर कुछ भी दिखाई नही देता था। हम लोग अपने मे सिमटे बैठे रहे। हिचकोरो के कारण नीद तो भला कहा आनी थी! मेरे वाए हाथ की दो सीटो पर एक रूसी महिला और उसका वच्चा बैठे थे। शायद वच्चे की तवीयत ठीक नही थी। उसने मा को परेशान करना शुरू किया। मा ने उसे गोद मे ले लिया। थोडी देर मे उस महिला की स्वय की तवीयत विगडने लगी, उसे वडे जोर की उलटी हुई और उसका सिर चकराने लगा। उसने सिर पीछे सीट पर टिका लिया। परिचारिका ने वच्चे को अपनी गोद मे ले लिया। सारे रास्ते वह महिला वेचैन रही।

कही-कही बादल विखर जाते थे, पर नीचे-ऊपर, इधर-उधर फैले हुए गहन अधकार मे यत्रतत्र विजली की तारो जैसी टिमटिमाती रोशनी के अलावा और कुछ नही दीखता था। ढाई घटे का वह रास्ता राम-राम करके कटा। आखिर झिल-मिल करती विजली की अगणित रोशनियो को देखकर पता चला कि मास्को आ गया। विमाम ने नगर की प्रदक्षिणा की और हवाई अड्डे पर नीचे उतर गया। उस समय ७॥ बजे थे, पर ऐसा लगता था, मानो आधी रात हो गई हो।

हवाई अड्डे पर सोमसुन्दरम और जायसवाल मिल गये। मैने उन्हे मास्को से जाने के वाद कोई पत्र नही लिखा था, इसलिए वे बडे चिंतित रहे और इसकी उन्होने शिकायत की। पर उन्हे खुशी थी कि उनकी प्रेरणा और आग्रह पर मै निकल गया तो इतने देश देख ही आया।

छब्बीस दिन की भाग-दौड और हवाई यात्रा से थक गया था। मास्को पहुच-कर राहत मिली।

भाई वीरेन्द्रकुमार शुक्ल के, जिनके साथ मै पिछली वार ठहरा था, घरवाले आ गये थे, इसलिए इस वार भाई मेवालाल जायसवाल के यहा ठहरने की व्यवस्था की गई। उनकी पत्नी प्रसूति-गृह मे जानेवाली थी। घर मे काफी जगह थी। हवाई अड्डे से सीधे उन्हीके यहा पहुचे। सोमसुन्दरम् और जायसवाल बडी देर-तक प्रवास की वाते पूछते रहे। अत मे वोले, "हम लोग यहा इतने दिन से रहते

हुए भी कही नही जा पाये और सयोग देखो, आप थोड़े ही दिनो मे इतना घूम आये।"

मैंने कहा, "अक्सर ऐसा होता है कि जिस नगर मे हम रहते है, उसकी बहुत-सी चीजे नही देख पाते । सोचते रहते है कि किसी भी दिन देख आवेगे और इस तरह दिन टलते जाते है । यही बात आप लोगो के साथ है ।"

मास्को पहुचने के अगले दिन से ही मुझे स्वदेश लौटने की उतावली हुई । दो महीने हो गये थे । वैसे भी मै मास्को और उसके आसपास काफी घूम चुका था । फिर भी देखने के लिए बहुत-कुछ शेष था और ठहरने मे मुझे कोई रस न हो, ऐसी बात भी न थी, फिर भी मन घर लौटने को व्याकुल हो रहा था । सो सबसे पहले मै अपनी सीट सुरक्षित कराने के लिए ट्रैविल ब्यूरो गया । वहा पहुचने पर मालूम हुआ कि जल्दी-से-जल्दी मुझे १९ अक्तूबर को स्थान मिल सकता है । तबतक की सारी सीटे घिरी थी । बडा अजीब-सा लगा । ग्यारह दिन वहा क्या करूगा ? लेकिन कोई चारा भी तो नही था। विवश होकर १९ तारीख के जेट मे सीट बुक कराके लौट आया ।

नगर मे पहले की अपेक्षा अब बडी उदासी-सी छाई थी। पतझड का मौसम प्रारभ हो गया था। पेड-पौधे पत्तो से विहीन नंगे खडे थे और फूलो की बहार समाप्त हो चुकी थी। मैने जाते समय एक रगीन फिल्म खरीदी थी; लेकिन फूलो की तस्वीरे उस समय खीचने की सुविधा नही हुई थी। सोचा था कि लौटकर खीच लूगा, लेकिन अब तो हालत ही बदल गई थी। नगर का रूप ही कुछ और हो गया था। युवक-समारोह के दिनो के मास्को से अबका मास्को एकदम भिन्न था, यहा-तक कि उसे पहचानना भी मुश्किल होता था।

मौसम मे भी बडा परिवर्तन हो गया था । जाते समय गुलाबी जाड़ा था, पर अब तो सर्दी के मारे दांत बजते थे । शाम को सड़क पर कही पानी रह जाता तो सवेरे जमा हुआ मिलता । एक दिन मै भारतीय दूतावास से लौट रहा था । अचानक बर्फ गिरने लगी । केदारनाथ तथा एक-दो अन्य स्थानो पर मै हिमपात के दृश्य पहले देख चुका था । बडा मजा आया । बर्फ गिरते मे मै बराबर घूमता रहा । टोपी और ओवरकोट पर बर्फ इकट्ठी हो जाती थी, उसे बार-बार झाड़ देता था । लोगो ने बताया कि मास्को मे असली आनद तो जनवरी-फरवरी मे आता है, क्योकि सड़को पर बर्फ-ही-बर्फ दिखाई देती है । उसे साफ करने पर ही ट्रामे

तथा अन्य सवारिया चल पाती हैं । मास्को नदी का पानी जम जाता है और वह स्केटिंग तथा दूसरे खेलो का मजेदार मैदान वन जाता है।

मानना होगा कि नगरवासियो का फूलो का प्रेम अद्भुत है। मौसम के दिनो मे नाना रगो के सुन्दर पुष्पो से शहर सुशोभित रहता है। सडक की पटरियो पर तथा दूसरी जगहो पर वढिया फूल विकते दिखाई देते हैं। सामान्य स्थिति का व्यक्ति भी घर को सजाने के लिए दो-चार रूवल के फूल खरीद ले जाता है। अव असली फूलो की ऋतु समाप्त हो जाने पर कागज के वहुत ही वढिया फूल वाजार मे आ गये थे और लोग उन्हीको खरीदकर ले जा रहे थे। नगरवासियो की सुरुचि तथा कलाप्रेम को देखकर वड़ी प्रसन्नता होती थी।

मेरे आने की खवर जैसे ही भारतीय मित्रो को लगी कि वे आये और तरह-तरह के सवाल पूछने लगे। 'हिन्दुस्तानी समाज' की वैठक वुलाई गई। मर्करी हवाई सर्विस द्वारा आयोजित प्रवास में कुछ भारतीय लोग वहां आये हुए थे। वे भी थोडी देर तक वैठक मे सम्मिलित हुए। 'परदेशी' फिल्म के सिलसिले मे उपस्थित भारतीय मित्रो मे से अनिल विश्वास तथा प्रेम धवन ने भी बैठक में भाग लिया। अनिल विश्वास ने एक कविता सुनाई। रचना सामान्य थी, पर उनके मधुर कण्ठ ने उसमे जान डाल दी। 'समाज' की वैठको मे सारी चर्चाए और भाषण प्राय. अग्रेज़ी मे होते हैं। मुझसे जव प्रवास के अनुभव सुनाने को कहा गया और अग्रेज़ी मे वोलने का आग्रह किया गया तो मैंने कह दिया—"मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि हम यहा परदेश मे अपनी चर्चाओं और भाषणो मे विदेशी भाषा का इस्तेमाल करें, विशेषकर अपनी ही बैठकों में। इसपर एक सज्जन वोल उठे—"हममे एक-दो भारतीय ऐसे है, जो हिन्दी नहीं जानते।" मैंने कहा, "एक-दो की खातिर हम अपनी भाषा की अवमानना क्यो करें?" मैं हिन्दी मे ही वोला। मैंने विस्तार से अपने सस्मरण सुनाये। कई मित्र घूमने का कार्यक्रम बना रहे थे; उन्होंने वहुत-से सवाल किये और विभिन्न देशो मे ठहरने तथा खर्चे आदि के वारे मे जानकारी ली।

मास्को-निवास के इन ग्यारह दिनो का मैंने पूरा उपयोग किया। जो स्थान देखने से रह गये थे, वे देखे और जिन चीजो को मैं पहले जल्दी मे सरसरी निगाह से देख गया था, उनमे से खास-खास को अव फुरसत से अच्छी तरह देखा। दो चीज़ों को देखने की मेरी वड़ी इच्छा थी। वोल्शाई थियेटर मे कोई वैले (नृत्य-

नाट्य) देखने के लिए तो मै बहुत ही आतुर था। पिछली वार एक महीने रहा था, पर टिकट ही नही मिला। फिर कुछ समय के लिए छुट्टियो मे वह थियेटर वद हो गया। अव वह खुल गया था और उसमे रूस का वडा ही लोकप्रिय वैले 'फाउटेन' चल रहा था। जायसवाल ने टिकटो की व्यवस्था कर ली और इस तरह मेरी इच्छा पूरी हो गई।

दूसरी उत्सुकता थी महर्षि टाल्स्टाय की जन्म-भूमि—यास्नाया पोलियाना के दर्शन करने की। उसकी व्यवस्था 'सोवियत लेखक सघ' ने पहले करने का प्रयत्न किया था, पर सफलता नही मिली थी। एक दिन तो जाने का विल्कुल निश्चय हो गया, लेकिन ऐन मौके पर कोई वाधा आ गई और जाना रुक गया। असल मे वह स्थान मास्को से कोई २०० किलोमीटर पर है और जवतक पूरी सवारिया न हो, तवतक उन्हे कार भेजने मे कठिनाई होती है। सयोग से इस वार तीन चीनी लेखक आ गये और हम लोग वहा हो आये।

मास्को मे वच्चो के सामान की एक वहुत वडी दुकान है, जिसे 'दोत्स्की मीर' कहते है। उसका अर्थ होता है 'वच्चो की दुनिया'। वास्तव मे वह है भी ऐसी ही। पूरा वाजार समझिये। कई मजिल की इमारत है और ऊपर आने-जाने के लिए ऐक्सकलेटर—चलती सीढियो—की व्यवस्था है। इस केन्द्र मे वच्चों से सम्वन्धित हर तरह का सामान मिल जाता है। वच्चो की रुचियो को आकर्षित और परिष्कृत करने के लिए नई-नई चीजो का आविष्कार होता रहता है। वडी भीड रहती है वहा। लोग नई-नई चीजो की खोज मे रहते है। मुझे यह प्रयोग वहुत ही अनुकरणीय लगा। एक तो इसलिए कि उसके द्वारा वच्चो के व्यक्तित्व और अस्तित्व को पृथक् स्वीकार करके उसे उचित महत्व दिया गया है। दूसरे, उसमे वाल-मनोविज्ञान के अध्ययन और विकास का अवसर मिलता है। तीसरे, वच्चो से सम्वन्ध रखनेवाली सव चीजें एक ही जगह पर मिल जाती है। दुकान इतनी वडी है कि पूरी देखना तो असभव था, लेकिन जितनी मैने देखी, उससे पता चला कि वहा के औसत वच्चो का स्तर काफी ऊचा है और अपनी विशेषता रखता है। उनकी रुचि मे मुझे वैचित्र्य भी खूब दिखाई दिया।

वाल-साहित्य के उच्चकोटि के लोकप्रिय लेखक कर्ने चकोव्स्की ने वडा आग्रह किया था कि मै उनके घर, जो शहर से कोई तीस-चालीस किलोमीटर पर था, अवश्य आऊ। पर उसका सुयोग इस वार भी न मिला। 'सोवियत लेखक सघ' ने

वहा जाने की व्यवस्था कर दी, लेकिन जाने से पहले फोन किया तो पता चला कि चकोव्स्की शहर ग्राये हुए है। वाल-साहित्य के इस महान् प्रणेता की ग्रात्मीयता ग्रौर सजीवता की स्मृति ग्राज भी हृदय को गद्गद् कर देती है। एक दिन वडी मजेदार बात हुई। 'सोवियत लेखक सघ' के कार्यालय मे ग्रचानक उनसे भेट होगई। वह ग्रग्रेजी जानते है। मुझे देखते ही वोले—"हम लोग पहले मिल चुके है। वोलो, कहा मिले थे ?" मुझे एकाएक ध्यान नही ग्राया। मैने कहा, "ग्रापका चेहरा तो परिचित मालूम होता है, पर याद नही पडता कि हम कहा मिले थे।" उन्होने हँसकर कहा, "ग्रच्छा, मै वताता हू। हम लोग ग्रोरियटल इस्टीट्यूट मे मिले थे। क्यो, ठीक है न ?" मुझे स्मरण हो ग्राया। मैने कहा, "ग्रापकी वात सही है।" इसके वाद उन्होने मुस्कराकर कहा, "ग्रापको भूख लगी है ?" मैने कहा, "नही, मै ग्रभी खाना खाकर ग्रा रहा हू।" उनकी मुस्कराहट ग्रौर फैल गई। वोले, "भूखे कैसे नही हो! मेरी स्त्री ने पहले ही जान लिया था कि मुझे एक भूखे भारतीय मिलेंगे। इसलिए उसने खाने की वहुत-सी चीजे मेरे साथ रख दी है। ग्राग्रो, वाहर कार मे चले।"

इतना कहकर वह मुझे ग्राग्रहपूर्वक वाहर ले गये। ग्रसल मे वात यह थी कि उनकी पत्नी ने उनके खाने के लिए वहुत-सी चीजें रक्खी थी ग्रौर वह ग्रकेले खाना नही चाहते थे। इसलिए उन्होने यह नाटक किया। हम लोग कार मे जा बैठे। उन्होने ग्रटैची खोली ग्रौर एक-एक चीज निकालकर देने लगे। वोले, "देखा, तुम्हारा ख्याल करके मेरी स्त्री ने ताजे टमाटर ग्रौर खीरे भी रख दिये हैं।" हम दोनो ने खाना शुरू किया। वह मुझे ग्राग्रह कर-करके चीजे देने लगे तो मैने कहा, "ग्राप तो वावा की तरह प्यार ग्रौर ममता से खिला रहे है।" वह हँस पडे। वोले, "एक भेद की बात वताऊ ? मै परवावा वन चुका हू।" उनकी हँसी मे देने को योग तो मैने भी दिया, पर मै चकित होकर उनकी ग्रोर देखता रह गया। वास्तव मे इतनी उम्र मे इतना विनोदी, इतना प्राणवान ग्रौर इतना फुर्तीला वना रहना हर किसीके लिए सभव नही है।

उन्होंने एक वडी विचित्र-सी वात कही। जव हम लोग खा-पी रहे थे, वह वोले, "ग्राप बुरा न मानें, हमारे देश मे एक मजेदार कहावत प्रचलित है। वच्चे जव भूखे होते हैं तो कहते है—'मा, मुझे जल्दी से खाना दो। मुझे ऐसे जोर की भूख लगी है, जैसी हिन्दुस्तानी को लगती है।'"

उनके स्वर मे किसी प्रकार की दुर्भावना नही थी, इसलिए मुझे बुरा तो नही लगा, लेकिन मैं सोच मे पड गया कि आखिर यह कहावत वहा किस तरह चालू हुई होगी। शायद किसी रूसी बालक ने हमारे देश मे किसीको भूख से चिल्लाते देखा होगा। यह भी सभव है कि कोई भोजन-भट्ट भारतीय रूस गये हो और वहा अपने देश की नेकनामी कर आये हो! जो हो, मैंने चकोव्स्की को बताया कि यह कहावत गलत है। हमारे देश मे भूख से कोई नही चिल्लाता। वह मुस्कराकर बोले, "आप सफाई क्यो दे रहे हो? उसकी जरूरत नही। मैं स्वय जानता हू।"

चकोव्स्की ने बच्चो के लिए बहुत-सी पुस्तके लिखी है और अब भी उनका साहित्य-सृजन का कार्य बराबर चल रहा है। एक दिन फिर उनसे 'चिलड्रन्स हाऊस ऑव बुक्स' मे भेट हुई तो उन्होने बताया, "मैं अपनी एक पुस्तक के प्रूफ देखने यहा आया हू।" हमारे देश मे बडे लेखक बच्चो के लिए लिखने मे अपनी हेठी समझते है। जो लिखते भी है, उनमे इतना उत्साह और धैर्य कहा होता है कि वे स्वय परिश्रम करके पुस्तक को साफ और शुद्ध छपवाने मे सहायक हो। इसके विपरीत, श्वेत केशोवाले युवा-वृद्ध चकोव्स्की मीलो दूर से आकर बडे ही मनोयोगपूर्वक प्रूफ देखने मे लगे थे, ताकि उनकी पुस्तक मे एक भी अशुद्धि न रहने पावे!

चकोव्स्की का ध्यान अब गाधीजी की ओर गया है। कहते थे कि यदि सामग्री मिल जाय तो मैं गाधीजी के जीवन और उनकी विचार-धारा पर सरल-सुबोध ढग से अपने देश के बच्चो को कुछ देना चाहूगा।

'डाक्टर ज़िवागो' के लेखक बौरिस पास्तरनक से मिलने का सवाल ही नही था। उन दिनो कही भी इस लेखक का नाम नही लिया गया। 'सोवियत लेखक सघ' तथा मित्रो ने वहा के जिन लेखको से मिलने की प्रेरणा दी, उनमे इस लेखक का नाम नही था।

: ३४ :

रूस में मैने क्या नहीं देखा

६ अगस्त को मैने रूस मे प्रवेश किया था, १० सितम्बर तक उस देश मे रहा। तत्पश्चात अन्य देशो मे घूमकर लौटने पर बारह दिन और रहने का अवसर मिला। इस अरसे मे मैने जो कुछ देखा, उस सवका उल्लेख कर सकना सभव नही है। वहुत-कुछ देखने से रह भी गया। कई ऐतिहासिक नगर छूट गये। पर उसका मुझे खेद नही है, क्योकि समय अधिक हो तब भी कोई आदमी दुनिया मे सबकुछ नही देख सकता। इस अध्याय मे मै कुछ ऐसी चीजो का उल्लेख करूगा, जिनसे रूस के निवासियो को समझने मे मदद मिलती है, साथ ही यह भी पता चलता है कि द्वितीय महायुद्ध की अपार क्षति के बाद विभिन्न क्षेत्रो मे उस राष्ट्र ने जो प्रगति की, उसका रहस्य क्या है।

पीछे के अध्यायो मे पाठक पढ चुके है कि रूस को कितने आतरिक तथा वाह्य सकटो का सामना करना पडा। वहा के निवासियो ने न केवल जार-शाही का खात्मा किया, अपितु नाजी उपद्रवो एव अत्याचारो का भी वडी वहादुरी से मुकावला किया। इसमे धन-जन की जो क्षति हुई, वह तो हुई ही, शासन-व्यवस्था वदल जाने और किसान-मजदूरो की सत्ता स्थापित हो जाने के कारण लोगो के रहन-सहन मे भी वडा परिवर्तन हो गया। जिनके पास वडे-वडे भवन थे, वे अव छोटे-से एक या दो कमरो के फ्लेट मे अपनी गुजर-वसर करते है। अपने लम्वे निवास मे मै प्रत्येक क्षेत्र के लोगो से मिला, उनसे वातें की, लेकिन एक भी व्यक्ति मुझे ऐसा नही मिला, जो खुले आम एकात मे अपने नेताओ, अथवा शासको को कोसता हो या अपने भाग्य को दोष देता हो। प्राय सभी परिवारो मे से कोई-न-कोई आदमी द्वितीय महायुद्ध मे मारा गया, लेकिन इसका दु ख होते हुए भी वे लोग व्यर्थ के विलाप अथवा दोषारोपण मे अपनी शक्ति एव समय की वरवादी नही करते। जहा-जहा इस सम्बन्ध में वात चली, घर की स्त्रियो ने कहा, "हमे अपने

ग्रादमी के मारे जाने का दु ख जरूर है, पर मलाल नही, क्योकि देश पर मर-मिटना प्रत्येक देशवासी का सबसे पहला कर्त्तव्य है ।"

राजनीति पर निजी या सामूहिक रूप मे लम्बी-चौडी बहसे मुझे सुनने को नही मिली । बडी-बडी मीटिंगे सामान्यतया वहा नही होती और न राजनीति की वर्णमाला से भी ग्रनभिज्ञ लोग ऐसे बहस मुबाहिसे करते है या राय देते है, मानो वे राजनीति के पडित हो ।

इससे भी बडी बात यह है कि मैने वहा किसीको भी ग्रपने देश की शान मे बट्टा लगाते या धोखा देते नही देखा । बाहर से बहुत-से लोग वहा ग्राते है, लेकिन क्या मजाल कि कोई भी रूसी ग्रपने देश ग्रथवा देशवासियो की बुराई उनसे करे । वे ग्रक्सर ग्रपने महमानो से कहते है, "ग्राप हमारे देश मे ग्राये है । यहा बहुत-सी चीजे ग्रापको पसद ग्रावेगी । ग्राप खूब घूमिये ग्रौर सब कुछ ग्रपनी ग्राखो से देखिये ।" मैने एक भी व्यक्ति को यह कहते नही सुना कि हमारे देश मे बडी तबाही है, हम मरे जा रहे है । यह नही कि वे पूर्णतया सुखी है ग्रौर उन्हे कोई कष्ट नही है, लेकिन वे जानते है कि ग्रपने देश को दूसरो की निगाह मे गिराकर वे न ग्रपना भला कर सकते है, न दूसरो का ।

मामूली-सी बात है। बस, ट्राम या रेल मे मैने किसी भी व्यक्ति को बिना टिकट सफर करते नही देखा । लोग ग्रक्सर टिकटों की कापिया खरीद लेते है । जो ऐसा नही करते, वे सबसे पहले टिकट-घर पर जाकर या ट्राम-बस पर कडक्टर के पास जाकर टिकट ले लेते है । उनमे यह वृत्ति नही है कि कडक्टर की निगाह बचाकर निकल जाय ग्रौर पैसे बचा ले । ऐसा करने से उन्हे थोडा-बहुत ग्रार्थिक लाभ हो सकता है, लेकिन वे यह भी जानते है कि ग्राज की छोटी-सी बेईमानी कल बडी बेईमानी करने की प्रेरणा बन सकती है ।

ग्रपने काम मे ढिलाई करते या काम से जी चुराते लोगो को मैने नही पाया । काम किसी भी प्रकार का हो, सडक बनाने का या दफ्तर का, फैक्टरी का या दुकान पर सामान बेचने का, हर व्यक्ति ग्रपने कर्त्तव्य को पहचानता है । यह नही कि दो व्यक्ति बैठे-बैठे गप्पें लडा रहे है ग्रौर उधर काम का नुकसान हो रहा है । मास्को रेडियो मे मेरी चार वार्त्ताएं रिकार्ड हुई । रिकार्ड करनेवाली बहन मुझसे पूछती कि मेरी वार्त्ता कितने मिनट की होगी ग्रौर मेरे बता देने पर वह मशीन चालू कर देती । जबतक मेरी वार्त्ता रिकार्ड होती, वह दूसरा काम निबटा लेती ।

आफिस के के घटो मे दोस्ती निभाने अथवा समय गवाने की मनोवृत्ति मुझे उनमे नही दिखाई दी। वे लोग बातें न करते हो, सो नही, लेकिन काम के घटो का उपयोग वे काम मे ही करते है। विश्राम या अवकाश के समय के वे स्वय मालिक है, जो चाहें, करें।

अपने अज्ञान को वे नही छिपाते। जो काम उनके हाथ मे है, उसके बारे मे आप चाहे जितने सवाल पूछ लीजिये। वे अपनी योग्यतानुसार आपको अवश्य उत्तर दे देंगे, लेकिन जिस बात को वे नही जानते है, उसकी गलत जानकारी देने के बजाय वे कह देंगे, "मुझे खेद है कि मै इस बारे मे कुछ नही जानता।" एक बार मै एक प्रकाशन-गृह मे गया। बहुत देर तक बाते होती रही। मैने अधिकारी से पूछा कि आप पुस्तक की लागत तथा मूल्य मे क्या अनुपात रखते है? उन्होने तत्काल उत्तर दिया—"हमे पता नही। पुस्तको का मूल्य ऊपर के अधिकारियो द्वारा निर्धारित होता है।" बहुत-सी चीजो मे वे टाग नही अडाते। अपने अगीकृत कार्य को सुचारु रूप से सम्पन्न करने की तत्परता उनमे रहती है।

अपने घर की गदगी दूसरो के घरो के सामने फेंकते मैने किसीको नही देखा। कई-कई मजिलो के मकान वहा होते है। हर फ्लैट के बाहर एक या दो बाल्टिया रहती है। घर के लोग उनमे कूडा-कचरा डालते रहते है। सवेरे एक निश्चित समय पर घर का कोई आदमी उन बाल्टियो को उठाकर नीचे सडक पर रख जाता है। म्युनिसिपैलिटी की बस आती है, उन बाल्टियो को उठा ले जाती है और उनके स्थान पर साफ-धुली बाल्टिया रख जाती है।

यह तो हुई घरो की बात, सडक पर भी जगह-जगह पीकदान तथा कूडेदान रक्खे है। वहा कोई भी व्यक्ति इतनी मनमानी नही बरतता कि जहा चाहे थूक दे, जहा चाहे छिलके पटक दे। इतना ही नही, लोग बस, ट्राम या रेल की टिकट भी कूडेदानो मे ही डालते है, सडक पर फेंकते हुए नही चलते। यही कारण है कि वहा की सडकें बहुत साफ-सुथरी रहती है।

बाहर के लोगो की वे उपेक्षा नही करते, उनका बडा मान करते है और उनकी सब तरह से सहायता करना अपना कर्त्तव्य मानते है। मै अनेक बार रास्ता भूल जाता था। मुझे एक भी व्यक्ति ऐसा नही मिला, जिससे मैने कुछ पूछा हो और इग्लैड के निवासी की भाति वह कलाई पर बधी घडी पर निगाह डालकर यह कहता आगे बढ गया हो—"मुझे खेद है कि मेरे पास वक्त नही है।" दूसरो की

या लडकी को मैने सिगरेट का धुआ उडाते देखा हो। लाली अथवा पाउडर का प्रचलन वहा नही के बराबर है। मुश्किल से हजारो पीछे एक स्त्री ऐसी मिलेगी, जो इनका उपयोग करती हो। उनकी पोशाक उनकी शालीनता को व्यक्त करती है। लोगो का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करनेवाली चटकीली पोशाके धारण किये महिलाए मेरे देखने मे नही आई।

रूसी सैनिक जाति के है। इसलिए स्त्री-पुरुषो के शरीर बडे ही स्वस्थ और पुष्ट है। उनमे लोच दिखाई नही देता और न वाणी मे कोमलता। वे बडी तेजी से चलते है। उनमे शैथिल्य नही होता। उनकी वाणी मे कडक है। जब कोई फोन पर बात करता है तो ऐसा लगता है, मानो वह किसी भीड के सामने भाषण दे रहा हो।

वहा के लोगो मे मैने लालच नही पाया। वे जो कमाते है, खर्च कर डालते है। भविष्य की चिन्ता मे वे अपने वर्त्तमान को नही बिगाडते। खाने-पीने आदि के खर्चे से यदि कुछ पैसा बच रहता है तो वे उसे तिजोरी मे बद करके नही रख देते, बल्कि बाल-बच्चो के साथ सिनेमा या थियेटर आदि मे खर्च कर आते है अथवा कही यात्रा पर चले जाते है।

पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष या वैमनस्य से लोगो को सार्वजनिक स्थानो पर गाली-गलौज या मार-पिटाई करते मैने कही नही पाया। इससे यह न समझा जाय कि वहा के लोगो मे ऐसा कोई दुर्गुण नही है। इसका अर्थ यह है कि इस प्रकार के भद्दे प्रदर्शनो को वे सार्वजनिक रूप नही देते।

ऐसी और भी बहुत-सी बाते है। उनके विस्तार मे न जाकर मै इतना ही कहूगा कि छोटी होते हुए भी ये बातें बडी महत्वपूर्ण है और उन्हीके जोर पर रूस ने ससार के दो सबसे शक्तिशाली राष्ट्रो मे अपना स्थान बना लिया है।

: ३५ :

मास्को से विदाई

१६ अक्तूवर को सवेरे ३ बजकर २० मिनट पर जेट-विमान से मुझे मास्को से रवाना होना था, इसलिए मैने सोचा कि अपने सारे काम १७ तारीख तक निवटा लूगा और १८ का दिन मित्रो से विदा लेने और यात्रा की तैयारी के लिए रक्खूगा। लेकिन सयोग से यास्नाया पोलियाना जाने के लिए १८ तारीख निश्चित हुई। वहुत जल्दी करते-करते उस दिन रात को सवा आठ बजे लौटा। रात का खाना भाई मदनलाल 'मधु' के यहा था। उस भोज मे अनिल विश्वास, उनकी पत्नी तथा प्रेम धवन आदि भी सम्मिलित हुए। श्रीमती अनिल विश्वास ने वह लोरी सुनाई, जो उन्होने 'परदेशी' फिल्म मे गाई थी। वातचीत का ऐसा सिलसिला चला कि ११॥ वज गये। मुझे अपना सामान ठीक करना था। इसलिए मित्रो से माफी मागकर और विदा लेकर घर आया। सोमजी, उनकी पत्नी तथा अन्य भारतीय मित्रो ने सामान वाधने मे मदद की।

इस विचार से कि अव मै मास्को छोड रहा हू, जी कुछ उदास हो रहा था। इतने दिनो के निवास मे वहा वहुत-से नये मित्र वन गये थे और पुरानो से घनिष्ठता हो गई थी। अनेक चित्र मानस-पटल पर उभरने लगे। कितनी आत्मीयता मिली थी मुझे वहा। एक भी अवसर ऐसा याद नही आ रहा था, जवकि सहायता की आवश्यकता हुई हो और वह वहा के भाई-वहनो से प्राप्त न हुई हो। उन लोगो की मिलनसारिता, सेवा-परायणता और कर्त्तव्यपालन के प्रति सजगता की अनेक मधुर स्मृतिया मन मे उठ रही थी। मास्को नदी के साथ वहुत निकट का नाता जुड गया था। अखण्ड गति से प्रवाहित वहा के लोकजीवन को हर शाम को देखते-देखते मन उसकी ओर वहुत ही आकृष्ट हो गया था। पता नही, अव फिर वहा कव आना होगा, और आना होगा भी या नही—ये तथा ऐसे ही वहुत-से विचार दिमाग मे उठ रहे थे। विशेषकर याद आते थे वे भोले चेहरे, जो वार-वार मुझसे पूछते थे, "कहिये,

आपको हमारा देश कैसा लगा ? यहा के लोगो की आपपर कैसी छाप पडी ?" देश-प्रेम से ओत-प्रोत उनकी आखो को और उनमे झलकती इस व्यग्रता को कि कही परदेशियो पर उनके देश और देशवासियो की खराब छाप न पड जाय, कैसे भुलाया जा सकता था!

सोमजी और उनकी पत्नी सामान ठीक कराकर थोडी देर के लिए अपने घर चले गये और कह गये कि १ बजे टैक्सी लेकर आ जायगे। उनके जाने पर शकर गौड आ गये और कुछ देर बैठकर और अपने भारतीय मित्रो के लिए चिट्ठिया देकर चले गये।

भाई जायसवाल की पत्नी प्रसूति-गृह से अपनी नवजात कन्या के साथ सकुशल घर आ गई थी। उनसे विदा लेने उनके कमरे मे गया तो उनकी आखें डबडबा आई। बोली, "आपकी वजह से घर मे बडी चहल-पहल रही। आपके जाने से बडा बुरा लग रहा है। अब कब आवेंगे ?"

मैंने कहा, "आप लोगो का स्नेह कभी-न-कभी खीच ही ले आवेगा। मै आप सबका बहुत ही आभारी हू कि आपने घडीभर को भी मुझे यह नही लगने दिया कि मै परदेस मे हू।"

एक बजते-बजते टैक्सी आ गई। उसमे सामान रखवाया। मना करते-करते सोमजी, उनकी पत्नी और जायसवाल पहुचाने साथ चले। यद्यपि आधी रात से अधिक हो चुकी थी, तथापि मास्को नगरी एकदम खामोश नही थी। सडको पर उस समय भी लोग और सवारिया आ-जा रही थी।

सवा दो बजे के लगभग हवाई अड्डे पर पहुच गये। वहा सामान तुला, टिकट जाचे गये। मिनटो मे ये दोनो काम हो गये। सोमजी ने कहा, "अभी बहुत समय है। चलो, ऊपर रेस्ट्रा मे एक-एक प्याला कॉफी पी लें।" हम लोग रेस्ट्रा मे चले गये और गपशप करने लगे। मजे-मजे मे कॉफी पी। श्रीमती सोमसुन्दरम् ने कहा कि यात्रियो के लिए विमान मे बैठने की सूचना दी जायगी, तभी हम लोग नीचे चले चलेंगे। अत हम सब निश्चिन्त थे। अचानक मेरी निगाह सामने घडी पर गई तो तीन बजे थे। मैने कहा, "अब हम नीचे चलें। तीन बज गये है।"

श्रीमती सोमसुन्दरम् बोली, "अभी घोषणा कहा हुई है ? आप जल्दी न करे।"

मैने कहा, "पिछली बार जब मै जेट से प्राग् गया था तो हम लोगो को कोई

आधा घटा पहले विमान मे विठा दिया गया था।

खैर, पाच मिनट और निकल गये, फिर भी घोषणा सुनाई न दी तो हम लोग वहा से उठे। सब अपने-अपने ओवरकोट रेस्ट्रा के वाहर के कमरे मे टाग गये थे, वे पहने। उसमे कम-से-कम पाच मिनट और लग गये। करीब ३-१० पर नीचे आये। कुछ लोग अव भी इधर-उधर घूम रहे थे। कुछ मुसाफिरखाने मे वैंचो पर वैठे ऊघ रहे थे। सोमजी और उनकी पत्नी ने कहा, "हम लोग इन्क्वायरी मे जाकर पता लगा आवे कि अभी कितनी देर है।"

उनका जाना था कि एक रूसी लडकी वहुत ही घवराई हुई मेरे पास आई और वोली, "आप कावुल जा रहे है ?"

मैने कहा, "जीहा।"

वेहद झुझलाकर उसने कहा, "तो यहा खडे-खडे क्या कर रहे है ? सारे मुसाफिर विमान मे वैठ गये है। विमान अव छूटनेवाला है।"

वह कावुल जानेवाले हमारे जेट की परिचारिका थी। उसने झटपट मेरा कुछ सामान उठाया और चल पडी। कुछ सामान जायसवाल ने लिया और वह भी लडकी के पीछे दौडे। मै यह सोचकर जरा ठिठका कि सोमजी और उनकी पत्नी आ जाय तव जाऊ। लेकिन दोनो मे से कोई भी आता दिखाई न दिया तो विवश होकर शेष सामान उठाकर मुझे भी भागना पडा।

जिस समय विमान के पास पहुचे, सीढियां हट चुकी थी, दरवाजा वन्द हो गया था। सीढिया फिर से लगाई गई, दरवाजा खोला गया। हमारे अदर पहुचते ही द्वार वन्द कर दिया गया। मैने परिचारिका से कहा, "जरा रुक जाओ, दरवाजा खोल दो। मेरे मित्र इन्क्वायरी मे पूछताछ करने गये थे। मै इधर चला आया। इतनी रात गये वे पहुचाने आये है, उनको विदाई का नमस्कार नही करूगा तो उन्हे और मुझे कितना बुरा लगेगा!"

वेचारी परिचारिका ने दरवाजा खोल दिया। दरवाजे का खुलना था कि किसीने नीचे से कडककर रूसी मे कुछ कहा। दरवाजा फौरन वद कर दिया गया। विमान की खिडकी मे से मैने देखा कि सोमजी और उनकी पत्नी चले आ रहे है। विमान के निकट आकर वे क्षणभर रुके और द्वार वंद देखकर लौट गये। लाचारी यह थी कि मै उन्हे देख सकता था, लेकिन विमान मे भीतर अंधेरा होने के कारण वह मुझे नही देख सकते थे।

उस समय मेरी जो ग्रवस्था हुई, उसका वर्णन शब्दो मे नही किया जा सकता। श्रीमती सोमसुन्दरम गर्भवती थी, फिर भी इतनी दूर विना ग्राये नही मानी ग्रौर सारी रात उन्होने पलको पर निकाल दी ! उनकी मनोदशा का ग्रनुमान कौन कर सकता था !

ठीक ३ २० पर विमान ने हलचल प्रारम्भ की, शोर मचाया, दौड लगाई ग्रौर फिर भूमि से नाता तोडकर ग्रम्वर की ग्रोर वढ चला। मेरे मन की घवराहट ग्रव भी यथापूर्व वनी थी। एक तो रातभर एक क्षण को भी सो नही सका था, ऊपर से यह घटना घट गई। विमान के समगति से चलने पर मैने सोचा कि थोडी देर सो लू, पर दिमाग साय-साय कर रहा था। सभवत ५ वजे के वाद कही ग्राख लगी। घटे भर वाद फिर खुल गई। भोर का प्रकाश फैल रहा था। खिडकी से नीचे निगाह गई तो देखता क्या हू कि सवकुछ सफेद-ही-सफेद है। मैने परिचारिका से पूछा कि हम लोग कहा है ग्रौर यह नीचे क्या है ? उसने कहा, "यहा वरफ वहुत पडी है। मौसम खराव है। हम लोग ताशकन्द न जाकर दूसरी ग्रोर जा रहे है।"

उसकी वात सुनकर थोडी-वहुत नीद ग्राने की जो सभावना थी, वह भी दूर हो गई। मैने कहा, "हम लोग ताशकन्द कव पहुचेंगे ?"

वह वोली, "कह नही सकते। यह तो मौसम पर निर्भर करेगा।"

सवा ६ वजे हम लोगो का विमान स्वेरडलोव्स्क हवाई ग्रड्डे पर उतरा। हिम-पात के कारण चारो ग्रोर चादी-जैसी बर्फ विछी दिखाई देती थी। विमान वर्फ पर उतरा ग्रौर हवाई ग्रड्डे के भीतर जाने के लिए हमे भी वर्फ के ऊपर होकर जाना पडा। मन मे चिता थी कि पता नही, कवतक यहा रुकना पडेगा। पर दृश्य वडा ही मनोरम लगता था। पेडो की टहनिया वर्फ से सफेद हो रही थी। सर्दी खूब थी। परिचारिका ने हमे ऊपर की मजिल मे ले जाकर एक कमरे मे विठाल दिया। उसके जाने पर मै नीचे ग्राया ग्रौर हवाई ग्रड्डे की इमारत के चारो ग्रोर चक्कर लगाया। दिन का प्रकाश काफी फैल गया था। सूर्य की सुनहरी किरणें वर्फ पर पड रही थी। मैने कुछ चित्र लिये। लौटकर फिर कमरे मे ग्रा गया। थोडी देर वाद परि-चारिका ग्राई ग्रौर वोली, "मौसम का कुछ ठिकाना नही है कि कवतक साफ होगा। ग्रव ग्राप विश्राम-गृह मे चलिये ग्रौर ग्राराम कीजिये।"

वह हमे ग्रपने साथ ले गई ग्रौर विश्राम-घर के एक कमरे मे पहुचाकर जाते-जाते वोली, "ग्राप वेफिक्र होकर सोइये। विमान जाने को होगा तो मै ग्राकर

आपको लिवा ले जाऊगी ।"

मै वडी थकान अनुभव कर रहा था। सो कम्वल ओढकर विस्तर पर लेट गया। आख वद करते ही नीद आ गई । लगभग साढे आठ बजे दरवाजे पर खट-खट सुनकर उठा। किवाड खोले। परिचारिका खडी थी। वोली, "चलिये, मौसम ठीक हो गया है और अव हम रवाना होनेवाले है।"

सवा नौ पर विमान चला। रास्तेभर हिम के सुहावने दृश्य दिखाई देते रहे। बीच-वीच मे हरे-हरे वृक्ष उस प्राकृतिक सुषमा को नूतन आकर्षण प्रदान कर रहे थे। ऐसे मे आख कहा झपती थी। उजविकिस्तान का अपना सौदर्य है और उसकी राजधानी ताशकन्द तो नैसर्गिक हरीतिमा का भण्डार माना जाता है।

मास्को से तीन घटे मे हमे सीधे विना कही रुके ताशकद पहुच जाना था, लेकिन बीच के स्वेरडलोव्स्क पडाव को शामिल करके पहुचे कोई नौ घटे मे। उस समय मास्को के समय के अनुसार सवा वारह वजे थे, लेकिन ताशकद की घडी सवा तीन वजा रही थी।

विमान से उतरते ही हमारी पूर्व-परिचित माशा ने हम लोगो का स्वागत किया । मास्को मे हमे वताया गया था कि ताशकद पहुचते ही कावुल के लिए विमान मिल जायगा, लेकिन माशा से मालूम हुआ कि मौसम अनुकूल न होने के कारण उस दिन कोई भी विमान कावुल नही जायगा। यदि मौसम साफ हुआ तो अगले दिन जा सकता है। मैने कहा, "मै तो दिल्ली अपने पहुचने की सूचना दे चुका हू। घर के लोग हवाई अड्डे पर आयगे और हैरान होगे।"

माशा वोली, "तो वताइये, इसके लिए हम क्या कर सकते है ?"

लखनऊवाले मेरे नामराशी की पत्नी प्रकाशवती भी उसी विमान से दिल्ली लौट रही थी। उन्होने कहा, "मै तो लखनऊ लिख चुकी हू और मेरे पति दिल्ली आ गये होगे।"

कुछ देर तक चर्चा के वाद निश्चय हुआ कि दिल्ली दो केविल किये जाय। माशा ने कहा, "यह काम तो आसानी से हो जायगा। आप लोग तार लिखकर दे दे।"

२२ अक्तूवर की दिवाली थी । प्रकाशवतीजी ने हिसाव लगाया तो उन्हे आशका हुई कि त्यौहार पर शायद ही लखनऊ पहुच सके। वोली, "यदि कल सवेरे हम कावुल चले जाय और वहा से तत्काल आगे के लिए विमान मिल जाय तो यह

सभव हो सकता हैं।"

जो हो, ऐसी लाचारी थी कि हम या अधिकारी लोग कुछ कर नही सकते थे। तार लिखकर दिये और माशा ने उसी घडी उन्हे तार-विभाग को सौंप दिया। फिर वह बोली, "आप लोग भूखे होगे। चलिये, कुछ खा लीजिये।"

प्रकाशवतीजी और मैं भोजन के कमरे मे पहुचे। सवेरे से कुछ नही खाया था, फिर भी भूख नही थी। सिर बहुत भारी हो रहा था। मैंने कहा, "कोई हल्की चीज ले आओ। फल मिल जाय तो अच्छा।" थोडी देर मे अगूर और अनार आ गये। खाये, थोडी डबल रोटी ली, कॉफी पी। खाने से छुट्टी पाने के उपरात माशा ने कहा, "अब हम लोग विश्रामगृह मे चलें, जहा रात को आपके ठहरने की व्यवस्था की गई है। जो जरूरी सामान हो, साथ ले लें, बाकी यही छोड दें। वैसे कोई आशा नही है, फिर भी अगर शाम को जाने की सुविधा हो गई तो सामान के यहा रहने से जल्दी-जल्दी मे लाने की परेशानी से आप बच जायगे। सवेरे गये, तब भी सामान के यहा रहने से आपको सुभीता ही होगा।"

हम लोगो ने माशा की बात मान ली। जरूरी सामान एक बैग मे रक्खा, कैमरा कधे पर डाला और बाकी के सामान को वही छोड माशा के साथ बस से विश्रामगृह की ओर रवाना हो गये। उस समय पानी खूब जोर से पड रहा था और सर्दी के मारे दात किटकिटा रहे थे।

प्रकृति के प्रकोप के कारण ताशकद मे रुकना उस घडी बडा अखरा, लेकिन बाद मे शहर तथा उसकी बहुत-सी चीज़ो को देखकर लगा कि अच्छा हुआ, जो रुक गये, अन्यथा रूस के एक महत्वपूर्ण नगर को देखने और यात्रा के कुछ सुखद अनुभवो से वचित रह जाते।

: ३६ :

ताशकंद में एक रात

हवाई अड्डे से विश्रामगृह बहुत दूर नही था, चाहते तो पैदल ही जा सकते थे, लेकिन वर्षा होने के कारण माशा ने बस की व्यवस्था कर ली और उससे वहा पहुचे। अच्छी जगह थी। एक कमरे मे सामान रखकर थोडी देर आराम किया। प्रकाशवतीजी ने कहा, "यहा पडे-पडे क्या करेंगे ! चलो, शहर ही घूम आवे।" मै तो यह चाहता ही था। हाथ-मुह धोकर तैयार हुए। माशा ने बस की जानकारी पहले ही दे दी थी और यह भी बता दिया था कि शहर मे देखने की क्या-क्या चीजें है। फिर भी विश्रामगृह की व्यवस्थापिका से, जो थोडी-बहुत अग्रेजी जानती थी, विस्तार से पूछताछ करके घूमने निकल पडे। बस का अड्डा कोई दस कदम पर था। वहा पहुचते ही बस आ गई। प्रकाशवतीजी के पास दो-एक रूबल और कुछ रूसी सिक्के थे। मेरे पास कुछ भी नही था। बस मे बैठने पर कण्डक्टर से टिकट मागी और पैसे उसकी ओर बढाये तो उसने मुस्कराकर हमारी ओर देखा और दाम लेने से इन्कार कर दिया। हम लोग सोच रहे थे कि कही हमे पैसे की तगी न हो जाय, पर कण्डक्टर ने हमारा डर दूर कर दिया। फिर भी यह विचार बना रहा कि अगर कुछ अधिक रूसी मुद्राए हमारे पास होती तो अच्छा था। कई बड़ी सुन्दर चीजे पैसे के अभाव मे नही ले पाये।

ताशकद वास्तव मे बडा ही सुन्दर नगर है। प्राकृतिक सौंदर्य चारो ओर बिखरा पड़ा है। हरियाली की तो कुछ न पूछिये। वर्षा हो जाने के कारण फूल-पत्ते धुलकर साफ हो गये थे और उनका रूप और भी निखर आया था। चारो ओर बडी ही आकर्षक दृश्यावली दिखाई देती थी।

हम लोगो ने सबसे पहले विश्वविद्यालय जाने का निश्चय किया। प्रकाशवतीजी ने बताया कि उनके पास वहा की किसी हिन्दी जाननेवाली उजबेक बहन का पता है। वह मिल जाय तो घूमने-घामने मे सुविधा होगी। शहर मे घुसते ही हम

वस से उतर पडे। सोचा कि पैदल चलेंगे तो घूमने का घूमना हो जायगा, नगर तथा नगर-वासियो को भी देख सकेंगे। सयोग से वस से उतरते ही विश्वविद्यालय के अन्वेषण-विभाग का एक छात्र मिल गया। वह साथ हो लिया। नगर मे घुमाते और प्रमुख स्थानो को दिखाते हुए वह हमे विश्वविद्यालय ले गया। रास्ते में उसने वताया कि यह 'कपास का मौसम' है। इसलिए शहर की सारी शिक्षा-सस्थाओ की छुट्टी है। फिर वह बोला, "आपको शायद पता न हो, यह यहा का वडा ही अद्भुत अवसर है।"

विश्वविद्यालय के आ जाने से चर्चा वीच मे ही रुक गई। हम लोग भीतर गये। वाहर से इमारत वहुत वडी नहीं दीखती थी, लेकिन अन्दर जाकर अन्दाज हुआ कि उसमे कितनी जगह है। पढ़ाई के लिए कमरे वहुत वडे-वडे न थे, पर सख्या मे काफी थे। उनका फर्नीचर तो वहुत ही मामूली था।

भीतर जाकर हमने देखा कि मर्द-औरतो की वहां खूब भीड लगी है। वे छोटे-वडे पैकेट ला रहे थे और विश्वविद्यालय की वहनें उन्हें नोट कर-करके ले रही थी। हमारे साथ के छात्र ने वही एक ओर को हमे विठाल दिया और अच्छी तरह अग्रेजी जाननेवाली एक वहन को लिवा लाया। प्रकाशवतीजी ने उन वहन को अपने पास का पता दिखाया तो मालूम हुआ कि उन वहन का स्थान वहा से दूर नही है। उन्होंने कहा, "आप लोग यही वैठें। आधा घटे की भीतर ही वे बहन आ जायगी।"

वडी उत्सुकता और तत्परता से पार्सलो को लाते हुए स्त्री-पुरुषो को देखकर यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक था कि उनमे क्या है और वे क्यो लाई जा रही है? एक लडकी से पूछा तो उसने अपनी अग्रेजी की अध्यापिका से हमारा परिचय करा दिया, जो अपने पति के साथ वहा बैठी हुई उस कार्य का निरीक्षण कर रही थी। उन्होने कहा, "आप वडे अच्छे समय पर इस प्रदेश मे आये है। इन दिनो हमारे यहा कपास तैयार होती है। हमारे स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय सव वद हो जाते है और उनके छात्र-छात्राए कपास वीनने के लिए खेतो मे चले जाते है। हजारों लडके-लडकिया मिलजुलकर कितनी उमग से इस काम को करते है, यह देखने की चीज है। इस प्रदेश में कपास खूब होती है।"

मैने पूछा, "वच्चे अजानकारी मे फसल को विगाड तो नही देते?"

"नही, विल्कुल नही," उन्होने उत्तर दिया, "हमारे यहा यह परम्परा वर्षों से चली आ रही है और इस काम में हमारे वच्चे वडे दक्ष है। फिर उनके अध्या-

पक-अध्यापिकाए भी तो साथ रहते है। यह देखिये, अपने-अपने वच्चो के लिए अभि-भावक पार्सलो मे सामान पहुचा रहे है। इन्हे ट्रको पर लादकर हम खेतो पर पहुचा देगे और वहा इनका वितरण हो जायगा।"

"तो वच्चे फसल के दिनो मे वरावर खेतो पर ही रहते है?" मैने पूछा।

"जीहा, तभी तो मै कहती हू कि वह देखने की चीज है। हजारो वच्चे साथ रहते है, साथ खाते-पीते है, साथ खेलते-कूदते है और मिलजुलकर व्यावहारिक रूप से काम करने का शिक्षण प्राप्त करते है। जरा कल्पना कीजिये, खेतो मे तारो जैसी कपास पौधो पर छिटकी हुई है और अनगिनत हँसते-खिलखिलाते वालक अपने कोमल पर सावधान हाथो से उन्हे वीन रहे है। मै आपसे अनुरोध करूगी कि आप इस नज्जारे को जरूर देखकर जाय।"

उजविकिस्तान विद्या का महत्वपूर्ण केन्द्र है, यह मै पहले ही सुन चुका था। वहा के विश्वविद्यालय की ख्याति का भी मुझे पता था, लेकिन व्यावहारिक शिक्षण की इस पद्धति और श्रम की महिमा की जानकारी प्रथम वार हो रही थी। इच्छा हुई कि घर पहुचने मे भले ही एकाध दिन का विलम्ब हो जाय, पर इस प्रयोग को देखकर ही जाना चाहिए, लेकिन तभी ख्याल आया कि दिवाली वहुत ही निकट है और एक दिन भी वहा अधिक दे देने से त्योहार पर घर नही पहुच पावेंगे। अत मन की उत्सुकता को मन मे ही दवा दिया।

उन महिला ने बताया कि हिन्दी सीखने के लिए यहां उजविकिस्तान मे अच्छा प्रयत्न हो रहा है। कई कालेजो मे हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य हो गया है। यह सूचना देते हुए वड़े विश्वास के साथ उन्होने कहा, "आप देखेंगे कि कुछ ही वर्षो मे यहा हिन्दी का अच्छा प्रचलन हो जायगा। आपके यहा के कई लेखको की रचनाओ का उजवेक भाषा मे अनुवाद हो चुका है और हमारे वहुत-से पाठक उन लेखको के नामो से परिचित हो गये है।"

भारत से निकट सम्बन्ध स्थापित करने की रूस की उत्सुकता को मै देख चुका था, इसलिए उन वहन ने जो कुछ वताया, उससे मुझे आश्चर्य नही हुआ, प्रसन्नता अवश्य हुई। मै सोचने लगा कि ये लोग हिन्दी सीखने के लिए कितना प्रयत्न कर रहे है। हिन्दी के अच्छे साहित्य को अपनी भाषा मे अनूदित करने की कोशिश भी चल रही है। इससे हमारी जिम्मेदारी कितनी वढ जाती है। उसी समय मुझे याद आया लंदन का वह प्रसग, जवकि एक सज्जन ने मुझसे पूछा था कि आपके यहा आए-

दिन राष्ट्रभाषा को लेकर इतने झगडे क्यो होते रहते है ? एक रूसी भाई का यह सवाल भी स्मरण हो आया कि क्या आपके यहा कोई एक सामान्य भाषा नही है ? मैने पहले को उत्तर देते हुए कहा था कि हमारे यहा की भाषाए जड नही है, विकास-शील है । राष्ट्रभाषा के साथ उनकी जो टकराहट दीखती है, वह वास्तव मे झगडा नही है, वल्कि भारतीय साहित्य को और राष्ट्रभाषा को अधिक समृद्ध और सशक्त करने की उनकी चेष्टा है । दूसरे सज्जन से मैने कहा था कि हमारे यहा चौदह राष्ट्रीय भाषाए है, एक सामान्य भाषा भी है और वह है हिन्दी । देश के बीस-बाईस करोड लोग हिंदी वोलते है और उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक उसका प्रचलन है । यह सव कहा तो, पर अपनी कमजोरी को मै अच्छी तरह से जानता था । मुझे आज भी लगता है कि भाषा-विषयक हमारे झगडो से आतरिक अशाति तो उत्पन्न होती ही है, देश के वाहर उसकी वड़ी भयकर प्रतिक्रिया होती है। इस दिशा में हमे गभीरता से सोचना चाहिए ।

प्रकाशवतीजी ने जिन वहन का पता दिया था, वे नही मिली । उनके यहा सदेश छोड दिया गया । थोडी देर वाद उस नाम की जो महिला आई थी, वह वह नहीं थीं, जिनका पत्र प्रकाशवतीजी के पास था ।

विश्वविद्यालय मे पार्सलो के आने का क्रम चलता रहा । अग्रेजी-विभाग की उन प्राध्यापिका को अपने पति के साथ सिनेमा देखने जाना था, इसीलिए वह हमारे साथ दो छात्राओ को करके, कुछ दूर हमारा साथ देकर, चली गई ।

रात हो गई थी । सारा नगर विद्युत प्रकाश से जगमगा उठा था । उन दोनो छात्राओ ने हमे वाजार मे घुमाया, दो-एक छोटी-वडी दुकानो मे ले जाकर उनका सामान और उनकी सजावट दिखाई, सिनेमाघर दिखाये और अत मे वहां के सबसे वडे ऑपेरा मे ले गई । उसका भवन दो या तीन मजिल का था । उसकी कला तथा चित्रकारी वडी सुन्दर थी । हम उसे देख रहे थे कि अचानक ऑपेरा के अधिकारी को पता चल गया । वह आकर मिले और बोले, "हमारे यहा एक विदेशी शिष्ट-मडल आया हुआ है और उसके देखने के लिए बहुत ही अच्छे सगीत-नाट्य (ऑपेरा) की व्यवस्था की गई है । हमारा अनुरोध है कि आप उसे अवश्य देख लें ।" पूछने पर मालूम हुआ कि वह रात को एक वजे खत्म होगा । "लेकिन," उन्होंने कहा, "आपकी जवतक ठहरने की इच्छा हो, ठहरें । वाद मे आप जहां जाना चाहेंगे, वहा कार से भिजवाने का हम प्रवन्ध कर देंगे ।" उनका इतना आग्रह देखकर हम लोग

राजी हो गये। उन्होने अदर ले जाकर हमें पहली पक्ति मे बिठा दिया।

कहने की आवश्यकता नही कि मच वडा ही विशाल और सुरुचिपूर्ण था। पर्दे आदि वडे ही सादे पर आकर्षक थे। नाटक की भाषा हम नही समझ पाये, पर पास बैठी अग्रेजी जाननेवाली रूसी महिला ने हमे सारी कहानी बता दी। शीरी-फरिहाद जैसा कोई कथानक था। कहानी जान लेने पर पात्रो की भाव-भगिमा और अभि-व्यक्ति से खेल बहुत-कुछ समझ मे आ गया। अभिनय इतना सुन्दर था कि दिनभर के थके होने पर भी वहा से उठने को जी नही चाहता था।

मास्को के वोल्शाई थियेटर की भाति इसका मच भी घूमनेवाला था। इससे यवनिका गिरने के पश्चात् जरा-सी देर मे दूसरा भिन्न दृश्य सामने आ जाता था। देखकर आश्चर्य होता था कि इतनी कम देर मे यह चमत्कार कैसे हो गया!

साढे ग्यारह वजे के लगभग हमने अधिकारी महोदय से विदा ली। वह बाहर पहुचाने आये। जब हम अपने ओवरकोट पहन रहे थे, एक उजबेक सज्जन मिल गये, जिनसे युवक-समारोह के अवसर पर मास्को मे कई वार भेट हुई थी। वह वडी आत्मीयता से मिले और आग्रह करने लगे कि एक-दो दिन और ठहर जाओ। हम लोगो ने उनका आभार माना और विवशता जतलाई। वह बोले, "हमारे दिल मे आपके देश और नेताओ के लिए जो प्रेम है, उसे शब्दो मे व्यक्त नही किया जा सकता। शायद आप उसपर विश्वास न करे। लेकिन हम एक-दूसरे के सम्पर्क मे आवेगे तब आपको पता चलेगा कि हमारी बात मे कितनी सचाई थी।" विदा होते समय वह सज्जन अपने आत्मीयजन की भाति मिले।

कार मे रवाना हुए। ड्राइवर ने सारे नगर का चक्कर लगवा दिया। एक सज्जन पहुचाने आये। उन्होने रास्ते मे पूछा, "आपने भोजन कर लिया?" हमारे इन्कार करने पर वह हमे हवाई अड्डे ले गये। माशा वहा मौजूद थी। उसने मालूम कर लिया था कि हम भोजन करके नही आये है, इसलिए बेचारी बैठी-बैठी प्रतीक्षा कर रही थी। खाना तैयार था। हम सबने साथ-साथ खाया, माशा तथा अन्य व्यक्तियो से गपशप की, फिर विश्रामगृह लौट आये। उस समय एक बजा था।

विश्रामगृह की व्यवस्थापिका बैठी-बैठी कोई उपन्यास पढ रही थी। मैंने उनसे कहा, "हम लोगो को सोने मे देर हो गई है। हो सकता है, विमान सवेरे जल्दी जाय और हम लोगो की आख न खुल पावे। आप हमे जगा दीजिये।" उनसे आश्वासन मिल जाने पर हम लोग अपने कमरे मे जाकर आराम से सो गये।

: ३७ :

स्वदेश वापसी

सवेरे अचानक आख खुली तो घडी देखी। ४। वजे थे। वाहर लोगो के आने-जाने की-सी आहट हो रही थी। क्या वात है? मैने जिज्ञासावश दरवाजा खोला। देखता क्या हू कि लोग अपना-अपना सामान लेकर तेजी से वाहर जा रहे है। मैने व्यवस्थापिका के पास जाकर पूछा, "क्यो, यह क्या हो रहा है?" उसने मुस्कराकर कहा, "मै आपको जगाने ही आ रही थी। अव आप फौरन तैयार हो जाय। वस हवाई अड्डे जा रही है। आपका जहाज छूटने का समय हो रहा है।" मैने सामने दीवार पर लगी घडी को देखा तो वह ७। वजा रही थी। अव मुझे ख्याल आया कि मैने अपनी घडी को ताशकन्द के समय के हिसाव से ठीक नही किया था। व्यवस्थापिका पर वडी झुझलाहट हुई। मैने कहा, "रात को आपने वादा किया था कि सवेरे जल्दी जगा देंगी! वह तो अकस्मात मेरी आख खुल गई, नही तो जहाज ही छूट जाता।" उसने हँसते हुए कहा, "वाह साहव, वाह, मेरे होते जहाज कैसे छूट सकता था!"

वहस करने का समय नही था। मैने कमरे मे आकर प्रकाशवतीजी को जगाया, फैला सामान सभाला और वस की ओर दौड लगाई। सारे मुसाफिर तवतक वस मे बैठ चुके थे और हम लोगो की राह देख रहे थे। हमारे वैठते ही वस चल पडी।

हवाई अड्डे पर पहुचे। माशा वहा उपस्थित थी। पिछले दिन हमारा सारा सामान हवाई अड्डे पर ही रह गया था। उसके वारे मे पूछा तो माशा ने कहा, "आप चिंता न करे। सव चीजें जहाज पर पहुच गई है। अव आप झटपट नाश्ता कर लें। देर हो रही है।"

ब्रेक मे पडनेवाली चीजो के वारे मे तो चिंता नही थी, क्योकि उनपर लेविल लगे थे, लेकिन माशा ने तो हाथ की चीजें भी वही छुडवा दी थी। उनके सवध मे आशका हुई कि कही कुछ गडवड न हो जाय, पर किया क्या जा सकता

था । हाथ-मुह धोकर झटपट नाश्ता किया । इसी वीच घोषणा हुई और हम लोग विमान मे जा वैठे । माशा अदर आई और उसने टिकट मागी । मैने जेव से निकाल-कर दी । उसने देखकर कहा, "इसमे मास्को से ताशकद की टिकट कहा है ?" मैने टिकट अपने हाथ मे लेकर देखी तो सचमुच वह उसमे नही थी । ताशकद से तरमेज की थी । मेरी परेशानी देखकर माशा वोली, "ऐसा मालूम होता है कि मास्को के हवाई अड्डे पर जल्दी मे भूल से उसे फाड लिया गया है । आप चिन्ता न करे । एक कागज पर अपना नाम और पता लिखकर दे दे ।"

मैने वैसा ही किया । इतनी देर मे विमान का इजन चालू हो गया । विदाई का नमस्कार करते हुए माशा वोली, "फिर आइये । अच्छा, दसविदानिया ।" उसके स्वर मे वडी आत्मीयता थी । मैने कहा, "माशा, अव तुम्हारी वारी है । तुम दिल्ली आना । अच्छा, नमस्कार ।"

ताशकन्द के हिसाव से ८।। वजे विमान रवाना हुआ । थोडी देर उडने पर गिरि-शृखलाए प्रारभ हो गई । वे हिम का श्वेत किरीट धारण किये वडी सुहा-वनी लग रही थी । उन्हे पार करने के लिए हमारे विमान को काफी ऊचा जाना पडा, पर उसके प्रैशराइज्ड होने से हमे तनिक भी असुविधा नहीं हुई । मजे से अपनी सीट पर वैठे हुए प्रकृति की छटा देखते रहे । जाते समय जितनी वर्फ थी, उसकी अपेक्षा अव कही अधिक थी ।

लगभग डेढ घटे की उडान के वाद पर्वत-मालाए समाप्त हुई, मैदान दीखने लगा । विमान निचाई पर आ गया । जरा आगे वढते ही एक नगर आया । विमान की परिचारिका ने वताया, तरमेज आ गया । विमान उतरा और हम लोग हवाई अड्डे के भीतर प्रविष्ट हुए । उस समय १० वजे थे । जाते समय इस सीमा-वर्ती हवाई अड्डे पर वडी चहल-पहल थी, अव सव सुनसान था । कुछ अधिकारी लोग इधर-उधर घूम रहे थे । हम चौदह यात्री थे । हमे एक कमरे मे ले जाकर एक वडी मेज के सहारे विठाकर सवको एक-एक फार्म भरने को दिया गया । उसमे एक खाना था कि पास मे किस देश की कितनी मुद्राए है ? मैने जेव से रुपये निकाले और गिनकर उस खाने मे लिख दिये । एक अफसर ने आकर फार्म ले लिया । उसे देखकर वह वोला, "आपके इन रुपयो की रसीद कहा है ?" मैने पूछा, "कैसी रसीद ?" उसने कहा, "जाते समय यहा आपको दी गई होगी ।" मैने उत्तर दिया, "नही, मुझे कोई रसीद नही दी गई ।"

अफसर की आकृति गभीर हो गई। बोला, "यह कैसे हो सकता है? आप मास्को कब गये थे?" मैने जवाब दिया, "युवक-समारोह के अवसर पर।"

इतना सुनते ही उसने कहा, "तब ठीक है। आप लोग मुक्त है।" यह कहकर उसने फार्म फाड डाला और हमे छुट्टी दे दी। मै समझा कि अब वे लोग कुछ जल-पान करावेंगे, लेकिन सारा खेल युवक-समारोह के साथ ही समाप्त हो चुका था।

तरमेज ताशकद से कोई ७०० किलोमीटर पर है। लगभग २० हजार की बस्ती है। अफगानिस्तान और रूस की सीमा पर होने के कारण उसका बडा महत्व है। जाते समय वहा क्रियाच्को नामक एक इतिहास-प्रेमी सज्जन मिले थे। इस बार भी वह फिर मिले। विमान के छूटने तक बातें करते रहे। उन्होने कहा, "उजबिकिस्तान और हिंदुस्तान की बहुत-सी बाते मिलती-जुलती हैं, यहातक कि आपने देखा होगा, यहा के निवासियो का रग भी आपके देशवासियो से बहुत मिलता-जुलता है।" फिर मच की बात चल पडी। उन्होने कहा, "मच की दृष्टि से रूस बहुत विकसित है। हमारे देश का ऑपेरा (सगीत-नाट्य) और बैले (नृत्य-नाट्य) सारे ससार मे प्रसिद्ध है। पहले हमारे यहा पात्रो की पोशाक और दृश्यो की तडक-भडक पर अधिक जोर दिया जाता था, अब वह बात नही रही। अब तो प्रमुखता दी जाती है भावो की अभिव्यजना को। हमारे यहा के लोग बडे कला-प्रेमी है और मच के विकास पर उन्होने अपना ध्यान विशेष रूप से केन्द्रित किया है।"

११ बजे तरमेज से रवाना हुए। आमू दरिया पार करते-करते ध्यान आया कि रूस की सीमा समाप्त हो रही है और अफगानिस्तान मे प्रवेश कर रहे है। कह नही सकता कि उस समय मन मे क्या-क्या भावनाए उठी, पर एक बात बडी तीव्रता से अनुभव हुई कि मानव-निर्मित भौगोलिक सीमाओ के बावजूद प्रकृति सब देशो मे एक-सी है और उसने हर देश के इसानो को दिल दिया है।

हिन्दूकुश की ऊचाई आने पर परिचारिका के सकेत पर हमने आक्सीजन-मास्क पहन लिये और १२ बजे के लगभग जब पर्वत-मालाए समाप्त हुई तब उन्हें उतार दिया। विमान निचाई पर आ गया। १५ मिनट बीतते-बीतते काबुल पहुच गये। विमान से उतरते ही हवाई अड्डे के अधिकारियो से दिल्ली जानेवाले विमान के बारे मे पूछ-ताछ करने पर मालूम हुआ कि उस दिन कोई जहाज नहीं जायगा। हा, अगले दिन सवेरे मिलने की संभावना है। उन्होने सलाह दी कि हम

अपना अधिकाश सामान वही छोड दे और होटल चले जाय । बेकार सारे समान को ढोने से क्या फायदा ! हमने ऐसा ही किया ।

एक वार फिर कावुल होटल का मुह देखना पडा । जाते समय वहा के लोगो ने जो व्यवहार किया था, वह याद आ गया । जिन्होने हमारे साथ वदसलूक किया था, वे ही लोग थे, लेकिन उनके व्यवहार से लगा, मानो पिछली घटना का उन्हे ध्यान भी नहीं रहा । जिस आदमी ने वस मे चढकर सामान उतारने की धमकी दी थी, वही हजरत हमारा सामान उठाकर ले गये और ऊपर के कमरे में, जहा हमारे ठहरने की व्यवस्था की गई थी, पहुचा आये । सामान कमरे मे छोडकर दिन के वचे घटे हमने शहर मे चक्कर लगाते हुए विताये । जो कुछ देखने से रह गया था, देखा। वहा सर्दी अधिक नही थी और मौसम साफ था । घूमने मे खूव आनन्द आया ।

जैसा कि पहले वताया जा चुका है, कावुल के विकास मे एक ओर भारत वडी दिलचस्पी ले रहा है, दूसरी ओर रूस । शहर का नक्शा ही वदल गया है । सडको और विजली, पानी आदि की दृष्टि मे नगर मे आश्चर्यजनक सुधार हुआ है । सारा वाजार विदेशी माल से अटा पडा है । जापानी, रूसी, फ्रासीसी, इटालियन, इगलिश चीजो की भरमार है । वे सस्ती भी काफी है । ८ मिलीमीटर का मूवी केमरा एक दुकान पर पाचसौ रुपये मे मिल रहा था ।

सरदा और अगूर का मौसम पूरी वहार पर था । अगूर वेरो की भाति जगह-जगह विक रहे थे और फलो और सब्जियो की दुकानो पर सरदा के ढेर लगे थे । प्रकाशवतीजी के एक परिचित् सज्जन ने हमारे साथ के लिए कुछ अगूर और तीन सरदे मगवाये । मेरे हिस्से के एक वहुत वडे सरदे और चार सेर अगूर के दो रुपये कुछ आने लगे । चिलगोजे मूगफली की तरह विकते थे । मैने चार आने के यह सोचकर मागे कि वाजार मे घूमते-घूमते खतम हो जायगे, लेकिन जव दुकानदार ने कागज के लिफाफे मे भरकर दिये तो मै देखता रह गया । मै अकेला दो दिन मे भी उतने नही खा सकता था । कुछ दिनो की हवाखोरी के लिए सचमुच कावुल वडी अच्छी जगह है ।

आशा तो नही थी कि सवेरे ही विमान की व्यवस्था हो जायगी, फिर भी जल्दी उठे और तैयार होकर नाश्ता करके ७ वजते-वजते आर्याना के दफ्तर मे पहुच गये । जिस विमान मे हम नामकद से आये थे, उसमे वारह हज्जियों की एक टोली भिनाई तथा अन्य स्थानो मे ध्यान करने आई थी । वे लोग भी चक्कर लगा रहे थे ।

पिछली रात को हमे सूचना दी गई थी कि व्यवस्था हो गई तो ८ वजे तक विमान चला जायगा। दफ्तर के लोग, वार-वार पूछने पर भी, कोई पक्की खबर नहीं देते थे। हवाई अड्डेवालो से फोन द्वारा वडी कठिनाई से सम्पर्क हुआ, तो उन्होंने वताया कि उनके पास कन्दहार जानेवाला एक जहाज था। उनका अनुमान था कि पिछली रात के मौसम की खरावी से वहा जानेवाले यात्री नही होंगे। इसलिए उस जहाज को दिल्ली भेज देंगे। लेकिन सयोग से २८ यात्री इकट्ठे हो गये और वह जहाज ७॥ वजे चला गया। अब हम लाचार है।

हम लोगो को वडी निराशा हुई। इसके माने यह थे कि वह दिन भी कावुल मे जायगा। क्या पता कि अगले दिन भी जहाज का प्रवन्ध हो पावेगा या नही। कोई उपाय न देखकर आखिर मन को समझाया कि इस वार दिवाली कावुल की ही सही। फिर घरवालो का विचार करके सोचा कि भारतीय दूतावास से कहना चाहिए। हो सकता है, वे कुछ करा दे। उन्हे कई वार फोन किया, घटी वजती रही, पर किसीने रिसीवर ही नही उठाया।

झुझलाते हुए कमरे मे आये। पिछली रात से ही लगातार वर्षा हो रही थी, इसलिए घूम सकते नही थे। दिनभर कमरे मे पडे-पडे आशा के विपरीत प्रतीक्षा करते रहे कि शायद कोई चमत्कार हो जाय, पर चमत्कार न होना था, न हुआ। सारे दिन हवाई अड्डे के किसी अधिकारी ने कोई सूचना नही दी और हम लोग अनिश्चित अवस्था मे पडे रहे। रात को जाकर एक अधिकारी आये। उन्होने हमारे पासपोर्ट लौटाये और कहा, "आप लोग सबेरे ६ वजे तैयार रहें, ठीक साढे छ पर वस आवेगी।"

मैंने उन महाशय से कहा कि आप मेहरबानी करके हमारे घर एक केविल भिजवा दीजिये कि हम लोग अमुक जहाज से पहुच रहे है। अधिकारी ने सिर हिलाते हुए कहा, "जी नही, हम ऐसा नही कर सकते। तार भेजना है तो अपने पास से भेज दीजिये।"

उनसे तर्क करना फिजूल था। वह दूसरा पक्ष देखने और समझने को तैयार ही नही थे। हमारे अपने पैसे खत्म हो चुके थे।

सारी रात नीद नही आई। तरह-तरह के विचार मन मे उठते रहे। जिस समय विस्तर पर लेटे थे, आकाश कुछ-कुछ साफ था, लेकिन रात को वारह-एक वजे उठकर वाहर आया तो क्या देखता हू कि काले-काले मेघो से आसमान घिरा

हुआ है। आशका हुई कि अगले दिन भी काबुल की मेहमानदारी रहेगी। फिर भी पौने चार बजे उठ गये। पाच बजे नाश्ता करके पौने छ बजे सामान लेकर आर्याना के दफ्तर पर दस्तक दी। ९ बजे उठने के अभ्यस्त बेचारे रूसी लोग हमसे भी पहले वहा पहुच गये थे। हम सब प्रतीक्षा करते-करते थक गये। निर्धारित समय बीत गया, पर बस नही आई। हवाई अड्डे फोन किया। मालूम हुआ कि पिछले दिन बस-ड्राइवर को सूचना नही दी जा सकी थी। अब दी गई है।

आखिर सवा सात बजे बस आई। हवाई अड्डे पहुचे। वहा पहुचकर अपना सामान लिया। आठ बजकर दस मिनट पर विमान रवाना हुआ, तब कही जान-मे-जान आई। मौसम काफी साफ हो गया था। पर उस आर्याना विमान मे सुलेमान पर्वत पार करते-करते सिर फटने लगा, जैसा कि जाते समय हुआ था। कृत्रिम गर्म हवा के प्रयोग से लू-सी चलने लगी। ठडी हवा दी गई तो बेचारे रूसी लोगो को ओवरकोट पहनने पडे।

सुलेमान की सबसे ऊची चोटी 'तख्ते-सुलेमान' पर इस समय भी हमेशा की तरह बादल छाये थे। हाथ-से-हाथ भी नही सूझता था। वास्तव मे वह बडी खतरनाक जगह है। मौसम की खराबी को देखकर डर लगा कि कही विमान को लौट न जाना पडे, पर सौभाग्य से वैसा नही हुआ। दचके लगे, और जोरो के लगे, पर सकुशल पार हो गये।

विमान के अमृतसर पर रुकने की बात थी, लेकिन वहा का कोई भी यात्री न होने से सीधे दिल्ली की ओर बढे। समय की उस थोडी-सी भी बचत मे मुझे खुशी हुई।

एक बजकर पन्द्रह मिनट पर दिल्ली के सफदरजग हवाई अड्डे पर विमान उतरा। सूचना न होने के कारण घर का कोई भी आदमी वहा नही आया था। चुगी मे गये। सामान उतारकर लाया गया, उसकी जाच हुई। चुगीवालो ने प्रकाशवतीजी को जरा हैरान किया। उन्हे जो चीजे भेंट मे मिली थीं, उनका वे दाम पूछते थे। प्रकाशवतीजी क्या बताती! उस झिकझिक मे थोडी और देर हो गई, जो बहुत अखरी। इस बीच हमारे साथ जो रूसी आये थे, उनमे से एक महिला को जोर का जाडा लगा। उन्हे कपकपी चढ आई, उनके दात बजने लगे। मैंने अपनी बाह पर पड़े ऊनी कोट तथा मफलर को एक ओर रख दिया और काबुल से खरीदे रुई के ओवरकोट को लेजाकर उन महिला को उढा दिया। सामान की जांच तथा

पासपोर्ट आदि देखने के बाद जब मै अपना कोट लेने गया तो मेरा मफलर गायब था। प्रकाशवतीजी ने अपना पूरी बाह का स्वेटर उतारकर बेग मे रख दिया था। वह भी उड गया।

खैर, घटे-डेढ घटे मे वहा से छुट्टी पाई। घर के लोगो को आते ही फोन कर दिया था। वे राह देख रहे थे। ढाई महीने बाद घर पहुचने पर सब बडी प्रसन्नता से मिले। उन्हे और मुझे भी इस बात का बडा सन्तोष था कि मै त्यौहार पर घर आ गया और यात्रा सानन्द समाप्त हुई।